पूजा प्रकाशन द्वारा प्रकाशित

असली प्राचीन शास्त्रोक्त चमत्कारी

सिद्ध श्री बगलामुखी

महाउपासना-महासाधना,
स्तुति एवं सिद्धियों सहित

बगलामुखी उपासना एवं तांत्रिक प्रयोग की प्रमाणिक पुस्तक

प्रस्तुति एवं सम्पादन
काली पंडित

पूजा प्रकाशन, दिल्ली

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

असली प्राचीन शास्त्रोक्त चमत्कारी

सिद्ध श्री बगलामुखी

महाउपासना, स्तुति एवं सिद्धियों सहित

(बगलामुखी उपासना एवं
प्रयोग की प्रामाणिक पुस्तक)

प्रस्तुति एवं संपादन
काली पंडित

卐 प्रकाशक 卐

पूजा प्रकाशन

(सदर बाजार स्टेशन के बराबर में मस्जिद के बाहर)
पुल कुतब रोड, सदर बाजार, दिल्ली-110006
फोन न. : 011-45516164, 9811873658, 9811716164
Email : gargbooks@yahoo.co.in
sales@poojaprakashan.com
Visit us : www.poojaprakashan.com

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

प्रकाशक : **पूजा प्रकाशन**
(सदर बाजार स्टेशन के बराबर में मस्जिद के बाहर)
पुल कुतब रोड, सदर बाजार, दिल्ली-110006
फोन न. : 011-45516164, 9811873658
9811716164
Email : gargbooks@yahoo.co.in
sales@poojaprakashan.com
Visit us : www.poojaprakashan.com

प्रमुख विक्रेता : **गर्ग कम्पनी बुकसेलर**
पुल कुतुब रोड, सदर बाज़ार, दिल्ली-110006

पुस्तक : सिद्ध श्री बगलामुखी महाउपासना

प्रस्तुति एवं संपादन : काली पंडित

₹ : 300/-

शब्द सज्जा : स्वामिनारायण प्रिंटर्स, दिल्ली-34 फोन: 45606505 मो.: 9560229526

मुद्रक : एम. एस. प्रिंटर्स, लाल कुआं, दिल्ली-110006

चेतावनी भारतीय कॉपीराइट एक्ट के अन्तर्गत इस पुस्तक तथा इसमें समाहित सारी सामग्री (रेखांकन) व छायाचित्रों सहित के सर्वाधिकार 'प्रस्तोता एवं पूजा प्रकाशन' के पास सुरक्षित हैं। इसलिए कोई भी सज्जन इस पुस्तक का नाम टाइटल डिज़ाइन, अंदर का मैटर व चित्र आदि आंशिक या पूर्ण रूप से तोड़-मरोड़कर एवं किसी भी भाषा में छापने व प्रकाशित करने का साहस न करे अन्यथा कानूनी तौर पर वह हर्जे-खर्चे व हानि का स्वयं जिम्मेदार होगा। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद का न्यायिक क्षेत्र दिल्ली ही रहेगा।

विशेष चेतावनी *श्री वृद्धि और सुख -शान्ति के लिए मंत्र-तंत्र-यंत्र साधनाओं का विशेष महत्व है। परन्तु यदि किसी साधक को प्रस्तुत पुस्तक में दी गई साधना के प्रयोग में विधिगत वस्तुगत अशुद्धता अथवा त्रुटि के कारण किसी भी प्रकार की क्लेश-जनक हानि होती है अथवा कोई अनिष्ट होता है तो इसका उत्तरदायित्व स्वयं उसी का होगा। प्रस्तोता, प्रकाशक एवं मुद्रक उसके लिए उत्तरदायी नहीं होंगे। अतः कोई भी प्रयोग अपने गुरु या किसी योग्य व्यक्ति के संरक्षण में ही करें।*

SIDH SHRI BAGLAMUKHI MAHAUPASNA
Printed By : Pooja Prakashan, Delhi (India)
Presentation and edited by: Kali Pandit

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

प्राक्कथन

श्री बगलामुखी दश महाविद्याओं में से एक हैं। इनकी उपासना या साधना दक्षिण व उत्तर दोनों ही आम्ना पद्धति से की जाती है। यही एक ऐसी देवी हैं जो वाम व दक्षिण मार्ग के साधकों द्वारा आराधित हैं। इनके भैरव आनंद भैरव व गणेश हरिद्रा गणेश हैं। इनके शिव एकमुखी महारुद्र हैं तथा रात्रि वीररात्रि है। इनकी साधना में वीर व दिव्य दोनों ही भावों की प्रधानता है।

अथर्वासूत्र रूप शक्ति वल्गामुखी कहलाती है, वल्गा वैदिक नाम है। यही वैदिक वल्गा नाम आगम अर्थात तंत्र में बगला कहलाता है। इसलिए वल्गामुखी या बगलामुखी में कोई अंतर नहीं है, दोनों एक ही हैं। प्रायः साधकजन नाम के फेर से भ्रमित होते भी देखे गए हैं।

बगलामुखी को श्रीविद्या, ब्रह्मविद्या भी कहा जाता है। इनकी सर्वप्रथम आराधना भगवान विष्णु ने की थी। ये शत्रु का दमन करनेवाली व साधक का हित साधनेवाली महाशक्ति हैं। अतः साधकों को इनकी साधना द्वेषवश कभी नहीं करनी चाहिए। इतना भी बता देना आवश्यक है कि इनकी साधना गुरु के सान्निध्य में और उनके निर्देशानुसार ही करनी चाहिए, अन्यथा अनर्थ भी हो सकता है।

महाशक्ति बगलामुखी शीघ्र फलदायिनी हैं। बगलामुखी तंत्र में इनके ध्यान का स्पष्टीकरण करते हुए इस प्रकार बतलाया गया है–

जिह्वाग्रमादाय करेण देवीं,
वामेन शत्रून् परिपीडयंतीम्।
गदाभिघातेन च दक्षिणेन,
पीतांबराढ्यां द्विभुजां नमामि।।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

साधको! अध्यात्म का क्षेत्र एक अपार सागर है, जिसका कोई छोर दूर-दूर तक दृष्टिगत नहीं होता। एकमात्र गुरुदेव ही ऐसी विभूति हैं, जो इस आध्यात्मिक सागर से हाथ पकड़कर सुरक्षित रूप से मानव को उसके लक्ष्य तक ले जाने की सामर्थ्य रखते हैं। क्षेत्र कोई भी हो, जब तक योग्य मार्गदर्शक नहीं होता है तब तक मानव मात्र तिनके की तरह इधर-उधर डूबता उतराता रहता है। कभी वह संसाररूपी वायु चक्र के चक्रवात में चकराता है तो कभी सिन्धु-भंवर में।

क्षेत्र विज्ञान का हो अथवा ज्ञान का, बिना योग्य मार्गदर्शन के कोई छोर दृष्टिगत नहीं होता। फिर साधना का क्षेत्र तो इतना विशाल है कि इसका पार गुरु-कृपा के अभाव में प्राप्त करना निस्संदेह सम्भव ही नहीं है। गुरु-कृपा प्राप्त होने पर इष्ट कृपा स्वयं प्राप्त होने लगती है। गुरु की श्रेणी इसीलिए कोटि-कोटि विद्वानों ने ईश्वर से भी ऊपर रखी है।

यदि आप साधना के पवित्र क्षेत्र में पदार्पण करना चाहते हैं और सफल होना चाहते हैं तो सबसे पहले ऐसे योग्य और अनुभवी गुरु का वरण करें जो आपका सही मार्गदर्शन कर सकें। साधक को सीधे ही यंत्र प्रयोग या अनुष्ठान नहीं करना चाहिए। अपने गुरु से मार्गदर्शन प्राप्त करना उनका पहला और आवश्यक कर्त्तव्य है। उनके श्रीचरणों में बैठकर ही साधक को ध्वन्यात्मक ज्ञान व मंत्र का सही उच्चारण करते हुए साधना क्षेत्र में आगे बढ़ना चाहिए।

मुझे विश्वास है कि साधक इन दो शब्दों को ही बहुत अधिक मानते हुए इस ग्रन्थ में प्रस्तुत की गई पूजा-पद्धति व निर्देशों का अनुकरण करते हुए और श्री गुरु-चरण रज ललाट पर धार्य करते हुए श्री बगलामुखी के सान्निध्य व असीम कृपा से स्वयं को ओत-प्रोत करते हुए साधना मार्ग में सफलता की उच्चता का वरण करेंगे। साधक, गृहस्थ व योगीराज यदि प्रस्तुत पुस्तक में प्रदत्त विषयों का परिशीलन व अनुकरण करते हुए माँ पराम्बा पीताम्बरा के कृपा पात्र बन सकें, तो मैं स्वयं को अपने किए गए प्रयास में सफल समझूँगा।

साधकगणों से मेरा यह विनम्र अनुरोध है तथा कर्त्तव्य भी है कि इस ग्रन्थ में वर्णित प्रयोगों से आप लोगों का उपकार ही करें। यदि नाश ही करना है तो आप अपने अन्दर छिपे काम, क्रोध, लोभ, मोह और मद का नाश करें, लोगों का नहीं,

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

क्योंकि व्यक्ति के सबसे बड़े शत्रु ये पंच विकार हैं। माँ पराम्बा बगला भोग और मोक्ष दोनों की दात्री हैं, अतः आप संयम करते हुए, सत्यकार्यों को बरतते हुए, मोक्ष की कामना करके, भोगों को भोगते हुए, पीताम्बरा की अनंत कृपा से साधना की असीम शिखरता प्राप्त करें यही मेरी हृदय से कामना है। विद्या का दुरूपयोग करके इसकी प्रतिष्ठा व गरिमा को ठेस न पहुँचाएं।

यद्यपि इस ग्रन्थ की रचना करने में, सम्पादन व व्याख्या करने में मैंने यथाशक्ति सतर्कता बनाए रखी है और पूर्ण प्रयास किया है कि कहीं कोई भी त्रुटि न होने पाए, परन्तु व्यक्ति से त्रुटि हो जाना सम्भव है, इसलिए यदि कोई त्रुटि कहीं रह गई हो, तो साधक वर्ग से, मनीषियों से उसके लिए क्षमा चाहूँगा। अन्ततः यही कहूँगा कि— **रिपु-स्तम्भन-कामो बगलामुखीयुपासीत। अन्तः शत्रु-स्तम्भन-कामो-वा॥**

अर्थात् शत्रु स्तम्भन के लिए बगलामुखी की उपासना करें अथवा आन्तरिक शत्रुओं (पंच-विकारों) के स्तम्भन की इच्छा रखने वाले बगलामुखी की उपासना करें।

-काली पंडित

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

श्री बगलामुखी का परिचय

व्यष्टिरूप में शत्रुओं को नष्ट करने की इच्छा रखने वाली तथा समष्टिरूप में परमात्मा की संहार शक्ति ही बगलामुखी हैं। पीताम्बरा विद्या के नाम से विख्यात बगलामुखी की साधना प्रायः शत्रु भय से मुक्ति और वाक् सिद्धि के लिए की जाती है। इनकी उपासना में हरिद्रा माला, पीत पुष्प एवं पीत वस्त्र का विधान है। महाविद्याओं में इनका आठवाँ स्थान है।

इनके ध्यान में कहा गया है कि ये सुधा समुद्र के मध्य में स्थित मणिमय मंडप में रत्नमय सिंहासन पर विराज रही हैं। ये पीत वर्ण के वस्त्र, पीत आभूषण तथा पीत पुष्पों की ही माला धारण करती हैं। इनके एक हाथ में शत्रु की जिह्वा और दूसरे हाथ में मुद्‌गर है। **स्वतंत्र तंत्र** के अनुसार भगवती बगलामुखी के प्रादुर्भाव की कथा इस प्रकार है :—

सत्य युग में संपूर्ण एक बार जगत को नष्ट करने वाला भयंकर तूफान आया। प्राणियों के जीवन पर आए संकट को देखकर भगवान् महाविष्णु चिंतित हो उठे। वह सौराष्ट्र देश में हरिद्रा सरोवर के समीप जाकर भगवती को प्रसन्न करने के लिए तप करने लगे। श्रीविद्या ने उस सरोवर से बगलामुखी रूप में प्रकट होकर उन्हें दर्शन दिया तथा विध्वंसकारी तूफान का तुरन्त स्तंभन कर दिया। बगलामुखी महाविद्या भगवान् विष्णु के तेज से युक्त होने के कारण वैष्णवी हैं। मंगलवारयुक्त चतुर्दशी की अर्धरात्रि में इनका प्रादुर्भाव हुआ था। इस विद्या का उपयोग दैवी प्रकोप की शान्ति, धन-धान्य के लिए, पौष्टिक कर्म एवं आभिचारिक कर्म के लिए भी होता है। यह भेद केवल प्रधानता के अभिप्राय से है, अन्यथा इनकी उपासना भोग और मोक्ष दोनों की सिद्धि के लिए की जाती है।

यजुर्वेद की **काठक संहिता** के अनुसार दसों ये दिशाओं को प्रकाशित करने वाली, सुन्दर स्वरूपधारिणी विष्णु पत्नी, त्रिलोक जगत् की ईश्वरी

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कही जाती हैं। स्तंभनकारिणी शक्ति व्यक्त और अव्यक्त सभी पदार्थों की स्थिति का आधार पृथ्वीरूपा शक्ति है। बगला उसी स्तंभन शक्ति की अधिष्ठात्री दैवी हैं। शक्तिरूपा बगला की स्तंभन शक्ति से द्युलोक वृष्टि प्रदान करता है। उसी से आदित्य मंडल ठहरा हुआ है और उसी से स्वर्गलोक भी स्तंभित है। भगवान् श्री कृष्ण ने भी गीता में **'विष्टभ्याहमिदं कृत्स्नमेकांशेन स्थितो जगत्'** कहकर उसी शक्ति का समर्थन किया हैं। तंत्र में वही स्तंभन शक्ति बगलामुखी के नाम से जानी जाती है।

माता बगलामुखी को **'ब्रह्मास्त्र'** के नाम से भी जाना जाता है। ऐहिक या पारलौकिक देश अथवा समाज में दु:खद अरिष्टों के दमन और शत्रुओं के शमन में बगलामुखी के मंत्र समान कोई मंत्र नहीं है। चिरकाल से साधक इन्हीं महादेवी का आश्रय लेते आ रहे हैं। इनके बडवामुखी, जातवेदमुखी, उल्कामुखी, ज्वालामुखी तथा बृहद्भानुमुखी पाँच मंत्र भेद हैं। **कुंडिका तंत्र** में बगलामुखी के जप के विधान पर विशेष प्रकाश डाला गया है। **मुंडमाला तंत्र** में तो यहाँ तक कहा गया है कि इनकी सिद्धि के लिए नक्षत्रादि विचार और कालशोधन की भी आवश्यकता नहीं है।

बगला महाविद्या ऊर्ध्वाम्नाय के अनुसार ही उपास्य हैं। इस आम्नाय में शक्ति केवल पूज्य मानी जाती है, भोग्य नहीं। श्रीकुल की सभी महाविद्याओं की उपासना गुरु के सान्निध्य में रहकर सतर्कतापूर्वक, सफलता की प्राप्ति होने तक करते रहना चाहिए। इसमें ब्रह्मचर्य का पालन और बाहर-भीतर की पवित्रता अनिवार्य है। सर्वप्रथम बह्माजी ने बगला महाविद्या की उपासना की थी। बह्माजी ने इस विद्या का उपदेश सनकादिक मुनियों को दिया। सनत्कुमार ने देवर्षि नारद को और नारद ने सांख्यायन नामक परमहंस को इसका उपदेश दिया। सांख्यायन ने 36 पटलों में उपनिबद्ध बगला तंत्र की रचना की। बगलामुखी के दूसरे उपासक भगवान् विष्णु और तीसरे उपासक परशुराम हुए तथा परशुराम ने यह विद्या आचार्य द्रोण को बताई।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पूजन व हवन सामग्री

1. माता बगला की मूर्ति
2. बगला यंत्र
3. केले का खम्भा
4. वन्दनवार
5. चौकी
6. पीढ़ा
7. कलश
8. पञ्च पल्लव
9. गोबर
10. गोमूत्र
11. गंगाजल
12. रोरी
13. सिन्दूर
14. पंचपात्र
15. हवन पात्र
16. सप्तमृत्तिका
17. वरण सामग्री
18. नारियल
19. चम्पा का फूल
20. पीला चन्दन
21. हल्दी पिसी हुई
22. हल्दी की माला
23. पीला वस्त्र, टिकुली, आभूषण
24. पीले चावल
25. अबीर, गुलाल
26. कलावा
27. पान, सुपारी
28. पेड़ा, बताशा, बेसन का लड्डू
29. पीला जनेऊ
30. पीले फल
31. पीले पुष्प (कनेर, प्रियङ्गु)
32. हरिद्रा माला
33. धूप-दीप
34. नैवेद्य, ऋतुफल
35. कपूर
36. आसन
37. कच्ची मिट्टी का बैल
38. कच्चे चने
39. पीली सरसों
40. सरसों का तेल
41. हवन के लिए नीम या खैर की लकड़ी
42. त्रिमधु (घी, शहद, शक्कर)
43. गुग्गल
44. तुलसी, दूर्वा
45. गुरुच
46. लाजा
47. तिल-यव
48. चावल
49. गोदुग्ध
50. हरताल
51. लवण

इसके अतिरिक्त कार्यानुसार अन्य पूजन सामग्री एकत्र कर लें।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विषय सूची

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

श्री बगला प्रातः स्मरणम्

प्रातः स्मरामि मधु पूर्ण सुधा समुद्रम्,
तन्मध्य दिव्य मणिद्वीप मनोहरं च।
कल्पाटवीममित रत्न विभूष कोटम्,
श्रीमण्डपं विशद शोभि हृदि स्फुरन्तम्।।

प्रातर्नमामि मधुसूदन त्रीक्षणाब्जैः,
नीराजितं ह्यति नतैः मुकुट-प्रदीपै।
सौवर्ण वर्णमतुलं तं पाद पीठम्,
देव्या निवेषित सदंघ्रि द्वयं ललामम्।।

प्रातर्भजामि भव भूरि भयापहां ताम्,
पीताम्बरां करसु मुद्‌गर वैरि जिह्वाम्।
सु स्तम्भिनीं सु वदनां करुणार्द्र चित्ताम्,
सृष्ट्युत्पत्ति स्थिति नियामिनि ब्रह्म विद्याम्।।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

❁ बगला-उत्पत्ति ❁

पार्वती-उवाच

॥ दोहा ॥

हे आनन्दानन्द! समर्थ! कुछ युति बनाओ।
बगला प्राकट्य की अद्भुत कथा सुनाओ॥

शंकर-उवाच

हे देवेशि! सुमुखी! पहले, श्रद्धा मैं मन में लाऊँ।
तब बगला उत्पत्ति की, तुम्हें कथा सुनाऊँ॥

एक समय सतयुग में, भू-मण्डल पर तूफान उठा।
जीव, चराचर लगे बिखरने, जैसे सोया श्मशान उठा॥

प्रलय काल सा रूप भयंकर, लगा मिटाने जग चर को।
शेषनाग पर सोए विष्णु, चिन्तन में अति लीन हुए।
उग्र तपस्या करने से, स्वयं प्रभु अति क्षीण हुए॥

भई संतुष्टा त्रिपुर सुन्दरी, लखि नारायण का भाव विह्वल।
एक तेज सा फैला जग में, चमके अवनि, अम्बर, तल॥

सौराष्ट्र प्रान्त में सरोवर हरिद्रा, जहाँ भवानी प्रकट हुई।
मातृ-सरोवर, वारि-वासन, पीत-रीत अति निकट हुई॥

विख्यात हुई यह वीर रात्रि, उसी तेज के आने से।
भौमवार दिन, तिथि चतुर्दश, कुल-नक्षत्र-मकार हो जाने से॥

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मातृ शक्ति थी यह अनुपम, विष्णु श्रद्धा से विनत हुए।
पञ्च मकार से सेवित शक्ति, नयना मद से तिक्त किए॥

प्रकटा तेज, तेज से उनके, उधर प्रभु ने तेज दिया।
उन तेजों का मिलन हुआ, और बगला ने अवतार लिया॥

तब बगला महामाया ने, उस विकट प्रलय पर वार किया।
करुण हृदय से बाधित हो, जड़-चेतन का उद्धार किया॥

इसलिए माँ पीत-अम्बर में, क्षीर-हृदय पर रहती हैं।
जग-स्तम्भा, जगद्-धात्री, स्वयं कहानी कहती हैं॥

मुद्गर-धारिणी, रिपु स्तम्भा की, अद्भुत यही कहानी है।
अष्टम विद्या, जग विख्याता, महामाया महारानी है॥

॥ दोहा ॥

मंगलवार दिन चतुर्दशी हुई अवतरित मात।
बगलामुखी के जन्म की यही कथा विख्यात॥

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

श्री बगलामुखी के विषय में 21 बातें

1. **नाम**— वल्गामुखी, बगला या बगलामुखी, पीताम्बरा, ब्रह्मास्त्र विद्या।
2. **आम्नाय**—इस विद्या के दो आम्नाय हैं: 'उत्तराम्नाय' और 'दक्षिणाम्नाय'।
3. **कुल**— यह 'श्री कुल' की विद्या है।
4. **आचार**— इसका आचार वाम है, दक्षिण भी है। दोनों आचार हैं।
5. **विद्या**— 'दिवा दक्षिण- साध्याऽपि, निशि वाम-प्रसादना।' यह 'विद्या' ही कही है।
6. **शिव**— इस विद्या के शिव 'त्र्यम्बक' हैं।
7. **गणेश**— इस विद्या के गणेश 'हरिद्रा गणपति' हैं।
8. **भैरव**— इसके भैरव 'आनंद-भैरव' हैं। कोई-कोई 'मृत्युञ्जय शिव' को भी इसका भैरव कहते हैं। वे इस प्रमाण से कहते हैं कि दश महाविद्याओं में जो शिव हैं, वही भैरव भी हैं।
9. **यक्षिणी**— इस विद्या के साथ साधना-योग्य यक्षिणी 'विडालिका' नाम की है।
10. **अंग-विद्या**— मृत्युञ्जय मंत्र, बटुक-मंत्र, पञ्चास्त्र (1.आग्नेय, 2. वारुण, 3. पर्जन्य, 4. सम्मोहन, 5. पाशुपत), कुल्लुका, तारा, स्वप्नेश्वरी और योगिनी मंत्र— ये इसकी अंग-विद्याएँ हैं।
11. **कुल्लुका**—इस विद्या की कुल्लुका 'ॐ हूं क्ष्रौं'— यह त्र्यम्बक मंत्र है। इस मंत्र को शिर पर 10 बार जपना चाहिए।
12. **सेतु**— इस विद्या का 'सेतु' मंत्र 'ह्रीं स्वाहा' है। इसे कण्ठ पर 10 बार जपते हैं।
13. **महासेतु**— इसका 'महासेतु' मंत्र एक्षाकर 'स्त्रीं' है। इसे हृदय में 10 बार जपते हैं।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

14. **निर्वाण**— इस विद्या की मातृका 'ह्रूं ह्रीं श्रीं' से सम्पुटित 'मूल-मंत्र' का जप ही इसकी निर्वाण विद्या है। पुरश्चरण व पर्वादि विशेष अवसर पर करें, नित्य नहीं।

15. **दीपन**—इसके दीपन के लिए मूल-मंत्र को योनि-बीज 'ईं' से पुटित कर 7 बार जपें। ऐसा भी नित्य नहीं, पुरश्चरणादि में या पर्वादि में ही करें।

16. **जीवन**— मूल-मंत्र के अन्त में 'ह्रीं ॐ स्वाहा' मंत्र 10 बार जपें। यह भी नित्य नहीं।

17. **मुख-शोधन**— त्र्यक्षरी 'ऐं ह्रीं ऐं' से नित्य प्रायः मुखशोधन करें। दातून करने के बाद अपनी जिह्वा पर अनामिका से जलसंकेत से इसे लिखकर 10 बार जपें।

18. **शापोद्धार**— 'ॐ ह्लीं बगले! रुद्र-शापं विमोचय-विमोचय ॐ ह्लीं स्वाहा' मंत्र के पूर्व 10 बार जपें। यह प्रयोग पुरश्चरणादि में, विशेषावसर पर ही करें, नित्य नहीं।

19. **उत्कीलन**— 'ॐ ह्रीं स्वाहा' इस चतुरक्षरी को मंत्र के आदि में 10 बार जपें। यह भी पुरश्चरणादि में और पर्वादि विशेषावसर पर ही करणीय है।

20. **भाव**— इस विद्या की साधना में 'वीर-भाव' और 'दिव्य-भाव' दो भाव हैं। आदि में 'वीर-भाव' से ही चलें। क्रमशः 'तुरीय श्रम' तक 'दिव्य-भाव' प्राप्त हो जाता है।

21. **क्रम**—इस विद्या की साधना 'सौभाग्य-क्रम' से ही सर्व-सिद्धिदायी होती है अर्थात् शक्ति-साधना, सौभाग्य-पूजादि 'कुलार्णव' तन्त्रोक्त करें।

❀❀❀

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

शत्रु बाधा निवारण व बगलामुखी

शत्रु संहार व शत्रु बाधा निवारण के लिए अगर कोई साधना है, तो वह है भगवती बगलामुखी साधना। राजसत्ता पर बैठा व्यक्ति, चाहे वह कोई भी हो, अनिवार्य रूप से इस साधना की प्राप्ति के लिए आतुर होता है। इतिहास साक्षी है कि भारत के बहुत से राष्ट्रपति तथा प्रधानमंत्री दतिया में बगलामुखी के सिद्ध पीताम्बर पीठ पर अपना माथा टेकने आते रहे हैं।

बगलामुखी को स्तंभन की देवी माना जाता है। शत्रु बाधा हो, या कोर्ट-कचहरी का चक्कर, बगलामुखी साधना से अनुकूलता की प्राप्ति होती ही है। भगवती बगलामुखी के मंत्र के बारे में यह कहा जाता है कि यह अकेला मंत्र प्रचंड तूफान को भी रोकने में पूर्णत सक्षम है। ऐसे अद्वितीय मंत्र की साधना करना जीवन का सौभाग्य होता है। अपनी जीवन रक्षा तथा विपरीत परिस्थिति से बचाव के लिए यह अद्वितीय है।

1. पूर्ण ब्रह्मचर्य का पालन करें।
2. साधना क्रम में स्त्री स्पर्श, चर्चा, संसर्ग का पूर्णतः वर्जित (जाग्रत और स्वप्नावस्था, किसी में भी) होता है।
3. साधना डरपोक व्यक्तियों को तथा बच्चों को नहीं करनी चाहिए। बगलामुखी देवी अपने साधक को भयभीत करके परीक्षा लेती हैं। साधना काल में भयानक आवाज़ें या विचित्र आभास हो सकते हैं। इसलिए दृढ़ इच्छा शक्ति और संकल्प से युक्त व्यक्ति ही साधना करें।
4. साधना से पहले गुरु का ध्यान और पूजन अनिवार्य है।
5. हरिद्रा गणपति का पूजन तथा 1 माला जप अवश्य करें।
6. बगलामुखी के भैरव मृत्युंजय हैं। इसलिए साधना के पूर्व एक माला महामृत्युंजय मंत्र का जाप करें।
7. पीले रंग के वस्त्र तथा आसन होने चाहिए।
8. साधना उत्तर दिशा की ओर देखते हुए करें।
9. मंत्र जाप हल्दी की माला से करें। हल्दी की माला बाज़ार में मिल जाती है।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

यदि न मिले, तो हल्दी की गाँठों को पानी में भिगो दें। वे फूलकर मुलायम हो जाएगी। तब 108 टुकड़े काटकर माला गूँथ लें। एक टुकड़ा सुमेरु अर्थात् माला के प्रारम्भ को इंगित करने वाला बीच का मनका बनाकर लगा लें। इस प्रकार 109 टुकड़ों की ज़रूरत होगी। याद रखें कि काटने और गूँथने का काम गीले टुकड़ों से ही करें। यदि सूखे टुकड़ों को छेदने की कोशिश करेंगे तो वे टूट जाएँगे। अब इस गुंथी हुई माला को सुखा लें। माला तैयार है। इससे मंत्र जाप कर सकते हैं।

10. जप के बाद यह माला अपने गले में धारण कर लें। इस बात का ध्यान रखें कि इसे कोई अन्य व्यक्ति स्पर्श न करे। यदि इस बात का डर हो तो जाप के बाद माला साधना कक्ष में ही रखें।
11. साधना रात्रि में 9 बजे से 12 बजे के मध्य आरम्भ करनी चाहिए।
12. मंत्र के जाप की संख्या स्वयं की क्षमतानुसार निश्चित करें। इस प्रकार कम से कम 16 दिन तक मंत्र जाप करें।
13. मंत्र जाप शुक्ल पक्ष में ही आरम्भ करें। नवरात्रि सर्वश्रेष्ठ है।
14. मंत्र जाप के पहले हाथ में जल लेकर अपनी इच्छा स्पष्ट रूप से बोलकर व्यक्त करें। गलत इच्छा या परपीड़ा के लिए प्रयोग न करें।
15. मंत्र जाप के समय यदि आवाज़ अपने आप तेज़ हो जाए, तो उसे न रोकें।
16. साधना काल में इसकी चर्चा किसी से न करें।
17. साधना काल में तेल या घी का दीपक अवश्क जलाएँ।

शत्रु नाश के लिए बगलामुखी मंत्र

ॐ ह्लीं बगलामुखी सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं, स्तम्भय जिह्वां कीलय बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा।''

बगलामुखी बीज मंत्र— **ह्लीं**

अपनी क्षमतानुसार शत्रु नाश या बीज मंत्र का उपयोग करें। पुरश्चरण अर्थात् पूर्ण अनुष्ठान 1,25,000 मंत्रों का या 1250 माला जाप से पूर्ण माना जाता है।

❁❁❁

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दस महाविद्याओं में अभूतपूर्व महाशक्ति बगलामुखी

- *दस महाविद्याओं में अभूतपूर्व महाशक्ति बगलामुखी*
- *महाविद्या बगलामुखी की उपासना*

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

1

दश महाविद्याओं में अभूतपूर्व महाशक्ति बगलामुखी

यद्यपि अनादिकाल से आदि शक्ति की एक ही उपासना पद्धति थी, परन्तु, साधकों की रुचि भेद के कारण यह पद्धति विविध उपासना पद्धतियों में परिणत होते हुए दश महाविद्याओं के रूप में भी प्रचलित हो गई।

दश महाविद्याओं में बगलामुखी की उपासना प्रायः संकट के समय पर विशेष रूप से की जाती है। बगला देवी शत्रुओं के मुख और वाणी को स्तंभित कर देती हैं, जिह्वा को कीलित कर देती हैं तथा बुद्धि को नष्ट कर देती हैं। एक तंत्र शास्त्र के अनुसार बगलामुखी का अर्थ निम्न है—

वकारे वारुणी प्रोक्ता, गकारे सिद्धिदा स्मृता, लकारे पृथिवी चैव चैतन्या च प्रकीर्तिता जगन्माता जगद्धात्री जगतामुपकारिणी।

यजुर्वेद के आभिचारिक प्रकरण में बगलामुखी देवी का वैदिक रूप कुछ इस प्रकार से वर्णित है।

रक्षोहणं वलगहनं वैष्णवीमिदमहं तं वलगमुत्किराति। यं मं निष्टयो यममसतया निचखानेदमहंत निचखानोत्कृत्या किरामि।

इसी प्रकार अथर्ववेद के पंचम काण्ड के छठे अनुवाक् में बगलामुखी देवी का सूक्त उपलब्ध है। सूक्त की कुछ पंक्तियाँ ये हैं—

या ते चक्रुरामे पात्रे यां चक्रुर्मिश्रधान्ये, या ते चक्रूरमूलायां वलगं वा चशच्याम् कृत्याकृतं वलगिनं मूलिनं शथऽप्वस्तया।

बगलामुखी के स्वरूप वर्णन में **''पीतांबरोपनिषद्''** नाम से एक उपनिषद् भी प्राप्त होता है। रुद्रयामल तंत्र, मेरु तंत्र, सांख्यायन तंत्र, षट्कर्म

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दीपिका तथा अग्निपुराण के पाशुपतदानाध्याय में भी इस देवी के माहात्म्य का वर्णन विस्तार से उपलब्ध होता है। मारण, मोहन, उच्चाटन आदि अनेक क्रियाओं के लिए, शत्रु को परास्त करने के लिए, मुकदमे में विजय प्राप्ति के लिए, फँसा हुआ पैसा निकालने के लिए, ऐसे अनेक कार्यों के लिए इस देवी की विभिन्न रूपों में उपासना की जाती है। विधिवत् गुरु से दीक्षा प्राप्त व्यक्ति ही इस देवी की उपासना करने का अधिकारी माना जाता है।

सांख्यायन तंत्र के अनुसार बिना दीक्षा प्राप्त किए यदि कोई साधक पुस्तक में लिखे मंत्र को देखकर जप करने लगता है, तो उसके चंडाल हो जाने की संभावना बन जाती है तथा साधना का कोई भी फल प्राप्त नहीं हो पाता। अतः दीक्षा प्राप्त करना अनिवार्य है। इनकी आराधना में त्रुटियों की संभावनाएँ रहती हैं जिनसे भारी नुकसान उठाना पड़ता है। उदाहरण के तौर पर यदि बिना कवच धारण किए कोई व्यक्ति उपासना करने लग जाए तो योगिनियाँ उस साधक का रक्त पान करना प्रारम्भ कर देती हैं। साधक के विक्षिप्त होने की भी पूर्ण संभावना रहती है।

बगलामुखी मंत्र में 36 अक्षर हैं। देवर्षि नारद इसके ऋषि हैं। इसका छंद बृहती है तथा बगलामुखी देवता हैं। मंत्र इस प्रकार है— **ॐ ह्लीं बगलामुखी सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं, स्तम्भय जिह्वां कीलय बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा।**

चंपा के फूल, दूर्वा, शहद तथा धान की खीलें पीताम्बरा को बहुत प्रिय हैं। इन्हें सबसे अधिक प्रिय है पीत वर्ण। यह स्वयं भी पीत वस्त्र धारण करती हैं, सोने के सिंहासन पर विराजमान होती हैं, चंपा के पुष्पों की माला धारण किए हुए हैं। इनके हाथ में मुद्‌गर, पाश, वज्र तथा शत्रु की जिह्वा है तथा ये स्वर्णाभूषणों से अलंकृत हैं। साधक को भी उपासना करते समय पीत वस्त्र धारण करना है, हरिद्रा (हल्दी) की माला पर जप करना है, पीले आसन पर बैठना है, पीला ही खान-पान और पीले का ध्यान करना है। पीले पुष्प तथा पीली वस्तुओं से ही पूजा करने का विधान है।

भगवती के मंत्रों का 1 लाख जाप एक सम्पूर्ण अनुष्ठान कहलाता है। दशांश होम करते समय चतुरस्र, त्रिकोण तथा **षट्‌कोणीय यज्ञ कुंड,** मारण-मोहन उच्चाटनादि संकल्पानुसार बनाया जाता है। समयाचार तंत्र के अनुसार बगलामुखी के लिए बलि देने हेतु मंत्र अग्रलिखित है:—

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं ह्रीं बगलामुखी सर्वशत्रुस्तम्भिनी सर्वराजवशंकरी एष ते बलिः गृहन ममाभीष्टं कुरु-कुरु हुं फट् स्वाहा।

इसी प्रकार भगवती के यंत्र की स्थापना, अर्चना, अभिषेक तथा तर्पण आदि द्वारा पूजा की जाती है। तर्पण गुड़ोदक द्वारा प्रशस्त माना गया है। बगलामुखी की आराधना, उपासना, जप, ध्यान आदि का समुचित समय रात्रि 10 बजे से प्रातःकाल 4 बजे तक उत्तम माना जाता है। भगवती को रविवार और गुरुवार अधिक प्रिय हैं। मध्यप्रदेश के जिला दतिया शहर में **''पीतांबरापीठ''** नाम से बगलामुखी देवी का सिद्ध पीठ है।

❀❀❀

महाविद्या बगलामुखी की उपासना

देवी बगलामुखी का प्रभाव विशेष रूप से शत्रु दमन के कार्य में दृष्टिगत होता है। वाद-विवाद, प्रतिरोध, मामला-मुकद्दमा, शत्रुकृत उपद्रव, तांत्रिक षट्कर्म, अभिचार कृत्य (उच्चाटन, स्तंभन और मारण) आदि जैसी समस्याओं के निराकरण में माँ बगलामुखी तंत्र की सफलता असंदिग्ध रहती है।

श्री बगलामुखी को **''ब्रह्मास्त्र''** के नाम से भी जाना जाता है। साथ ही **''श्री बगला''** को तामसी मानना उचित नहीं, क्योंकि इनके आभिचारिक कृत्यों में रक्षा की ही प्रधानता होती है और यह कार्य इसी शक्ति द्वारा होता है।

उपासना विधि

सबसे पहले किसी शुभ मुहूर्त्त में सोने, चाँदी या ताँबे के पतरे पर माँ बगलामुखी यंत्र की रचना करें। यंत्र यथासंभव उभरे हुए रेखांकन में हो। यंत्र तैयार हो जाने पर इनकी प्राण-प्रतिष्ठा एवं पूजा अनिवार्य है। प्राण-प्रतिष्ठा के उपरान्त यंत्र को पूजा गृह या घर-मकान के किसी एकान्त स्थान में (वह स्थान साफ-सुथरा और पवित्र होना चाहिए) लकड़ी के पीढ़े पर पीले वस्त्र का आसन बिछाकर, रवि पुष्य या गुरु पुष्य योग में देवी बगलामुखी के चित्र के साथ स्थापित करें।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

यंत्र स्थापना के पश्चात् उसकी पूजा तथा मंत्र जाप करें। जप के समय सबसे पहले देवी बगलामुखी का विनियोग करें। इसके लिए दाएँ हाथ में जल लेकर निम्न मंत्र के उच्चारण सहित जल को चित्र और यंत्र के सम्मुख छोड़ दें।

विनियोग

ॐ अस्य बगलामुखी मंत्रस्य नारद ऋषिः, त्रिष्टुप्छंदः, श्री बगलामुखी देवता, ह्लीं बीजं, स्वाहा शक्तिः, प्रणवः कीलकं ममाभीष्ट सिद्धयर्थे जपे विनियोगः।

इसके बाद करन्यास, हृदयादिन्यास करके देवी का ध्यान करें।

ऋष्यादिन्यास

ॐ नारद ऋषये नमः शिरसि, त्रिष्टुप्छंदसे नमः मुखे; बगलामुख्यै नमः हृदये; ह्लीं बीजाय नमः गुह्ये; स्वाहा शक्तये नमः पादयोः, प्रणव कीलकाय नमः नाभौ। मम संकल्प सिद्धयर्थे जपे विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

करन्यास

ॐ ह्लीं अंगुष्ठाभ्यां नमः, बगलामुखी तर्जनीभ्यां नमः, सर्वदुष्टानां मध्यमाभ्यां नमः, वाचं मुखं पदं स्तंभय अनामिकाभ्यां नमः, जिह्वां कीलय कनिष्ठिकाभ्यां नमः, बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादिन्यास

ॐ ह्लीं हृदयाय नमः, बगलामुखी शिरसे स्वाहा, सर्वदुष्टानां शिखायै वषट्, वाचं मुखं पदं स्तंभय कवचाय हुं, जिह्वां कीलय नेत्रत्रयाय वौषट्, बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा अस्त्राय फट्।

इसके पश्चात् देवी का ध्यान करें।

मन्त्राक्षरन्यास

ॐ नमो मूर्ध्नि। ह्लीं नमो भाले। बं नमो भ्रुवोर्मध्ये। गं नमो दक्षिणनेत्रे। लां नमो वामनेत्रे। मुं नमो दक्षिण श्रोत्रे। खिं नमो वामश्रोत्रे।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सं नमो दक्षिण नासायां। वं नमो वाम नासायां। दुं नमो दक्षिण गण्डे। ष्टां नमो वाम गण्डे। नां नमो ऊर्ध्वोष्ठे। वां नमो अधरोष्ठे। चं नमो दक्षिणांसे। मुं नमोवामांसे। खं नमो गले। यं नमो दक्षिण बाहुमूले। दं नमो दक्षिण हस्तमध्ये। स्तं नमो दक्षिण मणिबन्धे। भं नमो दक्षिण हस्तांगुलि मूले। यं नमो दक्षिण हस्तांगुल्यग्रे। जिं नमो वाम बाहुमूले। ह्वां नमो वाम हस्तमध्ये। कीं नमो वाम हस्त मणिबन्धे। लं नमो वाम हस्तांगुलिमूले। यं नमो वाम हस्तांगुल्यग्रे। बुं नमो दक्षिणोरौ। द्धिं नमो जानुनि। विं नमो दक्षिण पादांगुल्यग्रे। नां नमो दक्षिण पादांगुलि मूले। शं नमो दक्षिण पादांगुल्यग्रे। यं नमो वामोरौ। ह्लीं नमो वाम जानुनि। ॐ नमः वाम गुल्फे। स्वां नमो वाम पादांगुलिमूले। हां नमो वाम पादांगुल्यग्रे।

ध्यान मंत्र

मध्ये सुधाब्धि मणि मंडप रत्नवेद्यां सिंहासनो परिगतां परिपीत वर्णाम्। पीतांबराभरणमाल्य विभूषितांगीं देवीं भजामि धृतमुद्गर वैरिजिह्वाम्॥ जिह्वाग्रमादाय करेण देवीं। वामेन शत्रुन् परिपीडयंतीम्॥ गदाभिघातेन च दक्षिणेन। पीतांबराढ्यां द्विभुजां नमामि॥

मंत्र

ॐ ह्लीं बगलामुखी सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं, स्तम्भय जिह्वां कीलय बुद्धि विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा।

पहले ध्यान मंत्र द्वारा देवी का चिंतन-स्तवन करना चाहिए। तत्पश्चात् बगलामुखी मंत्र का जाप करना चाहिए। जप करने के उपरान्त तर्पण-मार्जन का भी विधान है। हवन और ब्राह्मणों को भोजन प्रत्येक स्थिति में अत्यन्त आवश्यक है। साथ ही निम्न बातों का विशेष ध्यान रखना चाहिए :—

1. साधना काल में पीले वस्त्र, पीले रंग का ऊनी आसन, पीले पुष्प, पीला चंदन और पीली माला का उपयोग करना चाहिए। नैवेद्य भी पीला होना चाहिए।
2. मंत्र जप से पूर्व (ध्यान के पश्चात्) 10 बार **'ॐ ह्लीं ऐं'** के उच्चारण द्वारा वाणी का शोधन करना चाहिए।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

3. मंत्र का जप मानसिक रूप से करना चाहिए।

4. मंत्र जप के पूरे समय में यंत्र के सम्मुख घृत का दीप जलता रहना चाहिए।

5. साधना काल में ब्रह्मचर्य, सात्विकता, भूमि शयन, संयम अनिवार्य है।

6. साधना काल में अलौकिक अनुभूतियों से न तो तनिक भी विचलित होना चाहिए और न ही किसी से इनकी चर्चा ही करनी चाहिए।

7. चन्द्रमा की विपरीत स्थिति में (जन्म राशि से चतुर्थ, अष्टम या द्वादश भाव में स्थित चन्द्रमा) साधना का प्रारम्भ सर्वथा निषिद्ध है। इस नियम की अवहेलना करने से साधक का अनिष्ट होने की पूरी संभावना रहती है।

8. साधना काल में विभिन्न विघ्न बाधाओं से त्राण के लिए मंत्र जाप के पूर्व (ध्यान मंत्र से भी पहले) निम्न "**बगलामुखी कवच**" का पाठ अवश्य करना चाहिए।

ॐ ह्लीं ऐं हृदयं पातु पादौ श्री बगलामुखी ललाटं सततं पातु दुष्टग्रह निवारिणी रसनां पातु कौमारी भैरवी चक्षुषोर्म्मम् कटौ पृष्ठे महेशानी कर्णो शंकर भामिनी वर्जितानी तु स्थानानि यानि च कवचेन ही तानि सर्वाणि में देवी सततं पातु स्तंभिनी।

उपासना

देवी बगलामुखी की उपासना, मंत्र, यंत्र और तंत्र किसी भी माध्यम से की जाए, निश्चित रूप से वह चमत्कारी प्रभाव की सृष्टि करती है। मंत्र और यंत्र का उपयोग करते हुए बगलामुखी तंत्र की साधना की जाए तो निस्संदेह विशेष प्रभाव की अनुभूति होती है। इस तंत्र साधना के चमत्कार से प्रभावित एवं चमत्कृत होकर प्रसिद्ध आंग्ल विद्वान समर फील्ड ने लिखा था कि इस तंत्र की शक्ति का सामना करने में विश्व की संयुक्त शक्ति भी सफल नहीं हो सकती है, क्योंकि यह अजेय है। बगलामुखी तंत्र वस्तुतः शत्रु दमन के लिए विश्व प्रसिद्ध है।

पुराणों के अनुसार सबसे पहले "**श्री बगला**" की साधना श्री प्रजापति ने वैदिक रीति से की और वह सृष्टि की संरचना में सफल हुए। श्री प्रजापति ने इस

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

महाविद्या का उपदेश सनकादिक मुनियों को दिया। सनत्कुमार ने श्री नारद को तथा श्री नारद ने सांख्यायन नामक परमहंस को बताया तथा सांख्यायन ने 36 पटलों में उपनिबद्ध "**बगला तंत्र**" की रचना की। दूसरे उपासक भगवान् श्री विष्णु हुए, जिनका वर्णन "**स्वतंत्र तंत्र**" में मिलता है। तीसरे उपासक श्री परशुराम जी हुए तथा परशुराम जी ने यह विद्या आचार्य द्रोण को बताई। महर्षि च्यवन ने इसी विद्या के प्रभाव से इन्द्र के वज्र को स्तभिंत कर दिया था।

श्रीमद्गोविन्दपाद की समाधि में विघ्न डालने वाली रेवा नदी का स्तंभन श्री शंकराचार्य ने इसी विद्या के बल से किया था। महामुनि श्री निंबार्क ने एक परिव्राजक को नीम वृक्ष पर सूर्य का दर्शन इसी विद्या के प्रभाव से कराया था। अतः साधकों को चाहिए कि "**श्री बगला**" की विधिपूर्वक उपासना कर इस मानव जीवन को सफल बनाएँ।

❀❀❀

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बगलामुखी पूजन का सामान्य विधान

- गणेश पूजा
- ध्यान मंत्र
- नमस्कार मंत्र
- संक्षिप्त षोडशोपचार पूजा
- गणेश कवच
- संकल्प
- पूजा गृह प्रवेश
- वास्तु पूजा
- मुख्य दीप स्थापना
- दीप स्थापना
- दीप स्तुति
- निम्न मंत्रों से दिशाओं का बंधन
- भैरव पूजन
- आसन शोधन
- गुरुओं का अर्चन
- वंदना
- गुरु पादुका मंत्र
- गुरु को पूर्ण समर्पण

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

2

बगलामुखी पूजन का सामान्य विधान

।। ॐ गं गणपतये नमः ।।

गणेश पूजा

गणेश आसन–दक्षिण दिशा में रखें

पूजा-मंत्र ॐ एकदन्ताय विद्महे वक्रतुण्डाय
धीमहि तन्नो दन्ती प्रचोदयात्।।

(इस गणेश गायत्री मंत्र से आवाहन आदि मुद्राओं द्वारा गणेश स्थापना करें)

ध्यान मंत्र

एकदन्तं चतुर्हस्तं पाशांकुशधारिणम्।
अभयं वरदं हस्तैः विभ्राणं मूषकध्वजम्।।
रक्तं लम्बोदरं शूर्पकर्णकं रक्तवाससम्।
रक्त गंधानुलिप्ताङ्ग रक्तपुष्पैः सुपूजितम्।।
भक्तानुकम्पिनं देवं जगत्कारणमच्युतम्।
आविर्भूतं च सृष्ट्यादौ प्रकृते पुरुषातपरम्।
एवं ध्यायति यो नित्यं स योगी योगिनांवरः।।

नमस्कार मंत्र

(योनि मुद्रा प्रदर्शन करें)

नमो व्रातपतये नमो गणपतये नमः प्रमथपतये नमस्तेऽस्तु,
लम्बोदरायैकदन्ताय विघ्नविनाशिने
शिवसुताय श्रीवरदमूर्तये नमो नमः।।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

संक्षिप्त षोडशोउपचार पूजा

एतत् पाद्यं श्रीलम्बोदराय निवेदयामि नमः।

(पुष्प-चंदन-गंध मिश्रित जल चरणों में अर्पित करें)

इदं अर्घ्यं श्री गजाननाय निवेदयामि नमः।

(शंख में जल लेकर अर्घ्य दें)

इदमाचमनीयं श्री गणाध्यक्षाय निवेदयामि नमः।

(अश्वत्थ-पत्र से आचमन के लिए जल दें)

मन्दाकिन्यास्तु यद्वारि सर्वपापहरं शुभम्।
तदिदं कल्पितं देव! स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

(स्नान कराएं)

इदं परिधेय वस्त्रं, इदं उत्तरीयवासश्च श्री गणेशाय निवेदयामि नमः।

(परिधेय तथा उत्तरीय दो वस्त्र भेंट करें)

नवभिः तन्तुभिर्युक्तंत्रिगुणं देवतामयम्। उपवीतं मयादत्तं गृहाण परमेश्वर, ॐ गणेशाय नमः यज्ञोपवीतं समर्पयामि।

(यज्ञोपवीत भेंट करें)

विलेपनं सुरश्रेष्ठ गृहाण परमेश्वर। ॐ गणेशाय नमो नमः, चन्दनं समर्पियामि।

(चन्दन समर्पित करें)

श्री विघ्नविनायकाय अक्षतान् समर्पयामि, नमः।

(अक्षत भेंट करें)

इमानि पुष्पाणि श्री गणेशाय निवेदयामि, नमः।

(पुष्प समर्पित करें)

इमं धूपं श्री गणेशाय निवेदयामि, नमः।

(धूप भेंट करें)

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

इमं दीपं श्री गणेशाय निवेदयामि, नमः।
(दीप समर्पित करें)

इदं नैवेद्यं श्री गणेशाय निवेदयामि, नमः।
(भोग में लड्डू चढ़ाएं, धेनु मुद्रा प्रदर्शित कर प्रसाद अर्पित करें)

एतत् ताम्बूलं श्री गणेशाय निवेदयामि, नमः।
(पान, सुपारी, इलायची, लौंग एक साथ भेंट करें)

इमं दक्षिणां श्री गणेशाय निवेदयामि, नमः।
(मुद्रा भेंट करें)

श्री गणेशाय नमः कर्पूर-नीराजनं समर्पयामि।
(कपूर ले आरती करें)

श्री गणेशाय नमः प्रदक्षिणां समर्पयामि।
(मानसिक पाँच परिक्रमा करें)

गणेश-कवच

ॐ नमस्ते गणपतये। त्वमेव प्रत्यक्षं तत्वमसि।
त्वमेव केवलं कर्तासि। त्वमेव केवलं धर्तासि।
त्वमेव केवलं हर्तासि। त्वमेव सर्वं खल्विदं ब्रह्मासि।
त्वं साक्षात् आत्मासि नित्यम्।।
ऋतं वच्मि। सत्यं वच्मि। अव त्वं माम्। अव वक्तारम्।
अव श्रोतारम्। अव दातारम्। अब धातारम्। अव अनूचानम्।
अव शिष्यम्। अव पश्चात्तात्। अव पुरस्तात्। अव चोत्तरात्तात्। अव दक्षिणात्तात्। अव चोर्ध्वत्तात्। अव अधरात्तात्-सर्वतो मां पाहि-पाहि समन्तात्।।

संकल्प

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः। ॐ नमः परमात्मने श्री ब्रह्मणो द्वितीय परार्धे श्री श्वेतवराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरेऽष्टाविंशतितमे कलियुगे

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

प्रथमेचरणे जम्बूद्वीपे भरतखण्डे आर्यावर्तान्तर्गतब्रह्मवर्तैक देशे पुण्य प्रदेशे अमुक संवत्सरे मासानामासे अमुक मासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुक वासरे अमुक नक्षत्रे अहं श्री बगलाभगवती प्रीत्यर्थं श्री बगला आराधन्नां च करिष्ये।

पूजा गृह-प्रवेश

ॐ ऐं ह्लीं श्रीं द्वाराधिष्ठित् गणेशादि देवताभ्यो नमः।

ॐ मं महोदराय नमः। ॐ भं भैरवाय नमः।

(तीन बार बोलकर द्वार पर स्थित गणपति आदि देवताओं को प्रणाम करें।)

वक्रतुण्ड महाकाय सूर्यकोटि समप्रभः। गणेशाय नमस्तुभ्यं अनुज्ञां दातुमर्हसि।

(पूजागृह में प्रवेश करते समय अपनी आत्मा में महान ईश्वरीय तेज का संधान करें।)

(पूजागृह में बाएं अंग को न रखकर पहले दाएं पाँव तथा शरीर को आगे बढ़ाएं।)

अंदर पहुंचते ही इस मंत्र का उच्चारण करें।

ॐ अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भुवि स्थिताः।
ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया।।
अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतो दिशः।
सर्वेषां अविरोधेन पूजाकर्म समारभे।।

हुं फट् स्वाहा (उक्त मंत्रों को पढ़ते समय तिल, सरसों और चावलों को बखेरना है)

वास्तु-पूजा

तत्पश्चात् नैर्ऋत्य कोण में सर्पाकार वास्तु देवता को स्थापित करें।

(पंचोपचार विधि से आवाहन-स्थापनादि की मुद्रा प्रदर्शन करते हुए इस मंत्र से पूजा करें।)

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मंत्र-ॐ नैर्ऋत्कोणे वास्तुपुरुषाय नमः।

(पंचोपचार पूजा इसी मंत्र से करें)

मुख्यदीप स्थापना

(हल्दी से लिपे-पुते पीले स्थान पर पीले लेपन (चावल-हल्दी-चंदन का लेप या घोल) से ईशान में त्रिकोण बनाकर उसमें बीज मंत्र लिखें। फिर निम्न मंत्र का उच्चारण कर 36 पीले तंतुओं वाला स्वर्ण अथवा पीतल का दीपक जलाएं।

मंत्र

भो दीप! देवी स्वरूपस्त्वं कर्मसाक्षी ह्यविघ्नकृत।
यावत् कर्म समाप्तिः स्यात् तावत् त्वं सुस्थिरो भव।।

(दीप की गंध और पीले पुष्पों से पंचोपचार पूजा करें)

"**ॐ जयध्वनि मन्त्रमातः स्वाहा**" मंत्र कहकर घंटा बजावें।

अन्य दो दीपकों का प्रज्वलन

(त्रिकोण में बीज मंत्र लिखकर ही हो।)

प्रथम घी का दीपक मैया के दायें तरफ।

और द्वितीय पीले तेल का दीपक मैया के बाँये तरफ प्रज्ज्वलित करें।

दीप-स्थापना

(द्वितीय एवं तृतीय)

दीप-पूजा मंत्र

"**ॐ ऐं ह्लीं रक्तवर्णद्वादशशक्ति युक्ताय दीपनाथाय नमः।**"

दीप-स्तुति

भो दीप! देवी स्वरूपस्तवं कर्मसाक्षी ह्यविघ्नकृत्।
यावत् कर्म समाप्तिः स्यात् तावत् त्वं सुस्थिरो भव।।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

भक्तयादीप प्रवक्ष्यामि देवाय परमात्मने।
त्राहि मां निर्यात् घोरात् दीपज्योति नमोस्तुऽते।।
(तृतीय दीप को भी इसी पद्धति से जलाएं)

निम्न मंत्रों से दिशाओं का बंधन करें

ॐ पूर्वे रक्षतु वाराहः आग्नेय्यां गरुडध्वजः।
दक्षिणे पद्मनाभस्तु नैर्ऋत्यां मधुसूदनः।।
पश्चिमे पातुगोविन्दो वायव्यां तु जनार्दनः।
उत्तरे श्रीपति रक्षेत् ऐशान्यां तु महेश्वरः।।
ऊर्ध्वं गोवर्धनो रक्षेद् हयधोऽनन्तस्तथैव च।
एवं दश दिशो रक्षेद् वासुदेवौ जनार्दनः।।
रक्षाहीनं तु यत्स्थानं रक्षत्वीशो ममाद्रिधृक्।
यदत्र संस्थितं भूतं स्थानमाश्रित्य सर्वदा।।
स्थानं त्यक्त्वा तु तत्सर्वं यत्रस्थं तत्र गच्छतु।
आपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतो दिशः।।
सर्वेषां अविरोधेन पूजाकर्म समारभे।

भैरव पूजन

पूजा के लिए भैरव आज्ञा लेना।
तीक्ष्णदन्त महाकाय कल्पान्त दहनोपमम्।
भैरवाय नमस्तुभ्यं अनुज्ञां दातुमर्हसि।।
(भैरव की पंचोपचार पूजा दक्षिण दिशा में करें।)

मंत्र-भं भैरवाय नमः।

आसन-शोधन

(तांत्रिक विधि)

विनियोग-पृथ्वीति मंत्रस्य मेरुपृष्ठ ऋषिः सुतलं

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

छन्दः कूर्मो देवता आसन पवित्र–करणे विनियोगः।

(जलांजलि विसर्जित करें।)

मंत्र–"ॐ रक्ष रक्ष हुं फट् स्वाहा।"

कहकर भूमि का तीन बार प्रोक्षण करें। तत्पश्चात् भूमि पर 'त्रिकोण' बनाकर उसमें माया बीज अर्थात् 'ह्लीं' अक्षर को हल्दी से लिखें और इस मंत्र से उस त्रिकोण बिन्दु का पीले अक्षत, पीत पुष्प, पीत गंधादि से पूजन करें। फिर पीले रूमाल (वस्त्र) से ढक दें। उसके ऊपर आसन लगाएं और धेनु मुद्रा का प्रदर्शन करें।

आसन के ऊपर से ही उस त्रिकोण बिन्दु में **गं गणपतये नमः ॐ सं सरस्वत्यै नमः।** वायव्य दिशा में **ॐ दुं दुर्गायै नमः।** ईशान में **ॐ क्षं क्षेत्रपालाय नमः।** इस प्रकार से पूजन करके आसन की ओर देखें। फिर यह मंत्र पढ़ें–

पृथ्वी त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता।
त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम्।।

इस प्रकार पृथ्वी की प्रार्थना करके पूर्व दिशा की ओर मुँह करके पद्म आसन में बैठ जाएं।

गुरुओं का अर्चन

(साधक पीठ के वाम भाग में गुरुओं को आसन दें)

स्थापना आदि के मंत्रः

ॐ गुरुभ्यो नमः। परम गुरुभ्यो नमः। परमेष्ठि गुरुभ्यो नमः। परात्पर गुरुभ्यो नमः। सर्व गुरुभ्यो नमः। अस्मद् गुरुभ्यो नमः। ॐ गुरुर्ब्रह्माः गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः। गुरुः साक्षात् परब्रह्मः तस्मै श्री गुरुवे नमः।

वंदना

श्री नाथादिगुरुत्रयं गणपति पीठत्रयं भैरवम्।
सिद्धौघ वटुकत्रय पादयुगं दूतीत्रयं मण्डलम्।।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

वीराद्य अष्ट चतुष्कः षष्ठिनवकं वीरावलीपंचकम्।
श्रीमन्मालिनी मन्त्रराज सहितं वन्देगुरोर्मण्डलम्।।
वन्दे गुरुपद द्वन्द्वनवाङ्मनसगोचरम्।
रक्तशुक्ल- प्रभामिश्रमतवर्क्यं त्रिपुरं महः।।
(वन्दना करते समय योनि मुद्रा से प्रणाम करें)

शक्तिसाधना के उन्नीस सिद्ध गुरुओं को नमन
(योनि मुद्रा के साथ)

1. ॐ परप्रकाशानन्दनाथ श्रीपादुकां पूजयामि नमः।
2. ॐ परशिवानन्दनाथ श्रीपादुकां पूजयामि नमः।
3. ॐ परशक्त्यम्बा श्रीपादुकां पूजयामि नमः।
4. ॐ कौलेशानन्दनाथ श्रीपादुकां पूजयामि नमः।
5. ॐ शुक्लाम्बा श्रीपादुकां पूजयामि नमः।
6. ॐ कुलेश्वरानन्दनाथ श्रीपादुकां पूजयामि नमः।
7. ॐ कामेश्वर्यम्बा श्रीपादुका पूजयामि नमः।
8. ॐ भोगानंदनाथ श्रीपादुकां पूजायामि नमः।
9. ॐ क्रीडानन्दनाथ श्रीपादुकां पूजयामि नमः।
10. ॐ समयानंदनाथ श्रीपादुकां पूजयामि नमः।
11. ॐ सहजानंदनाथ श्रीपादुकां पूजयामि नमः।
12. ॐ गगनानंदनाथ श्रीपादुकां पूजयामि नमः।
13. ॐ विश्वानंदनाथ श्रीपादुकां पूजयामि नमः।
14. ॐ विमलानंदनाथ श्रीपादुकां पूजयामि नमः।
15. ॐ मदनानंदनाथ श्रीपादुकां पूजयामि नमः।
16. ॐ भुवनानंदनाथ श्रीपादुकां पूजयामि नमः।
17. ॐ लीलाम्बा श्रीपादुकां पूजयामि नमः।
18. ॐ स्वात्मानंदनाथ श्रीपादुकां पूजयामि नमः।
19. ॐ प्रियाम्बा श्रीपादुकां पूजयामि नमः।

अंत में 10 बार गुरु पादुका मंत्र का जप करें।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गुरु पादुका मंत्र

ऐं ह्रीं श्रीं ह्स्ख्फ्रें ह स क्ष म ल व र यूं स ह क्ष म ल व र यीं ह्सौं स्हौं श्री प्रकाशानन्दनाथ श्रीपादुकां पूजयामि नमः।

गुरु को पूर्ण-समर्पण

ॐ गुह्याति-गुह्य-गोप्ता त्वं गृहणास्मत्कृतं जपम्।
सिद्धिः भवतु मे देव त्वत् प्रसादात् सुरेश्वर।।
ॐ कर्पूर गौरं करुणावतारं संसारसारं भुजगेन्द्रहारम्।
सदा वसन्तं हृदयारविन्दे भवं भवानी सहितं नमामि।।
नमस्ते नाथ भगवन् शिवाय गुरुरूपिणे।
विद्यावतार संसिद्ध्यै स्वीकृतानेकविग्रह।।
नारायण स्वरूपाय परमार्थैकरूपिणे।
सर्वाज्ञानतमोभेद भाविने चिद्घनायते।।
स्वतंत्राय दयाक्लृप्त विग्रहाय शिवात्मने।
परतन्त्राय भक्तानां भव्यानां भव्यरूपिणे।।
विवेकिनां विवेकाय विमर्शाय विमर्शिनाम्।
प्रकाशानां प्रकाशाय ज्ञानिनां ज्ञानदायिने।।
पुरस्तात् पार्श्वयोः पृष्ठे नमस्कुर्यादुपर्यधः।
सदामद् चित्तरूपेण विधेहि भवदासनम्।।

❁❁❁ — —

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बगला संध्या-विधि

- संकल्प
- विनियोग
- आचमन मंत्र
- संक्षिप्त डशोपचार पूजा
- गणेश कवच
- संकल्प
- पूजा गृह प्रवेश
- वास्तु पूजा
- मुख्य दीप स्थापना
- दीप स्थापना
- दीप स्तुति
- निम्न मंत्रों से दिशाओं का बंधन
- भैरव पूजन
- आसन शोधन
- गुरुओं का अर्चन
- वंदना
- गुरु पादुका मंत्र
- गुरु को पूर्ण समर्पण

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

3

बगला संध्या-विधि

(न्यासक्रम सहित)

(बगला संध्या की जगह वैदिक संध्या भी की जा सकती है।)

संकल्प

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः। ॐ नमः परमात्मने, श्री पुराण पुरुषोत्तमस्य श्री विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्याद्य श्री ब्रह्मणो द्वितीयपरार्द्धे श्री श्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरेऽष्टाविंशतितमे कलियुगे प्रथम चरणे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे आर्यावर्तान्तर्गतब्रह्मावर्तैकदेशे पुण्यप्रदेशे यथानाम संवत्सरे मासानाम उत्तमे अमुक मासे अमुक पक्षे अमुक तिथौ अमुक वासरे अमुक नक्षत्रे अमुक राशिस्थिते सूर्ये शुभ करणे एवं गुण विशेषण विशिष्टायां शुभ पुण्यतिथौ अमुक गोत्रोत्पन्नः अमुक शर्मा अहं श्री बगलादेवतापीत्यर्थं संध्या वन्दनं करिष्ये।

विनियोग

ॐ अस्य श्री बगलामुखि महामंत्रस्य नारदऋषिः, वृहतीच्छंदः श्री बगलामुखि देवता, ह्वीं बीजं, स्वाहा शक्तिः, मम संध्याकर्म प्रतिपादनार्थे जपे विनियोगः।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आचमन मंत्र

ॐ ऐं आत्मतत्त्वं शोधयामि नमः स्वाहा।
ॐ ह्लीं विद्यातत्त्वं शोधयामि नमः स्वाहा।
ॐ क्लीं शिवतत्त्वं शोधयामि नमः स्वाहा।
ॐ ऐं ह्लीं क्लीं सर्वतत्त्वं शोधयामि नमः स्वाहा।

मूल मंत्र से बाह्य शुद्धीकरण (शरीर पर तीन बार कुशा से जल छिड़कें)

शत्रुनाशन मंत्र

ॐ ह्लीं बगलामुखि सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय जिह्वां कीलय बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा।

शिखा बंधन

शिखा बंधन-विनियोगः

ॐ अस्य श्री कुत्स ऋषिः जगतीछन्दः रुद्रोदेवता शिखाबंधने विनियोगः।

ॐ मणिधारिणि वज्रिणि महाप्रतिसरे रक्ष-रक्ष हुं फट् स्वाहा।

मस्तक पर तिलक धारण-(मूल मंत्र से और हल्दी चंदन से)

ॐ ह्लीं बगलामुखि सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय जिह्वां कीलय बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा।

तीन बार प्राणायाम

पूरक, कुम्भक और रेचक करते समय अलग-अलग तीन-तीन बार मन ही मन मूल मंत्र का उच्चारण करें।

ॐ अस्य श्री बगलामुखि मंत्रस्य नारद ऋषिः, त्रिष्टुपछन्दः, बगला देवता, ह्लीं बीजं, स्वाहा शक्तिः ममाऽभीष्ट सिध्यर्थे न्यास कर्मार्थ विनियोगः।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ऋष्यादिन्यास

ॐ नारद ऋषये नमः शिरसि। ॐ वृहतीच्छन्दसे नमः मुखे। बगलामुखि देवतायै नमः हृदि। ह्लीं बीजाय नमः गुह्ये (हस्तप्रक्षालन) स्वाहा शक्तये नमः पादयोः। (हस्त प्रक्षालन)

करन्यास

ॐ ह्लीं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। बगलामुखि तर्जनीभ्यां नमः। सर्वदुष्टानां मध्यमाभ्यां नमः। वाचं मुखं पदं स्तम्भय अनामिकाभ्यां नमः। जिह्वां कीलय कनिष्ठिकाभ्यां नमः। बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादिन्यास

ॐ ह्लीं हृदयाय नमः। बगलामुखी शिरसे स्वाहा सर्वदुष्टानां शिखायै वषट्। वाचं मुखं पदं स्तम्भय कवचाय हुम्। जिह्वां कीलय नेत्रत्रयाय वौषट्। बुद्धि विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा अस्त्राय फट्।

प्रात : ध्यान

उदयादित्य संकाशां पुस्तकाक्षरकरां स्मरेत्।
कृष्णाजिनधरां ब्राह्मीं ध्यायेत्तारांकिताम्बरे।।

मध्याह्न ध्यान

पीतवर्णा चतुर्बाहुं शंखचक्रलसत्कराम्।
गदापद्मधरां देवीं सूर्यासन कृताश्रयाम्।।
मध्याह्ने वरदादेवीं गायत्री स्मरेद्धृदि।

सायाह्न ध्यान

शुक्लां शुक्लाम्बरधरां वृषासनकृताश्रयाम्।
त्रिनेत्रां वरदां पाशं शूलं च नृकरोटिकाम्।।
सूर्यमण्डल मध्यस्थां ध्यायेद देवीं समभ्यसेत्।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बगला-ध्यान

मध्ये सुधाब्धि-मणिमण्डप-रत्नवेद्य
सिंहासनोपरिगतां परिपीतवर्णाम्।
पीताम्बराभरण-माल्य-विभूषिताङ्गीं
देवीं स्मरामि धृत-मुद्गरवैरिजिह्वाम्।
जिह्वाग्रमादायकरेण देवीं
वामेन शत्रून् परिपीडयन्तीम्।
गदाभिघातेन च दक्षिणेन
पीताम्बराढ्यां द्विभुजां नमामि।

देह मार्जन

मूलमंत्र से तीन बार साधक अपने मस्तक पर, दो बार भुजाओं पर, तीन बार अपने हृदय में, तीन बार नाभि में और दो बार पैरों पर गंगा जल से या कर्मपात्र जल से छीटा दें।

पुनः ध्यान

प्रातः स्मरामि बगलां कमलायताक्षीमिन्दुप्रसन्नवदनां परिपीत वर्णाम्।
पाणिद्वयेन दधतीं च शिला गिरीन्द्रे द्वेषाञ्छवासनगतां मदमत्त चित्ताम्।।
प्रातः नमामि बगलामुखि धर्ममूर्तिं कारुण्यपूर्णनयना मुखमन्दहासाम्।
इन्दुप्रसन्नवदनां परिपीत वर्णां पीताम्बरां रुचिरं कञ्चुक शोभमानाम्।।
प्रातः भजामि यजमान सुसौख्यदात्रीं कामेश्वरीं कनक भूषणभूषताङ्गीम्।
गंभीर-धीर हृदयां रिपुबुद्धि हन्त्रीं सम्पद् प्रदां जगति पादजुषां नराणाम्।।
श्लोकं इदं पुण्यं बगलायास्तु यः पठेत्।
रिपुवाधा विनिर्मुक्तो लक्ष्मीस्थैर्यं आप्नुयात्।।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अघमर्षण

वाएं हाथ में जल लेकर दाहिने हाथ से ढक लें तथा **हं यं रं वं लं** बीज मंत्रों से तीन बार अभिमंत्रित करके उस जल को बायीं नासिका से भीतर की ओर खींचने की भावना करें और भावना द्वारा यह अनुभव करें कि इस जल से मेरे भीतर का सारा पाप धुल गया है। इसलिए यह जल काला हो गया है और दाहिनी नासिका-मार्ग से निकल आया है। फिर उस दूषित जल को अपने वामांग से सहारे रखें बज्रमय पाषाण खण्ड पर **ॐ क्रः अस्त्राय फट्** कहकर दे मारें। तत्पश्चात् मूल मंत्र से दोनों हाथ धोकर, मूल मंत्र से ही एक आचमन करें।

श्री बगला देवी माता को अर्घ्य (तीन बार)

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यम भर्गोदिवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

उदयादित्य मण्डलवर्तिन्यै श्री बगलायै इदमर्घ्यं स्वाहा।।

तत्पश्चात् सूर्य देवता को तीन बार अर्घ्य निवेदन निम्न मंत्र से—

ॐ ह्रीं हं सः सूर्याय एषोऽर्घः इदं अर्घ्यं दत्तं न मम।

पुनः तीन बार मूल मंत्र से आचमन।

उपस्थान विधि

प्रातः उपस्थान (प्रातः का प्रणाम)

गंभीरां च मदोन्मत्तां स्वर्णकान्ति समप्रभाम्।
चतुर्भुजां त्रिनयनां कमलासन संस्थिताम्।।
मुद्गरं दक्षिणे पाशं वामे जिह्वां च वज्रकम्।
पीताम्बरधरां साद्रदृढपीन पयोधराम्।।
पीतभूषण भूषाङ्गी धृतचंद्रार्धशेखराम्।
रत्नसिंहासनासीनां अम्बां त्रैलोक्यसुन्दरीम्।।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मध्याह्न उपस्थान (मध्याह्न का प्रणाम)

दुष्टस्तम्भनं उग्रविघ्नशमनं दारिद्रय विच्छेदनं।
भूनिपदाशमनं चलन मृगदृशांचेतः समाकर्षणम्।
सौभाग्यैकनिकेतनं मम दृशोः कारुण्यपूर्णेक्षणे
शत्रोः मारणमाविरस्तु पुरतो मातः त्वदीयंवपुः।।

सायंकालीन-उपस्थान (संध्या का प्रणाम)

मातः भञ्जय मद्विपक्षवदनं जिह्वाञ्चलं कीलय।
ब्राह्मी मुद्रय मुद्रयाशुधिषणां अग्रे गतिं स्तम्भय।।
शत्रूश्चूर्णय चूर्णयाशु गदया गौराङ्गि पीताम्बरे।
विघ्नौघं बगले हर प्रणमतां कारुण्यपूर्णेक्षणे।।

बगलागायत्री जप

विनियोग–ॐ अस्य बगलागायत्री मन्त्रस्य ब्रह्मात्रृषिः, गायत्रीछन्दः, बगलानाम्नी चिन्मयशक्तिरूपिणी गायत्रीदेवता, ॐ बीजं, ह्लीं शक्तिः विद्महे कीलकं गायत्री जपे विनियोगः।

मंत्र–ॐ ह्लीं ब्रह्मास्त्रायै विद्महे। स्तम्भनवाणायै धीमहि तन्नो बगला प्रचोदयात्। (108 जप अर्थात् एक माला)

बगला के कुछ साधक तांत्रिक संध्या के स्थान पर वैदिकी संध्या ही करते हैं। संध्या कोई भी हो करनी चाहिए। बिना संध्या के शिवा स्वरूपा पीताम्बरा बगला श्रेष्ठ फल प्रदान नहीं करती।

न्यास-क्रम

सृष्टि-मातृकान्यास

1. ॐ नमः ब्रह्मरन्ध्रे।
2. ह्लीं नमः ललाटे।
3. बगलामुखि नमः नेत्रयोः।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

4. सर्वनमः कर्णयोः।
5. दुष्टानां नमः नासोः।
6. वाचं नमः गण्डे।
7. मुखं नमः दन्तेषु।
8. पदं नमः ओष्ठयोः।
9. स्तम्भय नमः जिह्वायाम्।
10. जिह्वां नमः मुखे।
11. कीलय नमः पृष्ठे।
12. बुद्धिं नमः सर्वाङ्गे।
13. विनाशय नमः हृदि।
14. ह्लीं नमः स्तनयो। (दोनों स्तनों का स्पर्श)
15. ॐ नमः कुक्षो। (दोनों कुक्षों में स्पर्श)
16. स्वाहा नमः गुह्ये। (लिंग प्रदेश में स्पर्श)

स्थिति मातृकान्यास

1. ॐ नमः अंगुष्ठयोः।
2. ह्लीं नमः तर्जन्योः।
3. बगलामुखि नमः मध्यमयोः।
4. सर्व नमः अनामिकयोः।
5. दुष्टानां नमः कनिष्ठकयोः।
6. वाचं नमः ब्रह्मरन्ध्रे।
7. मुखं नमः मुखे।
8. पदं नमः हृदि।
9. स्तम्भय नमः नाभ्यादिपादान्तकम्।
10. जिह्वां नमः कंठादि नाभ्यान्तम्।
11. कीलय नमः ब्रह्मरन्ध्रात् कण्ठान्तम्।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

12. बुद्धिं नमः पादांगुष्ठयोः।

13. विनाशय नमः पाद तर्जन्योः।

14. ह्लीं नमः पादमध्यमयोः।

15. ॐ नमः पादानामिकयोः।

16. स्वाहा नमः पादकनिष्ठिकयोः।

रहस्य न्यास

ॐ अस्य श्री रहस्यन्यास मन्त्रस्य ब्रह्माविष्णुमहेश्वर ऋषयः ऋग्यजुस्सामानिच्छन्दासि चिन्मय शक्ति महापीताम्बरा बगलामुखि देवता रहस्य न्यास पूर्णता सिद्धये विनियोगः।

ब्रह्माविष्णुमहेश्वर ऋषिभ्यो नमः-शिरसि। ऋग्यजुस्सा-मेभ्यश्छन्दोभ्यो नमः-मुखे। परम् चैतन्यशक्ति महापीताम्बरा बगलामुखि देवतायै नमः-हृदये।-विनियोगः नमः-पादयोः।

1. ऐं क्लीं सौं सौं क्लीं ऐं श्रीं ह्रीं हंसः सोहं ॐ ह्लीं बगलामुखि सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय जिह्वां कीलय बुद्धि विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा नमः मूलाधारे।।
2. ऐं क्लीं सौं सौं क्लीं ऐं श्रीं ह्रीं हंसः सोहं ॐ ह्लीं बगलामुखि सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय जिह्वां कीलय बुद्धि विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा नमः स्वाधिष्ठाने।
3. ऐं क्लीं सौं सौं क्लीं ऐं श्रीं ह्रीं हंसः सोहं ॐ ह्लीं बगलामुखि सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय जिह्वां कीलय बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा नमः मणिपूरे।
4. ऐं क्लीं सौं सौं क्लीं ऐं श्रीं ह्रीं हंसः सोहं ॐ ह्लीं बगलामुखि सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय जिह्वां कीलय बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा नमः विशुद्धौ।
5. ऐं क्लीं सौं सौं क्लीं ऐं श्रीं ह्रीं हंसः सोहं ॐ ह्लीं बगलामुखि सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय जिह्वां कीलय

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा नमः सहस्त्रारे।
(कुछ विद्वान् इस रहस्य न्यास में आज्ञा चक्र को भी सम्मिलित रखते हैं।)

मातृकान्यास

(यह न्यास करन्यास है।)

विनियोगः-अथान्तमातृकान्यासस्य ब्रह्मा ऋषिः, गायत्री छन्दः, मातृकासरस्वती देवता, ह्लीं बीजानि, स्वराशक्तयः अव्यक्तं कीलकं मातृकान्यासे विनियोगः।

ॐ ह्लीं अं कं खं गं घं ङं आं अंगुष्ठाभ्यां नमः।
ॐ ह्लीं इं चं छं जं झं ञं ईं तर्जनीभ्यां नमः।
ॐ ह्लीं उं टं ठं डं ढं णं ऊं मध्यमाभ्यां नमः।
ॐ ह्लीं एं ह्लीं तं थं दं धं नं ऐं अनामिकाभ्यां नमः।
ॐ ह्लीं ओं पं फं बं भं मं औं कनिष्ठिकाभ्यां नमः।
ॐ ह्लीं यं रं लं वं शं षं सं हं करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

वर्णाश्रित हृदयादिन्यास

ॐ ह्लीं अं कं खं गं घं ङं आं हृदयाय नमः।
ॐ ह्लीं इं चं छं जं झं ञं ईं शिरसे स्वाहा।
ॐ ह्लीं उं टं ठं डं ढं णं ऊं शिखायै वषट्।
ॐ ह्लीं एं तं थं दं धं नं ऐं कवचाय हुम्।
ॐ ह्लीं ओं पं फं बं भं मं औं नेत्रत्रयाय वौषट्।
ॐ ह्लीं अं यं रं लं वं शं षं सं हं अः अस्त्राय फट्।

अन्तर्मातृका न्यास

ध्यानम्-
आधारे लिंगनाभौ प्रकटितहृदयेतालुमूले ललाटे।
द्वै पत्रे षोडशारे द्विदश दशदले द्वादशार्धेचतुष्के।।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बालान्ते बालमध्ये ड फ क ठ सहिते
कण्ठदेशे स्वराणाम् हं क्षं तत्वार्थयुक्तं
सकल दलगतं वर्णरूपं नमामि।

(इन स्वरों का न्यास कंठ स्थान में धूम्रवर्ण वाले सोलह दलों के विशुद्धाख्य चक्र में किया जाता है।)

विनियोग–ॐ अस्य अंतर्मातृकान्यास मंत्रस्य ब्रह्मऋषिः गायत्री छन्दः, सरस्वती देवता, ह्लीं बीजानि, स्वाहाशक्तिः अव्यक्त कीलकं, बगलामुखित्वेन मम ज्ञानसमृद्धयर्थं अन्तमातृकान्यासे विनियोगः।

ॐ अं नमः।
ॐ आं नमः।
ॐ इं नमः।
ॐ ईं नमः।
ॐ उं नमः।
ॐ ऊं नमः।
ॐ ऋं नमः।
ॐ ॠं नमः।
ॐ लृं नमः।
ॐ ल्हं नमः।
ॐ एं नमः।
ॐ ऐं नमः।
ॐ ओं नमः।
ॐ औं नमः।
ॐ अं नमः।
ॐ अः नमः।

(इन वर्णों का न्यास हृदय में रक्त वर्ण के बारह दलों के अनाहत चक्र में किया जाता है।)

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ॐ कं नमः।

ॐ खं नमः।

ॐ गं नमः।

ॐ घं नमः।

ॐ ङं नमः।

ॐ चं नमः।

ॐ छं नमः।

ॐ जं नमः।

ॐ झं नमः।

ॐ ञं नमः।

ॐ टं नमः।

ॐ ठं नमः।

(इन वर्णों का न्यास नाभि स्थान पर अपनी पाँचों अंगुलियों को रखकर मेघ वर्ण के दस दलों वाले मणिपूरक चक्र में किया जाता है।)

ॐ डं नमः।

ॐ ढं नमः।

ॐ णं नमः।

ॐ तं नमः।

ॐ थं नमः।

ॐ दं नमः।

ॐ धं नमः।

ॐ नं नमः।

ॐ पं नमः।

ॐ फं नमः।

(इन वर्णों का न्यास लिंग स्थान पर दाहिने हाथ की अंगुलियों को रखकर विद्युत वर्ण के छह दलों वाले स्वाधिष्ठान में किया जाता है।)

ॐ बं नमः।

ॐ भं नमः।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ॐ मं नमः।

ॐ यं नमः।

ॐ रं नमः।

ॐ लं नमः।

(इन वर्णों का न्यास मूलाधार में किया जाता है। इसमें केवल चार दल होते हैं।)

ॐ वं नमः।

ॐ शं नमः।

ॐ षं नमः।

ॐ सं नमः।

(हाथ धोकर)

भ्रू मध्ये श्वेतवर्णे द्विदले आज्ञा चक्रे

(यह दो दलों का श्वेतवर्ण का आज्ञा चक्र हैं।)

ॐ हं नमः।

ॐ क्षं नमः।

बहिर्मातृका न्यास

ॐ अस्य श्रीबहिर्मातृकान्यासस्य ब्रह्मा ऋषिः, गायत्री छन्दः, मातृकासरस्वती देवता, ह्लीं बीजानि स्वराः शक्तयः अव्यक्तं कीलकं न्यासे विनियोगः।

ॐ ह्लीं अं नमः मुखे।
ॐ ह्लीं इं नमः दक्षिणे नेत्रे।
ॐ ह्लीं उं नमः दक्षिण कर्णे।
ॐ ह्लीं आं नमः मुखवृत्ते।
ॐ ह्लीं ईं नमः वामनेत्रे।
ॐ ह्लीं ऊं नमः वामकर्णे।
ॐ ह्लीं ऋं नमः दक्षिणनासापुटे।
ॐ ह्लीं लृं नमः दक्षिणगण्डे।
ॐ ह्लीं एं नमः ऊर्ध्वोष्ठे।
ॐ ह्लीं ओं नमः ऊर्ध्वदन्तपंक्तौः।
ॐ ह्लीं अं नमः मुखवृत्ते।
ॐ ह्लीं कं नमः दक्षिण वहुमूले।
ॐ ह्लीं कं नमः दक्षिण मणिबन्धे।
ॐ ह्लीं ङं नमः दक्षांगुलिअग्रे।
ॐ ह्लीं छं नमः वामकूपूरे।
ॐ ह्लीं झं वामङ्गुलिमूले।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ॐ ह्लीं टं नमः दक्षिणपादमूले।
ॐ ह्लीं डं नमः दक्षिणगुल्फे।
ॐ ह्लीं णं नमः दक्षिणपादाङ्गुलिअग्रे।
ॐ ह्लीं थं नमः वामजानुनि।
ॐ ह्लीं धं नमः वामपादाङ्गुलिमूले।
ॐ ह्लीं पं नमः दक्षिण पार्श्वे।
ॐ ह्लीं बं नमः पृष्ठे।
ॐ ह्लीं मं नमः जठरे।
ॐ ह्लीं रं नमः दक्षांसे।
ॐ ह्लीं वं नमः वामांसे।
ॐ ह्लीं ॠं नमः वामनासापुटे।
ॐ ह्लीं लृं नमः वामगण्डे।
ॐ ह्लीं ऐं नमः अधरे।
ॐ ह्लीं औं नमः अधोदन्तपंक्ते।
ॐ ह्लीं अः नमः कण्ठे।
ॐ ह्लीं खं नमः कूपूरे।
ॐ ह्लीं घं नमः दक्षांगुलिमूले।
ॐ ह्लीं चं नमः वामबाहुमूले।
ॐ ह्लीं जं नमः वाम मणिबन्धे (कलाई)।
ॐ ह्लीं ञं नमः वामङ्गुलिअग्रे।
ॐ ह्लीं ठं नमः दक्षजानुनि (दक्षिण घुटने पर)।
ॐ ह्लीं ढं नमः दक्षिणपादाङ्गुलिमूले।
ॐ ह्लीं तं नमः वामपादमूले।
ॐ ह्लीं दं नमः वामगुल्फे।
ॐ ह्लीं नं नमः वामपादाङ्गुलिअग्रे।
ॐ ह्लीं फं नमः वामपार्श्वे।
ॐ ह्लीं भं नमः नाभौ।
ॐ ह्लीं यं नमः हृदये।
ॐ ह्लीं लं नः ककुदि।
ॐ ह्लीं शं नमः हृदयादिदक्षकरान्तम्।

ॐ ह्लीं षं नमः हृदयादिवामकरान्तम्।
ॐ ह्लीं सं नमः हृदयादिदक्षपादान्तम्।
ॐ ह्लीं हं नमः हृदयादिदक्षपादान्तम्।
ॐ ह्लीं लं नमः मस्तकादिपादान्तम्।
ॐ ह्लीं क्षं नमः पादादिशिरोऽन्तम्।

बगलामातृका न्यास

(यह करन्यास है।)

विनियोगः-

अस्य श्रीब्रह्मास्त्रविद्याबगलामुखीषड्त्रिंशाक्षरात्ममन्त्रस्य नारद ऋषिः, श्रीबगलामुखीदेवता, ह्लीं बीजं स्वाहा शक्ति, ॐ कीलकम् श्रीबगलामुखीप्रसादसिद्ध्यर्थं बगलामातृका न्यासे विनियोगः।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

1. ॐ ह्लीं बगलामुखि अङ्गुष्ठाभ्यां नमः।
2. सर्वदुष्टाना तर्जनीभ्यां नमः।
3. वाचं मुखं स्तम्भय मध्यमाभ्यां नमः।
4. जिह्वां कीलय अनामिकाभ्यां नमः।
5. बुद्धिं विनाशय कनिष्ठिकाभ्यां नमः।
6. ॐ ह्लीं स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

प्रपंचमातृका न्यास के पाँच न्यास

प्रथमन्यास

1. ॐ नमः मूर्ध्नि।
2. ह्लीं नमः वक्त्रे।
3. बगलामुखि नमः दक्षिणनेत्रे।
4. सर्व नमः वाम नेत्रे।
5. दुष्टानां नमः वाम कर्णे।
6. वाचं नमः वाम कर्णे।
7. मुखं नमः दक्षिणनासायाम्।
8. पदं नमः वाम नासापुटे।
9. स्तम्भय नमः दक्षिण गण्डे।
10. जिह्वां नमः वामगण्डे।
11. कीलय नमः ऊर्ध्वोष्ठे।
12. बुद्धिं नमः अधरोष्ठे।
13. विनाशय नमः वक्त्रमध्ये।
14. ह्लीं नमः ऊर्ध्वदन्तपंक्तौ।
15. ॐ नमः अधोदन्तपंक्तौ।
16. स्वाहा नमः वदने।

द्वितीयन्यास

1. ॐ नमः-शिखायाम्
2. ह्लीं नमः-शिरसि

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

3. बगलामुखिं नमः-ललाटे
4. सर्व नमः-भ्रूमध्ये
5. दुष्टानां नमः-नासायाम्
6. वाचं नमः-वक्त्रे
7. मुखं नमः-दक्षिण बाहुमूले
8. पदं नमः-दक्षिण कूर्पूरे
9. स्तम्भय नमः-दक्षिण मणिबंधे
10. जिह्वां नमः-दक्षिण अंगुलिमूले
11. कीलय नमः-दक्षिण अंगुल्यग्रे
12. बुद्धिं नमः-वाम बाहुमूले।
13. विनाशय नमः-वाम कूर्पूरे
14. ह्लीं नमः वाम मणिबंधे
15. ॐ नमः वाम अंगुलिमूले
16. स्वाहा नमः-वाम अंगुल्यग्रे

तृतीयन्यास

1. ॐ नमः शिरसि।
2. ह्लीं नमः ललाटे।
3. बगलामुखि दक्षिणनेत्रे।
4. सर्व नमः वामनेत्रे।
5. दुष्टानां नमः मुखे।
6. वाचं नमः जिह्वायाम्।
7. मुखं नमः दक्षिण पादमूले।
8. पदं नमः दक्षिण गुल्फे।
9. स्तम्भय नमः दक्षिण पादमूले।
10. जिह्वां नमः दक्षिण पादांगुलिमूले।
11. कीलय नमः दक्षिण पादांगुलिअग्रे।
12. बुद्धिं नमः वाम पादमूले।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

13. विनाशय नमः वामगुल्फे।
14. ह्लीं नमः वाम जंघायाम्।
15. ॐ नमः वामपादांगुलिमूले।
16. स्वाहा नमः पादांगुल्यग्रे।

चतुर्थन्यास

1. ॐ नमः ललाटे।
2. ह्लीं नमः मुखवृत्ते।
3. बगलामुखि नमः दक्षिणनेत्रे।
4. सर्व नमः वामनेत्रे।
5. दुष्टानां नमः दक्षिण कर्णे।
6. वाचं नमः वाम कर्णे।
7. मुखं नमः दक्षिण नासायाम्।
8. पदं नमः वाम नासायाम्।
9. स्तम्भय नमः दक्ष गण्डे।
10. जिह्वां नमः वाम गण्डे।
11. कीलय नमः ऊर्ध्वोष्ठे।
12. बुद्धिं नमः अधरे।
13. विनाशय नमः ऊर्ध्वदन्तपंक्तौ।
14. ह्लीं नमः अधोदन्तपंक्तौ।
15. ॐ नमः ब्रह्मरन्ध्रे।
16. स्वाहा नमः मुखे।

पंचमन्यास

1. ॐ नमः ललाटे।
2. ह्लीं नमः कंठे।
3. बगलामुखि नमः हृदि।
4. सर्व नमः नाभौ।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

5. दुष्टानां नमः मूलाधारे।
6. वाचं नमः ब्रह्मरंध्रे
7. मुखं नमः मुखे।
8. पदं नमः गुदा-क्षेत्रे।
9. स्तम्भय नमः आधारे।
10. जिह्वां नमः हृदि।
11. कीलय नमः ब्रह्मरन्ध्रे। (पुनः)
12. बुद्धिं नमः दक्षिणहस्ते।
13. विनाशय नमः वामहस्ते।
14. ह्लीं नमः दक्षिणपादे।
15. ॐ नमः वामपादे।
16. स्वाहा नमः हृदि।

1. ॐ ह्लीं बगलामुखि सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय जिह्वां कीलय बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा। नमः सर्वांगे। (तीन बार)

षोढान्यास

(इसमें गणेश से लेकर राशि तक छह न्यास हैं।)

(1) गणेश मातृका न्यास (2) ग्रह मातृका न्यास (3) नक्षत्र मातृका न्यास (4) योगिनी मातृका न्यास (5) राशि मातृका न्यास एवं (6) पीठ मातृका न्यास।

गणेशमातृका न्यास

विनियोग

अस्य श्री गणेश मातृका मन्त्रस्य दक्षिणामूर्तिऋषिः, गायत्री छन्दः, श्रीमातृका बगलामुखि देवता मनोवास्य पीताम्बराविद्याङ्गत्वेन गणेशमातृकान्यासे विनियोगः।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गणेशषडङ्ग न्यास

''अं कं खं गं घं ङं आं ऐं हृदयाय नमः।
इं चं छं जं झं ञं ईं क्लीं शिरसे स्वाहा।
उं टं ठं डं ढं णं ऊं सौः शिखायै वषट्।
एं तं थं दं धं नं ऐं सौः कवचाय हुम्।
ओं पं फं बं भं मं औं क्लीं नेत्रत्रयाय वौषट्।
अं यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं अः ऐं अस्त्राय फट्।
गं अं विघ्नेशह्लींभ्यां नमः ललाटे।
गं आं विघ्नराजश्रींभ्यां नमः मुखवृत्ते।
गं इं विनायक पुष्टिभ्यां नमः दक्षिणनेत्रे।
गं ईं शिवोत्तम शान्तिभ्यां नमः वामनेत्रे।
गं उं विघ्नकृत् स्वस्तिभ्यां नमः दक्षिणकर्णे।
गं ऊं विघ्नविनाशिनी सरस्वतीभ्यां नमः वामकर्णे।
गं ऋं गणाध्यक्ष स्वाहाभ्यां नमः दक्षगण्डे।
गं ॠं एकदन्तसुमेधाभ्यां नमः वामगण्डे।
गं लृं द्विदन्त कान्तिभ्यां नमः दक्षनासायाम्।
गं ल्हं गजवक्त्र कामिनीभ्यां नमः वामनासायाम्।
गं एं निरंजन मोहिनीभ्यां नमः ऊर्ध्वोष्ठे।
गं ऐं कपर्दीनटीभ्यां नमः अधरे।
गं ओं दीर्घजिह्वा पार्वतीभ्यां नमः ऊर्ध्वदन्तपंक्तौ।
गं औं शंकुकर्ण ज्वालिनीभ्यां नमः अधोदन्तपंक्तौ।
गं अं सुरेशगणनायकाभ्यां नमः ब्रह्मरन्ध्रे।
गं अः सुरेशगणनायकाभ्यां नमः मुखे।
गं कं गजेन्द्रगात्ररूपिणीभ्यां नमः दक्षिणबाहुमूले।
गं खं सूर्पकर्णेभ्यां नमः दक्षिण कूर्परे।
गं गं त्रिलोचमुखे जवतीभ्यां नमः दक्षिणमणिबन्धेः
गं घं लम्बोदरसत्याभ्यां नमः दक्ष अंगुल्यग्रे।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गं चं चतुर्मूर्ति स्वरूपिणीभ्यां नमः वामकूर्पूरे।
गं छं सदाशिवकामदाभ्यां नमः वामकूर्पूरे।
गं जं आमोदमद जिह्वाभ्यां नमः वाम मणिबन्धे।
गं झं दुर्मुखमूर्तिभ्यां नमः वाम अंगुलिमूले।
गं ञं सुमुखभौतिकाभ्यां नमः वाम अंगुल्यग्रे।
गं टं प्रमोद सिताभ्यां नमः दक्ष पाद मूले।
गं ठं एकपादरमाभ्यां नमः दक्षगुल्फे।
गं डं द्विजिह्व महिषीभ्यां नमः दक्ष जंघायाम्।
गं ढं शूरभंजिनीभ्यां नमः दक्ष पादांगुलिमूले।
गं णं वीरविकर्णाभ्यां नमः दक्ष पादांगुल्यग्रे।
गं तं षणमुख भृकुटीभ्यां नमः वाम पादमूले।
गं थं वरदलज्जाभ्यां नमः वामगुल्फे।
गं दं वामदेव दीर्घघोषाभ्यां नमः वामजंघायाम्।
गं धं वक्रतुण्डधनुर्धराभ्यां नमः वामपादांगुलिमूले।
गं नं द्विरदयामिनीभ्यां नमः वामपादांगुल्यग्रे।
गं पं सेनानी रात्रिभ्यां नमः दक्षपार्श्वे।
गं फं कामान्ध ग्रामणीभ्यां नमः वामपार्श्वे।
गं बं मत्तशशिप्रभाभ्यां नमः पृष्ठे।
गं भं विमत्तलोल लोचनाभ्यां नमः नाभौ।
गं मं मत्तवाहन चंचलाभ्यां नमः उदरे।
गं यं त्वगात्मभ्यां जटिदीप्तिभ्यां नमः हृदि।
गं रं मुण्डी सुभगाभ्यां नमः दक्षांसे।
गं लं खड्गी दुर्भगाभ्यां नमः ककुदि।
गं वं वरेण्य शिवाभ्यां नमः वामांसे।
गं शं वृषकेतन भगाभ्यां नमः हृदादि दक्षिण करे।
गं षं भक्तप्रियभगिनीभ्यां नमः हृदादि वामकरे।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गं सं गणेश भोगिनीभ्यां नमः हृदादि दक्षपादे।
गं हं मेघनाद सुभगाभ्यां नमः हृदयादि वामपादे।
गं ळं व्यासीस्थ कालरात्रिभ्यां नमः हृदादि उदरे।
गं क्षं गणेश्वरकालिकाभ्यां नमः हृदादि मुखे।

ग्रह मातृका न्यास

विनियोग

ॐ अस्य श्री ग्रहमातृका मन्त्रस्य दक्षिणामूर्तिर्ऋषिः, गायत्री छन्दः, शत्रुविमर्दिनी ज्योतिर्मयीबगला देवता ममोपास्य पीताम्बरा विद्याङ्गत्वेन ग्रहन्यासे विनियोगः।

अं सूर्यायरेणुकाम्बायै नमः हृदि।
यं चन्द्रायामृताम्बायै नमः भ्रू मध्ये।
कं मङ्गलाय धामाम्बायै नमः नेत्रयो।
चं बुधाय ज्ञानरूपाम्बायै नमः हृदि।
टं वृहस्पतये यशस्विन्यम्बायै नमः हृदयोपरिक्षेत्रे।
तं शुक्राय शांकर्यम्बायै नमः कण्ठे।
पं शनैश्चराय शक्त्यम्बायै नमः नाभौः।
शं राहवे कृष्णाम्बायै नमः मुखे।
ळं क्षं केतवे धूम्राम्बायै नमः गुदे।

नक्षत्र मातृका न्यास

विनियोग

ॐ अस्य श्री नक्षत्रमातृका मन्त्रस्य दक्षिणामूर्तिर्ऋषिः गायत्री छन्दः नक्षत्ररूपिणी पीताम्बरा देवता ममोपास्य पीताम्बरा विद्याङ्गत्वेन नक्षत्रन्यासे विनियोगः।

अं आं अश्विन्यै नमः ललाटे।
इं भरण्यै नमः दक्षनेत्रे।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ईं उं ऊं कृत्तिकायै नमः वाम नेत्रे।
ऋं ॠं लृं लॄं रोहिण्यै नमः दक्षिणकर्णे।
एं मृगशिरसे नमः वामकर्णे।
ऐं आर्द्रायै नमः दक्षिणनासापुटे।
ओं औं पुनर्वसुवे नमः वामनासायाम्।
कं पुष्याय नमः कण्ठे।
खं गं आश्लेषायै नमः दक्षस्कन्धे।
घं ङं मघायै नमः वाम स्कन्धे।
चं पूर्वा फाल्गुन्यै नमः दक्ष कूर्पूरे।
छं जं उत्तराफाल्गुन्यै नमः वाम कूर्पूरे।
झं ञं हस्ताय नमः दक्षिणमणिबन्धे।
टं ठं चित्रायै नमः वाम मणिबन्धे।
डं स्वात्यै नमः दक्षहस्ते।
ढं णं विशाखायै नमः वामहस्ते।
तं थं दं अनुराधायै नमः नाभौ।
धं ज्येष्ठायै नमः दक्ष कटिप्रदेशे।
नं पं फं मूलाय नमः वामकटिप्रदेशे।
बं पूर्वाषाढायै नमः दक्षोरौ।
भं उत्तराषाढायै नमः वामोरौ।
मं श्रवणाय नमः दक्षिणजानुनि।
यं रं धनिष्ठायै नमः वामजानुनि।
लं शतभिषायै नमः दक्ष जंघायाम्।
वं शं पूर्वाभाद्रपदायै नमः वाम जंघायाम्।
षं सं हं उत्तराभाद्रपदायै नमः दक्षपादे।
कं क्षं अं अः रेवत्यैनमः वामपादे।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

योगिनी मातृका न्यास

विनियोग

ॐ अस्य श्री योगिनीमातृका मन्त्रस्य दक्षिणामूर्तिर्ऋषिः, गायत्री छन्दः, योगिनीरूपा बगलामुखि देवता बगलाविद्याङ्गत्वेन योगिनीन्यासे विनियोगः।

ह्लीं श्रीं डां डीं डं मं लं वं रं यूं पूं डाकिन्यै नमः।

अं 16 ममत्वचं रक्ष-रक्ष त्वगात्मने नमः। कण्ठे विशुद्धाख्ये।।

ह्लीं श्रीं रां रीं रं मं लं वं रं यूं पूं. राकिन्यै नमः।

कं 12 मम रक्तं रक्ष-रक्ष असृगात्मने नमः।। हृदये अनाहते।।

ह्लीं श्रीं लां लीं लं मं लं वं रं यूं पूं लाकिन्यै नमः।

डं 10 मम मांसं रक्ष-रक्ष मांसात्मने नमः।। नाभौ मणिपूरे।।

ह्लीं श्रीं कां कीं कं मं लं वं रं यूं पूं काकिन्यै नमः।

बं 6 मम मेदो रक्ष-रक्ष मेद आत्मने नमः।। लिङ्गे स्वाधिष्ठाने।।

ह्लीं श्रीं शां शीं शं मं लं वं रं यूं पूं शाकिन्यै नमः।

वं 4 मम अस्थि रक्ष-रक्ष अस्थ्यात्मने नमः।। गुदे मूलाधारे।।

ह्लीं श्रीं हां हीं हं मल वर यूं पूं हाकिन्यै नमः।

हं क्षं मम मज्जां रक्ष-रक्ष मज्जात्मने नमः।। भ्रूमध्ये आज्ञाचक्रे।।

ह्लीं श्रीं यां यीं यं मं लं वं रं यूं पूं याकिन्यै नमः।

अं अः मम शुक्रं रक्ष-रक्ष शुक्रात्मने नमः।। ब्रह्मरन्ध्रे सहस्त्रारे।।

(योगिनी न्यास में अं 16, कं 12, डं 10, बं 6, वं 4 का आशय क्रमशः विशुद्धाख्य, अनाहद, मणिपूरक, स्वाधिष्ठान और मूलाधार कमलों में निहित 16, 12, 10, 6, 4 पंखुड़ियों की संख्या से है। इसलिए न्यास करते समय अं का उच्चारण 16 बार, कं का 12, डं 10, बं का 6 और वं का 4 बार करना है।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

राशि मातृका न्यास

विनियोग

अस्य श्री राशिमातृकामन्त्रस्य दक्षिणामूर्तिर्ऋषिः गायत्रीछन्दः, राशिरूपा बगलामुखि देवता पीताम्बरा विद्याङ्गत्वेन राशिन्यासे विनियोगः।।

अं आं इं ईं मेषाय नमः दक्षपाद गुल्फै।
उं ऊं ऋं वृषाय नमः दक्षिणजानुनि।
ॠं लृं ल्हं मिथुनाय नमः दक्ष वृषणे।
एं ऐं कर्काय नमः दक्षकुक्षौ।
ओं औं सिंहाय नमः दक्षस्कन्धे।
अं अः शं षं सं हं ळं कन्यायै नमः दक्षिण शिरोभागे।
कं खं गं घं ङं तुलायै नमः वाम शिरोभागे।
चं छं जं झं ञं वृश्चिकाय नमः वाम स्कन्धे।
टं ठं डं ढं णं धनुषे नमः वाम कुक्षौ।
तं थं दं धं नं मकराय नमः वाम वृषणे।
पं फं बं भं मं कुम्भाय नमः वाम जानुनि।
यं रं लं वं क्षं मीनाय नमः वाम गुल्फे।

पीठ मातृका न्यास

विनियोग

अस्य श्री पीठ मातृका मन्त्रस्य दक्षिणामूर्तिर्ऋषिः, गायत्री छन्दः, सिद्ध पीठरूपिणी बगलामुखि देवता पीताम्बरा विद्याङ्गत्वेन सिद्धपीठन्यासे विनियोगः।

ह्लीं श्रीं अं कामरूपपीठाय नमः ललाटे।
ह्लीं श्रीं आं शिवकाशी पीठायनमः मुखवृत्ते।
ह्लीं श्रीं इं पशुपतिनाथ नगर पीठाय नमः दक्षिणनेत्रे।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ह्लीं श्रीं ईं पौड्ग्वर्धनपीठाय नमः वामनेत्रे।
ह्लीं श्रीं उं काश्मीर पीठाय नमः दक्षिणकर्णे।
ह्लीं श्रीं ऊं कान्यकुब्ज पीठाय नमः वामकर्णे।
ह्लीं श्रीं ऋं पूर्णगिरि पीठाय नमः दक्षिण गण्डे।
ह्लीं श्रीं ॠं अर्बुदाचल पीठाय नमः वाम गण्डे।
ह्लीं श्रीं लृं आम्रातकेश्वर पीठाय नमः दक्षनासायाम्।
ह्लीं श्रीं एं एकाम्र पीठाय नमः वामनासायाम्।
ह्लीं श्रीं एं त्रिस्त्रोत पीठाय नमः ऊर्ध्वोष्ठे।
ह्लीं श्रीं ऐं कामकोटि पीठाय नमः अधोरे।
ह्लीं श्रीं ओं कैलाश पीठाय नमः ऊर्ध्व दन्तपंक्तौ।
ह्लीं श्रीं औं भृगु पीठाय नमः अधोदन्तपंक्तौ।
ह्लीं श्रीं अं केदार पीठाय नमः ब्रह्मरन्ध्रे।
ह्लीं श्रीं अः चन्द्रपुर पीठाय नमः मुखे।
ह्लीं श्रीं कं श्री पीठाय नमः दक्षबाहुमूले।
ह्लीं श्रीं खं ओंकार पीठाय नमः कर्पूरि।
ह्लीं श्रीं गं जालंधर पीठाय नमः मणिबन्धे।
ह्लीं श्रीं घं मालव पीठाय नमः अंगुलिमूले।
ह्लीं श्रीं ङं कुलान्त पीठाय नमः अंगुल्यग्रे।
ह्लीं श्रीं चं देवीकोट्ट पीठाय नमः वाम बाहुमूले।
ह्लीं श्रीं छं गोकर्ण पीठाय नमः वामकर्पूरि।
ह्लीं श्रीं जं मारुतेश्वर पीठाय नमः वाम मणिबन्धे।
ह्लीं श्रीं झं अट्टहास पीठाय नमः वाम अंगुलिमूले।
ह्लीं श्रीं ञं विरज पीठाय नमः वामांगुलि अग्रे।
ह्लीं श्रीं टं राजगृह पीठाय नमः दक्षिणपाद मूले।
ह्लीं श्रीं ठं महापथ पीठाय नमः दक्षगुल्फे।
ह्लीं श्रीं डं कोल्हागिरि पीठाय नमः दक्षिण जंघायाम्।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ह्लीं श्रीं ढं एलापुर पीठाय नमः दक्षिण पादांगुलिमूले।
ह्लीं श्रीं णं कालेश्वर पीठाय नमः दक्षिण पादांगुल्यग्रे।
ह्लीं श्रीं तं जयन्ती पीठाय नमः वाम गुल्फे।
ह्लीं श्रीं थं उज्जयिनी पीठाय नमः वाम जंघायाम्।
ह्लीं श्रीं दं चरित्र पीठाय नमः वामपादमूले।
ह्लीं श्रीं धं क्षीरिका पीठाय नमः वाम पादांगुलिमूले।
ह्लीं श्रीं नं हस्तिनापुर पीठाय नमः वाम पादांगुल्यग्रे।
ह्लीं श्रीं पं उड्डीश पीठाय नमः दक्ष पार्श्वे (बगल की जगह)।
ह्लीं श्रीं फं प्रयाग पीठाय नमः वाम पार्श्वे (बगल की जगह)।
ह्लीं श्रीं बं षष्ठीश पीठाय नमः पृष्ठे।
ह्लीं श्रीं भं मायापुरी पीठाय नमः नाभौ।
ह्लीं श्रीं मं मलय पीठाय नमः उदरे।
ह्लीं श्रीं यं श्रीशैल पीठाय नमः हृदि।
ह्लीं श्रीं रं मेरु पीठाय नमः दक्षांसे।
ह्लीं श्रीं लं गिरि पीठाय नमः ककुदि।
ह्लीं श्रीं वं माहेन्द्र पीठाय नमः वामांसे।
ह्लीं श्रीं शं वामन पीठाय नमः हृदयादि वामहस्ते।
ह्लीं श्रीं षं हिरण्यपुर पीठाय नमः हृदयादि दक्षपादे।
ह्लीं श्रीं हं उड्डियान पीठाय नमः हृदयादि वामपादे।
ह्लीं श्रीं ळं छाया पीठाय नमः हृदयादि उदरे।
ह्लीं श्रीं क्षं क्षत्रपुर पीठाय नमः हृदयादि मुखे।

बगला मंत्र न्यास

विनियोग

ॐ अस्य श्री पीताम्बरा महाविद्यामन्त्रस्य नारदऋषिः, त्रिष्टुप्छन्दः, बगलामुखी देवता, ह्लीं बीजम्, स्वाहा शक्तिः, ॐ कीलकं बगलामुखिपीत्यर्थं न्यासे विनियोगः।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

नीचे लिखे न्यास वाक्यों से प्रत्येक का उच्चारण करके दाहिने हाथ से सिर-मुख-हृदय-गुप्त स्थान, दोनों चरणों, नाभि का स्पर्श करें।

ऋष्यादिन्यास

नारदऋषये नमः शिरसि। त्रिष्टुप्छन्दसे नमः मुखे। पीताम्बरा महाविद्यादेवतायै नमः हृदि। ह्लीं बीजाय नमः गुह्यो। स्वाहाशक्तये नमः पादयोः। ॐ कीलकाय नमः सर्वाङ्गे।

करन्यास

ॐ ह्लीं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। वगलामुखी तर्जनीभ्यां नमः। सर्वदुष्टानां मध्यमाभ्यां नमः। वाचं मुखं पदं स्तम्भय अनामिकाभ्यां नमः। जिह्वां कीलय कनिष्ठिकाभ्यां नमः। बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादिन्यास

ॐ ह्लीं हृदयाय नमः। बगलामुखि शिरसे स्वाहा। सर्वदुष्टानां शिखायै वषट्। वाचं मुखं पदं स्तम्भय कवचाय हुम्। जिह्वां कीलय नेत्र त्रयाय वौषट्। बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा अस्त्राय फट्।

अवरो पदन्यास

ॐ नमः ब्रह्मरन्ध्रे। ह्लीं नमः शिरसि। बगलामुखी नमः ललाटे। सर्वदुष्टानां नमः मुखे। वाचं नमः हृदये। मुखं नमः उदरे। पदं नमः नाभौ। स्तम्भय नमः पृष्ठभागेः। जिह्वां नमः गुप्तस्थाने। कीलय नमः मूले। बुद्धिं नमः ऊर्वोः। विनाशय नमः जान्वोः। ह्लीं नमः गुल्फयोः। ॐ नमः पादअङ्गुलिमूले। स्वाहा नमः पाद-अङ्गुलिअग्रे।

आरोह पदन्यास

ॐ नमः पादाङ्गुल्योः। ह्लीं नमः पादाङ्गुलिमूलयोः। बगलामुखी नमः गुल्फयोः। सर्वदुष्टानां नमः जान्वोः। वाचं नमः ऊर्वोः। मुखं नमः मूलाधारे पदं नमः गुह्ये। स्तम्भय नमः पृष्ठयोः। जिह्वा नमः नाभौ। कीलय नमः उदरे। बुद्धिं नमः हृदये। ह्लीं नमः ललाटे। ॐ नमः शिरसि। स्वाहा नमः ब्रह्मरन्ध्रे।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अक्षरन्यास

ॐ नमः शिरसि। ह्लीं नमः ललाटे। वं नमः भ्रुकुट्याम्। गं नमः दक्षिणनेत्रे। लां नमः वामनेत्रे। मुं नमः दक्षिणकर्णे। खीं नमः वामकर्णे। सं नमः दक्षिणनासापुटे। वँ नमः वामनासापुटे। दुं नमः दक्षिणकपोले। ष्टां नमः वामकपोले। नां नमः ऊर्ध्वोष्ठे। वां नमः अधोरोष्ठे। चं नमः मुखे। मुं नमः चिबुके। खं नमः कण्ठे। यं नमः दक्षिणमणिबन्धे। म्भं नमः दक्षिणाङ्गुलिमूले। यं नमः दक्षाङ्गुल्यग्रे। जिं नमः वामभुजामूले। ह्लां नमः वामकर्पूरे। कीं नमः वाममणिबन्धे। लं नमः वामाङ्गुलिमूले। यं नमः वामाङ्गुल्यग्रे। बुं नमः दक्षिणजङ्घे। द्धिं नमः दक्षजानुनि। विं नमः दक्षिणगुल्फे। नां नमः दक्षिणाङ्गुलिमूले। शं नमः दक्षिणाङ्गुल्यग्रे। यं नमः वामजङ्घे। ह्लीं नमः वामजानुनि। ॐ नमः वामगुल्फे। स्वां नमः वामपादाङ्गुलिमूले। हां नमः वामपादाङ्गुल्यग्रे।

अन्तर्याग

(देवी माँ की अपने अंतस् में पूजा ही अन्तर्याग है)।

पीताम्बरा महेशानि श्रीमृत्युञ्जयबल्लभे।
दयानिधे! स्वपूजार्थं अनुज्ञां दातुमर्हसि।।

(योगमुद्रा में बैठकर अपने अंतस् की वेदी के भिन्न-भिन्न स्थानों पर पीठ-देवताओं की मानसिक पूजा करें।)

(हृदय कमल पर हाथ रखकर)

1. ॐ मण्डूकाय नमः-मूलाधारे।

2. ॐ कं कालाग्निरुद्रेभ्यौ नमः-स्वाधिष्ठाने।

3. ॐ कूर्माय नमः-नाभिदेशे।

4. ॐ आधारशक्तये नमः, 5. ॐ प्रकृत्यै नम, 6. ॐ कमठाय नमः, ॐ शेषाय नमः, 8. ॐ क्षमायै नमः, 9. ॐ क्षीरसागराय नमः, 10. ॐ श्वेतद्वीपाय नमः, 11. ॐ महामण्डपाय नमः, 12. ॐ कल्पवृक्षाय नमः।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

(मस्तकस्थ आज्ञाचक्र पर हाथ रखकर)

1. ॐ धर्माय नमः, 2. ॐ ज्ञानाय नमः, 3. ॐ वैराग्याय नमः, 4. ॐ अनैश्वर्याय नमः, 5. ॐ अनन्ताय नमः, 6. ॐ सूर्यमण्डलाय नमः, 7. ॐ सत्वाय नमः, 8. ॐ रजसे नमः।

(हृदयस्थ अनाहत चक्र पर हाथ रखकर)

1. ॐ शेषाय नमः, 2. ॐ क्षमायै नमः, 3. ॐ क्षीरसागर नमः, 4. ॐ श्वेत द्वीपाय नमः, 5. ॐ महामण्डपाय नमः, 6. ॐ कल्पवृक्षाय नमः, 7. ॐ अनैश्वर्याय नमः, 8. ॐ अनन्ताय नमः, 9. ॐ सूर्यमण्डलाय नमः, 10. ॐ सोम मण्डलाय नमः, 11. ॐ पावक मण्डलाय नमः, 12. ॐ अं अं अन्तरात्मने नमः, 13. ॐ पं. परमात्मने नमः, 14. ॐ ह्लीं ज्ञानात्मने नमः, 15. ॐ मायातत्वाय नमः, 16. ॐ कं कलातत्वाय नमः, 17. ॐ वि. विद्यातत्वाय नमः।

हृदय पीठ पर विराजमान पीताम्बरा जगदम्बा को मूलमंत्र से मानसिक रूप से पाँच पुष्पांजलि दें–

1. ॐ ह्लीं बगलामुखी सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय जिह्वां कीलय बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा (बगला के मस्तक पर)। **(पुष्पांजलि दें)।**

2. ॐ ह्लीं बगलामुखी सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय जिह्वां कीलय बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा– (बगला के हृदय पर)। **(पुष्पांजलि दें)।**

3. ॐ ह्लीं बगलामुखी सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय जिह्वां कीलय बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा (बगला माता के आधार में)। **(पुष्पांजलि दें)।**

4. ॐ ह्लीं बगलामुखी सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय जिह्वां कीलय बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा–(बगला माता के आधार में)।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

(पुष्पांजलि दें)।

5. ॐ ह्लीं बगलामुखी सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय जिह्वां कीलय बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा-(हृदय में विराजमान माता के सम्पूर्ण अंगों में)। **(पुष्पांजलि दें)।**

इसके बाद गुरु द्वारा बताई गई विधि से मानसिक रीति से कुण्डलिनी को उठाकर हृदयस्थ कमल में ले जाकर वहाँ शिव-शंकर का ध्यान करें। उस स्थान पर अपनी भक्तिधारा से श्री बगलादेवी को ले जाकर प्रसन्न करें। ऐसी कल्पना करें कि जैसे द्वादशदल कमल में सदाशिव और पीताम्बरा माता का समागम हो रहा है।

फिर 1800 जप करें और उस जप को निम्न मंत्र द्वारा जल देकर देवी माँ को समर्पित करें।

गुह्यातिगुह्यगोप्त्री त्वं गृहाणस्मृत्कृतं जपम्।
सिद्धिर्भवतु मे देवि त्वत् प्रसादात् महेश्वरी।।

पीठस्थ पूजा प्रारम्भ

बाह्य पूजा-विधान

(पीले रंग की सुन्दर चौकी पर स्वर्ण अथवा पीतल का तांत्रिक विधि से शुद्ध किया हुआ यंत्र स्थापित करके उसके मध्य स्थान में केशर-कंस्तूरी-पीत-चंदन से निम्न मंत्रों से पूजा करें)

1. ॐ मं मण्डूकाय नमः। 2. ॐ कं कालाग्निरुद्रेभ्यो नमः। 3. ॐ कूर्माय नमः। 4. ॐ आधारशक्तये नमः। 5. ॐ प्रकृत्यै नमः। 6. ॐ कमठाय नमः। 7. ॐ शेषाय नमः। 8. ॐ क्षमायै नमः। 9. ॐ क्षीरसागराय नमः। 10. ॐ श्वेतद्वीपाय नमः। 11. ॐ महामण्डपाय नमः। 12. ॐ कल्पवृक्षाय नमः। 13. ॐ धर्माय नमः। 14. ॐ ज्ञानाय नमः। 14. ॐ वैराग्याय नमः। 16. ॐ अनैश्वर्याय नमः। 17. ॐ अनन्ताय नमः। 18. ॐ सूर्यमण्डलाय नमः। 19. ॐ सोममण्डलाय नमः। 20. ॐ पावकमण्डलाय नमः।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

21. ॐ सत्त्वाय नमः। 22. ॐ रजसे नमः। 23. ॐ अं आत्मने नमः। 24. ॐ अं अन्तरात्मने नमः। 25. ॐ पं परमात्मने नमः। 26. ॐ ह्लीं ज्ञानात्मने नमः। 27. ॐ मां मायातत्त्वाय नमः। 28. ॐ कं कलातत्त्वाय नमः। 29. ॐ विं विद्यातत्त्वाय नमः। 30. ॐ पं. परमतत्त्वाय नमः। अंत में मूल मंत्र से पुष्पांजलि अर्पित करें।

तत्पश्चात् पीठशक्तियों का पूजन

(यंत्र के मध्य भाग में पूर्ववत् पूजा करें।)

1. ॐ जयायै नमः। 2. ॐ विजयायै नमः। 3. ॐ अजितायै नमः। 4. ॐ अपराजितायै नमः। 5. ॐ नित्यायै नमः। 6. ॐ विलासिन्यै नमः। 7. ॐ दोग्ध्र्यै नमः। 8. ॐ अघोरायै नमः। 9. ॐ मङ्गलायै नमः।

(इस मंत्र से माता पीताम्बरा के योगपीठ पर पुष्प छोड़ें)

ॐ ह्लीं सर्वशक्तिकमलासनाय श्रीपीताम्बरायाः योगपीठात्मने नमः।

आवाहन संकल्प

ॐ विष्णुः विष्णुः विष्णुः श्री बगला पीताम्बरा शक्ति प्रीतये श्री बगलावाहनं, प्राण-प्रतिष्ठा, पूजाकर्म, ध्यान, प्रार्थना-मुद्राप्रदर्शनार्थं संकल्प अहं करिष्ये।

आवाहन विनियोग

ॐ अस्य श्री नारदऋषिः, त्रिष्टुप्छन्दः, बगलामुखी देवता, ह्लीं बीजं, स्वाहा शक्तिः, श्री पीताम्बरा आवाहन विनियोगः।

देवीमाता का आवाहन

आवाहन मंत्र

(पुष्पांजलि लेकर इन मंत्रों को बोलें।)

1. ॐ ह्लीं सर्वशक्तिकमलासनाय श्रीपीताम्बरायाः योग पीठात्मने नमः।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

2. ॐ ह्लीं बगलामुखि सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय जिह्वां कीलय बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा।

3. ॐ देवेशि! त्वं भक्तिसुलभे! परिवारसमन्विते। यावत् त्वां पूजायिष्यामि। तावददेवि! सुस्थिरो भव।।

(यह कहकर पीठ-यंत्र पर पुष्पों को श्रद्धापूर्वक रख दें।)

षोडश उपचार-पूजा

आवाहनी आदि पाँच मुद्राओं का प्रदर्शन

1. ब्रह्माण्डस्थ परं शुद्धं त्वामहं परमेश्वरि।
अरण्यानिव हव्यांशं मूर्तावावाहयाम्यहम्।
श्री पीताम्बरे देवि! इहावह, इहावह, आवाहितो भव नमः।

(मूल मंत्र के उच्चारण से आवाहनी, स्थापनी, सन्निधापनकरणी, सन्निरोधकरणी और संमुखीकृती मुद्राओं का प्रदर्शन करके इन भावों से माता को यंत्र मध्य में स्थापित करें।)

2. पाद्य

यद्भक्तिलेशसम्पर्कात् परमानन्दसम्भवः।
तस्यै ते पदयुगलाय पाद्यं शुद्धाय कल्पये।।
श्रीबगलामुखि देव! पाद्यं गृहाण नमः। ॐ ॐ वं वं वं।

(पाद्य अर्पित करें।)

3. आचमन

गङ्गादि सर्वतीर्थेभ्यो मयाप्रार्थनयाहृतम्।
तोयमेतत् सुखस्पर्शं पाद्यार्थं प्रतिगृह्यताम्।।
ॐ भगवत्यै बगलादेव्यै नमः अचमनीयम् समर्पयामि।

(आचमन कराएं।)

4. अर्घ्य

तापत्रयहरं दिव्य परमानन्दलक्षणम्।
तापत्रयविनिर्मुक्तं तवाऽर्घ्यं कल्पयाम्यहम्।।
ॐ श्री बगलादैव्यै नमः पादयोः पाद्यं समर्पयामि।

(अर्घ्य दें।)

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

5. मधुपर्क

(शहद, धृत और दधि का समान भाव का मिश्र मधुपर्क होता है।)

सर्वकालुष्यहीनाय परिपूर्णा सुखात्मने।
मधुपर्कमिदं देवि! कल्पयामि प्रसीद मे।।
श्रीपीताम्बरे देवि! मधुपर्कं समर्पयामि।

(पुनः आचमन कराएं।)

6. पुनः आचमन

उच्छिष्टोऽप्यशुचिर्वाऽपि यस्य स्मरणमात्रतः।
तोयमेतत् सुखस्पर्शं आचमनार्थं प्रतिगृह्यताम्।
श्रीपीताम्बरे देवि! मधुपर्कान्ते पुनराचमनीयं गृहाण नमः।

(पुनः आचमन कराएं।)

7. महास्नान

परमानन्दबोधाब्धि - निमग्न - निजमूर्त्तये।
साङ्गोपाङ्गमिदं स्नाने कल्पयामीह देवि ते।।

(मूल मंत्र का 11 बार उच्चारण करते हुए शंख में जल लेकर स्नान कराएं।)

8. वस्त्र (दो)

ब्रह्माण्डज्योति-पटाच्छिन्न-निजगुह्योरुतेजसे।
निरावरण-विज्ञानं वासस्ते कल्पयाम्यहम्।।
श्रीबगलामुखि देवि! वस्त्रं गृहाण नमः।

(वस्त्र अर्पित करें।)

9. गंध

परमानन्द- सौरभ्य- परिपूर्ण-दिगन्तरे।
गृहाण परमं गन्धं कृपया परमेश्वरि।।
श्रीपीतम्बरे देवि! गन्धं गृहाण नमः।
ततो गन्धमुद्रां प्रदर्शयेत्।

(गंधमुद्रा का प्रदर्शन करें।)

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

10. अक्षत

अक्षतान् निर्मलान् शुद्धान् मुक्ताफलसमन्वितान्।
गृहाणेमान् जगदम्बे! देहि मे निर्मलां धियम्।।
श्री पीताम्बरा देवि! अक्षतान् समर्पयामि।
(इससे महामाया को अक्षत चढ़ाएं।)

11. हरिद्रा (हल्दी)

हरिद्रारञ्जिता देवि! सुखसौभाग्यप्रदायिनी!।
तस्मात्वं पूजयाम्यत्र सुख-समृद्धि प्रयच्छ मे।।
इति हरिद्रां समर्पयामि बगलामुख्यै नमः।
(इससे मस्तक पर विलेपनार्व हरिद्रा चढ़ाएं।)

12. रोली

कुङ्कुमं कान्तिदं दिव्यं कामिनीकामसम्भवम्।
कुङ्कुमेनाऽर्चिते देवि! प्रसीद बगलामुखि!।।
(इससे रोली चढ़ाएं।)

13. सिन्दूर

सिन्दूरारुणाभं जपाकुसुमसन्निभम्।
सौभाग्यार्थं समर्पयामि, प्रसीद बगलामुखि!।।
(इससे बगलामुखी देवी के लिए सिन्दूर चढ़ाएं।)

14. कज्जल

चक्षुर्भ्यां कज्जलं रम्यं सुभगे! शान्तिकारके!।
कर्पूरज्योतिरूत्पन्न गृहाण बगलामुखि!।।
इति कज्जलं समर्पयामि बगलामुख्यै नमः।
(इससे देवी का कज्जल (काजल) अर्पण करें।)

15. पुष्प

मन्दार-पारिजातादि-पाटल-केतकानि च।
जाती-चम्पक पुष्पाणि गृहाणेमानि शोभने!।।
(इससे पीले रंग के फूल चढ़ाएं।)

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

16. पुष्पमाला

नानाराविरागाणि पीतपुष्पैर्विचित्रताम्।
पुष्पमालां प्रयच्छामि ते बगलामुखि! शिवे।।
(इससे पीले फूलों की माला चढ़ाएं।)

17. धूप

वनस्पतिरसोद्भूतो गन्धाढ्यो सुमनोहरः।
आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्।।
(इससे गुग्गुल-चन्दनादि की धूप समर्पित करें।)

18. दीप

ॐ सुप्रकाशो महादीपः सर्वतस्तिमिरापहः।
सवाह्य-आभ्यान्तर ज्योतिः दीपोऽयंप्रतिगृह्यताम्।।
(इस मंत्र से 36 तंतुओं का प्रज्वलित दीप देवी माता को भेंट करें।)

19. नैवेद्य

ॐ सत्पात्र सिद्धं सुविविधानेक भक्षणम्।
निवेदयामि देवेशि! सानुग्रहाय ग्रहाण तत्!!
अन्नं चतुर्निधं स्वादुरसैः षड्भिः समन्वितम्।
नैवेद्यं गृह्यतां देवि! भक्ति मे ह्यचलां कुरु।।
(इससे चर्ब-चौष्य, लेह्य, पेय-चार प्रकार का नैवेद्य तथा उत्तम-उत्तम फल निवेदन करें।)

20. दक्षिणा

ॐ ह्लीं बगलामुखि सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं।
स्तम्भय जिह्वा कीलय बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा।
ॐ श्री पीताम्बरे देवि! द्रव्य-दक्षिणां गृहाण नमः।
(इससे दक्षिणा द्रव्य चढ़ाएं।)

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

21. परिक्रमा (मानसिक करें)

यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च।
तानि सर्वाणि नश्यन्ति प्रदक्षिणा पदे पदे।।
(इस मंत्र से बगलामुकी की परिक्रमा करें।)

बगला शाप-विमोचन

विनियोग–ॐ अस्य श्रीबगलाया ब्रह्मवसिष्ठ विश्वामित्रशाप-विमोचनमन्त्रस्य वसिष्ठनारद संवाद-सामवेदाधिपतिब्रह्मण ऋषयः, सर्वैश्वर्यकारिणी श्रीदुर्गा देवता, चरित्रत्रयं बीजं ह्लीं शक्तिः, त्रिगुणात्मस्वरूपबगलाशापविमुक्तौ मम संकल्पितकार्यसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

ॐ (ह्लीं) रीं रेतः स्वरूपिण्यै मधुकैटभमर्दिन्यै ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापाद् विमुक्ता भव।।1।।

ॐ श्री बुद्धिस्वरूपिण्य महिषासुरसैन्यनाशिन्यै ब्रह्मवसिष्ठ विश्वामित्रशापाद् विमुक्ता भव।।2।।

ॐ रं रक्तस्वरूपिण्यै महिषासुरमर्दिन्यै ब्रह्मवसिष्टविश्वामित्रशापाद् विमुक्ता भव।।3।।

ॐ क्षुं क्षुधास्वरूपिण्यै देवव्रिन्दतायै ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापाद् विमुक्ता भव।।4।।

ॐ छां छायास्वरूपिण्यै दूतसंवादिन्यै ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापाद् विमुक्ता भव।।5।।

ॐ शं शक्तिस्वरूपिण्यै धूम्रलोचनघातिन्यै ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापाद् विमुक्ता भव।।6।।

ॐ तृं तृषास्वरूपिण्यै चण्डमुण्डवधकारिण्यै ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापाद् विमुक्ता भव।।7।।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ॐ क्षां क्षान्तिस्वरूपिणायै रक्तबीजवधकारिण्यै ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापाद् विमुक्ता भव।।8।।

ॐ जां जातिस्वरूपिण्यै निशुम्भवधकारिण्यै ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापाद् विमुक्ता भव।।9।।

ॐ लं लज्जास्वरूपिण्यै शुम्भवधकारिण्यै ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापाद् विमुक्ता भव।।10।।

ॐ शां शान्तिस्वरूपिण्यै देवस्तुत्यै ब्रह्मवसिष्ठ-विश्वामित्रशापाद् विमुक्ता भव।।11।।

ॐ श्रं श्रद्धास्वरूपिण्यै सकलफलदात्र्यै ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापाद् विमुक्ता भव।।12।।

ॐ कां कान्तिस्वरूपिण्यै राजवरप्रदायै ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापाद् विमुक्ता भव।।13।।

ॐ मां मातृस्वरूपिण्यै अनर्गलमहिमसहितायै ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापाद् विमुक्ता भव।।14।।

ॐ ह्रीं श्रीं दुं दुर्गायै सं सर्वैश्वर्यकारिण्यै ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापाद् विमुक्ता भव।।15।।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नमः शिवायै अभेद्यकवचस्वरूपिण्यै ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापाद् विमुक्ता भव।।16।।

ॐ क्रीं काल्यै कालि ह्रीं फट् स्वाहायै ऋग्वेदस्वरूपिण्यै ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापाद् विमुक्ता भव।।17।।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं महाकाली महालक्ष्मी-महासरस्वती-स्वरूपिण्यै त्रिगुणात्मिकायै दुर्गादेव्यै नमः।।18।।

इत्येवं हि महामन्त्रान् पठित्वा परमेश्वर।
बगलापाठं दिवा रात्रौ कुर्यादेव न संशयः।।19।।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

एवं मन्त्रं न जानाति बगलाध्यानं करोति यः।
आत्मानं चैव दातारं क्षीणं कुर्यान्न संशयः।।20।।

बगला पीठ संस्कार

बगलामुखी उपासना में पीठ अथवा सिंहासन स्वर्ण या पीतल धातु का होना चाहिए। यदि धातु-सिंहासन उपलब्ध न हो तो काष्ठ सिंहासन भी उचित रहता है। चंदन, हल्दी, आम, सीसम आदि की लकड़ी से महामाया का सवा हाथ लम्बा और उतना ही चौड़ा पीठ बनाएं। वर्तमान दृष्टिकोण से यह लम्बाई-चौड़ाई दो-दो फीट मानी जा सकती है।

सुदृढ़ या सुरम्य पाठ बनाकर शुक्ला या कृष्णा द्वादशी के दिन शुभ समय में पीठ-संस्कार करें। इसे पीठ-प्रतिष्ठा भी कहते हैं। यह अनुष्ठान प्रारम्भ करने से एकाध दिन पहले ही सम्पन्न करें। सर्व प्रथम बगला पीठ को भली-भाँति पंचगव्य से मूलमंत्र का उच्चारण करते हुए प्रक्षालित करें। तत्पश्चात् उसी विधि से गंगाजल तथा गोदुग्ध-गोधृत-तुलसी-शर्करा से निर्मित पंचामृत से प्रक्षालित कर लें।

पीठ-संस्कार के समय साधक को पूजा घर में आसन शोधन करके बैठ जाना चाहिए और उस पवित्र पीठ को पूर्व दिशा की तरफ लगा देना चाहिए। तत्पश्चात् सामान्य अर्घ्यपात्र स्थापित करके पीठ की निम्न प्रकार प्रतिष्ठा करें।

पीठ-पूजा

1. पीठ के दक्षिण में बाहरी भाग में गुरु-स्थान निर्धारित करके स्वस्तिक का चिह्न बनाएं और निम्न मंत्रों द्वारा आवाहन-स्थापन विधि से निम्न मंत्रों द्वारा गुरु-पूजा करें।

ॐ गुं गुरुभ्यो नमः। ॐ पं परम गुरुभ्यो नमः। ॐ पं परात्र गुरुभ्यो नमः। ॐ पं परमेष्ठि गुरुभ्यो नमः।......(इन्हीं मंत्रों से आवाहन, स्थापन, सन्निधापन, सन्निरोधन, सम्मुखीकरण और पंचोपचार पूजा करें।)

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

2. पीठ के वाम भाग में अष्ट दल कमल अथवा तीन स्वस्तिकासन बनाकर निम्न मंत्रों से अलग-अलग क्रमशः गणेश-पार्वती और क्षेत्रपाल की पूजा करें।

1. ॐ गं गणपतये नमः-(इसी मंत्र से आवाहन, स्थापन, सन्निधापन, सन्निरोधन, सम्मुखीकरण और पंचोपचार, पूजा करें।

2. ॐ दुं दुर्गायै नमः- (इसी मंत्र से आवाहन, स्थापन, सन्निधापन, सन्निरोधन, सम्मुखीकरण और पंचोपचार पूजा।)

3. ॐ क्षं क्षेत्रपालाय नमः-(इसी मंत्र से आवाहन, स्थापन, सन्निधापन, सन्निरोधन, सम्मुखीकरण और पंचोपचार पूजा करें।)

3. उस पीठ के मध्य भाग में हल्दी-चंदन के घोल से षोडशदलीय कमल का निर्माण करें। उस कमल के पूर्व भाग वाले दल से प्रारम्भ करते हुए क्रमशः प्रत्येक पत्ते पर बगलामुखी के आसन की निम्न आधार शक्तियों की पूजा करें।

(पूजा-सामग्री-अक्षत्-हल्दी-पुष्पादि का मिश्रण)

1. ॐ आधारशक्त्यै नमः। 2. ॐ मूल प्रकृत्यै नमः। 3. ॐ कालाग्नि रुद्राय नमः। 4. ॐ महामण्डूकाय नमः। 5. ॐ कूर्माय नमः। 6. ॐ वाराहाय नमः। 7. ॐ अनन्ताय नमः। 8. ॐ भूम्यै नमः। 9. ॐ अमृतार्णवाय नमः। 10. ॐ रत्नद्वीपराय नमः। 11. ॐ हेमगिरये नमः। 12. ॐ नन्दनोद्यानाय नमः। 13. ॐ मणिभूम्यै नमः। 14. ॐ रत्नमण्डपाय नमः। 15. ॐ कल्पतरवे नमः। 16. ॐ रत्नसिंहासनाय नमः।

इसी क्रम में पीठ के आग्नेय कोण में-**1. ॐ धर्माय नमः। 2.** दक्षिण में-**ॐ ज्ञानाय नमः। 3.** नैर्ऋत्य में-**ॐ वैराग्याय नमः। 4.** पश्चिम में-**ॐ ऐश्वर्याय नमः। 5.** वायव्य में-**ॐ अयर्माय नमः। 6.** उत्तर में-**ॐ अज्ञानाय नमः। 7.** ईशान में-**ॐ अवैराग्याय नमः। 8.** पूर्व में-**ॐ अनैश्वर्याय नमः। 9.** ऊर्ध्व दिशा में-**ॐ ब्रह्मणे नमः और 10.** अधः दिशा में-**ॐ अनन्ताय नमः** कहकर पूजा करें।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पुनः मध्यभाग में-**1. ॐ अनन्ताय नमः। 2. ॐ वास्तुपुरुषाय नमः। 3. ॐ सं सत्याय नमः। 4. ॐ तं तमसे नमः। 5. ॐ मां मायायै नमः। 6. ॐ विंविद्यायै नमः।** कहकर पूजा करें।

4. पूर्वादिक्रम से आठ दिशाओं में उस पीठ पर पृथ्वी पर विराजमान निम्न आठ ज्योतिर्मय पीठों की कल्पना करके पूजा करें।

1. उड्डाणपीठेश्वरसहितां उड्डाणपीणेश्वरर्यम्बा श्रीपादुकां पूजयामि। (पूर्व दिशा में)

2. मातृकापीठेश्वरसहितां मातृकापीठेश्वर्यम्बा श्रीपादुकां पूजयामि। (अग्निकोण में)

3. जालन्धरपीठेश्वरसहितां जालन्धरपीठेश्वर्यम्बा श्रीपादुका पूजयामि। (दक्षिण में)

4. कोल्हागिरिपीठेश्वरसहितां कोल्हागिरिपीठेश्वरर्यम्बा श्रीपादुका पूजयामि। (नैर्ऋत्य में)

5. पूर्णगिरिपीठेश्वरसहितां पूर्णगिरिपीठेश्वर्यम्बा श्रीपादुकां पूजयामि। (पश्चिम में)

6. संहारगिरिपीठेश्वरसहितां संहारगिरिपीठेश्वरर्यम्बा श्रीपादुकां पूजयामि। (वायव्य में)

7. हिमाचलपीठेश्वरसहितां हिमाचलपीठेश्वरर्यम्बा श्रीपादुकां पूजयामि। (उत्तर में)

8. कामरूपपीठेश्वरसहितां कामरूपपीठेश्वर्यम्बा श्रीपादुकां पूजयामि (ईशान में)

पुनः पूर्व-पश्चिम-उत्तर-दक्षिण चार दिशाओं में

1. ॐ गं गणेशाय नमः। 2. ॐ क्षं क्षेत्रपालाय नमः। 3. ॐ पां पादुकाभ्यो नमः। 4. ॐ वं वटुकेभ्यो नमः।

5. अन्त में पीठ पर पीठ-शक्तियों की पूजा करें। यह पूजा सम्पूर्ण पीठ को लक्ष्य करके करें।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ॐ जं जयायै नमः। ॐ विं विजयायै नमः। ॐ जं जयन्त्यै नमः। ॐ अं अपराजितायै नमः। ॐ अग्निमुख वेतालाय नमः। ॐ आनंदकन्दाय नमः। ॐ संविन्नालाय नमः। ॐ दलेभ्यो नमः। ॐ केसरेभ्यो नमः। ॐ कर्णिकायै नमः। ॐ अं सूर्यमण्डलाय नमः। ॐ उं सोममण्डलाय नमः। ॐ मं वह्नि मण्डलाय नमः। ॐ आं आत्मने नमः। ॐ अं अन्तरात्मने नमः। ॐ पं परमात्मने नमः। ॐ ऊँ ज्ञानात्मने नमः। ॐ पं परमात्मने नमः। ॐ ऊं ज्ञानात्मने नमः। ॐ विं विष्णुमायायै नमः। ॐ चं चेतनायै नमः। ॐ बुं बुद्ध्यै नमः। ॐ निं निद्रायै नमः। ॐ क्षुं क्षुधायै नमः। ॐ छां छागायै नमः। ॐ शं शक्त्यै नमः। ॐ तृं तृष्णायै नमः। ॐ क्षां क्षान्त्यै नमः। ॐ जां जात्यै नमः। ॐ लं ललितायै नमः। ॐ शां शान्तयै नमः। ॐ श्रं श्रद्धायै नमः। ॐ का कान्त्यै नमः। ॐ लं लक्ष्म्यै नमः। ॐ धृं धृत्यै नमः। ॐ पुं पुष्पिकायै नमः। ॐ मां मातृकायै नमः। ॐ सर्वात्मसंसर्गयोगपद्मपीठाय नमः।

इस प्रकार समस्त पीठ की पूजा करके 108 बार बगला मूलमंत्र का जप करके पीठ को साष्टांग नमन करें। यह बगलापीठ स्थापना का पूर्णांगी विधान है।

❑❑❑

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आवरण पूजा, बगलामुखी यंत्र विधान

- बगलामुखी यंत्र
- मंत्र
- मूल मंत्र न्यास
- मंत्रोद्धार
- यंत्रोद्धार
- विनियोग
- ऋष्यादिन्यास
- करन्यास
- हृदयादिन्यास
- ध्यान
- अग्नि की दश कलाएँ
- द्वादश कलाएँ
- प्राण-प्रतिष्ठा
- षोडशकलाएँ
- अग्न्यादि-पीठ पाद चतुष्टये
- पूर्वादिपीठगात्रचतुष्टये
- मध्ये मध्य में
- प्राण-प्रतिष्ठा
- ऋष्यादिन्यास
- प्रथम आवरण
- षटकोण में
- यंत्र पूजा
- प्रथम आवरण
- बगलामुखी-षोडशदल यंत्र
- भुपूरस्य पूर्वाद्दिचतुर्द्वारे
- बगलामुखी भूपुरस्य
- पूर्व से अग्निकोण क्रम में
- चक्र पूजा
- मूल मंत्र
- सुधा ध्यान
- शाप विमोचन मंत्र
- प्रथम शोधन
- द्वितीय शोधन
- तृतीय शोधन
- चतुर्थ शोधन
- शक्ति शोधन
- षडङ्ग पूजन
- द्वादश सूर्यकलाएँ
- विलोम मातृका
- गुरु पूजन
- मंत्र
- गणेश पूजन
- पीठ पूजन
- कुण्डलिनि ध्यान
- शान्ति स्तोत्रम्

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

4

आवरण पूजा, बगलामुखी यंत्र विधान

माता पीताम्बरा के पूजन के उपरान्त उनके परिवार का पूजन भी आवश्यक पूजनाङ्ग है। इसके अभाव में साधक का प्रयास अपूर्ण ही रहेगा। परिवार के लिए साधक को बगलामुखी यंत्र का निर्माण करना होगा।

सर्वप्रथम पूजा स्थान पर गाय के गोबर से लीप लें। फिर उस स्थान पर रेत की मोटी पर्त बिछा लें और उस पर हरिद्राचूर्ण से यंत्रराज का निर्माण करें। यंत्र का स्वरूप निम्नवत् है—

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

यंत्र पूजा से पूर्व पूजन सामग्री साधक अपने पास पहले से ही रख लें। इस सामग्री में पुष्प, अक्षत, अर्घ्य पात्र व जल का लोटा होना आवश्यक है, क्योंकि प्रत्येक मंत्र के अंत में पुष्प व जल से पूजन व तर्पण किया जाता है।

यंत्र स्थापना के उपरान्त माँ पीताम्बरा से मानसिक रूप से परिवारार्चन की अनुमति लें, यथा— **श्री पीताम्बरे तत्तावरण देवता पूजनार्थं अनुज्ञां देहि।**

मंत्र

सच्चिन्मये परमे देव सर्वानन्द रसप्रिये।
अनुज्ञां देहि मे मातु परिवारार्चनाय मे॥ (पुष्पाञ्जलि दें)

मूल मंत्र न्यास

सर्वप्रथम मूल मंत्र से न्यास करें। पहले तीन बार मंत्र से प्राणायाम करें, फिर विनियोग कर ऋष्यादिन्यास करें।

मंत्रोद्धार

प्रणवं स्थिरमायां च ततश्च बगलामुखीम्।
तदन्ते सर्व दुष्टानां ततो वाचं मुखं पदं॥
स्तंभयेति ततो जिह्वा कीलयेति पद द्वयम्।
बुद्धि नाशय पश्चात्तु स्थिरमायां समालिखेत्॥
लिखेच्च पुनरोङ्कार स्वाहेति पदमन्ततः।
षटत्रिंशदक्षरी विद्या सर्वसम्पतकरी मता॥

यंत्रोद्धार

बिन्दुस्त्रिकोण-षट्कोण-वृत्ताष्टदलमेव च।
वृतं च षोड्शदलं यन्त्रं च भूपुरात्मकम्॥

विनियोग

सीधे हाथ में जल लेकर मंत्र पढ़ें—

ॐ अस्य श्री बगलामुखि मन्त्रस्य नारद ऋषिः त्रिष्टुप छन्दः, बगलामुखी देवता, ह्लीं बीजम्, स्वाहा शक्तिः ममाभिष्ट सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

(जल पृथ्वी पर छोड़ दें)

ऋष्यादिन्यास

नारद ऋषये नमः शिरसि। (सिर पर दाहिने हाथ से छुएँ)

त्रिष्टुप छन्दसे नमः मुखे। (मुँह को छुएँ)

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बगलामुखी देवतायै नमः हृदि।	(हृदय को छुएँ)
ह्लीं बीजाय नमः गुह्ये।	(गुह्यंग का स्पर्श करें)
स्वाहा शक्तये नमः पादयोः।	(पैरों को स्पर्श करें)
प्रणव कीलक्षय नमः नाभौ	(नाभी का स्पर्श करें)
विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे	(ऊपर से नीचे सभी अंग छुएँ)

करन्यास

ॐ ह्लीं अंगुष्ठाभ्यां नमः।	(हाथ के अँगूठे का स्पर्श करें)
बगलामुखी तर्जनीभ्यां नमः।	(प्रथम अँगुली का स्पर्श करें)
सर्व दुष्टानां मध्यमाभ्यां नमः	(मध्यमा का स्पर्श करें)
वाचं मुखं पदं स्तम्भयं	
अनामिकाभ्याम् नमः	(अनामिका का स्पर्श करें)
जिह्वां कीलय कनिष्ठिकाभ्यां नमः।	(अंतिम छोटी अँगुली का स्पर्श करें)
बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा करतलकर पृष्ठाभ्यां नमः	(दोनों हथेलियों के आगे व पीछे के भागों का स्पर्श करें)

हृदयादिन्यास

ॐ ह्लीं हृदयाय नमः।	(हृदय का दाहिने हाथ से स्पर्श करें)
बगलामुखी शिरसे स्वाहा।	(सिर का स्पर्श करें)
सर्व दुष्टानां शिखायै वषट्।	(शिखा का स्पर्श करें)
वाचं मुखं पदं स्तम्भय कवचम् हुम्	(कवच बनाएँ)
जिह्वां कीलय नेत्र त्रयाय वौषट्	(नेत्रों का स्पर्श करें)
बुद्धिं विनाशय ॐ ह्लीं स्वाहा, अस्त्राय फट्	(सिर के पीछे से दाएँ हाथ से चुटकी बजाते हुए दाहिने हाथ पर बाएँ हाथ की तर्जनी व मध्यमा से तीन ताली बाजाएँ)

ध्यान

मध्ये सुधाब्धि मणिमण्डप रत्नवेद्यां,
सिंहासनोपरिगतां, परिपीतवर्णाम्।
पीताम्बराभरण, माल्य विभूषिताङ्गी,
देवीं स्मरामि धृत मुद्गर वैरि जिह्वाम्॥

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जिह्वाग्रमादाय करेण देविं वामेन शत्रुन् परिपीडयन्तीम्।
गदाभिघातेन च दक्षिणेन पीताम्बराढ्यां द्विभुजां नमामि।।

इस प्रकार माता का ध्यान करके उनका मानसोपाचार पूजन करें, फिर बाह्य पूजंन (आवरण पूजा) आरम्भ करें।

सर्वप्रथम यंत्र का शुद्ध जल से प्रक्षालन करके चन्दन आदि चढ़ाएँ और मूल से पुष्पाञ्जली अर्पित करें। अर्घ्य-स्थापना करें। अपने बाईं ओर चतुरस्त्रवृत्तत्रिकोणात्मक मण्डल बनाकर उसे मध्य में **ॐ पृथिव्यै नमः। ॐ कमठाय नमः। ॐ शेषाय नमः** कहते हुए गन्धाक्षत, पुष्पादि से पूजन करें और **ॐ अग्निमण्डलाये दशकलात्मने बगलार्घ्य पात्रासनाय नमः** कहकर उस त्रिकोण के ऊपर अर्घ्यपात्र रखकर **ॐ दशकलामने अग्निमण्डलाय नमः** इससे गन्धाक्षत, पुष्प आदि से पूजन करें।

चतुरस्त्रवृत्तत्रिकोणात्मक मण्डल का प्रारूप

अग्नि की दश कलाएँ

ॐ वह्निमण्डलाय दशकलात्मने श्री पीताम्बरायाः सामान्यार्घ्य पात्रासनाय नमः।

(1) यं धूम्रार्चिषे नमः।
(2) रं उष्मायै नमः।
(3) लं ज्वालिन्यै नमः।
(4) वं ज्वलिन्यै नमः।
(5) शं विस्फुलिङ्गिन्यै नमः।
(6) षं सुश्रियै नमः।
(7) सं स्वरूपायै नमः।
(8) हं कपिलायै नमः।
(9) ळं हव्यवाहायै नमः।
(10) क्षं कव्यवाहायै नमः।

तदोपरान्त—

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ॐ सूर्यमण्डलाय द्वादशकलात्मने श्री पीताम्बरार्घ्यपात्राय नमः।

फिर अर्घ्य पात्र का पूजन करें।

द्वादश कलाएँ

(1) कं भं तपिन्यै नमः।
(2) खं वं तापिन्यै नमः।
(3) गं फं धूम्रायै नमः।
(4) घं पं मारिच्यै नमः।
(5) ङं नं ज्वालिन्यै नमः।
(6) चं धं रुच्यै नमः।
(7) छं दं सुषुम्णायै नमः।
(8) जं थं भोगदायै नमः।
(9) झं तं विश्वायै नमः।
(10) जं णं बोधिन्यै नमः।
(11) टं ढं धारिण्यै नमः।
(12) ठं डं क्षमायै नमः।

फिर प्राण-प्रतिष्ठा करें—

प्राण-प्रतिष्ठा

अब पात्र में अर्घ्य रूप से जल भरें और उसके ऊपर ॐ सोममण्डलाय षोडशकलात्मने बगलार्घ्यमृताय नमः।

षोडशकलाएँ

(1) अं अमृतायै नमः।
(2) आं मानदायै नमः।
(3) इं पूषायै नमः।
(4) ईं तुष्टयै नमः।
(5) उं पुष्टयै नमः।
(6) ऊं रत्यै नमः।
(7) ऋं धृत्यै नमः।
(8) ॠं शशीन्यै नमः।
(9) लृं चन्द्रिकायै नमः।
(10) ल्हं कान्त्यै नमः।
(11) एं ज्योत्सनायै नमः।
(12) ऐं श्रियै नमः।
(13) ओं प्रीत्यै नमः।
(14) औं अंगदायै नमः।
(15) अं पूर्णायै नमः।
(16) अः पूर्णामृतायै नमः।

पूजन करके अंकुश मुद्रा से सूर्यमण्डल से तीर्थ का आह्वान करके, जल में षडंगन्यास करके, धेनु मुद्रा से अमृतीकरण करते हुए उस जल में भगवती का ध्यान करते हुए शंख मुद्रा तथा योनिमुद्रा का प्रदर्शन करें व मूल मंत्र से देवी का गन्धादि से पूजन करें। जल को मत्स्य मुद्रा से आच्छादित करते हुए आठ बार मूल मंत्र से अभिमत्रित करें। इस जल को अपने ऊपर तथा पूजा सामग्री पर छिड़कें।

अब यंत्र पूजन आरम्भ करें।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सबसे पहले अपने उत्तर भाग में "**गुं गुरुभ्यो नमः**" तथा दाहिनी ओर "**गं गणपतये नमः**" बोलकर पुष्पादि से पूजन करें। अब यंत्र राज के मध्य में पूजन करें। (पीठ पूजन)

(1) ॐ मं मण्डूकाय नमः।
(2) ॐ कां कालाग्निरुद्राय नमः।
(3) ॐ मं मूल प्रकृत्यै नमः।
(4) ॐ आं आधारशक्तयै नमः।
(5) ॐ कूं कूर्माय नमः।
(6) ॐ धं धराय नमः।
(7) ॐ सुं सुधासिन्धवे नमः।
(8) ॐ श्वें श्वेतदीपाय नमः।
(9) ॐ सुं सुराङघ्रिपाच नमः।
(10) ॐ मं मणिहर्म्याय नमः।
(11) ॐ हें हेमपीठाय नमः।

अग्न्यादि-पीठ पाद चतुष्टये

(1) ॐ धं धर्माय नमः।
(2) ॐ ज्ञां ज्ञानाय नमः।
(3) ॐ वं वैराग्याय नमः।
(4) ॐ ऐं ऐश्वर्याय नमः।

पूर्वादिपीठगात्रचतुष्टये

(1) ॐ अं अधर्माय नमः।
(2) ॐ अं अज्ञानाय नमः।
(3) ॐ अं अवैराग्याय नमः।
(4) ॐ अं अनैश्वर्याय नमः।

मध्ये

1. ॐ अं अनन्ताय नमः।
2. ॐ तं तत्व पदमासनाय नमः।
3. ॐ विं विकारात्मक केशरेभ्यो नमः।
4. ॐ प प्रकृत्यात्मक पत्रेभ्यो नमः।
5. ॐ पं पञ्चाशतवर्ण कर्णिकायै नमः।
6. ॐ सं सूर्यमण्डलाय नमः।
7. ॐ इं इन्दुमण्डलाय नमः।
8. ॐ पां पावकमण्डलाय नमः।
9. ॐ सं सत्त्वाय नमः।
10. ॐ रं रजसे नमः।
11. ॐ तं तमसे नमः।
12. ॐ आं आत्मने नमः।
13. ॐ पं अन्तरात्मने नमः।
14. ॐ परमात्मने नमः।
15. ॐ ज्ञां ज्ञानात्मने नमः।
16. ॐ मां मायातत्वाय नमः।
17. ॐ कं कलातत्वाय नमः।
18. ॐ विद्यातत्वाय नमः।
19. ॐ पं परमतत्वाय नमः।
20. ॐ जं जयायै नमः
21. ॐ विं विजयायै नमः
22. ॐ अजितायै नमः।
23. ॐ अं अपराजितायै नमः।
24. ॐ निं नित्यायै नमः।
25. ॐ विं विलासिन्यै नमः।
26. ॐ दों दोग्ध्रयै नमः।
27. ॐ अं अघोरायै नमः।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मध्य में

ॐ मंगलायै नमः।

उपरोक्त पीठ शक्ति पूजन करने के उपरान्त यंत्र को दूध प जल की धार आदि प्रदान करके निम्नांकित मंत्रोच्चार करें—

ॐ ह्लीं बगलामुखी योग पीठाय नमः।

तदोपरान्त माता का ध्यान करें कि उनके मुख से तेज निकल रहा रहा है। आप भी अपने हृदय से तेज निकालकर देवी के तेज के साथ संयोजन कर, अंजलि में पुष्प लेकर, मूल मंत्र से यंत्र पर स्थापना करें। फिर यंत्र में भगवती का आह्वान करते हुए, आह्वानी, स्थापिनी, सनिनधापिनी, सन्निधापिनी, सन्निरोधिनी मुद्राओं का प्रदर्शन करते हुए **श्री पीताम्बरे सकलीकृता भव, सकलीकृता भव** फिर **श्री पीताम्बरा इहाऽमृतीकृत्य भव, इहाऽमृतीकृत्य भव** धेनुमुद्रा से अमृतीणी महामुद्रा से परमी कर पराम्बा के अंग में षड्ंग न्यास कर प्राण प्रतिष्ठा करें—

प्राण-प्रतिष्ठा

भगवती के हृदय को स्पर्श करते हुए विनियोग करें—

ॐ अस्य श्री प्राणप्रतिष्ठामन्त्रस्य ब्रह्माविष्णुरुद्रा ऋषयः ऋग्यजुसामा-निच्छन्दासि, पराऽऽख्या प्राणशक्तिर्देवता, आं बीजं, ह्रीं शक्तिः, क्रौं कीलकम् भगवती बगलामुखी प्राण प्रतिष्ठापने विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास

ॐ अंगुष्ठयो। ॐ आं ह्रीं क्रौं अं कं खं गं घं ङं आं ॐ ह्रीं वायवग्निसलिल पृथ्वीस्वरूपाऽऽत्मनेऽंग प्रत्यंगयौः तर्जन्येश्च। ॐ आं ह्रीं क्रौं इं चं छं जं झं ञं ईं परमात्मपरसुगन्धाऽऽत्मने शिरसे स्वाहा मध्यमयोश्च। ॐ आं ह्रीं क्रौं ङं टं ठं डं ढं णं ॐ श्रोत्रत्वक्चक्षु जिह्वघ्राणाऽऽम्मने शिखायै वषट् अनामिकयोश्च। ॐ आं ह्रीं क्रौं ओं पं फं बं भं मं वचनादानगमन-विसर्गानन्दाऽऽत्मने औं नेत्र त्रयाय वौषट्। ॐ आं ह्रीं क्रौं अं यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं अः मनोबुद्धयहंकार चित्ताऽऽत्मने अस्त्राय फट्।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

इस प्रकार न्यास करके पुष्पादि से यंत्र में हृदय को स्पर्श करते हुए बोलें—

ॐ आं ह्लीं क्रौं बं यं रं लं वं शं षं सं हों हं सः बगलायाः प्राणा इह प्राणाः। ॐ आं ह्लीं क्रों बं यं रं लं वं शं षं सं हों हं सः बगलाया जीव इह स्थितः। ॐ आं ह्लीं क्रों वं यं रं लं वं शं षं सं हों हं सः बगलाया सर्वेन्द्रियाणि इह स्थितानि। ॐ आं ह्लीं क्रौं बं यं रं लं वं शं षं सं हों सः बगलाया वाङ्मनश्चक्षु-श्रोत्र-घ्राण-प्राणा इहागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा।

तदोपरान्त भगवती का पंचोपचार अथवा षोडशोपचार से पूजन कर पुष्पाञ्जली लेकर देवी परिवारार्चन की अनुमति प्राप्त करें।

सच्चिन्मये! परे! देवि! परामृतरसप्रिये!।
अनुज्ञां देहि देवेशि! परिवार्चनाय मे!!

प्रथम आवरण

त्रिकोण में—

२ ३
ह्लीं
१

(1) ॐ सत्वाय नमः। ॐ सत्व श्री पादुकां पूजयाम तर्पयामि नमः।
(2) ॐ रजसे नमः। ॐ रज श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
(3) ॐ तमसे नमः। ॐ तम श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

अभीष्ट सिद्धिं मे देहि! शरणागत वत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणाय ते नमः॥

(इस मंत्र सं पुष्पाञ्जली अर्पित करें।)

षटकोण में

हृदय में (4) ॐ ह्लीं नमः।
शिरसि (5) ॐ बगलामुखी नमः।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

शिखायै (6) ॐ सर्वदुष्टानां नमः।

कवचाय् (7) ॐ वाचं मुखं पदं स्तम्भय नमः।

नेत्र त्रयाय (8) ॐ जिह्वां कीलय नमः।

अस्त्राय (9) ॐ बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा।

यंत्र पूजा

(पूर्वादि अष्टदल में पीछे के भाग में)

(10) ॐ ब्राह्म्यै नमः। ब्राह्मी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

(11) ॐ माहेश्वर्यै नमः। माहेश्वरीं श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

(12) ॐ कौमार्यै नमः। कुमारीं श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले।
भक्तया समर्पये तुभ्यं द्वितीयावरणाय ते नमः
(इस मंत्र से पुष्पाञ्जलि अर्पित करें।)

(13) ॐ वैष्णवै नमः। वैष्णवीं श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

(14) ॐ वाराह्यै नमः। वाराहीं श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

(15) ॐ इन्द्राण्यै नमः। इन्द्रानीं श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

(16) ॐ चामुण्डायै नमः। चामुण्डां श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

(17) ॐ महालक्ष्म्यै नमः। महालक्ष्मीं श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

(यंत्रराज को पुष्पाञ्जलि अर्पित करें।)

अष्टदल के अग्रभागों में पुनः पूजा का क्रम जारी :-

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

प्रथम आवरण

अभीष्ट सिद्धि मे देहि! शरणागत वत्सले।

भक्त्या समर्पये तुभ्यं तृतीयावरणाय ते नमः॥

(यन्त्रराज को पुष्पाञ्जली अर्पित करें।)

अष्टदल के अग्रभागों में पुनः पूजा का क्रम जारी करें :-

(18) ॐ असिताङ्ग भैरवाय नमः। असितांग भैरवं श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

(19) ॐ रुरु भैरवाय नमः। रुरु श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

(20) ॐ चण्डभैरवाय नमः। चण्ड श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

(21) ॐ क्रोध भैरवाय नमः। क्रोध श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

(22) ॐ उन्मत्त भैरवाय नमः। उन्मच श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

(23) ॐ कपाली भैरवाय नमः। कपाली श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

(24) ॐ भीषण भैरवाय नमः। भीषणं श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

(25) ॐ संहार भैरवाय नमः। संहार श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

पूजनोपरान्त यंत्रराज को पुष्पाञ्जलि अर्पित करें—

अभीष्ट सिद्धि में देहि! शरणागत वत्सले।

भक्त्या समर्पये तुभ्यं चतुर्थावरणाय ते नमः॥

षोडशदल में पुनः पूजा का क्रम जारी करें :-

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

(26) ॐ मंगलायै नमः । मंगलां श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

(27) ॐ स्तंभिन्यै नमः । स्तंभनीं श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

(28) ॐ जृंभिण्यै नमः । जृंभिणीं श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

(29) ॐ मोहिन्यै नमः । मोहिनी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

(30) ॐ वश्यायै नमः । वश्यां श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

(31) ॐ बलायै नमः । बलां श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

(32) ॐ अचलायै नमः । अचलां श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

(33) ॐ भूधरायै नमः । भूधरां श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

(34) ॐ कल्मषायै नमः । कल्मषां श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

(35) ॐ धान्यै नमः । धान्यां श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

(36) ॐ कलनायै नमः । कलनां श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

(37) ॐ कालाकर्षिण्यै नमः । कालकर्षिणीं श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

(38) ॐ भ्रामिकायै नमः । भ्रामिकां श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

(39) ॐ मदंगमाय नमः । मदगमां श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

(40) ॐ भोगस्थायै नमः । भोगस्थो श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

(41) ॐ भाविकायै नमः । भाविकां श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बगलामुखी-षोडशदल यंत्र

पुनः यंत्रराज को पुष्पाञ्जलि अर्पित करें—

अभीष्ट सिद्धिं मे देहि! शरणागत वत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं पञ्चमावर्णाय ते नमः॥

भूपुरस्य पूर्वादिचतुर्द्वारि

पुनः पूजा का क्रम जारी करें—

(42) ॐ गं गणपतयै नमः। गणपतिं श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

(43) ॐ बं बटुकायै नमः। बटुकं श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

(44) ॐ यां योगिनिभ्यो नमः। योगिनीं श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

(45) ॐ क्षां क्षेत्रपालाय नमः। क्षेत्रपालं श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

बगलामुखी भूपुरस्य

पुनः पुष्पाञ्जलि अर्पित करें—

अभीष्ट सिद्धिं मे देहि! शरणागत वत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं षष्ठावर्णाय ते नमः॥

पूर्व से अग्निकोण क्रम में

पुनः पूजा क्रम आरम्भ करें—

(46) ॐ लं इन्द्राय नमः। इन्द्रं श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

(47) ॐ रं अग्नये नमः। अग्निं श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

(48) ॐ मं यमाय नमः। यमं श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

(49) ॐ क्षं निर्ऋत्यै नमः। निऋतिं श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

(50) ॐ वं वरुणाय नमः। वरुणं श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

(51) ॐ यं वायवे नमः। वायुं श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

(52) ॐ कुं कुबेराय नमः। कुबेरं श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

(53) ॐ हं ईशानाय नमः। ईशानं श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

(54) ॐ आं ब्रह्मणे नमः। बह्मां श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

(55) ॐ ह्रीं अनन्तायै नमः। अनन्तं श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

(56) ॐ वं वज्राय नमः। वज्रं श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

(57) ॐ शं शक्तये नमः। शक्तिं श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

(58) ॐ दं दंडाय नमः। दंडं श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

(59) ॐ खं खड्गाय नमः। खड्गं श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

(60) ॐ पं पाशाय नमः। पाशं श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

(61) ॐ अं अंकुशायै नमः। अंकुशं श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

(62) ॐ गं गदायै नमः। गदां श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

(63) ॐ त्रिं त्रिशुलायै नमः। त्रिशूलं श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

(64) ॐ पं पद्माय नमः। पद्मं श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

(65) ॐ चं चक्राय नमः। चक्रं श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पुनः पुष्पाञ्जलि यंत्रराज को अर्पित करें—

अभीष्ट सिद्धि मे देहि! शरणागत वत्सले।

भक्त्या समर्पये तुभ्यं सप्तमावरणाय ते नमः ॥

यंत्र पूजा के उपरान्त षोडशोपचार पूजन करें। स्तोत्र आदि आदि का पाठ करें। यदि अनुष्ठान करना है, तो पुरश्चरण हेतु जप आरम्भ करें। यदि सामान्य रूप से जाप करें। कम से कम एक माला जाप करें। यदि दस माला करें तो अति उत्तम होगा, क्योंकि भण्डार में जितना अधिक संग्रह होगा, उतने ही सफल आप होंगे।

चक्र पूजा

माता बगलामुखी की पूजा के इस क्रम से साधक चक्र पूजा करें—

सर्वप्रथम चन्दन आदि से यंत्र का निर्माण करें। यंत्र निर्माण हेतु भूमि पर लेपन आदि करके शुद्धि कर लें। तदोपरान्त साफ मृतिका अथवा रेत से लगभग एक इंच मोटी परत 3 फिट × 3 फिट की माप में जमा लें। जल छिड़कर उस स्थान को पवित्र करें और चन्दन चूर्ण, हरिद्रा चूर्ण और आटा इत्यादि मिलाकर उससे त्रिकोण, षट्कोण, अष्टदल आदि का सही रीति से निर्माण करके यन्त्रराज का निर्माण करें और फिर पूजन आरम्भ करें।

यंत्र निर्माण के उपरान्त अपने बाईं ओर चन्दन आदि से त्रिकोण, वृत्त, चतुरस्र बनाएँ और "**आधारशक्तयै नमः**" से पूजन करें और "**अस्त्राय फट्**" बोलकर

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पूजन सामग्री का प्रक्षालन करें। त्रिपदी का निर्माण करके **''दशकलात्मने वह्निमण्डलाय नमः''** इस मंत्र से पूजन करके **''फट्''** का उच्चारण कर जल पात्र का प्रक्षालन (धो लें) करें और पात्र की स्थापना कर दें और **''अं अर्कमण्डलाय नमः''** का उच्चारण करके पात्र में पवित्र नदियों का आह्वान करें—

गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वती।
नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु॥

इस मंत्र को पढ़कर **''क्रों''** का उच्चारण करके **''अंकुश''** मुद्रा का प्रदर्शन करके तीर्थों का आह्वान कर **''ॐ''** मंत्र से गंन्धादि छिड़कें और **''धेनु मुद्रा''** का प्रदर्शन करके आठ बार मूल मंत्र से पूजन सामग्री को अभिमन्त्रित करें—

मूल मंत्र

ॐ ह्लीं बगलामुखी सर्व दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय जिह्वां कीलय बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा।

इसके उपरान्त **'वं'** का उच्चारण कर सामान्य अर्घ्य पात्र की स्थापना चतुरस्त्र मण्डल में करें और पुष्प में जल लेकर आत्मशुद्धि करें, फिर मूल मंत्र को पढ़ते हुए अपने चारों ओर पुष्प से जल का प्रोक्षण करें। इसके उपरान्त अन्य पात्र स्थापित करें। अब अपने बाईं ओर गन्ध मिश्रित जल से भूमि का लेपन कर षट्कोण के अन्दर में 'बिन्दु' बनाएँ उसके बाहर वृत्त व चतुरस्त्र का निर्माण करें। **''आधारशक्तयै नमः''** बोलकर गंध, पुष्प, अक्षत आदि से 'बिन्दु' पर पूजन करें फिर मण्डल का निर्माण करके मूल मंत्र से आधार पात्र को धो लें और मण्डल में स्थापना कर दें **'रं दशकलात्मने धर्म प्रदाय वह्निमण्डलाय नमः'** बोलकर आधार का पूजन करें और इसके चारों ओर अग्नि की दश कलाओं का पूजन करें, यथा—

(1) **यं धूम्रार्चिषे नमः।**
(2) **रं उष्मायै नमः।**
(3) **लं ज्वलिन्यै नमः।**
(4) **वं ज्वालिन्यै नमः।**
(5) **शं विस्फुल्लिङ्गिन्यै नमः।**
(6) **षं सुश्रियै नमः।**
(7) **सं सुरूपायै नमः।**
(8) **हं कपिलायै नमः।**
(9) **लं हव्यवाहायै नमः।**
(10) **क्षं कव्यवाहायै नमः।**

इन मंत्रों के द्वारा प्रदक्षिणा क्रम में पूजन करने के बाद **''फट्''** बोलकर घट का प्रक्षालन करें और रक्तवस्त्र, पुष्पमाला आदि से सजाकर **''नमः''** का उच्चारण कर आधार का स्थापन करें। फिर **''द्वादश कलात्मने अर्थप्रदाय अर्कमण्डलाय नमः''** से घट-पूजन करें और सूर्य की भावना करते हुए **''सूर्यमण्डलाय नमः''**

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बोलकर द्वादश सूर्यकलाओं का अक्षत अथवा लाल पुष्पों से आगे लिखें क्रम से अर्चन करें—

(1) कं भं तपिन्यै नमः।
(2) खं बं तापिन्यै नमः।
(3) गं बं धूम्रायै नमः।
(4) घं पं मरीच्यै नमः।
(5) ङं नं ज्वालिन्यै नमः।
(6) चं धं रुच्यै नमः।
(7) छं दं सुषुम्नायै नमः।
(8) जं थं भोगदायै नमः।
(9) झं तं विश्वायै नमः।
(10) ञं णं बोधिन्यै नमः।
(11) टं ढं धरिण्यै नमः।
(12) ठं डं क्षमायै नमः।

इन मंत्रों से पूजन प्रदक्षिणा क्रम में ही करें। फिर पात्र को हाथ में लेकर उसे कपड़े से ढक दें। फिर सुधादेवी का ध्यान करें।

सुधा ध्यान

समुद्रे मध्यमाने तु क्षीराब्धौ सारोत्तमे।
तत्रोत्पन्नां सुधां देवीकन्यकारूपधारिणीम्॥
अष्टादश भुजैर्संयुक्ता रक्तामयतलोचनाम्।
शङ्ख खड्ग धनुश्चैव कपालं मुसलं तथा॥
शक्तिं गदाम्बुजं घण्टां दधानां सोत्तैर्भुजैः।
चक्रं मुष्टिं शरं शूलं लोहखेटकतोमरम्॥
अभयं भिन्दिपालं च दधानां दक्षिणैर्भुजैः।
त्रिनेत्रां दीर्घतन्वङ्गी कालाग्निसदृशोपमाम्॥
मन्दारवेष्टितां नित्यां बहुरूपधरां शुभाम्।
त्रासयन्तमसुरान् सर्वान् देवानामभयङ्करीम्॥
या सुधा सा उमादेवी यो मदः स महेश्वरीः।
यो वर्णः स भवेद् ब्रह्मा यो गन्ध स जनार्दनः॥
स्वादे च संस्थितः सोमः शब्दे दैवो हुताशनः।
इच्छायां मन्मथो देवः लीलायां किल भैरवः॥
फेने गङ्गा स्थिता देवी बोधस्थाः सप्त सागराः।
इच्छाशक्तिः सुधामोदे ज्ञानशक्तिस्तु तद्रसे॥
तम्स्वादे च क्रियाशक्तिः तदुल्लासे परा चितिः॥

ऐसा ध्यान करके घट का चन्दन, अक्षत, पुष्पों से पूजन कर नमस्कार करें। फिर मूल मंत्र का उच्चारण करके घट में जल डालकर सुगन्धादि डालें और—

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

"ॐ सां सीं सूं क्ष म ल व र यूं षोड्शकलात्मने कामप्रदाय सोमण्डलाय नमः" का उच्चारण करके सोममण्डल की भावना करके गंध, अक्षत्, पुष्प आदि से पूजन करें, जिसका क्रम निम्नवत् होगा—

(1)	अं अमृतायै नमः।	(9)	लृं चन्द्रिकायै नमः।
(2)	आं मानदायै नमः।	(10)	ल्हं चन्द्रिकायै नमः।
(3)	इं पूषायै नमः।	(11)	एं ज्योत्सनायै नमः।
(4)	ईं तुष्टयै नमः।	(12)	ऐं श्रियै नमः।
(5)	उं पुष्टयै नमः।	(13)	ओं प्रीत्यै नमः।
(6)	ऊं रत्यै नमः।	(14)	औं अङ्गदायै नमः।
(7)	ऋं धृत्यै नमः।	(15)	अं पूर्णायै नमः।
(8)	ॠं शशिन्यै नमः।	(16)	अः पूर्णामृतायै नमः।

इसके उपरान्त "अस्त्राय फट्" से पात्र का संरक्षण करके मूल मंत्र में "ॐ" से अवगुण्ठन कर "धेनु मुद्रा" का प्रदर्शन करें और कुछ जल स्वयं पर तथा पूजन सामग्री पर छिड़कें। स्वयं में भगवती की भावना करते हुए निम्नलिखित मंत्र से गंध लगे पुष्पों को अर्पित करें—

"ॐ ऐं ह्रीं श्रीं विकारशोषिणी अस्य विकारापनयनाय ॐ फट्।"

और पुष्प को जल में भिगोकर "ईशान" दिशा में गिराकर शापमोचन करें। कलश के ऊपर हाथ रखकर निम्नलिखित मंत्र पढ़ें—

शाप विमोचन मंत्र

"शां शीं शूं शैं शौं शः शुक्रशाप विमोचितायै सुरादेंव्यै नमः।"

इस मंत्र का दस बार उच्चारण करें फिर निम्नलिखित मंत्र का दस बार उच्चारण करें—

"ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्रां क्रीं क्रूं क्रौं क्रः कृष्ण शापं विमोचय विमोचय अमृतं स्त्रावय स्त्रावय स्वाहा।"

अब 'शुक्र शाप' विमोचन करें— (3 बार जपें)

"सूर्यमण्डल सम्भूते वरुणालयसम्भवे।
अमावीजमये देवि शुक्रशापाद् विमुच्यताम्॥"

इसके उपरान्त तीन बार जपकर 'ब्रह्मशाप' विमोचन करें—

"एकमेव परं ब्रह्म स्थूलसूक्ष्ममयं ध्रुवम्।
कचोद्भवां ब्रह्महत्यां तेन ते नाशयाम्यहम्॥"

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अब निम्नलिखित मंत्र का तीन बार जप करें और जल को अभिमन्त्रित करें—

वेदानां प्रणवो बीजं ब्रह्मानन्दमयं यदि।
तेन सत्येन मे देवि ब्रह्महत्यां व्यपोहतु॥

अब निम्नलिखित मंत्र से कलश को आच्छादित करें—

ॐ ऐं अखण्डैकसानन्दपरे परसुधात्मनि।
स्वच्छन्दस्फुरणामन्तन्निधेहि कुलरूपिणि॥
ॐ क्लीं अकुलस्थामृताकरे सिद्धज्ञानकलेवरे।
अमृतत्वं निधेह्यस्मिन् वस्तुनि क्लिन्नरूपिणि॥
ॐ सौः तदरूपेणैकरस्य च दत्वा त्वेतत् स्वरूपिणि।
भूत्वा पामृताकारे मयि विस्फुरणं कुरु॥

इस मंत्र से कलश को ढकते हुए "**अमोघायै नमः, उत्पलायै नमः, सखायै नमः, समाराध्यायै नमः**" पूजा करके उसके ऊपर पात्र स्थापित कर दें। फिर उसका पवित्रीकरण करें—

पावमानः परानन्दः पावमानः परो रसः।
पावमानं परं ज्ञानं तेन त्वां पावयाम्यहम्॥

फिर मूल मंत्र का उच्चारण करें और निम्नलिखित मंत्र पढ़कर आनन्द भैरव व आनन्द भैरवी का ध्यान करें—

सूर्यकोटिप्रतिकाशं चन्द्रकोटिसुशीतलम्।
अष्टादशभुजं देवं पञ्चवस्त्रं त्रिलोचनम्॥
अमृतार्णवमध्यस्थं ब्रह्मपद्मोपरि स्थितम्।
वृषारुढं नीलकण्ठं सर्वाऽऽभरणभूषितम्॥
कपालखट्वाङ्गधर घण्टाडमरुवादिनम्।
पाशाङ्कुशधरं देवं गदामुसलधारिणम्॥
खड्गखेटकपट्टीश मुद्गरशूल धारिणम्।
विचित्रं खेटकं मुण्डं वरदाभयपाणिनम्॥
लोहितं देवदेवेशं भावयेत् साधकोत्तमः।

भैरव-ध्यान करने के उपरान्त तीन बार निम्नलिखित मंत्र से पूजन करें—

"हं सं क्षं मं लं वं रं यूं आनन्द भैरवाय वषट्।"

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अब निम्नवर्णित मंत्र से भैरवी का ध्यान करें—

भावये च परां देवीं चन्द्रकोटियुतप्रभाम्।
हिमकुन्देन्दुधवलां पञ्चवक्त्रां त्रिलोचनाम्॥
अष्टदशभुजैर्युक्तां सर्वाऽन्दकरोद्यताम्।
प्रहसन्तीं विशालाक्षीं देवदेवस्य सन्निधौ॥

इस प्रकार आनन्द भैरवी का ध्यान करके— "**ह म क्ष म ल व र यीं आनन्द भैरव्यै वषट्।**" से तीन बार पूजन करें। इसके उपरान्त इस गायत्री मंत्र से अभिमन्त्रित करें— **सुरादेव्यै च विदमहे, समुद्रोद्भवे च धीमहि। तन्नस्तुष्टिः प्रचोदयात्॥**

इस मंत्र से अभिमंत्रित करने के उपरान्त (कल्पना रूप में) द्रव्य के मध्य में त्रिकोण लिखें और बाईं ओर से, पश्चिम से लेकर दक्षिण दिशा तक "**अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं हं क्षं—लृं ल्हं एं ऐं ओं औं अंः अः**" सोलह स्वर व उनके बीच में '**हं क्षं**' लिखे। इसके उपरान्त अर्घ्य का शोधन निम्नलिखित मंत्रों से करें—

प्रथम शोधन

सर्वप्रथम मूलाधार से कुण्डली का उत्थान करके उसे शिव से मिलाएँ (भावना करें) और यह भी भावना करें कि उसके मिलन से जो अमृत धारा निकल रही है, वह आपके नासापुट से होकर द्रव्य (विशेषार्घ्य) में गिर रही है। अब गङ्गादि तीर्थों का आह्वान करें और "**वं**" बीज से "**धेनुमुद्रा**" द्वारा अमृतीकरण करके, "**मत्स्य मुद्रा**" आच्छादित करते हुए "**हुम्**" से अवगुण्ठन कर चक्र का संरक्षक करें। "**अस्त्राय फट्**" से दिग्बन्धन करके मूल मंत्र "**ॐ ह्लीं बगलामुखि सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय जिह्वां कीलय बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा**" का आठ बार जप करने से प्रथम शोधन होता है।

द्वितीय शोधन

विशेषार्घ्य के द्वितीय शोधन के लिए वायु '**यं**' से शोषण, अग्नि बीज '**रं**' से दहन और '**वं**' बीज से अमृतीकरण करें। '**यं**' बीज का उच्चारण करते समय बाएँ हाथ की अंगुलियों को नीचे की ओर करके मिलाने व सात बार बीजाक्षर का उच्चारण करने से पूजागत दोषों का निवारण होता है। इसी प्रकार '**रं**' बीज का उच्चारण करने से तथा दाएँ हाथ की अंगुलियों को अधोगत करने से पूजागत दोषों का भस्मीकरण व '**वं**' बीज का उच्चारण कर '**धेनु मुद्रा**' का प्रदर्शन करने से अमृतीकरण होता है।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

"मां मीं मूं मैं मौं मः मांसाशिनि दक्षिणे मासं पवित्रं कुरु कुरु स्वाहा।"

तृतीय शोधन

इस शोधन हेतु द्वितीय शोधन की पूरी प्रक्रिया करें, फिर निम्नलिखित मंत्र पढ़ते हुए "**आगम मंत्र**" से मत्स्य मुद्रा आच्छादित करके तृतीय शोधन पूर्ण करें—

"क्रां क्रीं क्रूं क्रैं क्रौं क्रः कण्टक भक्षिणि कण्टकं भक्ष भक्ष स्वाहा।"

चतुर्थ शोधन

चतुर्थ शोधन हेतु पहले तृतीय शोधन की प्रक्रिया की पुनरावृत्ति करें और प्रार्थना करें—

"पोलिके त्वं महादेवि भैरवाऽऽनन्ददायिनि।
सर्वसम्यकप्रदे देवि! मन्त्रसिद्धिं प्रयच्छ मे॥"

इसके उपरान्त "**योनि मुद्रा**" का प्रदर्शन करें और थोड़ा-सा विशेषार्घ्य कलश में छोड़ें, मूल मंत्र का आठ बार जाप करके कलश के समीप चन्दन, लाल चन्दन, रोली को मिलाकर त्रिकोण, वृत्त व चतुरस्त्र बनाएँ जिसमें शुद्धि मुद्रा से मीन को शुद्ध कर बलि हेतु रखें और "**तत्व मुद्रा**" (अंगूठा व अनामिका को मिलने से तत्व मुद्रा बनाती है) द्वारा "**ह्रीं पथिव देवेभ्यो नमः**" मंत्र पढ़ते हुए बलि प्रदान करें। पुनः बाएँ हाथ से बलि को उठाकर कलश के ऊपर तीन बार घुमाते हुए गिरा दें। फिर "**कारण कलश**" की स्थापना कर "**शक्तिशोधन**" करें।

शक्ति शोधन

उपरोक्त समस्त क्रिया करने के उपरान्त शक्ति शोधन करें। इसके लिए गंध, तेल, चन्दन आदि भगवती को लगाएँ। फिर दिव्य पील रंग के, समस्त प्रकार के आभूषणों से भगवती को सजाने की भावना करें और "**ॐ ह्रीं त्रिपुरायै नमः, इमां शक्तिं पवित्रां कुरु कुरु स्वाहा**" "**मम शक्तिं कुरु कुरु**" पढ़कर सामान्य अर्घ्य लेकर समस्त पूजन सामग्री पर व अपने ऊपर छिड़कें और मूल मंत्र का जप करें। तदोपरान्त—

ॐ हं ॐ हुं फट् स्वाहा।
ॐ ह्रीं श्रीं सुरतप्रिये।
ॐ ह्रीं श्रीं ॐ फट् स्वाहा।
ऐं प्लूं हौं जूं सः अमृते अमृतोद्भवे अमृतवर्षिणी शुक्र शापं

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मोचय मोचय अमृतं स्त्रावय अमृतं कुरु कुरु स्वाहा।

इसके बाद निम्नलिखित मंत्र से शक्ति शोधन करके श्रीचक्र के मध्य में विशेषार्घ्य की स्थापना कर दें—

ॐ विष्णुर्योनि कल्पयतु त्वष्टा रुपाणि पिंशतु।
आसिञ्चतु प्रजापतिर्धाता गर्भं दधातु ते॥
गर्भं देहि सिनीवाली गर्भं देहि सरस्वति।
गर्भं तेऽश्विनौ देवौ आधृतां पुष्करस्त्रजौ॥

तदोपरान्त पुष्प से सामान्यार्घ्य लेकर अपने ऊपर छिड़कें। अग्नि मूल मंत्र से भी चारों ओर जल छिड़कें। फिर त्रिकोण में माया बीज (स्थिर) "ह्लीं" लिखकर षट्कोण, वृत, चतुरस्त्र बनाएँ तथा मूल मंत्र से त्रिकोण में पूजा करें। इसके बाद छहों अङ्गों का पूजन करें। यह क्रिया इस चित्र में स्पष्ट है—

षडङ्ग पूजन

(1) ॐ ह्लीं हृदयाय नमः। हृदय शक्ति श्री पादुकां पूजयामि नमः।

(2) ॐ बगलामुखि शिरसे स्वाहा। शिरः शक्ति श्री पादुकां पूजयामि नमः।

(3) ॐ सर्वदुष्टानां शिखायै वषट्। शिखा शक्ति श्री पादुकां पूजयामि नमः।

(4) ॐ वाचं मुखं पदं स्तम्भय कवचाय हुं। कवच शक्ति श्री पादुकां पूजयामि नमः।

(5) ॐ जिह्वां कीलय नेत्र त्रयाय वौषट्। नेत्र शक्ति श्री पादुकां पूजयामि नमः।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

(6) **ॐ बुद्धिं विनाशय अस्त्राय फट्। अस्त्र शक्ति श्रीपादुकां पूजयामि नमः।**

'**षडङ्ग पूजन**' के उपरान्त चतुरस्त्र में पीठ पूजन करें। इसके बाद "**अस्त्र मंत्र**" से जल छिड़ककर त्रिपदी की स्थापना करें। इसके ऊपर **अग्नि की दश कलाओं** का पूजन करें। यथा—

(1) **यं धूम्रार्चिषे नमः।**

(2) **रं ऊष्मायै नमः।**

(3) **लं ज्वलिन्यै नमः।**

(4) **वं ज्वालिन्यै नमः।**

(5) **शं विस्फुलिङ्गियै नमः।**

(6) **षं सुश्रियै नमः।**

(7) **सं सुरूपायै नमः।**

(8) **हं कपिलायै नमः।**

(9) **लं हव्यवाहायै नमः।**

(10) **क्षं कव्यवाहायै नमः।**

अग्निकला पूजन के उपरान्त द्वादश सूर्यकलाओं का पूजन करें—

द्वादश सूर्यकलाएँ

(1) **कं भं तपिन्यै नमः।**

(2) **खं बं तापिन्यै नमः।**

(3) **गं फं धूम्रायै नमः।**

(4) **घं पं मरीच्यै नमः।**

(5) **ङं नं ज्वालिन्यै नमः।**

(6) **चं धं रुच्यै नमः।**

(7) **छं दं सुषुम्नायै नमः।**

(8) **जं थं भोगदायै नमः।**

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

(9) झं तं विश्वायै नमः।

(10) त्रं णं बोधिन्यै नमः।

(11) टं ढं धरिण्यै नमः।

(12) ठं डं क्षमायै नमः।

सूर्यकला के पूजनोपरान्त विलोममातृकाओं का उच्चारण करते हुए पात्र में जल भरें—

विलोम मातृका

क्षं लं हं सं षं शं वं लं रं यं मं भं बं फं पं नं धं दं थं तं णं ढं डं ठं ञं झं जं छं चं ङं घं गं खं कं अः अं औं ओं ऐं एं लृं ल्हं ऋं ऋं ऊं उं ईं इं आं अं।

तदोपरान्त षोडश चन्द्रकलाओं का पूजन करें—

(1) अं अमृतायै नमः।
(2) आं मानदायै नमः।
(3) इं पूषायै नमः।
(4) ईं तुष्टयै नमः।
(5) उं पुष्टयै नमः।
(6) ऊं रत्यै नमः।
(7) ऋं धृत्यै नमः।
(8) ॠं शशिन्यै नमः।
(9) लृं चन्द्रिकायै नमः।
(10) ल्हं कान्त्यै नमः।
(11) एं ज्योत्सनायै नमः।
(12) ऐं श्रियै नमः।
(13) ओं प्रीत्यै नमः।
(14) औं अङ्गदायै नमः।
(15) अं पूर्णायै नमः।
(16) अः पूर्णामृतायै नमः।

इसके पश्चात् जल के ऊपर "**अङ्कुश मुद्रा**" से अमृतीकरण करके आवाहिनी, स्थापिनी, सन्निधापिनी, सन्निरोधिनी मुद्राओं का प्रदर्शन करें। "**शङ्ख मुद्रा**", "**योनि मुद्रा**" का प्रदर्शन करके गन्ध, अक्षत आदि से देवी की पूजा करें। हृदयादि षडङ्ग पूजन करें और विशेषार्घ्य पात्र को "**मत्स्य मुद्रा**" से आच्छादित करके मूल मंत्र का आंठ बार जप करें।

इस प्रकार विशेषार्घ्य पात्र दक्षिण में, प्रोक्षणी पात्र व शक्तिपात्र उत्तर में और उसके उत्तर में आचमनीय पात्र व सामान्यार्घ्य पात्र की स्थापना की जाती है। इसी प्रकार अन्य पात्रों की स्थापना की जाती है। इसके उपरान्त अपने बाएँ गुरु व दाएँ गणेश पूजन किया जाता है।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गुरु पूजन

पात्र स्थापना के उपरान्त अपने बाईं ओर गुरु पूजन करें—

मंत्र

"ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हं सः शिवः सोऽहं हस्ख्फ्रें ह स क्ष म ल व र यूं ह्सौः स ह क्ष म ल व र यीं स्हौः हं सः सोऽहं स्वरूप निरूपण हेतु श्री गुरवे नमः। ज्ञानशक्त्याम्बा सहित अमुकानन्द नाथ श्री पादुकां पूजयामि नमः।"

(अमुकानन्द नाथ के स्थान पर अपने गुरु का नाम लें।)

गणेश पूजन

अब अपने दाईं ओर गणेश पूजन करें—

"ॐ ऐं ह्रीं श्रीं गं गणपतये नमः। महागणपति श्रीपादुकां पूजयामि नमः।"

गुरु व गणेश पूजन के उपरान्त पीठ पूजन करें।

पीठ पूजन

श्रीचक्र में देवताओं का आह्वान करके उनकी यथा स्थान स्थापना करें। पञ्चमुद्राओं (आवाहिनी आदि) का प्रदर्शन करें। चक्र के मध्य भाग में (बिन्दु पर) चन्दन, अक्षत व पुष्प से शिव-शक्ति का पूजन करें। फिर उन्हें प्रणाम करके मानस पूजन करें। तदोपरान्त भावना करें कि वासनारूपी तत्व, स्वयं करके मानस पूजन करें। तदोपरान्त भावना करें कि वासनारूपी तत्व, स्वयं प्रकाश-आत्मा (कुण्डलिनी) के द्वारा भस्मीभूत हो रहे हैं।

कुण्डलिनि ध्यान

"ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कुण्डलिन्यधिष्ठित चिदग्निमण्डलाय नमः।"

इसके उपरान्त कुण्डलिनि रूपी आत्मा से होम व पूर्णाहुति की भावना करते हुए निम्नलिखित मंत्र का उच्चारण करें।

"ॐ ऐं ह्रीं श्रीं इतः पूर्वं प्राण बुद्धि देह धर्माधिकारतः जाग्रत स्वप्न सुषुप्त्यवस्थासु मनसा वाचा कर्मणा हस्ताभ्यां पदभ्यां उदरेण शिश्ना यत्स्मृतं यदुक्तं यत्कृतं तत्सर्वं ब्रह्मार्पणम् भवतु स्वाहा।"

आर्द्रं ज्वलति ज्योतिर्हमस्मि ज्योतिर्ज्वलति ब्रह्माहमस्मि।
योऽहमस्मि ब्रह्माहमस्मि अहमस्मि ब्रह्माहमस्मि।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अहमेवाहं मां जुहोमि स्वाहा ॥

अब नियमानुसार भगवती की आरती करें। ताम्बूल प्रदान कर प्रदक्षिणा करके दक्षिणा प्रदान करें। फिर शान्ति स्तोत्र पढ़ें—

शान्ति स्तोत्रम्

सपुंजकानां परिपालकानां, यतेन्द्रियाणां च तपोधानानाम्।
देशस्य राष्ट्रस्य कुलस्य राज्ञां, करोतु शान्तिं भगवान कुलेशः ॥
नन्दन्तु साधककुलान्यणिमादि सिद्धाः, शापाः पतन्तु समयद्विषि योगिनीनाम्।
सा शाम्भवी स्फुरतु कापि ममाप्यवस्था, यस्यां गुरोश्चरण पङ्कजमेव लभ्यम् ॥
शिवाद्यवनिपर्यन्तं ब्रह्मादिस्तम्ब संयुतम्, कालाग्न्यादि शिवान्तं च जगद्यज्ञेन तृप्यतु ॥

शान्ति स्तव के उपरान्त विशेषार्घ्य पात्र को दोनों हाथों से मस्तक तक उठाकर उसमें से विशेषार्घ्य दूसरे पात्र में लेकर अपने सामने रखें। भगवती को साष्टाङ्ग प्रणाम करें और प्रार्थना करें—

"असाधु साधु वा कर्म यद् यदाचरितं मया।
तत् सर्वं कृपया देवि! गृहाणाऽऽराधनं मम ॥"

"श्रीपीताम्बरार्घ्य स्वाहा।"
यज्ञच्छिद्रं तपच्छिद्रं यच्छिन्द्रं पूजने मम।
सर्वं तदच्छिद्रमस्तु पीताम्बराप्रसादतः ॥
अब विशेषार्घ्य पात्र को ललाट से लगाएँ और अर्घ्य ग्रहण करें।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मंत्र और उनके प्रयोग

- अन्य प्रयोग
- देव स्तम्भन
- मनुष्य स्तम्भन
- आकर्षण
- विद्वेषण
- शत्रु नाश
- उच्चाटन
- रोग नाश
- कार्य सिद्धि
- शत्रु शक्तिनाश
- तीव्रगति
- अदृश्य
- शत्रुरोधक
- रिपुगति स्तम्भन
- वाणी स्तम्भन
- जल स्तम्भन
- यंत्र-तर्पण प्रयोग
- कृत्याशान्ति
- विद्वेषण
- उच्चाटन
- शत्रुनाश
- मारण
- राज्यलाभ
- ताप-हरण
- उग्र ज्वर नाशक
- धन-वृद्धि
- पित्त रोग नाश
- स्त्री आकर्षण
- वाणी-स्तम्भन
- शत्रु को पागल करने हेतु
- शत्रु-मारण

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

5

मंत्र और उनके प्रयोग

बगलामुखी मंत्र प्रयोग और बगलामुखी अनुष्ठान विश्वप्रसिद्ध है। मनुष्य-जीवन के साथ समस्याएँ भी लगी हुई हैं। मात्र यह विद्या ही ऐसी है, जो जीवन की समस्त आपदाओं को, समस्याओं को दूर कर सकती हैं, परन्तु इसके प्रयोग में अत्यन्त सावधानी की आवश्यकता है, क्योंकि सूक्ष्म-सी गलती होने के कारण इसका दुष्प्रभाव देखना पड़ता है। यह विद्या तुरन्त की अर्श से फर्श पर ले आती है।

इस मंत्र की साधना से शत्रुओं पर निश्चय ही विजय प्राप्त की जा सकती है। राज्य वर्ग को अपने पक्ष में किया जा सकता है। साथ ही विद्या प्राप्ति और आर्थिक उन्नति हेतु भी इस विद्या का अनुष्ठान किया जाता है। यह विद्या सभी विद्याओं में श्रेष्ठ कही गई है। मंत्र का स्वरूप इस प्रकार है—

''ॐ ह्लीं बगलामुखि सर्व दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय जिह्वां कीलय बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा।''

कहीं-कहीं इस मंत्र का यह सवरूप भी मिलता है—

''ॐ ह्लीं बगलामुखि सर्वदुष्टानां वाचं मुखं स्तम्भय जिह्वां कीलय-कीलय बुद्धिं नाशय ह्लीं ॐ स्वाहा।''

इस मंत्र के द्वारा बुद्धि, देव, दानव, शस्त्र व शत्रु-स्तम्भन आदि का प्रयोग किया जाता है। शत्रु स्तम्भन के लिए नीचे लिखे मंत्र में **''अमुक''** के स्थान पर शत्रु का नाम अथवा राजा (अधिकारी) के नाम का प्रयोग करना चाहिए।

''ॐ ह्लीं बगलामुखी सर्व दुष्टानां वाचं मुखं पदं मम अमुक नामकं शत्रुं स्तम्भय-स्तम्भय जिह्वां कीलय बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा।''

अन्य प्रयोग

शत्रु स्तम्भन के लिए इस मंत्र का दस हज़ार बार जाप करके उसका दशांश हवन, हवन का दशांश तर्पण, तर्पण का दशांश मार्जन तथा मार्जन का दशांश ब्राह्मण भोज कराना चाहिए।

देव स्तम्भन

साधक माँ बगला का ध्यान कर एक लाख मंत्रों का जप करें। फिर चम्पा के पुष्पों से हवन कर माँ बगला का पूजन करें। ऐसा करने से मनुष्य, देवता को भी अपने वश में कर लेता है।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मनुष्य स्तम्भन

ऐसा करने के लिए साधक पीले वस्त्र धारण कर, पीला चन्दन लगाकर, हल्दी की माला से मंत्र का एक लाख बार जप करें। पीत-पुष्पों से पीत वर्णा भगवती बगला का ध्यान, पूजन कर घी, शहद व शक्कर में तिलों के साथ हवन करें। ताड़ पत्र, नमक व हल्दी की गाँठ से होम करने पर शत्रु स्तम्भन होता है।

आकर्षण

घी, शहद व शक्कर सहित नमक का होम करने से मनुष्य का आकर्षण होता है।

विद्वेषण

तेल मिश्रित नीम के पत्तों से हवन करने पर दो व्यक्तियों में विद्वेषण अर्थात् झगड़ा होता है।

शत्रु नाश

बगरू, राई, भैंस का घी और गुग्गल से श्मशान की अग्नि में रात्रि में होम करने से शत्रु नाश होता है।

उच्चाटन

शत्रुओं के उच्चाटन के लिए गिद्ध व कौए के प्राप्त पंखों को कड़ुवे तेल (सरसों के तेल) में मिलाकर होम करने से शत्रुओं का उच्चाटन होता है। होम चिता की अग्नि में करें।

रोगनाश

त्रिमधु में दूर्वा, गुरुच व लाजा से होम करने पर अथवा ऐसे हवन के दर्शन मात्र से ही समस्त रोगों का नाश हो जाता है।

कार्य सिद्धि

पर्वत शिखा पर, घोर जंगल में, नदी किनारे या शिवालय में ब्रह्मचर्यरत रहते हुए एक लाख जाप इस मंत्र के करने से सभी कार्य सिद्ध होते हैं।

शत्रु-शक्तिनाश

एक रंग वाली गौ-दुग्ध में शक्कर व शहद मिलाकर उसे तीन सौ मूल मंत्रों से अभिमन्त्रित कर पीने से शत्रु की शक्ति नष्ट होती है।

तीव्रगति

सफेद पलाश की लकड़ी से सुन्दर खड़ाऊँ बनाकर लाल रंग से रंगकर उन पर चौदह लाख मंत्रों का जप करके धारण करने पर मनुष्य क्षण मात्र में सौ योजन तक चला जाता है।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अदृश्य

पारद, शिलाजीत, ताड़पत्रों के चूर्ण में शहद मिलाकर अपने सभी अंगों में लगाकर चौदह लाख मंत्र जप करने से मनुष्य अदृश्य हो जाता है।

शत्रुरोधक

हरताल, निशाचूर्ण (हल्दी चूर्ण) व धतूरे के रस को घोटकर यंत्र में बीज मंत्र व शत्रु नाम लिखकर उस यंत्र को पीले धागे से लपेटकर रख दें। घूमते चाक की मिट्टी लाकर उसका सुन्दर बैल बनाकर उसके मध्य में उक्त निर्मित यंत्र को रख दें और हरताल से बैल पर लेपन कर चौदह दिनों तक उसकी पूजा करने पर शत्रु का बोल, गति व कार्य रुक जाते हैं।

रिपुगति स्तम्भन

बाएँ हाथ में प्रेत भूमि (श्मशान) से खप्पर लेकर, चिता के अंगार से खोपड़ी में यंत्र का निर्माण करें। उस खोपड़ी को भूमि में गाड़ देने से रिपु की गति स्तम्भित हो जाती है।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

वाणी स्तम्भन

कफन (शव पर पड़ी चादर या कपड़ा) पर चिता के कोयले से यंत्र का निर्माण करें। एक मेढक लेकर यंत्र को उसके मुँह में रख दें और फिर मेढक को पीले कपड़े में लपेटकर पीत पुष्पों से उसका पूजन करने से शत्रु की वाणी स्तम्भित हो जाती है।

जल स्तम्भन

इन्द्र व वरुण मंत्रों से यंत्र को सात बार अभिमन्त्रित कर जल में फेंक देने से जल का स्तम्भन हो जाता है। इसके अतिरिक्त भी इस महायंत्र के बहुत से प्रयोग हैं, जिनका वर्णन स्थानाभाव के कारण किया जाना सम्भव नहीं है। निश्चित रूप से इस मंत्र के द्वारा जो न किया जा सके, संसार में ऐसा कोई कार्य नहीं है।

यंत्र-तर्पण प्रयोग

प्रिय साधको! माँ भगवती के यंत्र को यंत्रराज की संज्ञा से विभूषित किया गया है। यंत्रराज के तर्पण द्वारा भी बहुत से असाध्य कार्यों को सम्पन्न किया जाता है। यथा—

कृत्याशान्ति

गुड़ मिश्रित जल से पाँच हज़ार तर्पण करने से कृत्या की शान्ति होती है।

विद्वेषण

नीम की पत्तियों व जावित्री कुएँ के पानी में मिलाकर पाँच हज़ार तर्पण करने से विद्वेषण अर्थात् दो व्यक्तियों में झगड़ा हो जाता है।

उच्चाटन

आक का दूध व शुद्ध दूध मिलाकर तीन हज़ार मंत्रों से वस्त्र के अन्दर ढककर तर्पण करने से शत्रु का उच्चाटन होता है।

शत्रुनाश

उड़द, श्मशान की मिट्टी व चिता का कोयला बराबर मात्रा में मिलाकर रात्रि में तर्पण करने से शत्रु का नाश हो जाता है।

मारण

अश्वगन्धा के पत्ते व जावित्री के पत्ते मिलाकर पाँच हज़ार तर्पण करने से शत्रु मारण प्रयोग फलीभूत होता है।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

राज्यलाभ

जल में कस्तूरी मिलाकर तर्पण करने से राज्य लाभ की प्राप्ति होती है।

ताप-हरण

चन्दन से तर्पण करने पर ताप दूर होता है।

उग्र ज्वर नाशक

एक माह तक 600 मंत्रों से कपूर मिले जल से तर्पण करने से उग्र ज्वर व पित्त रोग शान्त हो जाते हैं।

धन-वृद्धि

गाय के दूध से तर्पण करने पर इच्छित धन की प्राप्ति होती है।

पित्त रोग नाश

मट्ठे से तर्पण करने से पित्त रोग का नाश हो जाता है।

स्त्री आकर्षण —

हरिद्रा चूर्ण से तर्पण करने से मनचाही स्त्री का आकर्षण होता है।

वाणी-स्तम्भन

केला, गाय का दूध व शक्कर सम भाग में लेकर आठ फलाश के पत्तों के साथ तर्पण करने से वक्ता रिपु का मुँह बंद हो जाता है।

शत्रु को पागल करने हेतु

गधे का रक्त जल में मिलाकर तर्पण करने से शत्रु पागल हो जाता है।

शत्रु-मारण

सियार का रक्त जल में मिलाकर तर्पण करने से शत्रु क्षय रोगी होकर छः माह के अन्दर मृत्यु को प्राप्त होता है। इसके अतिरिक्त यंत्र-तर्पण से साधक को अभीष्ट की प्राप्ति होती है।

नोट— *जहाँ जप संख्या का उल्लेख नहीं है, वहाँ साधक पाँच हज़ार तर्पण करें। जहाँ दिनों की संख्या का उल्लेख नहीं है, वहाँ 15 दिनों से तात्पर्य है।*

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

6

श्री बगलामुखी का जयकारा

सुधा-सिन्धु के बीच महा-मणि मण्डप सोहे,
उसमें कंचन-पीठ-प्रभा से त्रिभुवन मोहे।
सुनहरी फैली प्रभा अपार।
बगलामुखी का जय - जयकार ॥1॥

पीताम्बर कमनीय कनक के भूषण साजै,
विकसित चम्पक-सुमन-माल उर बीच बिराजै।
भाल पर केशर-तिलक निहार॥ बगला... ॥ 2 ॥

एक हाथ में रिपु की जिह्वा पकड़ रही है,
दूजे कर में गदा लिए रिपु झड़क रही है।
भक्त पर करती कृपा उदार॥ बगला... ॥ 3 ॥

जो पीताम्बर पहर पीत-उपचार चढ़ावे,
हल्दी की जप-माल बना बगला को ध्यावे।
करै जप प्रति-दिन पाँच हज़ार॥ बगला... ॥ 4 ॥

श्रीहरि शक्ति-सचेत चित्त स्थिर कर नर ध्यावे,
वह अराति-दल विघ्न-दुःख दारिद्रय मिटावे।
विजय पावे बहु बारम्बार।
बगलामुखी की जय-जयकार॥ 5 ॥

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

श्री बगलामुखी स्तोत्रम्

- श्री बगलामुखी स्तोत्रम्
- श्री बगलापञ्जर स्तोत्रम्
- अथ बगलाहृदय स्तोत्रम्
- अथ बगलाहृदय
- श्री बगलासहस्रनाम (पीताम्बर) स्तोत्रम्
- श्री बगला अष्टोत्तर शतनामस्तोत्रम्
- कीलक स्तोत्रम्

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

7

श्री बगलामुखी स्तोत्रम्

प्रस्तुत स्तोत्र प्राचीन दुर्लभ ग्रंथ "**रुद्रयामल तंत्र**" से उद्धरित है। इस स्तोत्र का पाठ करने से माता बगला बहुत प्रसन्न होती हैं और प्राणी के शत्रुओं का स्तम्भन, आपदाओं का नाश और सौभाग्य का ऐसा उदय करती हैं कि शत्रु स्तम्भित होकर उस प्राणी को देखते ही रह जाते हैं।

विनियोग –

ॐ अस्य श्री बगलामुखीस्तोत्रस्य नारद ऋषिः, श्री बगलामुखी देवता, त्रिष्टुप छन्दः, मम सन्निहितानां विरोधिनां दुष्टानां वाङ्मुख-पद-बुद्धिनां स्तम्भनार्थे श्री माहामाया बगलामुखी वर प्रसाद सिद्धयर्थं जपे (पाठे) विनियोगः।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अङ्गन्यास

ॐ ह्लीं अंगुष्ठाभ्यां नमः। (अंगूठे का स्पर्श करें)

ॐ बगलामुखी तर्जनीभ्यां नमः। (तर्जनी का स्पर्श करें)

ॐ सर्वदुष्टानां मध्यमाभ्यां नमः। (मध्यमा का स्पर्श करें)

ॐ वाचं मुखं पदं स्तम्भय अनामिकाभ्यां नमः। (अनामिका का स्पर्श करें)

ॐ जिह्वां कीलय कनिष्ठिकाभ्यां नमः। (कनिष्ठिका का स्पर्श करें)

ॐ बुद्धि विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा करतल कर पृष्ठाभ्यां नमः। (हथेली के अगले व पृष्ठ भागों का स्पर्श करें)

हृदयादि न्यास

ॐ ह्लीं हृदयाय नमः। (हृदय का स्पर्श करें)

ॐ बगलामुखी शिरसे स्वाहा। (सिर का स्पर्श करें)

ॐ सर्वदुष्टानां शिखायै वषट्। (शिखा का स्पर्श करें)

ॐ वाचं मुखं पदं स्तम्भय कवचाय हुम्। (दोनों हाथों से कवच बनाएँ)

सर्वप्रथम विनियोग करें और हाथ में लिया हुआ जल भूमि पर छोड़ दें। तदोपरान्त मंत्र का अङ्गन्यास आदि करें।

ॐ जिह्वाँ कीलय नेत्रत्रयाय वौषट्।

ॐ बुद्धिं विनाशय ह्लीं स्वाहा अस्त्राय फट्।

ध्यान

सौवर्णासन संस्थितां त्रिनयनां पितांशुकोल्लासिनीं,
हेमाभांसुरुचिं शशाङ्कमुकुटां सच्चम्पक स्त्रग्युताम्।
हस्तैर्मुद्‌गर - पाश - वज्र - रसनां संबिभ्रतीं भूषणैः,
व्याप्ताङ्गी बगलामुखीं त्रिजगतां संसतम्भिनी चिन्तयेत्।।

जप मंत्र

ॐ बगलामुखी सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय।
जिह्वां कीलय बुद्धि विनाशय ॐ ह्लीं स्वाहा।।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

स्तोत्र

मध्ये सुधाब्धि- मणि मण्डप रत्नवेदीं,
सिंहासनो परिगतां परिपीतवर्णाम्।
पीताम्बराभरण - माल्य - विभूषिताङ्गीं,
देवीं भजामि धृत- मुद्गर- वैरिजिह्वाम्॥1॥

जिह्वाग्रमादाय करेण देवीं, वामेन शत्रुन् परिपीडयन्तीम्।
गदाभिघातेन च दक्षिणेन, पीताम्बराढ्यां द्विभुजां नमामि॥ 2॥

भावार्थ—अमृतसागर के मध्य, मणिमण्डप की रत्नवेदी पर एक सिंहासन पर पीतवर्णा देवी विराजमान हैं। उनके वस्त्राभूषण, माला आदि सब कुछ पीत रंग के हैं। बायें हाथ में शत्रु की जिह्वा पकड़कर दाहिने हाथ में मुद्गर लेकर शत्रु पर प्रहार कर रही हैं। ऐसी माँ पीताम्बरा को मैं प्रणाम करता हूँ।

चलत्कनक- कुण्डलोल्लसित- चारू गण्डस्थलां,
लसत्कनक- चम्पक- द्युति- मदिन्दु- बिम्बाननाम्।
गदाहत- विपक्षकां कलित- लोल- जिह्वां चंचलाम्,
स्मरामि बगामुखीं विमुख-वाङ-मनःस्तम्भिनीम्॥ 3॥

भावार्थ—चंचल स्वर्ण कुण्डलों से सुसज्जित कपोलों वाली, कनक व चम्पा के पुष्प जैसे शरीर की कान्तिपूर्ण चन्द्रमुखी, गदा-प्रहार से शत्रुओं की हन्ता, सुन्दर चंचल जिह्वा वाली, विमुखों की वाणी व मन का स्तम्भन करने वाली माँ बगलामुखी का मैं स्मरण करता हूँ।

पीयूषोदधि-मध्य-चारु-विलसद्-रत्नोज्ज्वले मण्डपे,
तत्सिंहासन-मूल-पतित-रिपुं प्रेतासनाध्यासिनीम्।
स्वर्णाभां कर-पीडितारि-रसनां भ्राम्यद् गदां विभ्रमा,
नित्यं ध्यायति यान्ति तस्य विलयं सद्योऽथ सर्वापदः॥ 4॥

भावार्थ—जो साधक अमृत-समुद्र के मध्य में रत्नोज्ज्वलित मण्डप, रत्नजड़ित सिंहासन पर आसीन स्वर्ण आभा वाली, एक हाथ से शत्रु जिह्वा और दूसरे में घूमती हुई गदा (मुद्गर) धारण किए हुए, प्रेतासन पर आसीन, रिपुओं के शीश झुकाने वाली, आपका ध्यान करता है, उसकी सभी आपदाओं का तुरन्त विलय हो जाता है, अर्थात् नाश हो जाता है।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

देवी! त्व्चरणाम्बुजार्चनकृते यः पीत पुष्पाञ्जलिं,
मुद्रा वामकरे निधाय च मनन मंत्रों मनोज्ञाक्षरम्।
पीठाध्यानपरोऽथ कुम्भक वशाद् बीज स्मरेत् पार्थिवं,
तस्यामित्रमुखस्य वाचि हृदये जाडयं भवते तत्क्षणात्॥ 5॥

भावार्थ—हे देवी! जो साधक आपके चरण- कमलों का पीत पुष्पों की अञ्जलि से अर्चन करता है, मुद्रा बनाकर आपके ध्यान में तत्पर होकर कुम्भक मनोहर अक्षर वाले भूमि बीज **लं** का का स्मरण करता है, उसके अमित्रों अर्थात् शत्रुओं की वाणी और हृदय में तत्क्षण जड़ता आ जाती है, अर्थात् स्तम्भन हो जाता है।

वादी मूकति रङ्कति क्षितिपतिर्वैश्वानरः शीतति,
क्रोधी शाम्यति दुर्जनः सुजनति क्षिप्रानुगः खञ्जति।
गर्वी खर्वति सर्वविच्च जडति त्वद्यन्त्रणा यन्त्रितः,
श्रीर्नित्ये! बगलामुखी! प्रतिदिनं कल्याणि तुभ्यं नमः॥ 6॥

भावार्थ—हे कल्याणि! आपके मन्त्र के द्वारा यन्त्रित किया गया वादी गूंगा, छत्रपति रं, अग्नि शीतल, क्रोधी शान्त, दुर्जन सुजन, धावक लंगड़ा, गर्वयुक्त छोटा और सर्वज्ञ जड़ हो जाता है। अतएव, हे लक्ष्मी स्वरूपा नित्ये! माँ बगला! कल्याणी! मैं आपको प्रतिदिन नमन् करता हूँ।

मन्त्रस्तावदलं विपक्षदलने स्तोत्रं पवित्र च ते,
यन्त्र वादि नियन्त्रणं त्रिगतां जैत्रं च चित्रं च ते।
मातः! श्री बगलेति नाम ललितं यस्याऽस्ति जन्तोर्मुखे,
त्वन्नाम स्मरेण संसदि मुखस्तम्भो भवेद् वादिनाम्॥ 7॥

भावार्थ—शत्रुओं के दल के दमन के लिए आपका मन्त्र ही पर्याप्त है और वैसा ही पवित्र स्तोत्र भी। वक्ताओं के नियन्त्रण हेतु आपका त्रिलोक प्रसिद्ध विजयशाली यन्त्र भी विलक्षण है। माँ! **श्री बगला** आपका यह ललित नाम जिस भी साधक के मुख की शोभा बढ़ाता है, वह धन्य है, क्योंकि आपके नाम के स्मरण मात्र से ही वक्ताओं के मुख स्तम्भित हो जाते हैं।

दुष्ट-स्तम्भनमुग्र-विघ्न-शमनं दारिद्रय-विद्रावणम्,
भूभृद्संद्मनं च यन्मृगदृशां चेतः समाकर्षणम्।
सौभाग्यैक-निकेतनं समदृशां कारुण्यपूर्णऽमृतम्,
मृत्योर्मारणमाविरस्तु पुरतो मातस्त्वदीयं वपुः॥8॥

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

भावार्थ—दुष्टों का स्तम्भन करने वाला, उग्र विघ्नों का शमन कारक, दरिद्रता का नाश करने वाला, भूपतियों का दमन कारक, मृग जैसी चंचल चितवनों वाली के चित्त का भी आकर्षण करने वाला, सौभाग्य का एक मात्र निवास, करुणा पूर्ण नेत्रों वाला, मृत्यु का भी मारण करने वाला आपका सुन्दर शरीर है। माँ! मुझे दर्शन दो।

मातर्भञ्जय मद्-विपक्ष-वदनं जिह्वां च संकीलय,
ब्राह्मीं मुद्रय दैत्य-देव-धिषणामुग्रां गतिं स्तम्भय।
शत्रूंश्चूर्णय देवि! तीक्ष्ण-गदया गौराङ्गि पीताम्बरे!
विघ्नौघं बगले! हर प्रणमतां कारुण्य पूर्णेक्षणे॥ ९॥

भावार्थ—हे गौराङ्गी! पीताम्बरे! हे देवी! मेरे शत्रुओं की वाणी को बन्द कर दो। उनकी जिह्वा को कील दो। ब्राह्मी मुद्रा धारण कर दैत्य और देवों की उग्र गति को स्तंभित कर दो। माँ! अपनी तीक्ष्ण गदा से मेरे शत्रुओं को चूर्ण कर दो। अपनी करुणापूर्ण दृष्टि से साधकों के विघ्न समूह को दूर कर दो।

मातर्भैरवि! भद्र-कालि! विजये! वाराहि विश्वाश्रये!
श्रीविद्ये! समये! महेशि! बगले! कामेशि! रामे रमे!
मातङ्गि! त्रिपुरे! परात्पर-तरे! स्वर्गापवर्ग-प्रदे!
दासोऽहं शरणागतः करुणया विश्वेश्वरि! त्राहिमाम्॥ 10॥

भावार्थ—हे माँ! भैरवी! भद्रकाली! विजया! वाराही! भुवनेश्वरि! श्री विद्या! षोडशी! महेशी! बगला! रमा अर्थात् कमला! मातङ्गी! सब आप ही हैं। माँ–स्वर्ग और मोक्ष प्रदायिनि भी आप ही हैं। हे माँ! हे विश्वेश्वरी! करुणा करके मेरी रक्षा करो। मैं आपका दास हूँ और आपकी शरण में हूँ।

त्वं विद्या परमा त्रिलोकजननि विघ्नौघ विध्वंसिनी,
योषाकर्षण कारिणी त्रिजगतामानन्द-सम्वर्धिनी।
दुष्टोच्चाटन कारिणी पशुमनः सम्मोह-संदायिनी,
जिह्वा कीलन भैरवि विजयते ब्रह्मास्त्र विद्या परा॥ 11॥

भावार्थ—आप! परम विद्या हैं, त्रिलोक जननी हैं, विघ्नों का नाश करने वाली हैं, स्त्रियों को आकर्षित करने वाली हैं, तीनों जगतों का आनन्द संवर्धन करने वाली हैं, दुष्टों का उच्चाटन करने वाली हैं, पशुमन को सम्मोहन देने वाली हैं, दुष्टों की जिह्वा कीलन में भैरवी हैं और विजय प्रदान करने में परा ब्रह्मास्त्र विद्या हैं।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पीतवस्त्र वसनाभरि-देह-प्रेत-जासन निवेशित देहाम्,
फुल्लपुष्प-रविलोचन-रम्यां दैत्यजाल दहनोज्ज्वल-भूषाम्।
पर्यंकोपरि-लसदद्विभुजां कम्बु-हेमन्त-कुण्डल-लोलाम्।
वैरिनिर्दलकारण-रोषां चिन्तयामि बगलां हृदयाब्जे॥ 12॥

भावार्थ—पीतवस्त्रा, शत्रु के शव पर आसन लगाए, पुष्प की तरह कोमलांगी, सूर्य की तरह नेत्रों वाली, दैत्यों के लिए उज्ज्वल वस्त्र धारण किए, पलंग पर शोभायमान, दो हाथों वाली, वलयाकार स्वर्ण कुण्डल से शोभित, बैरियों के दलन हेतु अत्यन्त रोषयुक्त माँ बगला का मैं हृदय कमल में ध्यान करता हूँ।

सत् कृतं जप संध्याह्नं चिन्तनं परमेश्वरि।
शत्रुणां स्तम्भनार्थाय तद् गृहाण नमोस्तुऽते॥13॥

भावार्थ—हे पराम्बा! हे परमेश्वरी! माँ बगले! दुष्टों के स्तम्भनार्थ, आपके विषय में मैंने जपादि पूर्वक जो कहा है, उसे आप स्वीकार करें। माँ पीताम्बरा! आपको मेरा बारम्बार नमस्कार है।

विद्या-लक्ष्मीर्नित्य-सौभाग्यमायुः, पुत्रैः पौत्रैः सर्व-साम्राज्य सिद्धिः।
मानं भोगो वश्यमारोग्य-सौख्यं, प्राप्तं सर्वं भू-तले त्वत्-परेण।।14।।

भावार्थ—सम्पूर्ण विद्याएं, लक्ष्मी, नित्य सौभाग्य, दीर्घायु, पुत्र-पौत्रादि सहित सर्व-साम्राज्य-सिद्धि, मान, भोग, वश्यता, आरोग्यता, सुख आदि समस्त जो-जो भी मनुष्य को प्राप्त होना चाहिए, वह सब तुम्हारी कृपा से इस पृथ्वी पर ही साधक को प्राप्त होता है।

गेहं नाकमि, गर्वितः प्रणमति, स्त्री-सङ्गमो मोक्षति,
द्वेषी मित्रति, पातकं सु-कृतति, क्षमा-वल्लभो दासति।
मृत्युर्वैद्यति, दूषण सु-गणति, त्वत्-पाद-संसेवनात्,
वन्दे त्वां भव-भीति-भञ्जन-करीं गौरीं गिरीश-प्रियाम्।।15।।

भावार्थ—हे माँ! तुम्हारी चरण सेवा से घर स्वर्ग बन जाता है, अहंकारी नम्र तथा विनीत बन जाता है, स्त्री-संसर्ग करने वाला मोक्ष प्राप्त करता है, शत्रु मित्र बन जाता है, पापी पुण्यवान बन जाता है, राजा दास बन जाता है, यम भी वैद्य बन जाता है तथा दुर्गुण सद्गुण में बदल जाता है। हे संसार-भय दूर करनेवाली, शिव-प्रिया, गौरी, बगला! तुम्हारी वन्दना करता हूँ।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आराध्या जगदम्ब! दिव्य-कविभिः सामाजिकैः स्तोतृभि-
माल्यैश्चन्दन-कंकुमैः परिमलैरभ्यर्च्चिता सादरात्।
सम्यङ्-न्यासि-समस्त-निवहे, सौभाग्य-शोभा-प्रदे!
श्रीमुग्धे बगले! प्रसीद विमले, दुःखापहे! पाहि माम्।।16।।

भावार्थ—अध्यात्मवादी कवि, सामाजिक जनता और स्तुति करनेवाले भक्त जगज्जननी बगला की सादर पूजा करते हैं। पुष्पमाला, चन्दन, कुंकुम, परिमल से अर्चित सम्यक् रूप से रहनेवाली, सौभाग्यप्रदा, श्री मुग्धा, विमला, दुःख-हारिणी माँ बगला मेरी रक्षा करें।

सिद्धि साध्येऽवगन्तुं गुरु वर-वचनेष्वार्ह-विश्वास-भाजाम्,
स्वान्तः पद्मासनस्थां वर-रुचि-बगलां ध्यायतां तार-तारम्।
गायत्री-पूत-वाचां हरि-हर-नमने तत्पराणां नराणाम्,
प्रातर्मध्याह्न-काले स्तव-पठनमिदं कार्य सिद्धि-प्रदंस्यात्।।17।।

भावार्थ—हे हरि-हर आदि की वन्दनीया माँ बगला! सद्गुरु के वचनों में विश्वास रखनेवाला, तुममें अटल भक्ति रखनेवाला, गायत्रीसिद्ध व्यक्ति साध्य-विषय में सिद्धि प्राप्ति के लिए अपने हृदय में पद्मासना, उत्तम ज्योति-विशिष्टा बगला का ध्यान कर प्रातः और मध्याह्न में इस स्तव का निरन्तर पाठ करे, तो कार्य सिद्ध होता है।

विद्या लक्ष्मीः सर्व-सौभाग्यमायुः पुत्रैः पौत्रैः सर्व साम्राज्य सिद्धिः।
मानं भोगो वश्यमारोग्य सौख्यम्, प्राप्तं सर्वं भू-तले त्वत् परेण।।18।।

भावार्थ—विद्या, लक्ष्मी, सारे सौभाग्य, आयु, पुत्र-पौत्रादि के साथ सारे साम्राज्य की प्राप्ति, सम्मान, भोग, यश, आरोग्य तथा सुख आदि संसार का सब कुछ तुम्हारी आराधना से प्राप्त होता है।

यत् कृतं जप-संध्यानं चिन्तनं परमेश्वरि!
शत्रूणां स्तम्भनार्थाय, तद्गृहाण नमोऽस्तुते।।19।।

भावार्थ—हे परमेश्वरि! शत्रुओं के स्तम्भन के लिए मैंने जो ज़प, ध्यान तथा चिन्तन किया, वह सब ग्रहण करो। तुमको मेरा प्रणाम।

फल-श्रुति

नित्यं स्तोत्रामिदं पवित्रमिह यो देव्याः पठत्यादरात्।
धृत्वा यन्त्रमिदं तथैव समरे बाहौ करे वा गले।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

राजानोऽप्यरयो मदान्ध-करिणः सर्पा मृगेन्द्रादिकाः।
ते व यान्ति विमोहिता रिपु-गणा लक्ष्मी स्थिरा सर्वदा।।20।।

भावार्थ—भगवती पीताम्बरा के इस पवित्र स्तोत्र का पाठ जो साधक नित्य आदर-पूर्वक करता है तथा इनके यन्त्र को बाहु में अथवा कर में या गले में युद्ध-काल में धारण करता है, तो राजा एवं शत्रुगण विमोहित हो जाते हैं। इतना ही नहीं, ऐसे साधक को लक्ष्मी की भी स्थिरता प्राप्त होती है।

संरम्भे चोर-सङ्घे प्रहरण-समये बन्धने व्याधि-मध्ये।
विद्या-वादे विवादे प्रकुपित-नृपतौ दिव्य-काले निशायाम्।।
वश्ये वा स्तम्भने वा रिपु-वध-समये निर्जने वा वने वा।
गच्छँस्तिष्ठँस्त्रि कालं यदि पठति शिवं प्राप्नुयादाशु धीरः।।21।।

भावार्थ—हे देवि! विप्लव काल में, चोरों के समूह में शत्रु पर प्रहार काल में, बन्धन में, व्याधि-पीड़ा में, विद्या सम्बन्धी विवाद में मौखिक कलह में, नृप कोप में और रात्रि के दिव्य काल में वश्य कार्य में स्तम्भन में तथा शत्रु वध के समय निर्जन स्थान में अथवा वन में कहीं भी चलता हुआ, बैठा हुआ तीनों काल में जो साधक तुम्हारे स्तोत्र का पाठ करता है, वह धीर पुरुष शीघ्र ही कल्याण प्राप्त करता है।

अनुदिनमभिरां साधको यस्त्रि-कालम्,
पठति स भुवनेऽसौ पूज्यते देववर्गैः।
सकलममल कृत्यं तत्व द्रष्टा च लोके,
भवति परम सिद्धा लोक माता पराम्बा।।22।।

भावार्थ—जो साधक नित्य त्रि सन्ध्या में इसका पाठ करता है, वह इस संसार में देवताओं के द्वारा पूजित होता है। उसके सारे काम बन जाते हैं और वह संसार में तत्वदर्शी बनता है। जगज्जननी पराम्बा बगला उसके लिए परम सिद्ध देवी बन जाती हैं।

ब्रह्मास्त्रमिति विख्यातं त्रिषु लोकेषु विश्रुतम्।
गुरु-भक्ताय दातव्यं न देयं यस्य कस्यचित्।।23।।

भावार्थ—त्रिलोक में ब्रह्मास्त्र नाम से विख्यात यह स्तोत्र सबको न देकर केवल गुरु-भक्त शिष्यों को ही देना चाहिए।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

श्री बगलापञ्जर स्तोत्रम्

यह अति गोपनीय व रहस्यपूर्ण पञ्जर अति दुर्लभ तथा परीक्षित है। इस पञ्जर का जप अथवा पाठ करने वाला साधक प्रत्येक क्षेत्र में सफलता का सोपान चढ़ता है। घोर दारिद्रय व विघ्नों के नाशक इस स्तोत्र का पाठ करने वाले साधक की माँ बगला स्वयं रक्षा करती हैं। अरिदल साधक को मूक होकर देखते रह जाते हैं।

विनियोग

ॐ अस्य श्रीमद् बगलामुखी पीताम्बरा पञ्जर स्तोत्रस्य भगवान नारद ऋषि, अनुष्टुप छन्दः, जगद् वश्यकरी श्री पीताम्बर बगलामुखी देवता, ह्लीं बीजं, स्वाहा शक्ति, क्लीं कीलक मम संकल्प सिद्ध्यर्थ पाठे विनियोगः।

ऋषिन्यास

ॐ भगवान-नारद ऋषये नमः शिरसि, अनुष्टुप छन्दसे नमो मुखे, जगद्-वश्यकरी श्री पीताम्बरा बगलामुखी देवतायै नमो हृदये, ह्लीं बीजाय नमो दक्षिण स्तने, स्वाहा शक्तये नमो वाम स्तने, क्लीं कीलकाय नमो नाभौ, मम परसैन्य मन्त्र तन्त्र आदि कृंत विपक्ष क्षयार्थं श्रीमत्पीताम्बरी बगलादेव्या प्रीतये, स्वाभीष्ट सिद्धये च जपे विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

षडंगन्यास

ह्लां अंगुष्ठाभ्यां नमः।	ह्लां हृदयाय नमः।
ह्लीं तर्जनीभ्यां स्वाहा।	ह्लीं शिरसे स्वाहा।
ह्लूं मध्यमाभ्यां वषट्।	ह्लूं शिखायै वषट्।
ह्लैं अनामिकाभ्यां हुँ।	ह्लैं कवचाय हुं।
ह्लौं कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्।	ह्लौं नेत्र-त्रयाय वौषट्।
ह्लः करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्।	ह्लः अस्त्राय फट्।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

करन्यास

ॐ ह्लीं अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ बगलामुखि तर्जनीभ्यां नमः। ॐ सर्व दुष्टानां मध्यमाभ्यां नमः। ॐ वाचं मुखं पदं स्तम्भय अनामिकाभ्यां नमः। ॐ जिह्वां कीलय कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ बुद्धिं विनाशय ह्लीं। ॐ स्वाहा करतल कर पृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादिन्यास

इसी प्रकार मूल मन्त्र से अङ्गन्यास करें-

ॐ ह्लीं हृदयाय नमः।

ॐ बगलामुखि शिरसे स्वाहा।

ॐ सर्वदुष्टानां शिखायै वषट्।

ॐ वाचं मुखं पदं स्तम्भय कवचाय हुम्।

ॐ जिह्वां कीलय नेत्र त्रयाय वौषट्।

ॐ बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा, अस्त्राय फट्।

ध्यान

मध्ये सुधाब्धि-मणि-मण्डप-रत्नवेद्यां,
सिंहासनो परिगतां परिपीतवर्णाम्।
पीताम्बराभरण- माल्य- विभूषिताङ्गी,
देवीं स्मरामि धृत-मुद्गर-वैरि-जिह्वां।

इसके उपारंत मानस पूजा करें-

श्री पीताम्बरायै नमः लं पृथिव्यात्मकं गंधं परिकल्पयामि।
श्री पीताम्बरायै नमः हं आकाशात्मकं पुष्पं परिकल्पयामि।
श्री पीताम्बरायै नमः यं वायवात्मकं धूपं परिकल्पयामि।
श्री पीताम्बरायै नमः इं अग्नि तत्वात्मकं दीपं परिकल्पयामि
श्री पीताम्बरायै नमः शं शक्ति तत्वात्मक ताम्बूलं परिकल्पयामि
श्री पीताम्बरायै नमः वं अमृतात्मकं नैवेद्यं परिकल्पयामि।

इसके उपरांत महामाया को योनिमुद्रा से प्रणाम करके स्तोत्र पाठ शुरू करें-

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

॥ पञ्जर स्तोत्र ॥

सूत उवाच

सहस्त्रादित्यं संकाशं शिवं साम्बं सनातनम्।
प्रणम्य नारदः प्राह विनम्र तत कंधरः॥

नारद उवाच

भगवन् साम्ब तत्वज्ञ सर्व दुखापहारक।
श्रीमत् पीताम्बरा देव्याः पंजरं पुण्यदं सदा॥
प्रकाशय विभोनाथ! कृपां कृत्वा ममोपरि।
यद्यहं तव पादाव्ज धूलिधूसरित सदा॥

शिव उवाच

पञ्जरं तत् प्रवक्ष्यामि देव्याः पाप प्रणाशनम्।
यं प्रविश्य न बाधन्ते बाणैरपि नरा क्वचित्॥1॥
ॐ ऐं ह्लीं श्रीं श्रीमत्पीताम्बरादेवी बगला बुद्धिवर्धिनी।
पातु मम निशं साक्षात् सहस्त्रार्कसमद्युतिः॥2॥
शिखादिपादपर्यंत वज्रपञ्जर धारिणी।
ॐ ऐं ह्लीं श्रीं श्रीमद् ब्रह्मास्त्रविद्याया पीताम्बरा विभूषिता॥3॥
बगला मामवत्वत्र मूर्ध भागं महेश्वरि।
ॐ ऐं ह्लीं श्रीं कामाङ्कुशकला पातु बगला शास्त्र बोधिनी॥ 4॥
पीताम्बरा सहस्त्राक्षा ललाटं कामितार्थदा।
ॐ ऐं ह्लीं श्रीं पातु बगला पीताम्बरा सुधारिणी॥5॥
कर्णयोश्चैव युगपद अतिरत्न प्रपूजिता।
ॐ ऐं ह्लीं श्रीं पातु बगला नासिकां मे गुणाकरा॥6॥
पीतपुष्पै पीतवस्त्रै पूजिता वेददायिनी।
ॐ ऐं ह्लीं श्रीं पातु बगला ब्रह्माविष्ण्वादिसेविता॥7॥
पीताम्बरा प्रसन्नास्या नेत्रयोर्युगपद् भ्रुवो।
ॐ ऐं ह्लीं श्रीं पातु बगला वलिदा पीतवस्त्रधृक्॥8॥

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अधरोष्ठौ तथा दन्तान् जिह्वां च भुखगां मम।
ॐ ऐं ह्लीं श्रीं पातु बगला पीताम्बर सुधारिणी ॥9॥
गले हस्ते तथा वाह्वोः युगपद् बुद्धिदा सताम्।
ॐ एं ह्लीं श्रीं पातु बगला दिव्यस्त्रगनुलेपना ॥10॥
हृदये च स्तनौ नाभौ करावपि कृशोदरी।
ॐ ऐं ह्लीं श्रीं पातु बगलापीतवस्त्र घनावृता ॥11॥
जंघायां च तथा चोर्वौर्गुल्फयोश्चातिवेगिनी।
अनुक्तमपि यत् स्थानं त्व केशनखलोमकम् ॥12॥
असृंग मांस तथाऽस्थिनी सन्धयश्चापि मे परा।
ताः सर्वा बगलादेवी रक्षेन्मे च मनोहरा ॥13॥
इत्येतद् वरदं गोप्यं कलावपि विशेषतः ।।14।।
पञ्जरं बगलादेव्या दीर्घदारिद्र्यनाशनम्।
पञ्जरं यः पठेत् भक्तया स विघ्नैर्नाभिभूयते ।।15।।
अव्याहतगतिश्चवस्य ब्रह्माविष्ण्वादिसत्पुरे।
स्वर्गे मर्त्ये च पाताले नाऽरयस्तं कदाचन ।।16।।
प्रबाधन्ते नरव्याघ्रं पञ्जरस्थं कदाचन।
अतो भक्तैः कौलिकैश्र्व स्वरक्षार्थं सदैव हि ।।17।।
पठनीयं प्रयत्नेन सर्वाऽनर्थ विनाशनम्।
महादारिद्रयशमनं सर्वमाङ्ल्यवर्धनम् ।।18।।
विद्याविनयसत्सौख्यं महासिद्धिकरं परम्।
इदं ब्रह्मास्त्रविद्यायाः पञ्जरं साधु गोपितम् ।।19।।
पठेत् स्मरेद् ध्यानसंस्थः स जीयान् मरणान् नरः।
यः पञ्जरं प्रविश्यैव मन्त्रं जपति वै भुवि ।।20।।
कौलिकोऽकौलिको वापि व्यासवद् विचरेद् भुवि।
चन्द्रसूर्य प्रभुर्भूत्वा वसेत् कल्पायुतं दिवि ।।21।।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सूत उवाच

इति कथितमशेषं श्रेयसामादिबीजं
भवशतदुरितघ्नं ध्वस्तमोहान्धकारम्।
स्मरणतिशयेन प्राप्तिरेवात्र मर्त्यः
यदि विशति सदा वै पञ्जरं पण्डितः स्यात्।।22।।

।। इति श्री परमरहस्यातिरहस्ये बगलापञ्जर स्तोत्रं समाप्तम्।।

।। पञ्जरन्यास स्तोत्रम्।।

बगलापूर्वतो रक्षेद् आग्नेय्यां च गदाधरी।
पीताम्बरे दक्षिणे च स्तम्भिनी चैव नैर्ऋते।। 1।।

जिह्वां कीलयन्तो रक्षेद् पश्चिमे सर्वदा हि माम्।
वयव्वे च मदोन्मत्ता कौवेर्यां च त्रिशूलिनी।। 2।।

ब्रह्मास्त्र देवता पातु ऐशान्यां सततं मम।
संरक्षेन मां तु सततं पाताले स्तब्ध मातृका।। 3।।

ऊर्ध्वं रक्षेन महादेवि जिह्वां स्तम्भनकारिणी।
एवं दश दिशौ रक्षेद् बगला सर्वसिद्धिदा।। 4।।

एवं न्यास विधिं कृत्वा यत् किंचित जपमाचरेत्।
तस्याः संस्मरणादेव शत्रूणां स्तम्भनं भवेत्।। 5।।

अथ बगलाहृदय स्तोत्रम्

(सिद्धेश्वर तन्त्रोक्तम्)

विनियोग

ॐ अस्य श्रीबगलामुखीहृदय-मालामन्त्रस्य नारदऋषिः, अनुष्टुप्छन्दः, श्रीबगलामुखी देवता, ह्लीं बीजम्, क्लीं शक्तिः, ऐं कीलकम्, श्री बगलामुखीप्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हाथ में जल लेकर 'ॐ अस्य श्रीबगलामुखीहृदय-मालामन्त्रस्य0' से 'जपे विनियोगः' तक पढ़कर भूमि पर जल छोड़ दें।

न्यास

ॐ नारदऋषये नमः शिरसि। ॐ अनुष्टुप्छन्दसे नमः मुखे। ॐ श्रीबगलामुख्यै देवतायै नमो हृदये। ॐ ह्लीं बीजाय नमो गुह्ये। ॐ क्लीं शक्तये नमः पादयोः। ॐ ऐं कीलकाय नमः। ना मौत मम संकल्प सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

तदन्तर 'ॐ नारदऋषये नमः' से 'ॐ ऐं कीलकाय नमः सर्वाङ्गे' तक पढ़कर न्यास करें।

करन्यास

ॐ ह्लीं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। क्लीं तर्जनीभ्यां नमः। ॐ ऐं मध्यमाभ्यां नमः। ॐ ह्लीं अनामिकाभ्यां नमः। ॐ क्लीं कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ ऐं करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

फिर 'ॐ ह्लीं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः' से 'ॐ ऐं करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः' तक पढ़कर, प्रत्येक मंत्र से करन्यास करें।

हृदयादिन्यास

ॐ ह्लीं हृदयाय नमः। ॐ क्लीं शिरसे स्वाहा। ॐ ऐं शिखायै वषट्। ॐ ह्लीं कवचाय हुम्। ॐ क्लीं नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ ऐं अस्त्राय फट्। ॐ ह्लीं क्लीं ऐं इत्यनेन दिग्बन्धः।

पश्चात् 'ॐ ह्लीं हृदयाय नमः से 'ॐ ह्लीं क्लीं ऐं' यहाँ तक पढ़कर हृदयादिन्यास के साथ दिग्बन्ध करें।

ध्यान

पीताम्बरां पीतमाल्यां पीताभरण-भूषिताम्।
पीतकञ्जपदद्वन्दां बगलाऽम्बां भजेऽनिशम्॥ 1॥

इस प्रकार ध्यान के बाद पूजन करें।

पीत-शङ्ख-गदाहस्ते पीत-चन्दन-चर्चिते।
बगले! मे वरं देहि शत्रुसङ्घ-विदारिणि!॥ 2॥

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

उसके बाद 'पीताम्बरां०' से 'भजेऽनिशम्' तक श्लोक उच्चारण कर देवी ध्यान करें एवं पूजन करें। तत्पश्चात् 'पीतशंख' से 'शत्रुसङ्घविदारिणि' तक श्लोक पढ़कर देवी की प्रार्थना करें। तदनन्तर 'ॐ क्लीं ऐं०' से 'स्वाहा' तक मंत्र का जप करें। फिर पहले की तरह हृदयादि षडङ्गन्यास कर स्तोत्र का पाठ करें।

पश्चात् 'वन्देऽहं बगलां देवीं०' से आरम्भ कर 'तस्य दर्शनमात्रतः' तक (पचीस श्लोक) बगलाहृदयस्तोत्र का पाठ करें।

ॐ ह्लीं क्लीं ऐं बगलामुख्यै गदाधारिण्यै प्रेतासनाध्यासिन्यै स्वाहा। इति मंत्र को जपकर पूर्व की पंक्ति करके स्तोत्र पाठ करें।

तद्यथा -

वन्देऽहं बगलां देवीं पीत-भूषण-भूषिताम्।
तेजोरूपमयीं देवीं पीततेजःस्वरूपिणीम्॥ 1॥
गदाभ्रमणभिन्नाभ्रां भ्रुकुटी-भीषणाननाम्।
भीषयन्तीं भीमशत्रून् भजे भवस्य भक्तिदाम्॥ 2॥
पूर्णचन्द्रसमानास्यं पीतगन्धाऽनुलेपनाम्।
पीताम्बर परीधानां पवित्रामाश्रयाम्यहम्॥ 3॥
पालयन्तीमनुपलं प्रसमीक्ष्याऽवनीतले।
पीताचाररतां भक्तां स्ताम्भवानीं भजाम्यहम्॥ 4॥
पीत-पद्म-पदद्वन्द्वां चम्पकारण्यरूपिणीम्।
पीतावतंसां परमां वन्दे पद्मज-वन्दिताम्॥ 5॥

लसच्चारु-सिञ्जत्-सुमञ्जीरपादां चलत-स्वर्णकर्णावतंसाञ्चितास्याम्।
चलत्पीत-चन्द्राननां चन्द्रवन्द्यां भजे पद्मजादीड्य-सत्पादपद्माम्॥ 6॥
सुपीताभयामालया पूतमन्त्रं परं ते जपन्तो जयं स लभन्ते।
रणे राग-रोषाप्लुतानां रिपूणां विवादे बलाद् वैरकृद्घातमातः॥ 7॥
भरत्पीत-भास्वत्प्रभाहस्कराभां गदागञ्जितामित्रगर्वां गरिष्ठाम्।
गरीयो गुणागार-गात्रां गुणाढ्यां गणेशादि-गम्यां श्रये निर्गुणाढ्यम्॥ 8॥
जना ये जपन्त्युग्रवीजं जगत्सु परं प्रत्यहं ते स्मरन्तः स्वरूपम्।
भवेद् वादिनां वाङ्-मुख-स्तम्भ आद्ये जयो जायते जल्पतामाशु तेषाम्॥ 9॥
तव ध्याननिष्ठा प्रतिष्ठात्म प्रज्ञावतां पादपद्मार्चने प्रेमयुक्ताः।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

प्रसन्ना नृपाः प्राकृताः पण्डिता वा पुराणादिका दासतुल्या भवन्ति। 10॥

नमामस्ते मातः कनक-कमनीयाङ्घ्रि-जलजं
बलद्-विद्युद्-वर्णं घन-तिमिर-विध्वंसकरणम्।
भवाब्धौ मग्नात्मोत्तरणकरणं सर्वशरणं
प्रपन्नानां मातर्जगति बगले ! दुःखदमनम्॥ 11॥

ज्वलज्ज्योत्स्नारत्नाकर मणिविषक्ताङ्कभवनं
स्मरामस्ते धाम स्मर-हर-हरीन्द्रेन्दु-प्रमुखैः।
अहोरात्रं प्रातः प्रणय-नवनीयं सुविशदं
परं पीताकारं परिचित-मणिद्वीप-वसनम्॥ 12॥

वदामस्ते मातः श्रुतिसुखकरं नाम ललितं
लसन्मात्रावर्णं जगति बगलेति प्रचरितम्।
चलन्तस्तिष्ठन्तो वयमुपविशन्तोऽपि शयने
भजामो यच्छ्रेयो दिवि दुरवलभ्यं दिविषदाम्॥ 13॥

पदार्चायां प्रीतिः प्रतिदिनमपूर्वा प्रभवतु
यथा ते प्रसन्नयं प्रतिपलमपेक्ष्यं प्रणमताम्।
अनल्पं तन्मातर्भवति भृतभक्त्या भवतु नो
दिशातः सद्भक्तिं भुवि भगवतां भूरि-भवदाम्॥ 14॥

मम सकल रिपूणां वाङ्मुखे स्तम्भयाशु
भगवति रिपुजिह्वां कीलय प्रस्थतुल्याम्।
व्यवसित-खलबुद्धिं नाशयाऽऽशु प्रगल्भां
मम कुरु बहुकार्यं सत्कृपेऽम्ब! प्रसीद॥ 15॥

ब्रजतु मम रिपूणां सद्मनि प्रेतसंस्था कर-धृत-गदया तां घातयित्वाऽऽशु रोषात्।
सधन-वसन-धान्यं सद्म तेषा प्रदह्य पुनरपि बगला स्वस्थानमायातु शीघ्रम्॥16॥

कर-धृत रिपुजिह्वा-पीडन-व्यग्रहस्तां पुनरपि गदया तांस्ताडयन्तीं सुतन्त्राम्।
प्रणत सुरगणानां पालिकां पीतवस्त्रां बहुबल-बगलां तां पीतवस्त्रां नमामः॥ 17॥

हृदय-वचन-कायः कुर्वतां भक्ति-पुञ्जं
प्रकटित-करुणार्द्रां प्रीणती जल्पतीति।
धनमथ बहुधान्यं पुत्र-पौत्रादि-वृद्धिः
सकलमपि किमेभ्यो देयमेवं त्व वश्यम्॥ 18॥

तव चरण सरोजं सर्वदा सेव्यमानं

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

द्रुहिण-हरि-हराद्यैर्देववृन्दैः शरण्यम्।
मृदुलमपि शरं ते शर्म्मदं सूरिसेव्यं
वयमिह करवामो मातरेतद् विधेयम्॥ 19॥
बगलाहृदयस्तोत्रमिदं भक्तिसमन्वितः।
पठेद्यो बगला तस्य प्रसन्ना पाठतो भवेत्॥ 20॥
पीतध्यानपरो भक्तो यः शृणोत्यविकल्पतः।
निष्कल्मषो भवेन्मर्त्यो मृतो मोक्षमवाप्नुयात्॥ 21॥
आश्विनस्य सिते पक्षे महाष्टम्यां दिवानिशम्।
यस्त्विदं पठते प्रेम्णा बगलाप्रीतिमेति सः॥ 22॥
देव्यालये पठन् मर्त्यो बगलां ध्यायतीश्वरीम्।
पीतवस्त्रावृतो यस्तु तस्य नश्यन्ति शत्रवः॥ 23॥
पीताचाररतो नित्यं पीतभूषां विचिन्तयन्।
बगलां यः पठेन्नित्यं हृदयस्तोत्रमुत्तमम्॥ 24॥
न किञ्चिद् दुर्लभं तस्य दृश्यते जगतीतले।
शत्रवो ग्लानिमायान्ति तस्य दर्शनमात्रतः॥ 25॥

॥ इति सिद्धेश्वरतन्त्रे उत्तरखण्डे बगलापटले बगलाहृदयस्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

अथ बगला हृदयम

(अथान्यत् बगला हृदयम्)

श्रीदेव्युवाच

इदानीं खलु मे देव बगलाहृदयं प्रभो।
कथयस्व महादेव यद्यहं तव वल्लभा।।1।।

ईश्वर उवाच

साधु साधु महाप्राज्ञे सर्वतन्त्रार्थ साधिके।
ब्रह्मास्त्र देवतायाश्च हृदयं वच्मि तत्त्वतः।।2।।
प्रणवं पूर्वमुच्चार्य स्थिर मायां ततो वदेत्।
सम्बोधन पदेनैव बगलामुखि उद्धरेत्।।3।।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तदग्रे सर्वदुष्टानां ततो वाचं पदं मुखम्।
स्तम्भयेति ततो जिह्वां कीलयेति पदं ततः।।4।।
बुद्धिं विनाशय इति स्थिरमायां ततोऽग्रतः।
पदेच्च पुनरोङ्कारं स्वाहेति च पदं ततः।।5।।
षट्त्रिंशदक्षरी विद्या सद्यः स्तम्भनकारिणी।
अङ्गन्यासं ततः कुर्यात् स्थिरमयां हृदि न्यसेत्।।6।।
बगलामुखी तु शिरसि सर्वदुष्टानां शिखासु च।
वाचं मुखं पदं चैव कवचे विन्यसेत्ततः।।7।।
जिह्वां कीलय नेत्रयुग्मे आस्ये बुद्ध्यादिकं तथा।
गम्भीरां च मदोन्मत्तां स्वर्णकान्ति समप्रभाम्।।8।।
चतुर्भुजां त्रिनयनां कमलासन संस्थिताम्।
ऊर्ध्वकेशजटाजूटां करालवदनाम्बुजाम्।।9।।
मुद्गरं दक्षिणे हस्ते पाशं वामेन धारिणीम्।
रिपोर्जिह्वां त्रिशूलं च पीतगन्धानुलेपनाम्।।10।।
पीताम्बरधरां सान्द्रदृढपीनपयोधराम्।
हेमकुण्डलभूषां च पीतचन्द्रार्धशेखराम्।।11।।
पीतभूषण भूषाढ्या स्वर्ण सिंहासने स्थिताम्।
स्वानन्दानुमयीं देवीं रिपुस्तम्भनकारिणीम्।।12।।
मदनस्य रतेश्चापि प्रीतिस्तम्भनकारिणी।
महाविद्या महामाया महामेधा महाशिवा।।13।।
महामोहा महासूक्ष्मा साधकस्य वरप्रदा।
राजसी सात्विकी सत्या तामसी तैजसी स्मृता।।14।।
तस्याः स्मरणमात्रेण त्रैलोक्यं स्तम्भयेत् क्षणात्।
गणशो बटुकश्चैव योगिन्यः क्षेत्रपालकः।।15।।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गुरवश्च गुणास्तिस्त्रो बगला स्तम्भिनी तथा।
जृम्भिणी मोदिनी चाम्बा बालिका भूधरा तथा।।16।।
कलुषा करुणा धात्री कालकर्षिणिका परा।
भ्रामरी मन्दगमना भगस्था चैव भासिका।।17।।
ब्राह्मी माहेश्वरी चैव कौमारी वैष्णवी रमा।
वाराही च तथेन्द्राणी चामुण्डा भैरवाऽष्टकम्।।18।।
सुभगा प्रथमा प्रोक्ता द्वितीया भगमालिनी।
भगवाहा तृतीया तु भगसिद्धाऽब्धिमध्यगा।।19।।
भगस्य पातिनी पश्चात् भगमालिनी षष्ठिका।
उड्डीयानपीठनिलया जालन्धरपीठ संस्थिता।।20।।
कामरूपे तथा संस्था देवीत्रितयमेव च।
सिद्धौघा मानवौघाश्च दिव्यौघा गुरवः क्रमातः।।21।।
क्रोधिनी जृम्भिणी चैव देव्याश्चोभयपार्श्वयोः।
पूज्यस्त्रिपुरनाथश्च योनिमध्येऽम्बिकायुतः।।22।।
स्तम्भिनी या महाविद्या सत्यं सत्यं वरानने।
एषा सा वैष्णवी माया विद्यां यत्नेन गोपयेत्।।23।।
ब्रह्मास्त्रदेवतायाश्च हृदयं परिकीर्तितम्।
ब्राह्मास्त्रं त्रिषु लोकेषु दुष्प्राप्यं त्रिदशैरपि।।24।।
गोपनीयं प्रयत्नेन न देयं यस्य कस्यचित्।
गुरुभक्ताय दातव्यं वत्सरं दुःखिताय वै।।25।।
मातृपितृरतो यस्तु सर्वज्ञानपरायणः।
तस्मै देविमदं देवि बगलाहृदयं परम्।।26।।
सर्वार्थ साधकं दिव्यं पठनाद् भोगमोक्षदम्।
।।इति श्रीशिवापार्वतीसंवादे बगलाहृदयं समाप्तम्।।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

श्री बगलासहस्रनाम (पीताम्बरा) स्तोत्रम्

माँ बगला का यह सहस्रनाम स्तोत्र अति प्राचीन व दुर्लभ ग्रन्थ 'श्री उत्कट शम्बर नागेन्द्र प्रमाण तन्त्र' से लिया गया है। महामाया, माँ बगला के अनन्त रूप व भेद हैं। यह ब्रह्मास्त्र विद्या चतुवर्गफल प्रदान करने वाली, अति गुह्यतर, सर्वतन्त्रों में गुप्त, अति गुप्त और विशेषतः कलि काल में महासिद्धि प्रदान करने वाली हैं। साधकों को भी पग-पग पर सचेत किया गया है कि इस विद्या को प्रयत्नपूर्वक स्वयोनि के समान गुप्त रखना चाहिए और किसी को भी बताना नहीं चाहिए।

विनियोग

ॐ अस्य श्री पीताम्बरी सहस्रनाम स्तोत्र मन्त्रस्य भगवान सदाशिव ऋषिः, अनुष्टुप छन्दः, श्री जगद्वश्यकरी पीताम्बरी देवता सर्वाभीष्ट सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

ध्यान

पीताम्बर परीधानां पीनोन्नत पयोधराम्
जटामुकुट शोभाढ्यां पीतभूमिसुखासनाम्।
शत्रोर्जिह्वां मुद्गरं च विभ्रतीं परमां कलाम्॥

स्तोत्र

ब्रह्मास्त्रं ब्रह्मविद्या च ब्रह्ममाता सनातनी।
ब्रह्मेशी ब्रह्मकैवल्यं बगला ब्रह्मचारिणी॥ 1॥

नित्यानन्दा नित्यसिद्धा नित्यरूपा निरामया।
सन्धारिणी महामाया कटाक्ष- क्षेम- कारिणी॥ 2॥

कमला विमला नीला रत्नकान्ति गुणाश्रिता।
कामप्रिया कामरता कामाकामस्वरूपिणी॥ 3॥

मङ्गला विजया जया सर्वमगंलकारिणी।
कामिनी कामिनीकाम्या कामुका कामचारिणी॥ 4॥

कामप्रिया कामरता कामाकामस्वरूपिणी।
कामाख्या कामबीजस्था कामपीठ निवासिनी॥ 5॥

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कामदा कामहा काली कपाली च करालिका।
कंसारिः कमला कामा कैलासेश्वरवल्लभा॥ 6॥

कात्यायनी केशवा च करुणा काकेलिभुक्।
क्रिया कीर्तिः कृत्तिका च काशिका मधुरा शिवा॥ 7॥

कालाक्षी कालिका काली धवलाननसुन्दरी।
खेचरी च खमूर्तिश्च क्षुद्रा क्षुद्रः क्षुधावरा॥ 8॥

खड्गहस्ता खड्गरता खड्गिनी खर्परप्रिया।
गङ्गा गौरी गामिनी च गीता गौत्र विवर्धिनी॥ 9॥

गोधरा गोकरा गोधा गन्धर्वपुरवासिनी।
गन्धर्वा गन्धर्वकला गोपनी गरुडासना॥ 10॥

गोविन्दभावा गोविन्दा गान्धारी गन्धमादिनी।
गौराङ्गी गोपिकामूर्तिर्गोपी गोष्ठ निवासिनी॥ 11॥

गन्धा गजेन्द्र-गामिन्या गदाधरप्रिया ग्रहा।
घोरघोरा घोररूपा घनश्रोणी घनप्रभा॥ 12॥

दैत्येन्द्रप्रबला घण्टावादिनी घोरनिश्वना।
डाकिन्युमा उपेन्द्रा च उर्वशी उरगासना॥ 13॥

उत्तमा उन्नता उन्ना उत्तमस्थानवासिनी।
चामुण्डा मुण्डिका चण्डी चण्डदर्प हरेति च॥ 14॥

उग्रचण्डा चण्डचण्डा चण्डदैत्यविनाशिनी।
चण्डरूपा प्रचण्डा च चण्डाचण्ड शरीरिणी॥ 15॥

चतुर्भुजा प्रचण्डा च चराऽचरनिवासिनी।
क्षत्रप्रायः शिरोवाहा छलाछलतरा छली॥ 16॥

क्षत्ररूपा क्षत्रधरा क्षत्रिय-क्षयकारिणी।
जया च जयदुर्गा च जयन्ती जयदा परा॥ 17॥

जायिनी जयिनी ज्योत्सना जटाधरप्रिया जिता।
जितेन्द्रिया जितक्रोधा जयमाना जनेश्वरी॥ 18॥

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जितमृत्युर्जरातीता जाह्नवी जनकात्मजा।
झङ्कारा झन्झारी झण्टा झङ्कारी झकशोभिनी॥ 10॥

झखा झमेशा झङ्कारी योनिकल्याणदायिनी।
झर्झरा झमुरी झारा झराझरतरापरा॥ 20॥

झन्झा झमेता झङ्कारी झणा कल्याणदायिनी।
ईमना मानसी चिन्त्या ईमुना शङ्करप्रिया॥ 21॥

टकांरी टिटिका टीका टङ्किनी च टवर्गगा।
टापा टोपा टटपतिष्टमनी टमनप्रिया॥ 22॥

ठकारधारिणी ठीका ठङ्करी ठिकरप्रिया।
ठेकठासा ठकरती ठामिनी ठमनप्रिया॥ 23॥

डारहा डाकिनी डारा डामरा डमरप्रिया।
डखिनीयुक्ता च डमरू करवल्लभा॥ 24॥

ढक्का ढक्की ढक्कनादा ढोलशब्द-प्रबोधिनी।
ढामिनी ढामनप्रीता ढगतन्त्र-प्रकाशिनी॥ 25॥

अनेक रूपिणी अम्बा अणिमासिद्धि-दायिनी।
अमन्त्रिणी अणुकरी अणुमदभानुसंस्थिता॥ 26॥

तारा तन्त्रावती तन्त्र-तत्वरूपा तपस्विनी।
तरङ्गिणी तत्वपरा तन्त्रिका तन्त्रविग्रहा॥ 27॥

तपोरूपा तत्वदात्री तपः प्रीति-प्रधर्षिणी।
तन्त्रा यन्त्रार्चनपरा तलातलनिवासिनी॥ 28॥

तल्पदा त्वल्पदा कामास्थिरा स्थिरतरास्थितिः।
स्थाणु-प्रिया स्थपरा स्थिता स्थान प्रदायिनी॥ 20॥

दिगम्बरा दयारूपा दावाग्नि दमनीदमा।
दुर्गा दुर्गापरा देवी दुष्ट-दैत्य-विनाशिनी॥ 30॥

दमन प्रमदा दैत्य-दया-दान-परायणा।
दुर्गार्तिनाशिनी दान्ता दम्भिनी दम्भवर्जिता॥ 31॥

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दिगम्बरप्रिया दम्भा दैत्य-दम्भ-विदारिणी।
दमनादमन-सौन्दर्या दानवेन्द्र विनाशिनी ॥ 32 ॥

दया धरा च दमनी दर्भपत्र-विलासिनी।
धरिणी धारिणी धात्री धराधर-धरप्रिया ॥ 33 ॥

धराधर-सुता देवी सुधर्मा धर्मचारिणी।
धर्मज्ञा धवला धूला धनदा धनवर्द्धिनी ॥ 34 ॥

धीरा-धीरा धीरतरा धीरसिद्धि-प्रदायिनी।
धन्वन्तरिधराधीरा ध्येया ध्यानस्वरूपिणी ॥ 35 ॥

नारायणी नारसिंही नित्यानन्द नरोत्तमा।
नक्ता नक्तवती नित्या नील-जीभूत-सन्निभा ॥ 36 ॥

नीलाङ्गी नीलवस्त्रा च नीलपर्वत-वासिनी
सुनील-पुष्प-सचिता नील-जम्बुसम-प्रभा ॥ 37 ॥

नित्याख्यां षोडशी विद्या नित्याऽनित्य सुखावहा।
नर्मदा नन्दना-नन्दा नन्दाऽऽनन्द विवर्धिनी ॥ 38 ॥

यशोदानन्द तनया नन्दनोद्यानवासिनी।
नागान्तका नागवृद्धा नागपत्नि च नागिनी ॥ 30 ॥

नमिताशेषजनता नमस्कारवती नमः।
पीताम्बरा पार्वती च पीताम्बर-विभूषिता ॥ 40 ॥

पीतमाल्याम्बरधारा पीताभा पिङ्गमूर्धजा।
पीतपुष्पार्चनरता पीतपुष्पसमर्चिता ॥ 41 ॥

परप्रभा पितृपतिः परसैन्यविनाशिनी।
परमा परतन्त्रा च परमन्त्रा परात्परा ॥ 42 ॥

पराविद्या परासिद्धिः परास्थान-प्रदायिनी।
पुष्पा पुष्पवती नित्या पुष्पमाला-विभूषिता ॥ 43 ॥

पुरातना पूर्वपरा परसिद्धि-प्रदायिनी।
पीतानितम्बिनी पीता पीनोन्नत-पयस्विनी ॥ 44 ॥

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

प्रेमा प्रमध्यमा शेषा पद्मपत्र-विलासिनी।
पद्मावती पद्मनेत्रा पद्मा पद्ममुखी परा॥ 45॥

पद्मासना पद्मप्रिया पद्मराग-स्वरूपिणी।
पावनी पालिकापात्री परदा वरदा शिवा॥ 46॥

प्रेतसंस्था परानन्दा परब्रह्मस्वरूपिणी।
जिनेश्वर-प्रिया देवी पशुरक्त-रतप्रिया॥ 47॥

पशुमांस प्रिया अपर्णा परामृतपरायणा।
पाशिनी पाशिका चापि पशुघ्नी पशुभाषिणी॥ 48॥

फुल्लारविन्दवदनी फुल्लोत्पलशरीरिणी।
परानन्दप्रदा वीणा पशु-पाश-विनाशिनी॥ 40॥

फुत्कारा फुत्परा फेणी फुल्लेन्दीवरलोचना।
फट्मन्त्रा स्फटिका स्वाहा स्फोटा च फट्स्वरूपिणी॥ 50॥

स्फाटिका घुटिका घोरा स्फटिकाद्रिस्वरूपिणी।
वराङ्गना वरधरा वाराही वासुकी वरा॥ 51॥

बिन्दुस्था बिन्दुनी वाणी बिन्दुचक्रनिवासिनी।
विद्याधरी विशालाक्षी काशीवासिजन प्रिया॥ 52॥

वेदविद्या विरुपाक्षी विश्वयुग बहुरूपिणी।
ब्रह्मशक्तिर्विष्णुशक्तिः पन्चवक्त्रा शिवप्रिया॥ 53॥

वैकुण्ठवासिनी देवी वैकुण्ठपददायिनी।
ब्रह्मरूपा विष्णुरूपा परब्रह्ममहेश्वरी॥ 54॥

भवप्रिया भवोद्भावा भवरूपा भवोत्तमा।
भवपारा भवधारा भाग्यवत्प्रियकारिणी॥ 55॥

भद्रा सुभद्रा भवदा शुम्भदैत्य-विनाशिनी।
भवानी भैरवी भीमा भद्रकाली सुभद्रिका॥ 56॥

भगिनी भगरूपा च भगमाना भगोत्तमा।
भगप्रिया भगवती भगवासा भगकरा॥ 57॥

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

भगसृष्टा भाग्यवती भगरूपा भगासिनी।
भगलिङ्गप्रिया देवी भगलिङ्गपरायणा ॥ 58 ॥

भगलिङ्गस्वरूपा च भगलिङ्गविनोदिनी।
भगलिंगता देवी भगलिङ्गनिवासिनी ॥ 50 ॥

भगमाला भगकला भगाधरा भगाम्बरा।
भववेगा भगाभूषा भगेन्द्रा भाग्यरूपिणी ॥ 60 ॥

भगलिङ्गाऽङ्गसम्भोगा भगलिङ्गसवावहा।
भगलिङ्गसमाधुर्या भगलिङ्गनिवेशिता ॥ 61 ॥

भगलिङ्गसुपूजा च भगलिङ्गसमन्विता।
भगलिङ्गविरक्ता च भगलिङ्गसमावृता ॥ 62 ॥

माधवी माधवीमान्या मधुरा मधुमानिनी।
मन्दहासा महामाया मोहिनी महदुत्तमा ॥ 63 ॥

महामोहा महाविद्या महाघोरा महास्मृतिः।
मनस्विनी मानवती मोदिनी मधुरानना ॥ 64 ॥

मेनिका मानिनी मान्या मणिरत्न विभूषणा।
मल्लिका मौलिका माला मालाधरमदोत्तमा ॥ 65 ॥

मदना सुन्दरी मेधा मधुमत्ता मधुप्रिया।
मत्तहंसा समोन्नासा मत्तसिंह महासनी ॥ 66 ॥

महेन्द्रवल्लभा भीमा मौल्यं च मिथुनात्मजा।
महाकाल्या महाकाली महाबुद्धिर्महोत्कटा ॥ 67 ॥

माहेश्वरी महामाया महिषासुरघातिनी।
मधुराकीर्तिमत्ता च मत्त-मातङ्ग-गामिनी ॥ 68 ॥

मदप्रिया मांसरता मत्तयुक्-कामकारिणी।
मैथुन्यवल्लभा देवी महानन्दा महोत्सवा ॥ 60 ॥

मरिचिर्मारतिर्माया मनोबुद्धिप्रदायिनी।
मोहा मोक्षा महालक्ष्मीर्महत्तपदप्रदायिनी ॥ 70 ॥

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

यमरूपा च यमुना जयन्ती च जयप्रदा।
याम्या यमवती युद्धा यदोः कुलविवर्धिनी ॥ 71 ॥

रमा रामा रामपत्नी रत्नमाला रतिप्रिया।
रत्नसिंहासनस्था च रत्नाभरणमण्डिता ॥ 72 ॥

रमणी रमणीया च रत्या रसपरायणा।
रतानन्दा रतवती रघूणां कुलवर्द्धिनी ॥ 73 ॥

रमणारि- परिभ्राज्या रैधा-राधिकरत्नजा।
रावी रसस्वरूपा च रात्रीराजसुखावहा ॥ 74 ॥

ऋतुजा ऋतुदा ऋद्धा ऋतुरूपा ऋतुप्रिया।
रक्तप्रिया रक्तवती रङ्गिणी रक्तदन्तिका ॥ 75 ॥

लक्ष्मीर्लज्जा लतिका च लीलालग्ना-नितारिक्षणी।
लीला लीलावती लोमा हर्षाह्लादनपट्टिका ॥ 76 ॥

ब्रह्मस्थिता ब्रह्मरूपा ब्रह्माणा वेदवन्दिता।
ब्रह्मोद्भवा ब्रह्मकला ब्रह्माणी ब्रह्मबोधिनी ॥ 77 ॥

वेदाङ्गना वेदरूपा वनिता विनता वसा।
बाला च युवती वृद्धा ब्रह्मकर्मपरायणा ॥ 78 ॥

विन्ध्यस्था विन्ध्यवासी च बिन्दुयुक् बिन्दुभूषणा।
विद्यावती वेदधारी व्यापिका बर्हिणीकला ॥ 70 ॥

वामाचारप्रिया वह्निर्वामाचार- परायणा।
वामाचाररता देवी वामदेवप्रियोत्तमा ॥ 80 ॥

बुद्धेन्द्रिया विबुद्धा च बुद्धाचरणमालिनी।
बन्धमोचन-कर्त्री च वारुणा वरुणालया ॥ 81 ॥

शिवा शिवप्रिया शुद्धा शुद्धाङ्गी शुक्लवर्णिका।
शुक्लपुष्प-प्रिया शुक्ला शिवधर्मपरायणा ॥ 82 ॥

शुक्लस्था शुक्लिनी शुक्लरूपा शुक्लपशुप्रिया।
शुक्रस्था शुक्रिणी शुक्रा शुक्ररूपा च शुक्रिका ॥ 83 ॥

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

षण्मुखी च षडङ्गा च षटचक्रनिवासिनी।
षडग्रन्थियुक्ता षोढा च षणमाता च षडात्मिका॥ 84॥

षडङ्गयुवती देवी षडङ्गप्रकृतिर्वशी।
षडानना षडरसा च षष्ठी षष्ठेश्वरीप्रिया॥ 85॥

षडङ्गवादा षोडशी च षोढान्यास-स्वरूपिणी।
षटचक्रभेदनकरी षट्चक्रस्थ-स्वरूपिणी॥ 86॥

षोडशस्वरूपा च षणमुखी षड्रदान्विता।
सनकादि-स्वरूपा च शिवधर्मपरायणा॥ 87॥

सिद्धा सप्तस्वरी शुद्धा सुरमाता स्वरोत्तमा।
सिद्धविद्या सिद्धमाता सिद्धाऽसिद्ध-स्वरूपिणी॥ 88॥

हरा हरिप्रिया हारा हारिणी हारयुक् तथा।
हरिरूपा हरिधरा हरिणाक्षी हरिप्रिया॥ 80॥

हेतुप्रिया हेतुरता हिताऽहित स्वरूपिणी।
क्षमा क्षमावती क्षीता क्षुद्रघण्टा विभूषणा॥ 00॥

क्षयङ्करी क्षितिशा च क्षीणमध्य-सुशोभना।
अजाऽनन्ता अपर्णा च अहल्या शेषशायिनी॥ 01॥

स्वान्तर्गता च साधूनामन्तराऽनन्तरूपिणी।
अरूपा अमला चार्द्धा अनन्तगुणशालिनी॥ 02॥

स्वविद्या विद्यकाविद्या विद्या चार्विन्दलोचनी।
अपराजिता जातवेदा अजपा अमरावती॥ 03॥

अल्पा स्वल्पा अनल्पाद्या अणिमासिद्धिदायिनी।
अष्टसिद्धिप्रदा देवी रूप-लक्षण-संयुता॥ 04॥

अरविन्दमुखा देवी भोग-सौख्य-प्रदायिनी।
आदिविद्या आदिभूता आदिसिद्धि प्रदायिनी॥ 05॥

सीत्काररूपिणी देवी सर्वासन-विभूषिता।
इन्द्रप्रिया च इन्द्राणी इन्द्रप्रस्थ निवासिनी॥ 06॥

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

इन्द्राक्षी इन्द्रवज्रा च इन्द्रमद्योक्षणी तथा।
इलाकामनिवासा च ईश्वरीश्वरवल्लभा ॥ 07 ॥

जननी चेश्वरी दीना भेदा चेश्वरकर्म कृत।
उमा कात्यायिनी ऊर्ध्वा मीना चोत्तरवासिनी ॥ 08 ॥

उमापति प्रिया देवी शिवा चोङ्कारस्रूपिणी।
उरगेन-शिरोरत्ना उरगोरगवल्लभा ॥ 00 ॥

उद्यानवासिनी माला प्रशस्तमणिभूषणा।
ऊर्ध्वदन्तोत्तमाङ्गी च उत्तमा चोर्ध्वकेशिनी ॥ 100 ॥

उमासिद्धिप्रदा-सीमन्त कामिका च गुणात्मका।
उमा सिद्धिप्रदा या उरगासन संस्थिता।
ऋषि पुत्री ऋषिच्छन्दा ऋषिसिद्धि प्रदायिनी।।
उत्सवोतनवसीमन्त्रा कामिका च गुणान्विता।
एला एकारविद्या च एणीविद्याधरा तथा ॥ 101 ॥

ओङ्कारवलयोपेता ओङ्कारपरमाकला।
ॐ वदवद वाणी च ॐङ्कारक्षर मण्डिता ॥ 102 ॥

ऐन्द्रिकुलिशहस्ता च ॐ लोकपरवासिनी।
ॐ कारमध्यबीजा च ॐ नमोरूपधारिणी ॥ 103 ॥

परब्रह्मस्वरूपा च अंशुकांशुकवल्लभा।
ॐ कारा अः फड्मन्त्रा च अक्षाक्षर विभूषिता ॥ 104 ॥

अमन्त्रा मंत्ररूपा च पदशोभासमन्वित।
प्रणवोङ्काररूपा च प्रणवोच्चारभाक् पुनः ॥ 105 ॥

ह्लींकाररूपा ह्लींकारी वागबीजाक्षरभूषणा।
हृल्लेखा सिद्धियोगा च हृत्पद्मासन संस्थिता ॥ 106 ॥

बीजाख्या नेत्रहृदया ह्लीं बीजा भुवनेश्वरी।
क्लीं कामराजा क्लिन्ना च चतुर्वर्गफलप्रदा ॥ 107 ॥

क्लीं-क्लीं-क्लीं रूपिका देवी क्रीं-क्रीं-क्रीं नामधारिणी।
कमलाशक्ति बीजां च पाशाङ्कुशविभूषिता ॥ 108 ॥

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

श्रीं श्रींकारा महाविद्या श्रद्धा श्रद्धावती तथा।
ॐ ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं परा च क्लींकारी परमाकला॥ 100॥

ह्रीं क्लीं श्रींकारस्वरूपा सर्वकर्मफलप्रदा।
सर्वाद्या सर्वदेवी च सर्वसिद्धिप्रदा तथा॥ 110॥

सर्वज्ञा सर्वशक्तिश्च वाग्विभूतिप्रदायिनी।
सर्वमोक्षप्रदा देवी सर्वभोगप्रदायिनी॥ 111॥

गुणेन्द्रवल्लभा वामा सर्वशक्तिप्रदायिनी।
सर्वानन्दमयी चैव सर्वसिद्धिप्रदायिनी॥ 112॥

सर्वचक्रेश्वरी देवी सर्वसिद्धेश्वरी तथा।
सर्वप्रियङ्करी चैव सर्वसौख्यप्रदायिनी॥ 113॥

सर्वानन्दप्रदा देवी ब्रह्मानन्दप्रदायिनी।
मनोवाञ्छितदात्री च मनोवृद्धिसमन्विता॥ 114॥

अकारादि-क्षकारान्ता दुर्गा दुर्गतिनाशिनी।
पद्मनेत्र सुनेत्र च स्वधा स्वाहा वषट्कारी॥ 115॥

स्ववर्गा देववर्गा च तवर्गा च समन्विता।
अन्तस्था वेशमरूपा च नवदुर्गा नरोत्तमा॥ 116॥

तत्वसिद्धिप्रदा नीला तथा नीलपताकिनी।
नित्यरूपा निशाकारी स्तम्भनी मोहिनीत च॥ 117॥

वशङ्करी तथोच्चाटी उन्मादी कर्षिणीति च।
मातङ्गी मधुमत्ता च अणिमा लघिमा तथा॥ 118॥

सिद्धा मोक्षप्रदा नित्या नित्यानन्द प्रदायिनी।
रक्ताङ्गी रक्तनेत्रा च रक्तचन्दन भूषिता॥ 110॥

स्वल्पसिद्धि सुकल्पा च दिव्यचारणशक्रभा।
सऽक्रान्तिः सर्वविद्या च सस्यवासरभूषिता॥ 120॥

प्रथमा च द्वितीया च तृतीया च चतुर्थिका।
पञ्चमी चैव षष्ठी च विशुद्धा सप्तमी तथा॥ 121॥

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अष्टमी नवमी चैव दशाम्येकाद्धशी तथा।
द्वादशी त्रयोदशी च चतुर्दश्यथ पूर्णिमा॥ 122॥

अमावस्या तथा पूर्वा उत्तरा परिपूर्णिमा।
खड्गिनी चक्रिणी घोरा गदनी शूलिनी तथा॥ 123॥

भुशुण्डि चापिनी बाण-सर्वायुध-विभूषणा।
कुलेश्वरी कुलवन्ती कुलाचार-परायणा॥ 124॥

कुलकर्मसु रक्ता च कुलाचार-प्रवर्द्धिनी।
कीर्तिः श्रीश्चरमा रामा धर्मायै सततं नमः॥ 125॥

क्षमा धृति स्मृतिर्मेधा कल्पवृक्षनिवासिनी।
उग्रा उग्रप्रभा गौरी वेदविद्या विबोधिनी॥ 126॥

साध्या सिद्धा सुसिद्धा च विप्ररूपा तथैव च।
काली कराली काल्या च कालदैत्य विनाशिनी॥ 127॥

कौलिनी कालिकी चैव क-च-ट-त- पवर्गिका।
जयिनी जययुक्ता च जयदा जृम्भिणी तथा॥ 128॥

स्राविणी द्राविणी देवी भरुण्डा विन्ध्यवासिनी।
ज्योतिर्भूता च जयदा ज्वाला-माला-समाकुला॥ 120॥

भिन्ना भिन्नप्रकाशा च विभिन्ना भिन्नरूपिणी।
अश्विनी भरणी चैव नक्षत्रसम्भवानिला॥ 130॥

काश्यपी विनताख्याता दितिजादितिरेव च।
कीर्तिः कामप्रिया देवी कीर्त्याकीर्ति विवर्धिनी॥ 131॥

सद्योमांससमा लब्धा सद्यश्छिन्नासि शङ्करा।
दक्षिणा चोत्तरा पूर्वा पश्चिमादिक् तथैव च॥ 132॥

अग्नि-नैर्ऋति-वायव्या ईशान्यादिक् तथा स्मृता।
ऊर्ध्वाङ्गऽधोगता श्वेता कृष्णा रक्ता च पीतका॥ 133॥

चतुर्वर्गा चतुर्वर्णा चतुर्मात्रात्मिकाक्षरा।
चतुर्मुखी चतुर्वेदा चतुर्विद्या चतुर्मुखा॥ 134॥

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

चतुर्गुणा चतुर्माता चतुवर्गफलप्रदा।
धात्री विधात्री मिथुना नारी-नायक-वासिनी ॥ 135 ॥

सुरा मुदा मुद्वती मोदिनी मेनकात्मजा।
ऊर्ध्वकाली सिद्धिकाली-दक्षिणा कालिका शिवा ॥ 136 ॥

नील्या सरस्वती सा त्वं बगला छिन्नमस्तका।
सर्वेश्वरी सिद्धविद्या परा परमदेवता ॥ 137 ॥

हिंगुला हिंगुलाङ्गी च हिंगुलाधरवासिनी।
हिंगुलोत्तमवर्णाभा हिंगुला भरणा च सा ॥ 138 ॥

जागृति च जगन्माता जगदीश्वर-वल्लभा।
जनार्दनप्रिया देवी जययुक्ता जयप्रदा ॥ 130 ॥

जगदानन्दकारी च जगदाह्लादकारिणी।
ज्ञान-दानकरी यज्ञा जानकी जनकप्रिया ॥ 140 ॥

जयन्ती जयदा नित्या ज्वलदग्निसमप्रभा।
विद्याधरा च विम्बोष्ठि कैलाशचलवासिनी ॥ 141 ॥

विभवा वडवाग्निश्च अग्निहोत्रफलप्रदा।
मन्त्ररूपा परादेवी तथैव गुरुरूपिणी ॥ 142 ॥

गया गङ्गा गोमती च प्रभासा पुष्पकराऽपि च।
विन्ध्याचलरता देवी विन्ध्याचलनिवासिनी ॥ 143 ॥

बहू बहुसुन्दरी च कंसासुर विनाशिनी।
शूलिनी शूलहस्ता च वज्रा वज्रहराऽपि च ॥ 144 ॥

दुर्गा शिवा शान्तिकरी ब्रह्माणि ब्राह्मणप्रिया।
सर्वलोक प्रणेत्री च सर्वरोगहराऽपि च ॥ 145 ॥

मङ्गला शोभना शुद्धा निष्कला परमाकला।
विश्वेश्वरी विश्वमाता ललिता वसितानना ॥ 146 ॥

सदाशिवा उमा क्षेमा चण्डिका चण्डविक्रमा।
सर्वदेवमयी देवी सर्वागमभयापहा ॥ 147 ॥

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ब्रह्मेश-विष्णु-नमिता सर्वकल्याणकारिणी।
योगिनी योगमाता च योगीन्द्र-हृदय-स्थिता॥ 148॥

योगिजाया योगवती योगीन्द्रानन्दयोगिनी।
इन्द्रादि-नमिता देवी ईश्वरीचेश्वरप्रिया॥ 140॥

विशुद्धिदा भयहरा भक्त-द्वेषि-भयङ्करी।
भववेषा कामिनी च भरुण्डाभयकारिणी॥ 150॥

बलभद्रप्रियाकारा संसारार्णवतारिणी।
पञ्चभूता सर्वभूता विभूतिर्भूतिधारिणी॥ 151॥

सिंहवाहा महामोहा मोहपाशविनाशिनी।
मन्दुरा मदिरा मुद्रा मुद्रा-मुद्गर-धारिणी॥ 152॥

सावित्री च महादेवी पर-प्रिय-विनायिका।
यमदूती च पिङ्गाक्षी वैष्णवी शङ्करी तथा॥ 153॥

चन्द्रप्रिया चन्द्ररता चन्द्रनारण्यवासिनी।
चन्दनेन्द्र समायुक्ता चण्डदैत्य-विनाशिनी॥ 154॥

सर्वेश्वरी यक्षिणी च किराती राक्षसी तथा।
महाभोगवती देवी महामोक्ष-प्रदायिनी॥ 155॥

विश्वहन्त्री विश्वरूपा विश्वसंहारकारिणी।
धात्री च सर्वलोकानां हितकारणकामिनी॥ 156॥

कमला सूक्ष्मदा देवी धात्री हरविनाशिनी।
सुरेन्द्रपूजिता सिद्धा महातेजोवतीति च॥ 157॥

परारूपवति देवी त्रैलोक्याकर्षणकारिणी।
इति ते कथितं देवी! पीताम्नामसहस्त्रकम्।
पठेद् वा पाठयेद् वाऽपि सर्वसिद्धिर्भवेत् प्रिये!॥158॥

इति मे विष्णुना प्रोक्तं महास्तम्भकरं परम्।
प्रातःकाले च मध्यान्हे सन्ध्याकाले च पार्वति!॥150॥

एकचितः पठेतेतत् सर्वसिद्धिर्भविष्यति।
एकवारं पठेद् यस्तु सर्वपापक्षयो भवेत्॥160॥

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

द्विवारं प्रपठेद्यस्तु विघ्नेश्वरसमो भवेत्।
त्रिवारं पठनाद् देवि! सर्वं सिध्यति सर्वथा।।161।।

स्तवस्याऽस्य प्रभावेण साक्षात् भवति सुव्रत!।
मोक्षार्थी लभते मोक्षं धनार्थी लभते धनम्।।162।।

विद्यार्थी लभते विद्यां तर्क-व्याकरणान्विताम्।
महित्वं वत्सरान्ताच्च शत्रुहानिः प्रजायते।।163।।

क्षोणीपतिर्वशस्तस्य स्मरणे सदृशो भवेत्।
यः पठेत् सर्वदा भक्त्या श्रेयस्तु भवति प्रिये।।164।।

गणाध्यक्षप्रतिनिधिः कविकाव्यपरो वरः।
गोपनीयं प्रयत्नेन जननी-जारवत् सदा।।165।।

हेतुयुक्तो भवेन्नित्यं शक्तियुक्तः सदा भवेत्।
यः इदं पठते नित्यं शिवेन सदृशो भवेत्।।166।।

जीवन् धर्मार्थभोगी स्यान्मृतो मोक्षपतिर्भवेत्।
सत्यं सत्यं महादेवि! सत्यं सत्यं न संशयः।।167।।

स्तवस्याय प्रभावेण देवेन सह मोदते।
सुचिताश्र्व सुराः सर्वे स्तवराजस्य कीर्तनात्।।168।।

पीताम्बरपरीधाना पीतगन्धानुलेपनाम्।
परमोदयकीर्तिः स्यात् स्मरतः सुरसुन्दरि!।।188।।

(इति श्री उत्कटशम्बरे नागेन्द्रप्रयाणतन्त्रे षोडशसहस्रे विष्णुशङ्कर संवादे श्री बगला (पीताम्बरी) सहस्रनामस्तोत्रम् समाप्तम्)

श्री बगलाऽष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम्

(108 नाम स्तोत्र)

विष्णुयामल से उद्धृत यह स्तोत्र भगवती बगला के 108 नामों का पुनीत स्मरण है, जिसका पाठ करने से माँ पीताम्बरा की प्रसन्नता भक्त के प्रति बढ़ जाती है। प्रत्येक साधक को पराम्बा की कृपा प्राप्त करने के लिए किसी भी सिद्ध योग में बगला के इस स्तोत्र की एक सौ आठ मालाओं का जप कर

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

लेना चाहिए। साधक द्वारा इस प्रकार किया गया जप उसकी साधना की राह में मील का पत्थर सिद्ध होगा।

पहले विनयोग कर, फिर पाठ करें-

नारद उवाच

भगवन्देवदेवेश सृष्टिस्थितिलयात्मक।
शतमष्टोत्तरन्नाम बगलस्था वदाधुना।।

भगवानुवाच

श्रृणु वत्स प्रवक्ष्यामि नाम्नामष्टोत्तरं शतम्।
बगलाया महादेव्याः स्तोत्रं पापप्रणाशनम्।।
यस्यप्रपठनात्सद्यो वादी मूको भवेत्क्षणात्।
रिपूणां स्तंभनं याति सत्यं सत्यं वदाम्यमहम्।।

विनियोग

ॐ अस्य श्री बगला अष्टोत्तर शतनाम स्तोत्रस्य सदा शिव ऋषिः, अनुष्टुप छन्दः, श्री बगला देवता, श्री (बगला) प्रीतये जपे विनियोगः।

ॐ बगला विष्णु-वनिता विष्णु शङ्कर-भामिनी।
बहुला वेद माता च महाविष्णु-प्रसूरपि॥ 1॥

महामत्स्या महाकूर्मा महावाराहरूपिणी।
नरसिंह प्रिया रम्या वामना बटुरूपिणी॥ 2॥

जामदग्न्यस्वरूपा च रामा रामप्रपूजिता।
कृष्णा कपर्दिनी कृत्या कलहा कलविकारिणी॥ 3॥

बुद्धिरूपा बुद्धभार्या बौद्धपाखण्ड-खण्डिनी।
कल्किरूपा कलिहरा कलिदुर्गार्ति-नाशिनी॥ 4॥

कोटिसूर्य-प्रतिकाशा कोटि कन्दर्प-मोहिनी।
केवला कठिना काली कला कैवल्यदायिनी॥ 5॥

केशवी केशवाराध्या किशोरी केशवस्तुता।
रुद्ररूपा रुद्रमूर्ति रुद्राणी रुद्रदेवता॥ 6॥

नक्षत्ररूपा नक्षत्रा नक्षत्रेश-प्रपूजिता।
नक्षत्रेश-प्रिया नित्या-नक्षत्रपति वन्दिता॥ 7॥

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

नागिनी नागजननि नागराज प्रवन्दिता।
नागेश्वरी नागकन्या नागरी च नगात्मजा॥ 8॥

नागाधिराज-तनया नागराज-प्रपूजिता।
नवीना नीरदा पीता श्यामा सौन्दर्यकारिणी॥ 0॥

रक्ता नीला घना शुभ्रा श्वेता सौभाग्यदायिनी।
सुन्दरा सौभगा सौम्या स्वर्णाभा स्वर्गतिप्रदा॥ 10॥

रिपुत्रासकरी रेखा शत्रु संहार कारिणी।
भामिनी च तथा माया स्तम्भिनी मोहिनी शुभा॥ 11॥

रागद्वेषकरी रात्री रौरव ध्वंसकारिणी।
यक्षिणी सिद्धनिबहा सिद्धेशा सिद्धिरूपिणी॥ 12॥

लङ्कापति ध्वसंकरा लङ्केशरिपुवन्दिता।
लङ्कानाथ-कुलहरा महारावणहारिणी॥ 13॥

देंव-दानव-सिद्धौघ-पूजिता परमेश्वरि।
पुराणरूपा परमा परतन्त्रविनाशिनी॥ 14॥

वरदा वरदाराध्या वरदान-परायणा।
वरदेशप्रिया वीरा वीरभूषण-भूषिता॥ 15॥

वसुदा बहुदा वाणी ब्रह्मरूपा वरानना।
वलदा पीतवसना पीतभूषण-भूषिता॥ 16॥

पीतपुष्प-प्रिया पीतहारा पीतस्वरूपिणी।
इति ते कथितं विप्र नाम्नोमष्टोत्तर शतमः।।17।।

य पठेत्याढयेद्वाऽपि शृणुयादासमाहितः।
तस्य शत्रुक्षयं याति सद्योनैवात्र संशयः।।18।।

प्रभातकाले प्रयतो मनुष्यःपठेतुभक्त्या परिचिंत्यपीताम्।
द्रुतं भवेत्तस्य सर्वबुद्धिविर्विनाशमायाति च तस्या शत्रुः।।10।।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सर्वसिद्धिप्रद बगलाऽष्टोत्तर शतनाम स्तोत्रम्

(108 नाम स्तोत्र)

ब्रह्मस्त्ररूपिणी देवी माता श्री बगलामुखी।
चिच्छक्तिर्ज्ञानरूपा च ब्रह्मानन्द प्रदायिनी॥ 1॥

महाविद्या महालक्ष्मी श्रीमत् त्रिपुरासुन्दरी।
भुवनेशी जगन्माता पार्वती सर्वमङ्गला॥ 2॥

ललिता भैरवि शान्ता अन्नपूर्णा कुलेश्वरी।
वाराही छिन्नमस्ता च तारा काली सरस्वती॥ 3॥

जगत्पूज्या महामाया कामेशी भगमालिनी।
दक्षपुत्री शिवांकस्था शिवरूपा शिवप्रिया॥ 4॥

सर्वसम्पतकरी देवी सर्वलोकवशङ्करी।
वेद विद्या महापूज्या भक्ताद्वेशी भयङ्करी॥ 5॥

स्तम्भरूपा स्तम्भिनी च दुष्ट स्तम्भनकारिणी।
भक्त प्रिया महाभोगा श्री विद्या ललिताम्बिका॥ 6॥

मैनापुत्री शिवानन्दा मातङ्गी भुवनेश्वरी।
नारसिंही नरेन्द्रा च नृपाराध्या नरोत्तमा॥ 7॥

नागिनी नागपुत्री च नगराजसुता उमा।
पीताम्बा पीतपुष्पा च पीतवस्त्र प्रिया शुभा॥ 8॥

पीतगन्धप्रिया रामा पीतरत्नार्चिता शिवा।
अर्धचन्द्रधरी देवी गदामुद्गर धारिणी॥ 0॥

सावित्री त्रिपदा शुद्धा सद्योरागविवर्धिनी।
विष्णुरूपा जगन्मोहा ब्रह्मरूपा हरिप्रिया॥ 10॥

रुद्ररूपा रुद्रशक्तिश्चिन्मयी भक्तवत्सला।
लोकमाता शिवा सन्ध्या शिवपूजनतत्परा॥ 11॥

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

धनाध्यक्षा धनेशी च धर्मदा धनदा धना।
चण्डदर्पहरी देवी शुम्भासुर-निवर्हिणी॥ 12॥

राजराजेश्वरी देवी महिषासुर-मर्दिनी।
मधुकैटभहन्त्री च रक्तबीज-विनाशिनी॥ 13॥

धूम्राक्षदैत्यहन्त्री च भण्डासुरविनाशिनी।
रेणुपुत्री महामाया भ्रामरी भ्रमराम्बिका॥ 14॥

ज्वालामुखी भद्रकाली बगलाशत्रुनासिनी।
इन्द्राणी इन्द्रपूज्या च गुह्यमाता गुणेश्वरी॥ 15॥

वज्रपाशधरा देवी जिह्वामुद्गरधारिणी।
भक्तानन्दकरी देवी बगला परमेश्वरी॥ 16॥

(रुद्रयामल से उद्धृत)

कीलक स्तोत्रम्

ह्लीं ह्लीं ह्लींकार वाणे रिपुदलदलने घोर गम्भीर नादे।
ह्रीं ह्रीं ह्रींकार रूपे मुनिगणनमिते सिद्धिदे शुभ्रदेहे॥
भ्रों भ्रों भ्रोंकारनादे निखिलरिपुघटात्रोटने लग्नचित्ते।
मातर्मातर्नमस्ते सकल भयहरे नौमि पीताम्बरे त्वाम्॥1॥

क्रौं क्रौं क्रौंमीशरूपे अरिकुलहनने देहकीले कपाले।
हस्रौं हस्रौं स्वरूपे समरसनिरते दिव्यरूपे स्वरूपे॥
ज्रौं ज्रौं ज्रौं जातरूपे जहि जहि दुरितं जम्भरूपे प्रभावे।
कालि कंकाल अरिजन दलने देहि सिद्धिं परां मे॥2॥

हस्रां हस्रीं च हस्रें त्रिभुन विदिते चण्डमार्तण्डचण्डे।
ऐं क्लीं सौं कौलविद्ये सततशमपरे नौमि पीतस्वरूपे॥
द्रौं द्रौं द्रौं दुष्ट चित्ताऽऽदलनपरिणत बाहुयुग्मत्वदीये।
ब्रह्मास्त्रे ब्रह्मरूपे रिपुदलहनने ख्यातदिव्य प्रभावे॥3॥

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ठं ठं ठंकारवेशे ज्वलनप्रतिकृतिज्वालमालास्वरूपे।
धां धां धां परायन्तीं रिपुकुलरसनां मुद्गरं वज्रपाशम्॥
मातर्मातर्नमस्ते प्रबलखलजनं पीडयन्तीं भजामि।
डां डां डां डाकिन्याद्यैर्डिमकडिमडिमं डमरूकं वादयन्तीम्॥4॥

वाणी व्याख्यानदात्रीं रिपुमुख खनने वेदशास्त्रार्थपूताम्।
मातः श्री बगले परात्परतरे वादे विवादे जयम्॥
देहि त्वं शरणागतोऽस्मि विमले देवि प्रचण्डोद्धृते।
माङ्गल्यं वसुधासु देहि सततं सर्वस्वरूपे शिवे॥5॥

निखिलमुनि निषेव्यं स्तम्भन सर्वशत्रोः।
शमपरमिह नित्यं ज्ञानिनां हार्दरूपम्॥
अहरहरनिशायां यः पठेद् देवि कीलम्।
स भवति परमेशो वादिनामग्रगण्यः॥6॥

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

श्री बगलामुखी कवचम्

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

8

श्री बगलामुखी कवचम् (1)

कवच का अभिप्राय उस माध्यम से है जिससे रक्षा कार्य सम्पन्न हो सके। शारीरिक-सुरक्षा के लिए प्राचीन काल में लोहे और चमड़े के निर्मित वस्त्रों का प्रयोग किया जाता था ताकि युद्ध क्षेत्र में शत्रु के आक्रमणों का उस पर कोई प्रभाव न हो सके। रक्षा करने वाली कोई भी वस्तु हो, उसकी संज्ञा कवच होगी क्योंकि कवच का अर्थ है—आच्छादन करना। किसी वस्तु से अपने को ढका जाय तो उसे कवच का प्रयोग करना कहा जाएगा।

जिस तरह लोहे के कवच से शारीरिक सुरक्षा का उद्देश्य पूर्ण होता है, उसी तरह आध्यात्मिक शक्तियों से ओत-प्रोत देवी कवच का भी निर्माण किया जा सकता है जिसके प्रयोग से आसुरी शक्तियों के प्रकोप से बचा जा सकता है। इसमें मन्त्र शक्ति की प्रमुखता तो रहती ही है, श्रद्धा भावना के सम्मिलित होने से यह अत्यंत प्रभावशाली सिद्ध होते हैं। अपनी रुचि व श्रद्धा वाले कवच का नित्य प्रति पाठ किया जाता रहे तो भी अनिष्टों के आक्रमणों से सुरक्षा रहती है।

अपनी दैनिक संध्या व उपासना के बाद कवच का पाठ करना चाहिए। कवच पाठ स्वयं में एक उपासना है परंतु इसका उद्देश्य केवल रक्षा करना है। आसुरी शक्तियाँ चारों ओर मंडरा रही हैं। उनसे हानि की संभावना हो तो कवच का श्रद्धापूर्वक पाठ करना चाहिए। पाठ करते हुए यह भावना करनी चाहिए कि हमारे विभिन्न अंगों पर अध्यात्म शक्ति कवच चढ़ गया है। सम्पूर्ण शरीर की सुरक्षा के लिए यह भावना भी की

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जा सकती है कि हमारे चारों ओर चक्राकार रूप में एक ऐसी रेखा खिंची हुई है जिसे पार करना आसुरी शक्तियों की सामर्थ्य से बाहर है। आंतरिक नेत्रों से अनुभव करें कि ये शक्तियाँ उस शक्तिशाली लौह-निर्मित रेखा से टकरा कर चकनाचूर होती जा रही है, परंतु उस घेरे में प्रविष्ट नहीं हो पा रही हैं। यह भावना जितनी दृढ़ होगी, कवच पाठ उतना ही प्रभावशाली सिद्ध होगा। यहाँ कुछ महत्त्वपूर्ण बगला कवच दे रहे हैं। पूजन व मंत्र साधना के बाद कवचा पाठ करना चाहिए। विभिन्न उद्देश्यों की पूर्ति के लिए अलग-अलग कवच यहाँ दे रहे हैं-

कवच

(विश्वसारोद्धार तंत्रोक्तम्)

पार्वत्युवाच

कैलासाचलमध्यगं पुरदहं शान्तं त्रिनेत्रं शिवम्
वामस्था गिरिजा प्रणम्य कवचं भूतप्रदं पृच्छति।
देवी श्रीबगलामुखी रिपुकुलारण्याग्निरूपा च या
तस्याशापविमुक्तमंत्र सहितं प्रीत्याऽधुना ब्रूहि माम्।।1।।

श्री शङ्कर उवाच

देवि श्री भववल्लभे शृणु महामंत्रं विभूतिप्रदम्
देव्या वर्मयुतं समस्तसुखदं साम्राज्यदं मुक्तिदम्।
तारं रुद्रवधूं विरञ्चिमहिला विष्णु-प्रिया कामयुक्
कांते! श्रीबगलानने मम रिपून् नाशय युग्मं त्वति।।2।।
ऐश्वर्याणि पदं च देहि युगलं शीघ्रं मनोवाञ्छितं
कार्यं साधय युग्मयुच्छिववधूवह्निप्रियान्तो मनुः।
कंसारेस्तनयं च बीजमपरा शक्तिश्च वाणीं तथा
कील श्रीमती! भैरवर्षिसहितं छन्दो विराट् संयुतम।।3।।
स्वेष्टार्थस्य परस्य वेति नितरां कार्यस्य सम्प्राप्तये
नानाऽसाध्यमहागदस्य नियतं नाशाय वीर्याप्तये।
ध्यात्वा श्रीबगलाननां मनुवरं जप्त्वा सहस्राख्यकम्
दीर्घैः षट्कयुतैश्च रुद्रमहिमाबीजैर्विनास्याङ्गके।।4।।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

भावार्थ-कैलाश गिरि के मध्य में विराजमान पुर के दहन करने वाले परम शान्त स्वरूप से युक्त भगवान शिव को प्रणाम करके वाम भाग में स्थित गिरिजा श्री शिव से बोलीं— भू प्रदान करने वाले कवच को पूजित है जो देवी शत्रुओं के कुल रूपी अरण्य के लिए अग्नि के स्वरूप वाली श्री बगला मुखी देवी है उसका आपत्ति से मुक्त करने वाले मंत्र की सहित कवच को प्रीतिवश से अब कृपा करके मुझे बतलाइए। भगवान शङ्कर ने कहा— हे श्रीभव के प्रिये! हे देवी! उस भूति के दाता महामन्त्र का आप श्रवण कीजिए। यह देवी का धर्म से समन्वित कवच समस्त सुखों को देने वाला— साम्राज्य का प्रदाता और संसार के भव बंधन से छुटकारा देने वाला है। इसमें सर्वप्रथम तार अर्थात् ॐ है। फिर विरञ्चि के सहित रुद्र वधू है और काम से युक्त विष्णु प्रिया है अर्थात् श्री है। हे कान्ते! हे श्रीबगलानने! मेरे रिपुओं को नाश के लिए युग्म का प्रयोग है। बहुत ही शीघ्र ऐश्वर्यों को दीजिए। यह पद युगल है तथा मेरे मनोवांछित का प्रदान करो। कार्य की साधना करो यह भी युग्म से युक्त हो। अन्त में शिव वधू वह्नि प्रिया होवे- यह मंत्र है। कंसारि भगवान् श्री कृष्ण का तनय बीज है और अपरा शक्ति वाली है। इसका भैरव ऋषि के सहित है और छंद विराट्संयुत है। अपने अर्थ का अथवा दूसरे के अर्थ के कार्य की सम्प्राप्ति के लिए, अनेक असाध्य महान् रोग के नियत रूप से नाश के वास्ते एवं वीर्य पराक्रम की प्राप्ति के लिए श्रीबगलामुखी का ध्यान करके इसके श्रेष्ठ मंत्र का एक सहस्त्र जाप करना चाहिए और दीर्घ रुद्र महिमा के षटक युत बीजों के द्वारा अङ्ग में न्यास करें।

ध्यानम्

सीवर्णासनसंस्थिता त्रिनयनां पीतांशुकोल्लासिनीं
हेमाभांकेसुरुचिं शशाङ्कमुकुटां सच्चम्पकस्त्रग्युताम्।
हस्तैर्मुद्गर पाशवज्ररस संबिभ्रतीं भूषणै-
र्व्याप्तांगी बगलामुखीं त्रिजगतां संस्तम्भिनी चिन्तयेत्।।5।।

भावार्थ-सुवर्ण निर्मित आसन पर विराजमान- तीनों नेत्रों से समन्वित पीतवर्ण के सद्शास्त्रों से शोभिता, हेम की आभा के समान अङ्गों की आभा से संयुता, शशांक को मुकुट में धारण करने वाली, पीत चम्पा की माला से विभूषिता अपने करों से मुद्गर, पाश, वज्र और शत्रु की जिह्वा को ग्रहण करती हुई, भूषणों से व्याप्त अंगों वाली, तीनों भुवनों का स्तम्भन करती हुई श्री बगलामुखी का ध्यान करें।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विनियोग

ॐ अस्य श्रीबगलामुखीब्रह्मास्त्रमन्त्रकचस्य भैरव ऋषिः, विराट् छन्दः, श्रीबगलामुखी देवता, क्लीं बीजम्, ऐं शक्तिः, श्री कीलकं मम परस्य च मनोभिलषितेष्टकार्यसिद्धये विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास

शिरसि भैरव ऋषये नमःमुखे विराटछन्दसे नमः। हृदि बगला मुखीदेवतायै नमः। गुह्ये क्लीं बीजायः नमः। पादयोः ऐं शक्तये नमः। सर्वांगे श्री कीलकाय नमः।

करन्यास

ॐ ह्रां अङ्गुष्ठाभ्यां नमः, ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः ॐ ह्रूं मध्यमाभ्यां नमः।

ॐ ह्रं अनामिकाभ्यां नमः, ॐ ह्रौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः, ॐ ह्रः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः। ह्रां हृदयाम नमः, ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा, ॐ ह्रूं शिखायै वषट्।

हृदयादिन्यास

ॐ ह्रैं कवचाय हुम, ॐ ह्रौं नेत्रत्राय वौषट, ॐ ह्रः अस्त्राय फट्।

भावार्थ–ओं इस बगलामुखी के ब्रह्मास्त्र मन्त्र के कवच का भैरव ऋषि है, विराट् छन्द है, श्री बगलामुखी देवता है, क्लीं बीज है, ऐं शक्ति है, श्री कीलक है, मेरे और दूसरे के मन को अभिलषित कार्य की सिद्धि के लिए विनियोग है। शिर में भैरव ऋषि के लिए नमस्कार है। मुख में विराट् छन्द के लिए नमस्कार है, हृदय में बगलामुखी देवता के लिए नमस्कार है, गुह्य में **क्लीं** बीज को नमस्कार है, पादों में ऐं शक्ति के लिए नमस्कार है, सब अङ्गों में श्री कीलक को नमस्कार है। **ओं ह्रां** अंगुष्ठों के लिए नमस्कार है, **ओं ह्रीं** तर्जनियों के लिए नमस्कार है। **ओं ह्रूं** मध्यमाओं के लिए नमस्कार है, **ओं ह्रैं** अनामिकाओं के लिए नमस्कार है, **ओं ह्रौं** कनिष्ठिकाओं को नमस्कार है, **ओं ह्रः** करतल करपृष्ठों के लिए नमस्कार है। **ओं ह्रूं** शिखा के लिए वषट् है, **ओं ह्रैं** कवच के लिए हुम् है, **ओ ह्रौं** नेत्रत्रयाय को वौषट् है, **ओं ह्रः** वस्त्र के लिए फट् है।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मन्त्रोद्धार

ओं ह्लीं ऐं श्रीं क्लीं श्रीं बगलानने मम रिपून् नाशय नाशय ममैश्वर्याणि देहि देहि शीघ्रं मनोवाञ्छितं कार्यं साधय साधय ह्लीं, स्वाहा।

अथ कवचम्

ॐ शिरो मे पातु ओं ह्लीं ऐं श्रीं क्लीं पातु ललाटकम्।
सम्बोधनपदं पातु नेत्रे श्री बगलानने। 1।
श्रुतौ पीतांबरां रिपुं पातु नासिकां रक्षयद्वयम्।
पातु गण्डौ सदा ममैश्वर्याण्यन्तं तु मस्तकम्। 2।
देहि द्वन्द्वं सदा जिह्वां पातु शीघ्रं वचो मम।
कण्ठदेशं मनः पातु वाछितं बाहूमूलकम्। 3।
कार्य साधय द्वन्द्व तु करौ पातु सदा मम।
मायायुक्ता तथ स्वाहा हृदयं पातु सर्वदा। 4।
अष्टाधिकचत्वारिंशदण्डाढ्या बगलामुखी।
रक्षां करोतु सर्वत्र गृहेऽरण्ये सदा मम। 5।
ब्रह्मास्त्राख्यो मनुः पातु सर्वाङ्गे सर्वसन्धिषु।
मन्त्रराजः सदा रक्षां करोतु मम सर्वदा। 6 ।
ओं ह्लीं पातु नाभिदेशं कटिं मे बगलाऽवतु।
मुखीवर्णद्वयं पातु लिंगे मे मुष्कयुग्मकम्। 7 ।
जानुनी सर्वदुष्टानां पातु मे वर्णपञ्चकम्।
वाचं मुखं तथा पादं षड्वर्णाः परमेश्वरी। 8 ।
जंघायुग्मे सदा पातु बगला रिपुमोहिनी।
स्तम्भयेति पदं पृष्ठं पातु वर्णत्रयं मम। 0 ।
जिह्वां वर्णद्वयं पातु गुल्फो मे कीलयेति च।
पादोर्ध्वं सर्वदा पातु बुद्धिं पादतले मम । 10।
विनाशयपदं पातु पादाङ्ग गुल्योर्नखानि मे।
ह्लीं बीजं सर्वदा पातु बद्धीन्द्रियवचांसि मे । 11।

भावार्थ- ओं ह्लीं ऐं श्री क्लीं श्रवगलानने मम रिपून् नाशय-नाशय, ममैश्वर्याणि देहि-देहि, शीघ्रं वांच्छितं कार्य्यं साधय-साधय, ह्लीं स्वाहा। ओं ह्लीं ऐं

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मेरे सिर की रक्षा करे—श्रीं क्लीं मेरे ललाट का परित्राण करें श्री बगलाननने यह सम्बोधन पद नेत्रों की रक्षा करें।।1।। मम रिपुं यह मेरे दोनों कानों की सुरक्षा करें। दोनों नाशय पद मेरी नासिका की रक्षा करें। मम पद गण्डों की रक्षा करे ऐश्वर्याणि यह पद मेरे मस्तकी की रक्षा करे।।2।। दोनों देहि पद सदा जिह्वा का परित्राण करें शीघ्रं पद मेरे वचन की रक्षा करें, मनः यह पद गण्डदेश की रक्षा करे वाञ्छितं पद बाहुओं के मूल की सुरक्षा करें।।3।। कार्य साधय यह पद सदा मेरे दोनों करों की रक्षा करे माया (ह्रीं) तथा स्वाहा यह पद सर्वदा हृदय का त्याग परित्राण करें।।4।। अड़तालीस दण्डों से समन्वित बगलामुखी देवी सर्वत्र गृह में अरण्य में सर्वदा सुरक्षा करें।।5।। ब्रह्मास्त्र नामक मन्त्र सम्पूर्ण अंग में समस्त सन्धियों में रक्षा करें। मन्त्रराज सर्वदा मेरी रक्षा करें।।6।। ओं ह्रीं मेरे नाभिदेश की रक्षा करें बगला मेरी कटिका त्राण करे मुखी ये दोनों वर्ण मेरे लिंग और दोनों मुष्क (वृषण) की रक्षा करें।।7।। सर्व दृष्टानां ये पाँच वर्ण मेरे जानुओं की रक्षा करें, वाचं, मुख पद ये षट् वर्ण परमेश्वरी है, रिपुओं का मोहन करने वाली बगला सदा मेरी जंघाओं की सुरक्षा करें। स्तम्भय ये तीन वर्ण मेरे पद और पुष्ट भाग की रक्षा करें।। 8-0।। जिह्वा ये दोनों वर्ण मेरी गुल्फों का त्राण करें। कीलय यह सर्वदा पादों के ऊर्ध्व भाग की रक्षा करें। बुद्धि यह पद मेरे पादों के तलों की रक्षा करें।।10।। विनाशय यह पद मेरे पादों की अंगुलियों और नखों की सुरक्षा करें ह्रीं बीज सर्वदा मेरी बुद्धि-इन्द्रियों और वचनों की रक्षा करें। 11।

सर्वांङ्ग प्रणवः पातु स्वाहा रोमाणि मेऽवतु।
ब्राह्मी पूर्वदले पातु चाग्नेय्यां विष्णुवल्लभा।।12।।
माहेशी दक्षिणे पातु चामुण्डा राक्षसेऽवतु।
कौमारी पश्चिमे पातु वायव्ये चापराजिता।।13।।
वाराही चोत्तरे पातु नारसिंही शिवेऽवतु।
ऊर्ध्वं पातु महालक्ष्मीः पातले शारदाऽवतु।।4।।
इत्यष्टो शक्तयः पान्तु सायुधाश्च संवाहनाः।
राजद्वारे महादुर्गे पातु मां गणनायकः।।15।।
श्मशाने जलमध्ये च भैरवश्च सदाऽवतु।
द्विभुजां रक्तवसनाः सर्वाभरणभूषिताः।।16।।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

योगिन्यः सर्वदा पान्तु महारण्ये सदा मम।

इति ते कथितं देवि कवचं परमाद्भुतम्।।17।।

भावार्थ-मेरे सम्पूर्ण अंग की स्वाहा पद से रक्षा करें और स्वाहा पद मेरे रोमों की सुरक्षा करें। पूर्वदल में ब्राह्मी और आग्नेय में विष्णुवल्लभा त्राण करे।।12।। दक्षिण में माहेशी रक्षा करें। नैर्ऋत्य में चामुण्डा त्राण करें। कौमारी पश्चिम में और अपराजिता वायव्य में मेरी रक्षा करें।।13।। उत्तर में वाराही और शिव दिशा में नारसिंही सुरक्षा करें। ऊर्ध्व भाग में महालक्ष्मी और शारदा पाताल में मेरा परित्राण करे।।14।। ये आठों शक्तियाँ अपने आयुधों और वाहनों सहित मेरी रक्षा करें। राजद्वार में और महादुर्ग में गणनायक मेरा रक्षण करें।।15।। श्मशान भूमि में और जल के मध्य में सदा मेरी भैरव रक्षा करें। महारण्य में दो भुजाओं वाली रक्त वस्त्र धारिणी तथा सब आभरणों से भूषित योगिनियाँ सदा मेरी सुरक्षा करें। हे देवि! यह अद्भुत कवच है जिसको मैंने आपको बतला दिया है।।16-17।।

श्री विश्वविजयो नाम कीर्तिश्रीविजयप्रदम्।

अपुत्रो लभते पुत्रं धीरं शूरं शतायुषम्।।18।।

निर्धनो धनमाप्नोति कवचस्याऽस्य पाठतः।

जपित्वा मन्त्रराजं तु ध्यात्वा श्रीबगलामुखीम्।।10।।

पठेदिदं कि किवचं निशायां नियमात् तु यः।

यत् यत् कामयते कामं साध्यासाध्ये महीतले।।20।।

तत् तत् काममवाप्नोति सप्तरात्रेण शंकरि।

गुरुं ध्यात्वा सुरा पीत्वा रात्रौ शक्तिसमन्वितः।।21।।

भावार्थ-यह श्री विश्व विजय नाम वाला है। जो श्री और कीर्ति एवं विजय का प्रदान करने वाला है। इसके प्रभाव से साधक यदि पुत्रहीन हो तो वह परम धीर शूर और सौ वर्ष की आयु वाले पुत्र को प्राप्त किया करता है।।18।। इस कवच के पाठ करने से धनहीन पुरुष धन की प्राप्ति किया करता है। पहले मन्त्र जाप करके इसका पाठ करना चाहिए। जो कोई निशा के समय में नियम से इस कवच का पाठ करता है वह जो भी कामना करता है चाहे वह साध्य हो या असाध्य हो उसी को इस मही मण्डल में वह प्राप्त कर लेता है। शांकरि! साथ ही

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

रात्रियों में करने में उनकी प्राप्ति हो जाया करती है। रात्रि में सुरापान करके शक्ति से समन्वित होकर गुरु का ध्यान करना चाहिए।।10-21।।

कवचं यः पठेद् देवि तस्याऽसाध्यं न किञ्चन।
यः ध्यात्वा प्रजपेन् मन्त्रं सहस्त्रं कवचं पठेत्।। 22।।
त्रिरात्रेण वशं याति मृत्योः तन्नात्र संशयः।
लिखित्वा प्रतिमां शत्रोः सतालेन हरिद्रया।। 23।।
लिखित्वा हृदि तन्नाम तं ध्यात्वा प्रजपेन् मनुम्।
एकविंशद्दिनं यावत् प्रत्यहं च सहस्त्रकम्।। 24।।
जप्त्वा पठेत् तु कवचं चतुर्विंशतिवारकम्।
संस्तम्भो जायते शत्रोर्नाऽत्र कार्या विचारणा।।25।।
विवादे विजयं तस्य संग्रामे जयमाप्नुयात्।
श्मशाने च भयं नास्त कवचस्य प्रभावतः।।26।।

भावार्थ-हे देवि! जो पुरुष इस कवच को पढ़ता है इस जगती तल में उसे कुछ भी असाध्य नहीं होता है। इस कवच का ध्यान करें और मन्त्र जाप करें और एक सहस्त्र का जाप करके कवच का पाठ करना चाहिए।।22।। मनुष्य तीन रात्रि में मृत्यु के वश में चला जाता है। इसमें कुछ भी संशय नहीं है। हरिद्रा से ताल के सहित शत्रु का लेखन करें। उसके हृदय में उसका नाम लिखकर उसका ध्यान करें और मन्त्र जाप करें। इकत्तीस दिन पर्यंत प्रतिदिन एकसहस्त्र मन्त्र का जाप करना चाहिए।।23-24।। मन्त्र का जाप करके चौबीस बार कवच का पाठ करना चाहिए। शत्रु का स्तम्भन हो जाया करता है। इसमें लेशमात्र भी संदेह नहीं है।। 25।। उसकी विवाद में विजय होती है और संग्राम में भी जीत की प्राप्ति किया करता है। इस कवच की कृपा से उसको श्मशान में भी कोई भय नहीं होता है। इस कवच का ऐसा ही प्रभाव है। 26।

नवनीतं चाऽभिमन्त्र्य स्त्रीणां दद्यान् महेश्वरि।
वन्ध्यायां जायते पुत्रो विद्याबलसमन्वितः।।27।।
श्मशानांगारमादाय भौमे रात्रो शनावथ।
पादोदकेन स्पृष्टवा च लिखेत् लोहशलाकया।।28।।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

भूर्मौ शत्रोः स्वरूपं च हृदि नाम समालिखेत्।
हस्तं तद्धृदये दत्वा कवचं तिथिवारकम्।।20।।
ध्यात्वा जपेन् मन्त्रराजं नवरात्रं प्रयत्नतः।
म्रियते ज्वरदाहेन दशमेऽहनि न संशयः।।30।।
भूर्जपत्रेष्विदं स्तोत्रमष्टचन्धेन संलिल्लखेत्।
धारयेद् दक्षिणे वाहौ नारी वामभुजे तथा।।31।।
संग्रामे जयमाप्नोति नारी पुत्रवती भवेत्।
ब्रह्मास्त्रादीनि शस्त्राणि नैव कुनतन्ति तं जनम्।।32।।
सम्पूज्य कवचं नित्यं पूजायाः फलं लभेत्।
बृहस्पतिसमो वाऽपि विभवे धनदोपमः।।33।।

भावार्थ-हे महेश्वरि! नवनीत को अभिमन्त्रित करके स्त्रियों को देना चाहिए। इससे विद्या और बल से समन्वित पुत्र गर्भ के भी बांया से उत्पन्न हो जाता है।।27।। भौमवार अथवा शनिवार रात में श्मशान के अंगार को लाकर पादोदक ले स्पर्श करके लोहे की शलाका से भूमि में शत्रु का स्वरूप लिखें और उसके हृदय में उसका नाम लिखना चाहिए। उसके हृदय पर हाथ धरकर पन्द्रह बार कवच का पाठ करें और ध्यान करके प्रयत्नपूर्वक नौ बार अर्थात् नौ रात्रि तक मन्त्रराज का जा। करें तो वह शत्रु ज्वर के दाह से दसवें ही दिन में मर जाया करता है। इसमें कुछ भी संशय नहीं है।।28-30।। इस यंत्र को भोजपत्र पर भली भांति लिखना चाहिए। पुरुष को इसे दाहिनी भुजा में और नारी को बाईं भुजा में धारण करना चाहिए।।31।। इसको धारण करके पुरुष रणक्षेत्र में विजय प्राप्त किया करता है तथा नारी पुत्रवती हो जाती है। ब्रह्मास्त्र आदि अस्त्र भी अनिष्ट नहीं कर पाते हैं। ऐसा इसका महान् प्रभाव होता है।।32।। इस कवच का प्रतिदिन भली प्रकार से अभ्यर्चन करके देवता की पूजा करने से फल की प्राप्ति हो जाती है। वह पुरुष बृहस्पति के समान बुद्धिमान और वैभव में कुबेर के सदृश हो जाता है।।33।।

कामतुल्यश्च नारीणां शत्रूणां च यमोपमः।
कवितालहरी तस्य भवेद् गंगाप्रवाहवत्।।34।।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गद्यपद्यमयी वाणी भवेद् देवीप्रसादतः।
एकादश शतं यावत् पुरश्चणमुच्यते।।35।।
पुरश्चर्याविहीनं तु न चेदं फलदायकम्।
न देयं परशिष्येभ्यो दुष्टेभ्यश्च विशेषतः।।36।।
देयं शिष्याय भक्ताय पञ्चत्वं चाऽन्यथाऽप्नुयात्।
इदं कवचमज्ञात्वा भजेद् यो बगलामुखीम्।
शतकोटिं जपित्वा तु तस्य सिद्धिर्न जायते।।37।।
दाराढ्यो मनुजोऽस्य लक्षजपतः प्राप्नोति सिद्धिं परां।
विद्यां श्रीविजयं तथा सुनियतं धीरं च वीरं वरम्।
ब्रह्मास्त्राख्यमनुं विलिख्य नितरां भुर्जेऽष्टगन्धेन वै।
धृत्वा राजपुरं ब्रजन्ति खलु ये दासायते तान्नृपः।।38।।

भावार्थ-नारियों के मन को मोहित करने के लिए वह कामदेव के तुल्य आकर्षक बन जाता है तथा शत्रुओं के पराजय और आतंक के लिए साक्षात् यमराज के समान हो जाता है। उस पुरुष के हृदय में कविता को लहरी अर्थात् काव्य रचना की तरंगें गंगा के प्रवाह के तुल्य वहन किया करती हैं।।34।। देवी के अनुपम प्रसाद से उसकी वाणी सर्वदा गद्य और पद्य से परिपूर्ण हो जाया करती है। एकादश शत पर्यंत इसका पुरश्चरण कहा जाता है।।35।। पुरश्चरण के बिना रहने से अर्थात् पुरश्चरण किए बिना यह कभी फलदायक नहीं होता है।

तात्पर्य यह है कि यदि फल सिद्धि अपेक्षित हो तो अवश्य ही इसका पुरश्चरण करना चाहिए। इसकी दीक्षा भूल कर भी दूसरे के शिष्य को न दें और विशेष रूप से दुष्टों के लिए तो कभी भी देनी ही नहीं चाहिए।।36।। जो परम भक्त शिष्य हो उसी को इसकी दीक्षा दें। अन्यथा करने से मृत्यु को प्राप्त हो जाया करता है। जो इस कवच का ज्ञान प्राप्त न करके बगलामुखी की सेवा करता है वह सौ बार जाप करके भी सिद्धि प्राप्त नहीं किया करता है।।37।। दारा से युक्त पुरुष इसके एक लाख जप से ही सिद्धि की प्राप्ति कर लेता है। ओं, श्री, विजय, सुनियत, धीर और वरदान ब्रह्मास्त्र नामक मन्त्र को निरन्तर भोजपत्र पर अष्टगन्ध से लिखकर धारण करके जो राजा के नगर में गमन करता है निश्चय ही वहाँ का राजा उसका दास हो जाता है।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

श्री बगलामुखी कवचम् (2)

(रुद्रयामल तन्त्रोक्तम्)

श्री भैरवी उवाच

श्रुत्वा च बगला पूजां स्तोत्रं चापि महेश्वर।
इदानीं श्रोतुमच्छिामि कवचं वद् मे प्रभो।।1।।
वैरिनाशकरं दिव्यं सर्वाऽशुभ विनाशनम्।
शुभदं स्मरणात्पुण्यं त्राहि मां दुःख नाशनम्।।2।।

भावार्थ-हे महेश्वर! बगलामुखी देवी की पूजा एवं स्तोत्र का मैंने श्रवण कर लिया है, अब मैं शरीर की रक्षा हेतु कवच सुनना चाहती हूँ। जिससे शत्रुओं एवं सभी प्रकार के अनिष्टों का विनाश हो। जिसके केवल स्मरण करने से सर्व प्रकार के पुण्य मिलते हों और दुःखों का नाश होता हो, ऐसे दिव्य कवच को हे प्रभो! मुझसे कहिये।।1-2।।

भैरव उवाच

कवचं श्रृणु वक्ष्यामि भैरवि प्राणवल्लभे।
पठित्वा धारयित्वा तु त्रैलोक्ये विजयी भवेत्।।3।।

भावार्थ-भैरव ने कहा-हे प्राणवल्लभे भैरवी! सुनो, मैं बगलामुखी कवच को तुमसे कहता हूँ, जिसे पढ़ने तथा धारण करने से मनुष्य त्रैलोक्य विजयी होता है।

प्रथम निम्न विनियोग को पढ़कर जल छोड़ें-

विनियोग

ॐ अस्य श्री बगलामुखी कवचस्य नारद ऋषिः, अनुष्टुप् छंदः, श्री बगलामुखी देवता, लं बीजम्, ईं शक्तिः, ऐं कीलकं पुरुषार्थचतुष्टय सिद्ध्यर्थं जपे विनियोगः।।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

शिरो मे बगला पातु हृदयमेकाक्षरी परा।
ॐ ह्लीं ॐ मे ललाटे च बगला वैरिनाशिनी॥ 1॥

भावार्थ-शिर की रक्षा बगला देवी करें, हृदय की एकाक्षरी ह्लीं रक्षा करें। ललाट की रक्षा त्र्यक्षरी वैरिनाशिनी बगलादेवी करें।

गदाहस्ता सदा पातु मुखं मे मोक्षदायिनी।
वैरि जिह्वाधरा पातु कण्ठं मे बगलामुखी॥ 2॥

भावार्थ-गदा हस्त है जिसके ऐसी मोक्षदायिनी मुख की रक्षा करें। बैरियों की जिह्वा को पकड़ने वाली कण्ठ की रक्षा बगलामुखी करें।

उदरं नाभिदेशं च पातु नित्यं परात्परा।
परात्परतरा पातु मम गुह्यं सुरेश्वरी॥ 3॥

भावार्थ-पेट की और नाभि की रक्षा तथा मेरे गुप्तांगों की रक्षा परात्परा देवी बगलामुखी सदा करें।

हस्तौ चैव तथा पादौ पार्वती परिपातु मे।
विवादे विषमे घोरे संग्रामे रिपुसंकटे॥ 4॥
पीताम्बराधरा पातु सर्वांगं शिवनर्तकी।
श्रीविद्या समयं पातु मातंगी पूरिता शिवा॥ 5॥

भावार्थ-हाथ-पैरों की रक्षा पार्वती, विवाद समय में कठिन स्थान में शत्रुसंकट होने पर, संग्राम में मेरे सभी अंगों की पीतवस्त्रधारी पीताम्बरा, शिवनर्तकी रक्षा करें। श्री विद्या समय पाकर पास से मेरी रक्षा करें। सभी की पूर्ति मातंगी और शिवा करें।

पातु पुत्र सुतांश्चैव कलत्रं कालिका मम।
पातु नित्यं भ्रातरं मे पितरं शूलिनी सदा॥ 6॥

भावार्थ-पुत्र तथा स्त्री की रक्षा कालिका देवी करें। नित्य भाई और पिता की रक्षा शूलिनी देवी करें।

रन्ध्रे हि बगला देव्याः कवचं मन्मुखोदितम्।
न वै देयम मुख्याय सर्वसिद्धि प्रदायकम्॥7॥

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

भावार्थ-हे भैरवी! मेरे मुख के द्वारा कहे इस बगला कवच को जो सर्वसिद्धि को देने वाला है, अनधिकारी को न बताएँ।

पठनाद्धारणादस्य पूजनाद्वाञ्छितं लभेत्।
इदं कवचमज्ञात्वा यो जपेद् बगलामुखीम्॥8॥
पिबन्ति शोणितं तस्य योगिन्यः प्राप्य सादराः।
वश्ये चाकर्षणे चैव मारणे मोहने तथा॥0॥
महाभये विपत्तौ च पठेद्वा पाठयेत्तु यः।
तस्य सर्वार्थ सिद्धिः स्याद्भक्तियुक्तस्य पार्वति॥ 10॥

भावार्थ-इस कवच को पढ़ने, धारण करने तथा पूजन करने से सर्व प्रकार का वाञ्छित फल प्राप्त होता है। जो इस कवच को जानकर नहीं जपता उसके रक्त को योगिनियाँ प्रसन्नता पूर्वक पान करती हैं। हे पार्वती! वश करने में, आकर्षण में, मारण, मोहन, महाभय तथा विपत्ति आने पर इस कवच को जो पढ़ता है, पढ़ाता है वह इस कवच की भक्ति सम्पूर्ण मनोरथ को प्राप्त करता है।

॥ इतिश्री रुद्रयामले बगलामुखी कवचं भाषाटीका सहितं सम्पूर्णम्॥

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

श्री ब्रह्मास्त्र बगला कवचम्

श्री ब्रह्मोवाच

विश्वेश दक्षिणामूर्ते निगमागमवित् प्रभो।
मह्यं परान्त्वया दत्ता विद्या ब्रह्मास्त्रसंज्ञिता।।1।।
तस्य मे कवचं ब्रूहि येनाहं सिद्धिमाप्नुयाम्।
भवामि वज्रकवच ब्रह्मास्त्रन्यासमात्रतः।।2।।

भावार्थ-श्री ब्रह्मा जी ने कहा— हे दक्षिणा मूर्ते! आप तो विश्व के ईश हैं और हे प्रभो! आप निगम और अगम के ज्ञाता हैं। पहले आपने मुझे ब्रह्मास्त्र संज्ञा वाली विद्या प्रदान की थी।।1।। उस विद्या के कवच को अब आप मुझे बतला दीजिए जिसके ज्ञान से सिद्धि को प्राप्त कर सकूँ। ब्रह्मास्त्र के न्यास मात्र से मैं वज्र कवच वाला हो जाऊँगा।।2।।

श्री दक्षिणामूर्तिरुवाच

शृणु ब्रह्मन् परं गुह्यं ब्रह्मास्त्रकवचं शुभम्।
यस्योच्चारणमात्रेण भवेद् वै सूर्यसन्निभः।।3।।
सुदर्शनं मया दत्तं कृपया विष्णवे तथा।
तद्वद् ब्रह्मास्त्रविद्यायाः कवचं कवयाम्यहम्।।4।।
अष्टाविंशत्यस्त्रहेतुमाद्यं ब्रह्मास्त्रामुत्तमम्।
सर्वतेजोमयं सर्व सामर्थ्य विग्रहं परम्।।5।।
सर्वशत्रुक्षयकरं सर्वदारिद्र्यनाशनम्।
सर्वापच्छलराशीनाममस्त्रकं कुलिशोपमम्।।6।।
न तस्य शत्रवश्चापि भयं चोर्य भयं जरा।
नरा नार्यश्च राजेन्द्र खगा व्याघ्रादयोऽपि।।7।।
तं दृष्टवा वशमायन्ति किमन्यत् साधवो जनाः।
यस्य देहे न्यसेद् धीमान् कवचं बगलामयम्।।8।।

भावार्थ-श्री दक्षिणा मूर्ति ने कहा-हे ब्रह्माजी! आप अब सावधान होकर परम गुप्त और अतीव शुभ ब्रह्मास्त्र कवच का श्रवण कीजिए। जिस कवच के

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

स्मरण मात्र से मनुष्य सूर्य के तुल्य हो जाया करता है।।3।। हमने कृपा करके भगवान विष्णु के लिए सुदर्शन महान तेजस्वी आयुध दे दिया था। ठीक उसी भांति आपके समक्ष मैं ब्रह्मास्त्र विद्या के कवच का वर्णन करता हूँ।।4।। यह ब्रह्मास्त्र अट्ठाईस अस्त्रों में सर्व शिरोमणि अस्त्र है और बहुत ही उत्तम है। यह सभी प्रकार तेजों से परिपूर्ण है और इसमें सब सामर्थ्य है तथा यह परम विग्रह है।।5।। यह समस्त शत्रुओं को क्षय को करने वाला है तथा सभी दरिद्रता का विनाशक है। सब आपदाओं के शैली के समूह के लिए वज्र के समान अस्त्र है।।6।। अन्य क्या कहा जाए। साधुजन भी इसको देख-देखकर ही वश में आ जाया करते हैं। इसके कोई भी शत्रु नहीं होते हैं और इसको न तो चोरों का भय होता है न ही बुढ़ापा ही आता है। नर-नारी हे राजेन्द्र! खग और व्याघ्र आदि हिंसक जन्तु भी इसका दर्शन करते ही वश में आ जाया करते हैं। जो श्रीमान इस बगलामय कवच का देह में न्यास किया करता है उसमें ऐसा ही प्रभाव हुआ करता है।।7-8।।

स एव पुरुषो लोके केवलः शंकरोपमः।
न देयं परशिष्याय शठाय पिशुनाय च।।0।।
दातव्यं भक्तियुक्ताय गुरुदासाय धीमते।
कवचस्य ऋषिः श्रीमान् दक्षिणामूर्तिरेव च।।10।।
अस्यानुष्टुप् छन्दः स्यात् श्रीबगला चास्य देवता।
बीजं श्रीवह्निजाया च शक्तिः श्रीबगलामुखी।।11।।
कीलकं विनियोगश्च स्वकार्ये सर्वसाधके।

भावार्थ-वह पुरुष लोक में केवल भगवान शंकर के समान हो जाता है। इस कवच की दीक्षा दूसरे के शिष्य को, शठ को और पिशुन को कभी नहीं देनी चाहिए।।0।। जो शक्ति से युक्त हो, गुरु का अनन्य भक्त हो और श्रीमान् हो उसी को इसकी दीक्षा देनी चाहिए। कवच का ऋषि श्रीमान् दक्षिण मूर्ति ही है।।10।। इसका छन्द अनुष्टुप है और इसका देवता श्री बगलामुखी देवी है। इसका बीज भी वह्नि जाया (स्वाहा) है तथा इसकी शक्ति श्री बगला मुखी है।।11।। इसका कीलक और विनियोग सबकी साधना करने वाले अपने कार्य में होता है।

अथ ध्यानम्

शुद्धस्वर्णनिभां रामां पीतेन्दुखण्डशेखराम्।
पीतागन्धानुलिप्ताङ्गीं पीतरत्नविभूषणाम्।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पीनोन्नतकुचां स्निग्धां पीतालाङ्गीं सुपेशलाम्।
त्रिलोचनां चतुर्हस्तां गम्भीरां मदविह्लाम्।
वज्रारिरसनापाशमुद्गरं दधतीं करैः।
महाव्याघ्रासनां देवीं सर्वदेवनमस्कृताम्।
प्रसन्नां सस्मितां क्लिन्नां सपीतां प्रमदोत्तमाम्।
सुभक्तदुःखहरणां दयार्द्रा दीनवत्सलाम्।
एवं ध्यात्वा परमेशानी बगलाकवचं स्मरेत्।

भावार्थ-विशुद्ध सुवर्ण के सदृश-रामा-पीत चन्द्र खण्ड की शेखर में धारण करने वाली-पीत वर्ण के गन्ध से लिप्त अंगों वाली पीने रत्नों के आभूषणों से समन्वित पीन (स्थूल) और उन्नत कुचों से भूषित-परम स्निग्ध, पीले अंगों वाली, सुपेशल अर्थात् परम कोमल, तीन नेत्रों वाली चार भुजाओं से संयुक्त, गम्भीर, मद से विह्वल-करों के द्वारा वज्र, शत्रु की जिह्वा, पाश और मुद्गर को धारण करती हुई महान व्याघ्र पर आसन रखने वाली सब देवों के द्वारा नमस्कृत, प्रसन्न सुंदर स्मित से संयुक्त, क्लिन्न, सुपीता प्रमदाओं में उत्तम अपने सुंदर भक्तों के दुःख, दोर्भाग्य के हरण करने में दया से आर्द्र, दोनों पर प्रेम करने वाली, देवी का ध्यान करके हे परमेशानि! फिर इस बगला के कवच का स्मरण करना चाहिए।

॥ इति ब्रह्मास्त्र बगला कवचम् ॥

श्री बगलामुखी शत्रु विनाशक कवचम्

श्रीदेव्युवाच

नमस्ते शम्भवे तुभ्यं नमस्ते शशिशेखर।
त्वत्प्रसादात्रच्छुतं सर्वमधुना कवचं वद्।।1।।

श्री शिव उवाच

शृणु देवि प्रवक्ष्यामि कवचं परमाद्भुतम्।
यस्य स्मरणमात्रेण रिपोः स्तम्भो भवेत् क्षणात्।।2।।
कवचस्य च देवेशि महामायाप्रभावतः।
पंक्तिः छन्दः समुद्दिष्टं देवता बगलामुखी।।3।।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

धमार्थकाममोक्षेषु विनियोगः प्रकीर्तितः।
ॐकारो मे शिरः पातु ह्लींकारो वदनेऽवतु।।4।।
बगलामुखी दोर्युगमं कण्ठे सर्व-सदाऽवतु।
दुष्टानां पातु हृदयं मुख ततः पदम्।।5।।
उदरे सर्वदा पातु स्तम्भयेति सदा मम।
जिह्वां कीलय मे मातर्बगला सर्वदाऽवतु।।6।।
बुद्धिं विनाशय पादौ तु ह्लीं ॐ मे दिग्विदिक्षु च।
स्वाहा मे सर्वदा पातु सर्वत्र सर्वसन्धिषु।।7।।

भावार्थ-श्री देवी ने कहा— हे भगवान् शम्भुदेव! आपकी सेवा में प्रणाम निवेदित है। हे शशि शेखर! आपके लिए मेरा नमस्कार है। आपकी कृपा से मैंने सभी कुछ का श्रवण किया था। अब आप इसका कवच कृपया बतलाइए।।1।।

भगवान् श्री शिव ने कहा— हे देवि! मैं परम अद्भुत कवच का वर्णन करूँगा, आप उसका श्रवण कीजिए। जिसके केवल श्रवण ही करने से महान् शक्तिशाली भगवान विष्णु का भी एक ही क्षण में स्तम्भन हो जाया करता है। साधारण प्राणी की तो बात ही क्या है।।2।। हे देवेशि! और यह आपके प्रभाव से इस कवच में ऐसी अद्भुत शक्ति है। इसका छंद पंक्ति बता दिया गया है और इसका देवता बगलामुखी है।।3।। इसका विनियोग धर्म, अर्थ काम और मोक्ष चारों वर्गों की प्राप्ति में करें। ओंकार मेरे सिर की रक्षा करें तथा ह्लीं कार मेरे बदन की सुरक्षा करें।।4।। बगलामुखी मेरी दोनों बाहुओं की रक्षा करें और सर्वदा कण्ठ परित्राण करे। दुष्टानां- यह पद मेरे हृदय को सुरक्षित करे। इसके अनन्तर वाचं पदं मुख ये तीनों पद सर्वदा मेरे उदर की रक्षा करें और स्तम्भय यह सर्वदा मेरा परित्राण करें। हे माता जिह्वां कीलय यह मेरी सर्वदा रक्षा करें।।5-6।। बुद्धिं विनाशय, यह मेरे दोनों पदों का त्राण करे और ह्लीं ॐ-यह मेरी दिशाओं तथा विदिशाओं में सुरक्षा करें। स्वाहा पद सर्वदा सब जगह मेरी समस्त सन्धियों में रक्षा करें।

इति ते कथितं देवि कवचं परमाद्भुतम्।
यस्य स्मरणमात्रेण सर्वस्तम्भो भवेत् क्षणात्।।8।।
यद् धृत्वा विविधा दैत्या वासवेन हताः पुरा।
यस्य प्रसादात् सिद्धोऽहं हरिः सत्वगुणान्वितः।।0।।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

वेधा सृष्टिं वितनुते कामः सर्वजगज्जयी।
लिखित्वा धारयेद् यस्तु कण्ठे वा दक्षिणे भुजे।। 10।।
षट्कर्मसिद्धिस्तस्याशु मम तुल्यो भवेद् ध्रुवम्।
अज्ञात्वा कवचं देवि तस्य मन्त्रो न सिध्यति।।11।।

भावार्थ-हे देवि! मैंने इस परम अद्भुत कवच का वर्णन आपके सामने कर दिया है। जिसके केवल स्मरण भर कर लेने से ही क्षण में सभी का स्तम्भन हो जाया करता है। इसका श्रवण तथा स्मरण करके पहले देवेन्द्र ने सभी दैत्यों का हनन कर दिया था। जिसके प्रसाद से मैं सब गुणों में समन्वित हरि सिद्ध हुआ हूँ।। 8-0।। इसके ही प्रभाव से ब्रह्मा सृष्टि की रचना करके उसे विस्तृत किया करते हैं और इसकी ही कृपा से कामदेव को सब पर विजय भी प्राप्त होती है। जो पुरुष इसको लिखकर कण्ठ में अथवा दाहिनी भुजा में बाँध ले।।10।। उसको षट् कर्मों की शीघ्र ही सिद्ध हो जाती है और शीघ्र ही मेरे तुल्य हो जाया करता है। मारण, मोहन, वशीकरण, उच्चाटन, स्तम्भन, विद्वेषण, षट्कर्म कहे जाते हैं। हे देवि! इसके कवच के बिना मन्त्र की सिद्धि नहीं होती है।।11।।

॥ इति श्रीबगलामुखी-शत्रु विनाशक कवच सम्पूर्ण॥

रक्षा कवचम्

बगला मे शिरः पातुः ललाटं ब्रह्मसंस्तुता।
बगला मे भ्रुवौ नित्यं कर्णयोः क्लेशहारिणी॥
त्रिनेत्रा चक्षुषी पातु स्तम्भिनी गण्डयोस्तथा।
मोहिनी नासिकां पातु श्री देवी बगलामुखी॥
ओष्ठायोर्दुर्धरा पातु सर्वदन्तेषु चञ्चला।
सिद्धान्नपूर्णा जिह्वायां जिह्वाग्रे शारदाम्बिके॥
अकल्मषा मुखे पातु चिबुके बगलामुखी।
धीरा मे कण्ठदेशे तु कण्ठाग्रे कालकर्षिणी॥
शुद्धस्वर्णनिभा पातु कण्ठमध्ये तथाऽम्बिका।
कण्ठमूले महाभोगा स्कन्धौ शत्रु विनाशिनी॥
भुजा मे पातु सततं बगला सुस्मिता परा।
बगला मे सदा पातु कर्पूरे कमलोद्भवा॥

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बगलाऽम्बा प्रकोष्ठौ तु मणिबन्धं महाबला।
बगला श्रीर्हस्ततोश्च कुरुकुल्ला कराङ्गुलिम्।।

भावार्थ-बगला मेरे सिर की सुरक्षा करें और ब्रह्मा के द्वारा स्तवन की हुई मेरे ललाट का त्राण करें। मेरी भौंहों की बगला तथा क्लेश हारिणी मेरे कानों की सुरक्षा करें। नेत्र वाली देवी चक्षुओं की रक्षा करें और स्तम्भिनी नित्य ही मेरे गण्डों का त्राण करें। मोहिनी श्रीदेवी बगलामुखी नासिका का परित्राण करें। दुर्धरा मेरे ओष्ठों की रक्षा करें तथा चञ्चला सब दाँतों की रक्षा करें। मेरी जिह्वा में सिद्धान्नपूर्ण रक्षा करे तथा जिह्वा के अग्रभाग में शारदा और अम्बिका परित्राण करें। मेरे मुख की सुरक्षा अकल्मषा करें। चिबुक की बगलामुखी सुरक्षा करें। मेरे कण्ठ देश में धीरा रक्षा करें और कालकर्षिणी कण्ठ के अग्रभाग में रक्षा करें। शुद्ध सुवर्ण के सदृश कण्ठ के मध्य में सुरक्षा करें तथा अम्बिका भी परित्राण करें। महाभोगा कण्ठ मूल में तथा शत्रु विनाशिनी दोनों स्कन्धों की रक्षा करें। मेरी दोनों भुजाओं की सुरक्षा परा सुस्मिता बगला निरन्तर करें। कमलोद्भवा बगला सदा मरे कर्पूरों की रक्षा करें। प्रकोष्ठों की रक्षा अम्बा बगला करें और महाबला मणिबन्ध का त्राण करें। बगला और श्री हाथों का त्राण करे एवं कुरुकुल्ला करों की रक्षा करें।

नखेषु वज्रहस्ता च हृदये ब्रह्मवादिनीं।
स्तनो मे मन्दगमना कुक्ष्योर्योगिनी तथा।।
उदरं बगला माता नाभिं ब्रह्मास्त्रदेवताः।
पुष्टिं मुद्गरहस्ता च पात नो देववन्दिता।।
पार्श्वयोर्हनुमद्वन्द्या पशुपाशविमोचनीं।
करौ रामप्रिया पातु उरुयुग्मं महेश्वरी।।
भगमाला तु गुह्यं मे लिङ्गं कामेश्वरी तथा।
लिङ्गमूले महाक्लिन्ना वृषणौ पातु दूतिका।।
बगला जानुनी पातु जानयुग्मं च नित्यशः।
जङ्घे पातु जगद्धात्री गुल्फौ रावणपूजिता।।
चरणो दुर्जया पातु पीताम्बरा चरणाङ्गलीः।
पादपृष्ठं पद्महस्ता पादाधश्चक्रधारिणी।।
सर्वाङ्गं बगला देवी पातु श्रीबगलामुखो।
ब्राह्मी मे पूर्वतः पातु माहेशी वह्निभागतः।।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कौमारी दक्षिणे पात वैष्णवी स्वर्गमार्गतः।
ऊर्ध्व पाशधरा पातु शत्रु जिह्वाधरा ह्यधः॥
रणे राजकुले वादे महायोगे महाभये।
बगला भैरवी पातु नित्यं क्लींकाररूपिणी॥
इत्येवं वज्रकवचं महाब्रह्मास्त्रसंज्ञकम्।
त्रिसन्ध्यं यः पठेद् धीमान् सर्वैश्वर्यमवाप्नुयात्॥
न तस्य शत्रवः केऽपि सखायः सर्व एव च।
बलेनाकृष्य शत्रुं स्यात् सोऽपि मिन्त्वामाप्नुयात्॥
शत्रुत्वे मरुता तुल्यो धनेन धनदोपमः।
रूपेण कामतुल्यः स्याद् आयुषा शूलधृक्समः॥
सनकादिसमो धैर्ये श्रिया विष्णुसमो भवेत्।
तत्तुल्यो विद्या ब्रह्मन् यो जपेत् कवचं नरः॥

भावार्थ-वज्र हस्ता नखों का त्राण करे तथा ब्रह्म-वादिनी हृदय की रक्षा करें। मन्द गमना मेरे स्तनों की सुरक्षा करे तथा योगिनी कुक्षियों का त्राण करे। बगला माता उदर का और ब्रह्मास्त्र देवता नाभि का परित्राण करे। देवों के द्वारा मन्दिता मुद्गर हाथों में धारण करने वाली हमारी पुष्टि की सुरक्षा करें। हनुमानजी के द्वारा वन्द्यमाना पशुपाश विमोचनी दोनों पार्श्वों का त्राण करें। रामप्रिया दोनों करों की रक्षा करें और महेश्वरी ऊरुओं के युग्म का त्राण करें। मेरे गुह्य को भगमाला सुरक्षित करें तथा लिंग की कामेश्वरी रक्षा करें। लिंग के मुख की महाक्लिन्ना रक्षा करें और दूतिका दोनों वृषणों की रक्षा करे। बगला देवी जानुओं की तथा जानुयुग्म की रक्षा करें। जगद्धात्री जंघाओं की और रावणपूजिता दोनों गुल्फों की सुरक्षा करें। पद्महस्ता पादों के पृष्ठ का और चक्रधारिणी पादों के नीचे के भाग का संरक्षण करें। श्रीबगलामुखी बगला देवी सर्वांग की सुरक्षा करे ब्राह्मी पूर्व दिशा में रक्षा करें आग्नेय में माहेशी रक्षा करें। कौमारी दक्षिण में रक्षा करें। वैष्णवी स्वर्ग मार्ग से रक्षा करें। उर्ध्व में पाशधरा रक्षा करें। अधोभाग में शत्रु की जिह्वा को धारण करने वाली रक्षा करें। रणक्षेत्र में, राजकुल, वाद में, महायोग में और महाभय में बगला भैरवी क्लींकार रूपिणी नित्य ही परित्राण करें।

इस प्रकार से इस ब्रह्मास्त्र संज्ञा वाले वज्र कवच का जो धीमान् पुरुष तीनों संध्या कालों में नित्य नियम से पाठ किया करता है वह सभी प्रकार के ऐश्वर्य को प्राप्त कर लिया करता है। उसके कोई भी शत्रु समुत्पन्न नहीं होते हैं और सभी

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

उसके सखा ही होते हैं। वह शत्रु को भी बल से आकर्षित कर लेता है और वह शत्रु भी मित्र भाव को प्राप्त हो जाया करता है। इसका पाठ करने वाला शत्रुता में मरुत के तुल्य होता है और धन के द्वारा कुबेर के तुल्य होता है। रूप सौंदर्य में कामदेव के समान और आयु से शूलधृक् के दृश्य हो जाता है। धैर्य में सनकादि के समान हो जाता है और बुद्धि से भगवान विष्णु के तुल्य हो जाया करता है। हे ब्रह्माजी! विद्या से भी उसी के सदृश हो जाया करता है जो मनुष्य इस कवच का जप किया करता है।

नारी वाऽपी प्रयत्नेन वाञ्छितार्थमवाप्नुयात्।
द्वितीया सूर्यवारेण यदा भवति पद्मभूः॥
तस्यां जातं शतावृत्या शीघ्रं प्रत्यक्षमाप्नुयात्।
याता तरीयं संध्यातां भू शय्यायां प्रयत्नतः॥
सर्वान् शत्रून् क्षयं कृत्वा विजयं प्राप्नुयात् नरः।
दारिद्रयान् मुच्यते चाऽऽशुस्थिरा लक्ष्मीर्भवेद् गृहे॥
सर्वान् कामानवाप्नोति सविषो निंबिषो भवेत्।
ऋणं निर्मोचनं स्याद् वै सहस्त्रावर्तनाद् विधेः॥
भूतप्रेतपिशाचादिपीडा तस्य न जायते।
द्युर्मणिर्भ्राजते यद्वत् तद्वत् स्याच्छ्रीप्रभावतः॥
स्थिराभ्या भवेत् तस्य यः स्मरेद् बगलामुखीम्।
जयदं बोधदं देवि कामधुक् देहि मे शिवे॥
जपस्यान्ते स्मरेद् यो वै सोऽभीष्टफलमाप्नुयात्।
इदं कवचमज्ञात्वा यो जपेद् बगलामुखीम्॥
न स सिद्धिमवाप्नोति साक्षाद् वै लोकपूजितः।
तस्मात् सर्वप्रयत्नेन कवचं बह्मतेजसम्॥
नित्यं पदाम्बुजध्यानात महेशानसमो भवेत्।

भावार्थ-अथवा नारी हो वह भी इसके पाठ करने से अपने मनोवांछित अर्थ की प्राप्ति कर लिया करती है। द्वितीया सूर्य वार जब पद्मभू होती है उसमें उत्पन्न सौ आवृत्ति से शीघ्र ही प्रत्यक्ष को प्राप्त होती है। संख्या में तुरीय को गई हुई प्रयत्न से भूशायी रहकर समस्त शत्रुओं का क्षय करके नर विजय का लाभ किया करता है और शीघ्र ही दरिद्रता से मुक्त हो जाया करता है और फिर लक्ष्मी घर में सुस्थिर हो जाती है। सभी कामनाओं को प्राप्त करता है तथा विष से युक्त भी निर्विष हो

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जाता है। हे ब्रह्मन्! एक सहस्त्र आवृत्ति के करने से ऋण से छुटकारा प्राप्त होता है। उसकी फिर भूत-प्रेत और पिशाच आदि की पीड़ा निश्चय ही कभी नहीं होती है। श्री के प्रभाव से जिस प्रकार भगवान भास्कर चमका करते हैं वह भी वैसे ही दीप्तिमान् हो जाता है। जो बगलामुखी का स्मरण किया करता है उसको वह स्थिराभया होती है। यह कहना चाहिए कि हे शिवे! जय देने वाला और मुझे अमुक कामना का प्रदान करो। जाप के अंत में जो बगलामुखी का स्मरण किया करता है वह निश्चय अपना अभीष्ट फल प्राप्त कर लेता है। इस कवच का ज्ञान न प्राप्त करके जो भी बगलामुखी के मंत्र का जप करता है, वह कभी भी सिद्धि की प्राप्ति नहीं किया करता है। चाहे वह साक्षात् लोक द्वारा पूजित क्यों न हो। उस कारण से सब प्रकार के प्रयत्न से इस ब्रह्म तेज वाले कवच का पाठ अवश्य ही करना चाहिए। नित्य प्रति पदाम्बुजों के ध्यान से मनुष्य शिव के ही समान हो जाया करता है।

॥ इति श्रीदक्षिणामूर्तिसंहितायां रक्षा-कवचम् समाप्तम् ॥

श्री बगलामुखी प्रत्यंगिरा कवचम्

श्री शिव उवाच

आधुनाहं प्रवक्ष्यामि बगलायाः सुदुर्लभम्।
यस्य पठेन मात्रेण पवनोपि स्थिरायते॥
प्रत्यङ्गिरां तां देवेशि श्रृणुष्व कमलानने।
यस्या मरण मात्रेण शत्रवो विलयं गताः॥

भावार्थ-श्री भगवान शिव ने कहा-- इस समय में श्री बगला देवी के परम दुर्लभ कवच के विषय में बतलाऊँगा। जो ऐसा युगल स्तम्भन वाला है कि इस कवच के केवल स्मरण से ही वायु भी स्थिर हो जाया करता है जो कि निरंतर अबाध गति से वहन करने वाला है, फिर अन्य की तो बात ही क्या है। हे देवि! आपका मुख तो कमल के समान परम सुंदर है। अब आप उस सत्यंगिरा के विषय में श्रवण कीजिए। जिसके केवल स्मरण भर से ही समस्त शत्रुगण विलय को प्राप्त होते हैं।

श्री देव्युवाच

नेहोऽस्ति यदि मे. नाथ संसारार्णवतारक।
तथा कथय मां शम्भे बगलाप्रत्यङ्गिरां मम॥

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

भावार्थ-श्री देवी ने कहा— हे नाथ! आप तो इस संसार रूपी घोर महासागर से तारण करने वाले देवेश्वर प्रभु हैं। यदि आपका मेरे ऊपर प्रगाढ़ स्नेह है तो कृपा करके हे शम्भो! उस प्रत्यंगिरा बगला को मुझे बतलाइए।

श्री भैरव उवाच

य यं प्रार्थयते मन्त्री हठात्तत्समाप्नुयात्।
विद्वेषणाकर्षणे चैव स्तम्भनं वैरिणां विभो॥
उच्चाटनं मारणं चैव येन कर्तुं क्षमो भवेत्।
तत्सर्वं ब्रूहि मे देव यदि मां दयसे हर॥

भावार्थ-श्री भैरवदेव ने कहा—भैरव ने भी भगवान शंकर से विनम्रता पूर्वक प्रत्यङ्गिरा बगला के विषय में ज्ञान प्राप्त करने का अनुरोध किया था— हे हर! मंत्र का जप करने वाला पुरुष जिस पदार्थ को प्राप्त करने की याचना किया करता है उसी-उसी की प्राप्ति कर लिया करता है। हे विभो! विद्वेषण, आकर्षण, वैरियों का स्तम्भन, उच्चाटन, मारण से सभी षटकर्म जिसके द्वारा करने के लिए समर्थ हो जाता है। हे देव! वह सम्पूर्ण आप मेरे समक्ष कहिए। यदि आप मेरे ऊपर अनुकम्पा करते हैं।

श्री सदाशिव उवाच

अधुना हि महादेवि परानिष्ठा मतिर्भवेत्।
अतएव हि महेशानि किंचिन्नवक्तुमर्हसि।

भावार्थ-भगवान श्री सदाशिव प्रभु ने कहा-हे महादेवी! निश्चय ही इस समय में परमाधिक निष्ठा वाली बुद्धि होनी चाहिए। हे महेशानि! इसलिए आप कुछ भी कहने के योग्य नहीं होती हैं।

श्री पार्वत्युवाच

जिघान्सन्तं जिघान्सीयान्न तेन ब्रह्महा भवेत्।
श्रुति रेषाहिगिरिशकथं मांत्वं निन्दसि॥

भावार्थ-श्री पार्वती जी ने कहा— जो प्राणघात करने वाला अपने खप्पर से प्रहार करता हुआ आ रहा है उसको मार ही देना चाहिए। क्योंकि प्राण रक्षा सबसे बड़ा धर्म होता है। इस प्रकार की स्थिति में मार देने से भी कभी ब्रह्महत्या नहीं होती। हे गिरीश! ऐसी निश्चय ही श्रुति है। फिर आप मेरी किस तरह से विशेष

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

निंदा कर रहे हैं ? क्योंकि मेरी निंदा का कोई भी ऐसा उचित कारण नहीं दिखाई देता है।

श्री शिव उवाच

साधु साधु प्रवक्ष्यामि शृणुष्वावहितानघे।
प्रत्यङ्गिरां बगलायाः सर्वशत्रुनिवारिणीम्॥
नाशिनीं सर्वदुष्टानां सर्वपापौघ हारिणीम्।
सर्वप्राणिहितां चैव सर्व दुःखविनाशिनीम्॥
भोगदां मोक्षदां चैव राज्यसौभाग्य दायिनीम्।
मन्त्रदोषप्रमोचनीं ग्रहदोषनिवारिणीम्॥

भावार्थ- भगवान श्री शिव ने कहा-- बहुत अच्छा, बहुत ही ठीक है। हे अनघे! अर्थात् पाप रहित! मैं अब आपके सामने कहूँगा। आप बहुत ही सावधान होकर श्रवण कीजिए। बगला श्री प्रत्यङ्गिरा देवी सब शत्रुओं के निवारण करने वाली है। यह समस्त दुष्टों का विनाश कर देने वाली है और सब प्रकार के पापों के समूह का हरण करने वाली है। यह देवी सभी प्राणियों के हित करने वाली है और सभी दुःखों का हनन किया करती है। यह भोगों को प्रदान करती है। सुखोपभोग देने के पश्चात् मोक्ष भी देती है। यह देवी राज्य और सौभाग्य को भी प्रदान करती है। मंत्रों में जो भी दोष हों, जिनसे हानि होती हो उसका प्रमोचन करने वाली है तथा भौम, शनि आदि के ग्रहों द्वारा प्राप्त होने वाले दोषों (कष्टों तथा हानियों) का निवारण किया करती है।

विनियोग

ॐ अस्य श्री बगला-प्रत्यङ्गिरा-मन्त्रस्य नारदो ऋषिः,त्रिष्टुप् छन्दः, प्रत्यंगिरा देवता, ह्लीं बीजम्, हुं शक्तिः, ह्लीं कीलकं, ह्लीं ह्लीं ह्लीं प्रत्यङ्गिरा मम शत्रु-विनाशे विनियोगः।

भावार्थ-इस बगला प्रत्यङ्गिरा मन्त्र का नारद ऋषि है, त्रिष्टुप् छन्द है, प्रत्यङ्गिरा देवता है, ह्लीं बीज है, हुं ़क्ति है, ह्लीं कलक है, ह्लीं ह्लीं ह्लीं प्रत्यङ्गिरा मेरे शत्रुओं के विनाश में इसका विनियोग है।

मंत्र

ॐ प्रत्यङ्गिरायै नमः प्रत्यङ्गिरे सकल-कामान् साधय मम रक्षां कुरु कुरु सर्वान् शत्रून् खादय खादय मारय मारय घातय घातय ॐ ह्लीं फट् स्वाहा।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

भावार्थ-मंत्र—ॐ प्रत्यङ्गिरायै नमः (प्रत्यङ्गिरा के लिए नमस्कार है।) प्रत्यङ्गिरे! सकल कामान् साधय (सब-कार्यों का सिद्ध करो) मम रक्षा कुरु कुरु (मेरी रक्षा करो, करो) सर्वान् शत्रून् खादय खादय (सब शत्रुओं का भक्षण करो, खा जाओ) मारय-मारय, घातय-घातय (मार दो, मार डालो-घात करो-घात कर दो) ॐ ह्रीं फट् स्वाहा।

ॐ भ्रामरी, स्तम्भिनी देवी, क्षोभिणी, मोहनी, संहारिणी, द्राविणि जृम्भिणी और रौद्ररूपिणी— इन आठों शक्तियों को हे देवी! मेरे शत्रु के पक्ष में नियोजित करके कण्ठ देश में धारण करना चाहिए। यह सब शत्रुओं के विनाश कर देने वाली है।

ॐ ह्रीं भ्रामरी सर्व शत्रून् भ्रामय ॐ ह्रीं स्वाहा।
ॐ ह्रीं स्तम्भिनि मम शत्रून् स्तम्भय ॐ ह्रीं स्वाहा।
ॐ ह्रीं क्षोभिणि मम शत्रून् क्षोभय क्षोभय ॐ ह्रीं स्वाहा।
ॐ ह्रीं मोहिनि मम शत्रून् मोहय मोहय ॐ ह्रीं स्वाहा।
ॐ ह्रीं संहारिणि मम शत्रून् संहारय संहारय ॐ ह्रीं स्वाहा।
ॐ ह्रीं द्राविणि मम शत्रून् द्रावय द्रावय ॐ ह्रीं स्वाहा।
ॐ ह्रीं जृम्भिणि मम शत्रून् जृम्भय जृम्भय ॐ ह्रीं स्वाहा।
ॐ ह्रीं रौद्रि मम शत्रून सन्तापय सन्तापय ॐ ह्रीं स्वाहा।

भावार्थ-1. ॐ ह्रीं भ्रामरि! सब शत्रुओं को भ्रमित करो, भ्रमित कर दो। ॐ ह्रीं स्वाहा। 2. ॐ स्तम्भिनि! मेरे शत्रुओं को स्तम्भित कर दो, स्तम्भन करो ॐ ह्रीं स्वाहा। 3. ह्रीं क्षोभिणि! मेरे शत्रुओं को क्षोभित करो, क्षोभ युक्त बना दो। ॐ ह्रीं स्वाहा। 4. ॐ ह्रीं मोहिनि! मेरे शत्रुओं को मोहित करो, मोहन-मुग्ध कर दो। ॐ ह्रीं स्वाहा। 5. ॐ ह्रीं संहारिणी! मेरे शत्रुओं का संहार करो, संहार कर दो, ॐ ह्रीं स्वाहा। 6. ॐ ह्रीं द्राविणी! मेरे शत्रुओं का द्रावण करो, द्रावण कर दो, ॐ ह्रीं स्वाहा। 7. ॐ ह्रीं जृम्भिणी में शत्रुओं को संतप्त कर दो, संताप युक्त कर दो। ॐ ह्रीं स्वाहा।

इयं विद्या महाविद्या सर्वशत्रु निवारिणी।
धारिता साधकेन्द्रेण सर्वान् दुष्टान् विनाशयेत्।।
त्रिसंध्यमेकर्मध्यं वाथ पठेत्स्थिर-मानसः।
न तस्य दुर्लभं लोके कल्पवृक्ष इव स्थितः।।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

यं यं स्पृशति सितेन यं यं पश्यति चक्षुषा।
स एव दातां याति सारान्सारामिमं मनुम्॥

भावार्थ-यह एक महाविद्या है। जो सभी शत्रुओं का निवारण कर देने वाली है। उत्तम साधक के द्वारा धारण की हुई यह विद्या समस्त दुष्टों का विनाश किया करती है। तीनों प्रातः, मध्याह्न सायंकाल में अथवा किसी एक ही संध्याकाल में जो मन को सुस्थिर करके इसका पाठ किया करता है उसको लोक में कुछ भी दुर्लभ वस्तु नहीं है। अर्थात् वह जो कुछ इच्छा करता है वही उसको प्राप्त हो जाता है। यह तो उसके लिए कल्प वृक्ष के समान स्थिर रहता है। कल्प वृक्ष का ऐसा प्रभाव हुआ करता है उसके सामने प्राप्त होकर जो भी मन से इच्छा होती है वही उसे तुरंत प्राप्त हो जाया करता है। इसका साधक पुरुष जिस-जिसका हाथ से स्पर्श करता है और जिस-जिसको नेत्र से देख लेता है वह स्वयं दासता को प्राप्त हो जाया करता है। यह मन्त्र समस्त सारों का भी सार है।

॥ इति श्री रुद्रयामले शिव पार्वती सम्वाद बगला प्रत्यङ्गिरा कवचम् समाप्तम् ॥

त्रैलोक्यविजय कवचम्

श्री भैरव उवाच

श्रृणु देवि प्रवक्ष्यामि स्व रहस्यं च कामदम्।
श्रुत्वा गोप्यं गुप्ततमं कुरु गुप्तं सुरेश्वरि।।1।।
कवचं बगलामुख्याः सकलेष्टप्रदं कलौ।
तत्सर्वस्वं परं गुह्या गुप्तं च शरजन्मना।।2।।
त्रैलोक्यविजयं नाम कवचेशं मनोरमम्।
मन्त्रगर्भं ब्रह्ममयं सर्वविद्या विनायकम्।।3।।
रहस्यं परमं ज्ञेयं साक्षादमृतरूपकम्।
ब्रह्मविद्यामयं वर्म दुर्लभं प्राणिनां कलौ।।4।।
पूर्णमेकोनापञ्चाशद्वर्णैरुक्त महेश्वरि।
त्वद्भक्त्या वच्मि देवेशि गोपनीयं स्वयोनिवत्।।5।।

श्रीदेव्युवाच

भगवन् करुणासार विश्वनाथ सुरेश्वर।
कर्मणा मनसा वाचा न वदामि कदाचन्।।1।।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

श्री भैरव उवाच

त्रैलोक्य विजयाख्यस्य कवचास्यास्य पार्वति।
मनुगर्भस्य गुप्तस्य ऋषिर्देवोऽस्य भैरवः।।1।।
उष्णिक्छन्दः समाख्यातं देवी श्रीबगलामुखी।
बीजं ह्लीं ॐ शक्तिः स्यात् स्वाहा कीलक मुच्यते।।2।।
विनियोगः समाख्यातः त्रिवर्गफलप्राप्तये।
देवि त्वं पठ वर्मैतन्तमन्त्रगर्भं सुरेश्वरि।।3।।
बिनाध्यानं कुतः सिद्धिः सत्यमेतच्च पार्वति।
चन्द्रोद्भासितमूर्धजां रिपुरसां मुण्डाक्ष मालाकराम्।।4।।
बालांसत्म्रकचञ्चलां मधुमदां रक्तां जटाजूटिनीम्।
शत्रुस्तम्भनकारिणी शशिमुखीं पीताम्बरोद्भासिनीम्।।5।।
प्रेतस्थां बगलामुखीं भगवतीं कारुण्यरूपां भजे।
ॐ ह्लीं मम शिरः पातु देवी श्रीबगलामुखी।।6।।

ॐ ऐं क्लीं पातु मे भालं देवी स्तम्भनकारिणी।
ॐ अं इं हं भ्रुवौ पातु बगला क्लेशहारिणी।।7।।

ॐ हं पातु मे नेत्रे नारसिंही शुभङ्करी।
ॐ ह्लीं श्रीं पातु मे गण्डौ अं आं इं भुवनेश्वरी।।8।।

ॐ ऐं क्लीं सौः श्रुतौ पातु इं ईं ऊं च परमेश्वरी।
ॐ ह्लीं ह्लूं ह्लीं सदाव्यान्मे नासां ह्लीं सरस्वती।।0।।

ॐ ह्रां ह्रीं मे मुखं पातु लीं एं ऐं छिन्नमस्तिका।
ॐ श्रीं वं मेऽधरौ पातु ओं औं दक्षिणकालिका।।10।।

ॐ क्लीं श्रीं शिरसः पातु कं खं गं घं च सारिका।
ॐ ह्रीं ह्रूं भैरवी पातु ङं अं अः त्रिपुरेश्वरि।।11।।

ॐ ऐं सौं मे हनुं पातु चं छं जं च मनोन्मनी।
ॐ श्रीं श्रीं मे गलं पातु झं ञं टं ठं गणेश्वरी।।12।।

ॐ स्कन्धौ मेऽव्याद् डं ढं णं हूं हूं चैव तु तोतला।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ॐ ह्रीं श्रीं मे भुजौ पातु तं थं दं वरवर्णिनी।।13।।

ॐ ऐं क्लीं सौः स्तनौ पातु धं नं पं परमेश्वरी।
ॐ क्रों क्रों मे रक्षयेद् वक्षः फं बं भं भगवासिनी।।14।।

ॐ ह्रीं रां पातु कुक्षिं मे मं यं रं वह्नि वल्लभा।
ॐ श्रीं ह्रूं पातु मे पार्श्वौ लं बं लम्बोदर प्रसूः।।15।।

ॐ श्रीं ह्रीं ह्रूं पातु मे नाभिं शं षं षण्मुखपालिनी।
ॐ ऐं सौः पातु मे पृष्ठं सं हं हाटकारूपिणी।।16।।

ॐ क्लीं ऐं कटिं पातु पञ्चाशद्वर्णमालिका।
ॐ ऐं क्लीं पातु मे गुह्यं अं आं के गुह्यकेश्वरी।।17।।

ॐ श्रीं ऊं ॠ सदाव्यान्मे इं ईं खं खां स्वरूपिणी।
ॐ जुं सः पातु मे जंघे रुं रूं धं अघहारिणी।।18।।

ॐ श्रीं ह्रीं पातु मे जानू उं ऊं णं गणवल्लभा।
ॐ श्रीं सः पातु मे गुल्फौ लिं लीं ऊं चं च चण्डिका।।10।।

ॐ ऐं ह्रीं पातु में वाणी एं ऐं छं जं जगत्प्रिया।
ॐ श्रीं क्लीं पातु पादौ मे झं ञं टं ठं भगोदरी।।20।।

ॐ ह्रीं सर्वं वपुः पातु अं अः त्रिपुरमालिनी।
ॐ ह्रीं पूर्वे सदाव्यान्मे झं झां डं ढं शिखामुखी।।21।।

ॐ सौः याम्यं सदाव्यान्मे इं ईं णं तं च तारिणी।
ॐ वारुण्यां च वाराही ऊं थं दं धं च कम्पिला।।22।।

ॐ श्री मां पातु चैशान्यां पातु ॐ नं जनेश्वरी।
ॐ श्रीं मां चाग्नेयां पातु ॠ भं मं धं च योगिनी।।23।।

ॐ एं मां पातु नैर्ऋत्यां लृं लं राजेश्वरी तथा।
ॐ श्री पातु वायव्यां लृं लं वीतकेशिनी।
ॐ प्रभाते च मां पातु लीं लं वागीश्वरी सदा।।24।।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ॐ मध्याह्ने च मां पातु ऐं क्षं शंकरवल्लभा।
श्री ह्रीं निशादौ मां पातु ॐ सं सागरवासिनी।
क्लीं निशीथे च मां पातु ॐ हं हरिहरेश्वरी।।26।।

क्लीं ब्राह्मे मुहूर्तेऽव्याद लं लां त्रिपुरसुन्दरी।
विसर्गा तु यत्स्थानं वर्जितं कवचेन तु।।27।

क्लीं तन्मे सकलं पातु अं क्षं ह्लीं बगलामुखी।
इतीदं कवचं दिव्यं मन्त्राक्षरमयं परम्।।28।।

त्रैलोक्यविजयं नाम सर्ववर्णमयं स्मृतम्।
अप्रकाश्यं सदा देवि श्रोतव्यं च वाचिकम्।।20।।

दुर्जनायाकुलीनाय दीक्षाहीनाय पार्वति।
न दातव्यं न दातव्यमित्याज्ञा पारमेश्वरी।।30।।

दीक्षाकार्य विहीनाय शक्तिभक्ति विरोधिने।
कवचस्यास्य पठनात् साधको दीक्षितो भवेत्।।31।।

कवचेशमिदं गोप्यं सिद्धविद्यामयं परम्।
ब्रह्मविद्यामयं गोप्यं यथेष्टफलदं शिवे।।32।।

न कास्य कथितं चैतद् त्रैलोक्य विजयेश्वरम्।
अस्य स्मरणमात्रेण देवी सद्यो वशी भवेत्।।33।।

पठनाद् धारणादस्य कवचेशस्य साधकः।
कलौ विचरते वीरो यथा श्रीबगलामुखी।।34।।

इदं वर्म स्मरन् मन्त्री संग्रामे प्रविशेद् यदा।
युयुत्सुः पठन् कवचं साधको विजयी भवेत्।।35।।

शत्रुं कालसमानं तु जित्वा स्वगृहमेति सः।
मूर्ध्नि धृत्वा यः कवचं मन्त्रगर्भं सुसाधकः।।36।।

ब्रह्माद्यमरान् सर्वान् सहसा वशमानयेत्।
धृत्वा गले तु कवचं साधकस्य महेश्वरि।।37।।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

वशमायान्ति सहसा रम्भाद्यप्सरसां गणाः।
उत्पातेषु घोरेषु भयेषु विविधेषु च।।38।।

रोगेषु च कवचेशं मन्त्रगर्भं पठेन्नरः।
कर्मणा मनसा वाचा तद् भयं शांतिमेष्यति।।30।।

श्रीदेव्या बगलामुख्याः कवचेशं मयोदितम्।
त्रैलोक्यविजयं नाम पुत्रपौत्र धनप्रदम्।।40।।

ऋणं च हरते सम्यक लक्ष्मीर्भोगविवर्धिनी।
बन्ध्या जनयते कुक्षौ पुत्ररत्नं न चान्यथा।।41।।

मृत्वत्सा च विभृयात् कवचं च गले सदा।
दीर्घायुर्व्याधिहीनश्च्व तत्पुत्रो वर्धतेऽनिशम्।।42।।

इतीदं बगलामुख्याः कवचेशं सुर्दुभम्।
त्रैलोक्यविजयं नाम न देयं यस्यकस्यचित्।।43।।

अकुलीनाय मूढाय भक्तिहीनायदम्भिने।
लोभयुक्ताय देवेशि न दातव्यं कदाचन्।।44।।

लोभदम्भविहीनाय कवचेशं प्रदीयताम्।
अभक्तेभ्यो अपुत्रेभ्यो दत्वा कुष्ठी भवेन्नरः।।45।।

रवौ रात्रौ च सुस्नातः पूजागृहगतः सुधीः।
दीपमुज्वाल्य मूलेन पठेद्वर्मेदमुत्तमम्।।46।।

प्राप्तौ सत्यां त्रिरात्रौ हि राजा तद्गृहमेष्यति।
मण्डलेशो महेशानि देवि सत्यं न संशय।।47।।

इदं तु कवचेशं तु मया प्रोक्तं नगात्मजे।
गोप्यं गुह्यतरं देवि गोपनीयं स्वयोनिवत्।।48।।

।।इति विश्वयामले बगलामुख्यास्त्रैलोक्यविजयं कवचं समाप्तम्।।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बगलोपासनविधिः

- बगलोपासनविधिः
- श्री बगलामालामंत्र
- चौबीस मुद्राएँ (सचित्र)
- श्री पीताम्बरा-बगलामुखी-
  खड्गमालामन्त्रः
- वेदोक्तं श्रीबगला-रहस्यम्
- मारण-प्रयोग
- बगला दीप-दान विधि
- मेरु-तन्त्रोक्त-विधान
- हवन-प्रक्रिया

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

9

बगलोपासनविधिः

अथातः सम्प्रवक्ष्यामि स्तम्भिनीं बगलामुखीम्।
तारं मायां समुच्चार्य्य वदेच्च बगलामुखि॥ 1॥

तदग्रे सर्वदुष्टानां ततो वाचं मुखं पदम्।
स्तम्भयेति पदं जिह्वां कीलयेति ततः परम्॥ 2॥

बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा वेदाऽग्निवर्णकः।
नारायणो मुनिस्त्रिष्टुप्छन्दश्च बगलामुखी॥ 3॥

देवीबीजं तु हृल्लेखा स्वाहा शक्तिः समीरिता।
विनियोगोऽस्य विख्यातः पुरुषार्थचतुष्टये॥ 4॥

हृल्लेखा हृदयं प्रोक्तं शिरश्च बगलामुखी।
शिखा तु सर्वदुष्टानां ततो वाचं मुखं पदम्॥ 5॥

स्तम्भयेति च वर्मोक्तं जिह्वां कीलय नेत्रकम्।
बुद्धिं विनाशयाऽस्त्रं स्यात् षडङ्गन्यास ईरितः॥ 6॥

मूर्ध्नि भाले भ्रुवोर्मध्ये नेत्रयोः श्रोत्रयोर्नसोः।
गण्डद्वये तथा चोष्ठेऽधरास्य-चिबुकेषु च॥ 7॥

गले च दक्षदोर्मूले तन्मध्ये मणिबन्धके।
अंगुलीनां तथा मूले हस्ताग्रे चैवमेव हि॥ 8॥

न्यसेद् वामभुजादौ च दक्षोरुमूलके ततः।
दक्षजानुनि गुल्फे चांगुलिमूले पदाग्रतः॥ 0॥

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गम्भीरा च मदोन्मत्तां तप्तकाञ्चनसन्निभाम्।
चतुर्भुजां त्रिनयनां कमलासन-संस्थिताम्॥ 10॥

मुद्गरं दक्षिणे पाशं वामे जिह्वां च वज्रकम्।
पीताम्बरधरां सान्द्र-वृत्तपीन-पयोधराम्॥ 11॥

हेमकुण्डलभूषां च पीतचन्द्रार्धशेखराम्।
पीतभूषणभूषां च स्वर्णसिंहासनस्थिताम्॥ 12॥

एवं ध्यात्वा च देवेशीं शत्रुस्तम्भनकारिणीम्।
भूप्रदेशे मनोरम्ये पुष्पामोदसुधूपिते॥ 13॥

गोमयेनाथ संलिप्ते मण्डले त्वासनं चरेत्।
सौवर्णे वाऽथ रौप्ये वा पैत्तले वाऽपि भूर्जके॥ 14॥

कर्पूरा-ऽगरु-कस्तूरी-श्रीखण्ड कुङ् कुमैरपि।
लिखेद् यन्त्रं प्रयत्नेन लेखन्या हेमतारयोः॥ 15॥

मध्ये योनिं समालिख्य तद् बाह्ये तु षडस्त्रकम्।
तद् बाह्येऽष्टदलं पद्मं तद् बाह्ये षोडशम्।
चतुरस्त्रत्रयं बाह्ये चतुर्द्वारोपशोभितम्॥ 16॥

यत्र नोक्तं देवतायाः पीठं वा पीठशक्तयः।
तत्र मयोदितं पीठं ज्ञेयास्ता एव शक्तयः॥ 17॥

तद् बीजेन यजेत् पीठं यद्वा मायाणुनाऽथ वा।
तत्राऽऽबाह्य यजेद् देवीं सुपीतैरुपचारकैः॥ 18॥

यजेदङ्गानि षट्कोणे पूर्वद्वारादिषु क्रमात्।
गणेशं बटुकं चाऽपि योगिनीः क्षेत्रपालकम्॥ 10॥

ईशानादि-निर्ऋत्यन्तं गुरुपङ्क्तिं समर्चयेत्।
बगलां पूर्वपत्रे तु स्तम्भिनीं च ततः परम्॥ 20॥

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जृम्भिनीं मोहिनीं चैव प्रगल्भामचलां जयाम्।
दुर्धर्षा-कल्मषा-धीरा-कल्याणकालकर्षिणीः।
भ्रामिकां मन्दगमनां भोग्याख्यां चैव योगिकाम्॥ 21॥

एताः षोडशपत्रेषु गन्ध-पुष्पा-ऽक्षतैर्यजेत्।
षोडशस्वरसंयुक्ताः सम्प्रदायात् कुलागमे॥ 22॥

यजेत्तु यत्रमध्येषु कल्पिते चाऽष्टपत्रके।
पूर्वाद् ब्राह्म्यादिका अष्टौ वाहनायुधसंयुताः॥ 23॥

लोकेशांश्च वस्त्राणि पूजयेद् बाह्यतस्तथा।
योनिमध्ये मूलदेवीं त्रिरञ्जलिभिरर्चयेत्॥ 24॥

धूप-दीप-सुनैवेद्यै-गन्ध-ताम्बूल-दीपकैः।
नीराज्यं विधिवत् पश्चाद्यथासंसयं निवेदयेत्॥ 25॥

पवित्रारोपणं कार्यं दमनेन तु पूजयेत्।
देयं चापि सितान्नेन प्रत्यहं बलिपञ्चकम्॥ 26॥

हरिद्राग्रन्थिजा माला पीताम्बरधरः स्वयम्।
पीतासनः स्मरेत् पीतं पीताम्बरधरः स्वयम्॥ 27॥

दशांशेन कृते होमे पीतद्रव्यैः प्रतर्पयेत्।
सर्वपीतोपचारेण मन्त्रः सिद्ध्यति मन्त्रिणा॥ 28॥

साध्यसंज्ञां समुच्चार्य स्तम्भयेति ततः परम्।
गतिस्तम्भकरी विद्या अरिस्तम्भनकारिणी॥ 20॥

मेधां प्रज्ञां च शास्त्रादीन् देव-दानव-पन्नगान्।
स्तम्भयेच्च महाविद्या सत्यं सत्यं न संशयः।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

श्री बगलामालामंत्र

सभी प्रकार की बाधाओं से मुक्ति प्राप्ति के लिए माँ बगला के माला मंत्र का पाठ व जाप किया जाता है। सभी प्रकार के दोषों के निग्रहार्थ इस माला मंत्र का पाठ रामबाण है। साधकों से अनुरोध है कि किसी भी शुभ मुहूर्त में इस माला के 108 जाप कर लें। फिर देखिए! कितना सुखद परिणाम आपको प्राप्त होगा।

ॐ नमो भगवति ॐ नमो वीर प्रताप विजय भगवति बगलामुखि मम सर्व निन्दकानां सर्व दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय स्तम्भय, ब्राह्मीं मुद्रय मुद्रय, बुद्धिं विनाशय विनाशय, अपरबुद्धिं कुरु कुरु, आत्मविरोधिनां शत्रुणां शिरो-ललाट-मुख-नेत्र-कर्ण-नासिकोरु-पद-अणुरेश-दन्तोष्ट-जिह्वा-तालु-गुह्य-गुद-कटि-जानू-सर्वाङ्गेषु-केशादिपादपर्यतं पादादिशापर्यंत स्तम्भ्य स्तम्भय, खें खीं मारय मारय परमन्त्र-परयन्त्र-परतन्त्राणि छेदय-छेदय, आत्ममन्त्रयन्त्रतन्त्राणि रक्ष-रक्ष, ग्रहं निवारय निवारय, व्याधिं विनाशय विनाशय, दुःखं हर-हर, दारिद्रयं निवारय निवारय, सर्वमन्त्रस्वरूपिणी, सर्वतन्त्रस्वरूपिणी, सर्वशिल्पप्रयोग स्वरूपिणी, सर्व तत्व स्वरूपिणी, दुष्ट ग्रह-भूतग्रह-आकाशगृह-पाषाण ग्रह-सर्व चाण्डाल ग्रह-यक्ष किन्नरकिम्पुरुष ग्रह-भूतप्रेत पिशाचानां शाकिनी डाकिनी ग्रहानां पूर्वदिशां बन्धय-बन्धय, वार्तालि माँ रक्ष रक्ष, दक्षिण दिशां बन्धय-बन्धय किरातवार्तालि मां रक्ष रक्ष, पश्चिम दिशां बन्धय बन्धय स्वप्नवार्तालि मां रक्ष रक्ष, उत्तर दिशां बन्धय-बन्धय, कालि मां रक्ष रक्ष, ऊर्ध्व दिशं बन्धय बन्धय, उग्रकालि मां रक्ष रक्ष, पातालदिशं बन्धय बन्धय, बगलापरमेश्वरि मां रक्ष रक्ष, सकल रोगान् विनाशय विनाशय, सर्वशत्रु पलायनाय पञ्चयोजन मध्ये, राजजनस्त्रिवशतां कुरु-कुरु, शत्रून् दह-दह, पच-पच, स्तम्भय-स्तम्भय, मोहय-मोहय, आकर्षय-आकर्षय, मम शत्रून उच्चाटय-उच्चाटय, हुं फट् स्वाहा।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

चौबीस मुद्राएँ (सचित्र)

सुमुखं सम्पुटं चैव विततं विस्तृतं तथा।
द्विमुखं त्रिमुखं चैव चतुष्पञ्च मुखं तथा॥
षण्मुखाऽधोमुखं चैव व्यापकाञ्जलिकं तथा।
शकटं यमपाशं च ग्रन्थितं चोन्मुखोन्मुखम्॥
प्रलम्बं मुष्टिकं चैव मत्स्यः कूर्मो वराहकम्।
सिंहाक्रान्तं महाक्रान्तं मुद्गरं पल्लवं तथा॥
एता मुद्राश्चतुर्विंशज्जपादौ परिकीर्तिताः।

अब दिए हुए चित्रों को देखकर 24 मुद्राएँ करें।

१ सुमुखम्, २ सम्पुटम्, ७ चतुर्मुखम्, ८ पञ्चमुखम्

३ विततम्, ४ विस्तृतम्, ९ षण्मुखम्, १० अधोमुखम्

५ द्विमुखम्, ६ त्रिमुखम्, ११ व्यापकञ्जलिकम्, १२ शकटम्

१३ यमपाशम्, १४ ग्रन्थितम्, १९ कूर्मम्, २० वराहकम्

बायाँ, दायाँ, १५ उनमुखोन्मुखम्, १६ प्रलम्बम्, २१ सिंहाक्रान्तम्, २२ महाक्रान्तम्

१७ मुष्टिकम्, १८ मत्स्यम्, २३ मुदगरम्, २४ पल्लवम्

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

1. **सुमुखम्**- दोनों हाथों की अंगुलियों को मोड़कर आपस में मिलाएँ। 2. **सम्पुटम्**- दोनों हाथों को फुलाकर मिलाएँ। 3. **विततम्**- दोनों हथेलियों को परस्पर आमने-सामने करें। 4. **विस्तृतम्**- दोनों हाथों की अंगुलियाँ खोलकर हाथों को कुछ अधिक अलग करें। 5. **द्विमुखम्**- दोनों हाथों की कनिष्ठिका से कनिष्ठिका और अनामिका से अनामिका मिलाएँ। 6. **त्रिमुखम्**- दोनों मध्यमा को और मिलाएँ। 7. दोनों तर्जनी भी और मिलाएँ। 8. **पञ्चमुखम्**- दोनों अंगूठे भी मिलाएँ। 9. **षण्मुखम्**- हाथ वैसे ही रखते हुए दोनों कनिष्ठिका खोलें। 10. **अधोमुखम्**- उल्टे हाथ की अंगुलियों को मोड़ें तथा मिलाकर नीचे की ओर करें। 11. **व्यापकाञ्जलिकम्**- वैसे ही मिले हुए हाथों को शरीर की तरफ घुमाकर सीधा करें। 12. **शकटम्**- दोनों हाथों को उल्टा कर अँगूठे से अँगूठा मिला तर्जनियों को सीधा रख मुट्ठी बाँधें। 13. **यमपाशम्**- तर्जनी से तर्जनी बाँध दोनों मुट्ठी बाँधें। 14. **ग्रन्थितम्**- दोनों हाथों की पाँचों उँगलियों को आपस में बाँधें। 15. **उन्मुखोन्मुखम्**- दोनों हाथों की पाँचों उँगलियों को मिलाकर पहले बाएँ पर दाहिना फिर दाहिने पर बायाँ हाथ रखें। 16. **प्रलम्बम्**- अँगुलियों को थोड़ा मोड़ दोनों हाथों को उल्टा कर नीचे की ओर करें। 17. **मुष्टिकम्**- दोनों अँगूठे ऊपर रख दोनों मुट्ठी बाँध मिलाएँ। 18. **मत्स्यं**- दाहिने हाथ की पीठ पर बायाँ हाथ रखकर दोनों अँगूठे मिलाएँ। 19. **कूर्मं**- सीधे (चित) बाएँ हाथ की मध्यमा अनामिका तथा कनिष्ठिका मोड़कर उल्टे दाहिने हाथ की मध्यमा, अनामिका को उन तीनों अँगुलियों के नीचे देकर बाईं तर्जनी पर दाहिनी कनिष्ठिका और बाएँ अँगूठे पर दाहिनी तर्जनी रखें। 20. **वराहकम्**- दाहिनी तर्जनी को बाएँ अँगूठे से मिला, दोनों हाथों की अँगुलियों को आपस में बाँधें। 21. **सिंहाक्रान्तम्**- दोनों हाथों को कानों के पास करें। 22. **महाक्रान्तम्**- दोनों हाथों की अँगुलियों कानों के सामने करें। 23. **मुद्गरम्**- मुट्ठी बाँध दाहिने हाथ की कुहनी को बाएँ हाथ की हथेली पर रखें। 24. **पल्लवम्**- दाहिने हाथ की अँगुलियों को मुँह के सामने हिलाएं। इस प्रकार से 24 मुद्राएँ चित्रों की सहायता से करनी चाहिए।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

श्री पीताम्बरा-बगलामुखी-खड्गमालामन्त्रः

विनियोग

ॐ अस्य श्रीपीताम्बरा-बगलामुखी-खड्गमालामन्त्रस्य नारायण ऋषिः, त्रिष्टुप् छन्दः, बगलामुखी देवता, ह्लीं बीजं, स्वाहा शक्तिः, ॐ कीलकं, ममाभीष्टसिध्यर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास

नारद ऋषये नमः शिरसि, त्रिष्टुप् छन्दसे नमः मुखे, श्रीबगलामुखी-देवतायै नमः हृदये, ह्लीं बीजाय नमः गुह्योः, स्वाहाशक्तये नमः पादयोः, ॐ कीलकाय नमः सर्वाङ्गे।

करन्यास

ॐ ह्लीं अंगुष्ठाभ्यां नमः, बगलामुखि तर्जनीभ्यां नमः, सर्वदुष्टानां मध्यमाभ्यां नमः, वाचं मुखं पदं स्तम्भय अनामिकाभ्यां नमः, जिह्वां कीलय कनिष्ठिकाभ्यां नमः, बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादिन्यास

ॐ ह्लीं हृदयाय नमः। बगलामुखि शिरसे स्वाहा। सर्वदुष्टानां शिखायै वषट्। वाचं मुखं पदं स्तभय कवचाय हुम्। जिह्वां कीलक नेत्रत्रयाय वौषट्। बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा अस्त्राय फट्।

ध्यानम्

मध्येसुधाब्धि मणिमण्डितरत्नवेद्यां सिंहासनोपरिगतां परिपीतवस्त्राम्।
भ्राम्यद्गदां करनिपीडितवैरिजिह्वा पीताम्बरां कनकमाल्यवतीं नमामि॥
मानसोपचारैः सम्पूज्य जपं कुर्यात्।

ॐ ह्लीं सर्व निन्दकानां सर्व दुष्टानां वाचं स्तम्भय स्तम्भय बुद्धिं विनाशय विनाशय अपरबुद्धिं कुरु करु अपस्मारं कुरु कुरु आत्मविरोधिनां शिरो-ललाट-मुख-नेत्र-कर्ण-नासिका-दन्तोष्ठ-जिह्वा-तालुकण्ठ-बाहूदर-कुक्षि-नाभि-पार्श्वद्वय-गुह्य-गुदाण्ड-त्रिकजानुपादसर्वाङ्गेषु पादादिकेशपर्यन्तं केशादिपादपर्यन्तं स्तम्भय स्तम्भय मारय मारय परमन्त्र-परयन्त्र-परतन्त्राणि छेदय छेदय आत्ममन्त्र-यन्त्र-तन्त्राणि रक्ष रक्ष सर्वग्रहात् निवारय निवारय सर्वं अविधिं विनाशय विनाशय दुःखं हन हन दारिद्र्यं निवारय निवारय

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सर्वमन्त्रस्वरूपिणि सर्वशल्ययोगस्वरूपिणि दुष्टग्रहचण्डग्रह-भूतग्रहाऽऽका-शग्रह-चौरग्रह-पाषाणग्रह-चाण्डालग्रह-यक्ष-गन्धर्वकिन्नर-ग्रह-ब्रह्म-राक्षसग्रह-भूत-प्रेत-पिशाचादीनां शाकिनी-डाकिनी-ग्रहाणां पूर्वदिशं बन्धय बन्धय वाराहि बगलामुखि मां रक्ष रक्ष दक्षिणदिशं बन्धय बन्धय किरातवाराहि मां रक्ष रक्ष पश्चिमदिशं बन्धय बन्धय स्वप्नवाराहि मां रक्ष रक्ष उत्तरदिशं बन्धय बन्धय धूम्रवाराहि मां रक्ष रक्ष सर्वदिशो बन्धय बन्धय कुक्कुटवाराहि मां रक्ष रक्ष अधरदिशं बन्धय बन्धय परमेश्वरी मां रक्ष रक्ष रक्ष सर्वरोगान् विनाशय विनाशय सर्वशत्रुपलायनाय सर्वशत्रुकुलं मूलतो नाशय नाशय शत्रूणां राजवश्यं स्त्रीवश्यं जनवश्यं दह दह पच पच सकललोक-स्तम्भिनी शत्रून् स्तम्भय स्तम्भय स्तम्भनमोहनाऽऽकर्षणाय सर्व रिपूणाम् उच्चाटनं कुरु कुरु ॐ ह्लीं क्लीं ऐं वाकप्रदानाय क्लीं जगत्त्रयवशीकरणाय सौः सर्वमनः क्षोभणाय श्रीं महासम्पत्प्रदानाय ग्लौं सकलभूमण्डला-धिपत्यप्रदानाय दां चिरंजीवने। ह्रां ह्रीं ह्रूं क्लां क्लीं क्लूं सौः ॐ ह्लीं बगलामुखि सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय जिह्वां कीलय बुद्धिं विनाशय राजस्तम्भिनि क्रों क्रों छ्रीं छ्रीं सर्वजनसंमोहिनि सभास्तम्भिनी स्त्रां स्त्रीं सर्वमुखरञ्जिनि मुखं बन्धय बन्धय ज्वल हंस हंस राजहंस प्रतिलोम इहलोक परलोक परद्वार राजद्वार क्लीं क्लूं घ्रीं रूं क्रों क्लीं खाणि खाणि। जिह्वा बन्धयामि सकलजनसर्वेन्द्रियाणि बन्धयामि नागाश्व-मृग-सर्प-विहङ्गम वृश्चिकादि-महोग्रभूतजातं बन्ध्यामि बन्धयामि लक्ष्मीं प्रददामि प्रददामि त्वम् इह आगच्छ आगच्छ अत्रैव निवासं कुरु कुरु ॐ ह्लीं बगले परमेश्वरी हुं फट् स्वाहा।

मूलमन्त्रवता कुर्याद् विद्यां न दर्शयेत् क्वचित्।
विपत्तौ स्वप्नकाले च विद्यां स्तम्भिनीं दर्शयेत्।
गोपनीयं गोपनीयं गोपनीयं प्रयत्नतः।
प्रकाशनात् सिद्धिहानिः स्याद् वश्यं मरणं भवेत्।
दद्यात शान्ताय सत्याय कौलाचारपरायणः।
दुर्गाभक्ताय शैवाय मृत्युञ्जयरताय च।
तस्मै दद्याद् इमं खड्गं स शिवो नात्र संशयः।
अशक्ताय च नो दद्याद् दीक्षाहीनाय वै तथा।
न दर्शयेद् इमं खड्गं इत्याज्ञा शङ्करस्य च।

॥ इति श्रीविष्णुयामले बगलाखड्गमालामन्त्रः समाप्तः॥

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

वेदोक्तं श्रीबगला-रहस्यम्

(ब्रह्मास्त्र मन्त्र)

प्रस्तुत मंत्र माँ बगला का बहुत ही सटीक और वाञ्छित फल प्रदान करने वाला है। यह विद्या परीक्षित भी है। अतः यदि आपके समक्ष कभी ऐसा कोई घोर संकट आ जाए, जिसका कोई निराकरण न दिखाई दे, तो आप पूर्ण श्रद्धा और विश्वास के साथ इस विद्या का प्रयोग करें। पूर्ण श्रद्धा भाव, भगवती के प्रति विश्वास और पवित्रता से इस विद्या का प्रयोग करने से राजद्वार, संग्राम अथवा वाद-विवाद-शास्त्रार्थ में विजय प्राप्त होती ही है, यह निश्चित जानिए।

विनियोग

अस्य श्री बगलामुखी शत्रु निवारिणी, स्तोत्र मन्त्रस्य आदिसृष्टिकर्त्ता दारुण ऋषिः, अनुष्टुप छन्दः, पीताम्बरा देवता, ह्ल्रीं, शक्तिः, क्लीं कीलकम्, मम शत्रुविध्वंसनार्थे जपे विनियोगः।

करन्यास

ॐ ह्लीं अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ ह्लीं तर्जनीभ्यां नमः। ॐ ह्लीं मध्यमाभ्यां नमः। ॐ ह्लीं अनामिकाभ्यां नमः। ॐ ह्लीं कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ ह्लीं करतलकर पृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादिन्यास

ॐ ह्लीं हृदयाय नमः। ॐ ह्लीं शिरसे नमः। ॐ ह्लीं शिखायै नमः। ॐ ह्लीं कवचायै नमः। ॐ ह्लीं नेत्रत्रयाम् नमः। ॐ ह्लीं अस्त्राय नमः।

ऋष्यादिन्यास

आदिसृष्टिकर्त्रे दारुण ऋषये नमः शिरसि। अनुष्टुपछन्दसे नमो मुखे। पीताम्बरदेवतायै नमो हृदये। ह्लीं शक्तये नमः पादै। श्रीं कीलकाय नमः सर्वाङ्गे।

ध्यान

ध्यायेत् प्रेतासनां देवीं द्विभुजां च चतुर्भुजाम्।
पीतवासां मणिग्रीवां सहस्त्रार्कमद्युतिम्।
ॐ ह्लीं हंकारिणी प्रोक्ता श्रीं श्रीं त्रयम्बकतोषिणी।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बिम्बाकरालवदना ह्यस्मद्वैरि निवारिणी।
स्नं स्नं दुकूललम्बोष्ठि फं फं स्वराग्रनासिका।
खं खं खड्गप्रहारेण दुष्टवाण निकृन्तिनी।
ठं ठं विध्वंसिनी देवी बं बं बुद्धिस्तम्भनमुत्तमा।
रं रं राज्यादिकं देवी बुद्धिव्यतिक्रमी।
लं लं लम्बोदरी ध्यानात् सं सं सिद्धिप्रदा सदा।
ह्लीं ह्लीं ज़य शत्रुलक्ष्मीं रुं रुं रुद्धयते सदा।

मंत्र

ॐ ह्लीं ह्लीं पीताम्बरे अस्मत् शत्रुणां जिह्वां कीलय कीलय वाणीं स्तम्भय स्तम्भय मर्दय मर्दय ध्वंसय ध्वंसय स्वाहा।

विधान

अश्वचर्मासनं कृत्वा वीरासनमुपस्थितः।
दक्षिणाभिमुखो भूत्वा घोरकर्म समारभेत्।
हरिद्रामालया धृत्वा भूत्वा ह्यथवा वज्रमालया।
अष्टद्रव्या-अष्टगन्धेन हरितालं च पेषयेत्।
तण्डुलचूर्णमादाय विदध्यात् ह्यर्धरात्रके।
यन्त्रं सम्पूज्य प्रथमं तत् कर्म समाचरेत्।
मारणं प्रथमं कर्म द्वितीयं स्तम्भनं भवेत्।

मारण-प्रयोग

यद्यपि ऐसे प्रयोग किसी भी प्रकार से उचित नहीं होते हैं, न ही सामाजिक दृष्टि से और न ही कानूनी दृष्टि से। यद्यपि इन कृत्यों का वर्णन करना भी उचित प्रतीत नहीं होता है, तथापि आवश्यक इसलिए है कि इनके अभाव में प्रस्तुत ग्रन्थ अपूर्ण सा प्रतीत होगा। ये प्रयोग वास्तव में दुधारी तलवार की भांति होते हैं, जिनका उपयोग अथवा दुरूपयोग साधक की वृत्ति पर निर्भर करता है। यह विद्या एक ऐसा कुआँ है, जो जल भी प्रदान कर सकता है और यदि आप उसमें छलांग लगा दें तो आपको मृत्यु भी प्रदान कर संकता है।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

यह भी सदैव याद रखें कि बुरा करने का परिणाम सदैव बुरा ही होता है। जैसे आप कर्म करेंगे, आपको फल भी वैसा ही मिलेगा। आप यदि बबूल बोएंगे, तो काँटे ही आपका प्रारब्ध होगा। आम का पेड़ बोने से आपको आम के रसीले, स्वादिष्ट फल ही प्राप्त होंगे।

परंतु दुर्योग से कभी-कभी व्यक्ति के साथ ऐसे घटनाक्रम हो जाते हैं, जब उसे ऐसे प्रयोग करने के लिए बाध्य होना पड़ता है। परंतु याद रखें-ऐसे मंत्रों का प्रयोग तभी करें, जब व्यक्ति के स्वयं के प्राणों पर आ बने। हंसी खेल में, अथवा मात्र परीक्षण हेतु ऐसे प्रयोग निषिद्ध हैं।

मंत्र

ॐ नमो भगवति भक्षकरणे चतुर्भुजे पीताम्बरे ऊर्ध्वकेशे विकृतानने कालरात्री मानुषाणां वसारुधिर भोजने 'अमुकस्य' मृत्युपदे लं फट् हन-हन, दह-दह मांस रुधिर पिव-पिव पच-पच हुं फट् स्वाहा।

(अमुक के स्थान पर शत्रु के नाम का प्रयोग करें)

विधान

प्रेतभूमि (शमशान) की मिट्टी लाकर उसके ऊपर कुशासन बिछाकर छः दिन अथवा इक्कीस दिनों में एक लाख मन्त्रों का नियमानुसार जप करें। जप भक्तिभाव तथा दृढ़चित्त होकर प्रतिमा के आगे श्मशान में, नदी किनारे, एकांत स्थान पर या अपने घर पर रोषपूर्ण मुद्रा में करें। यह प्रयोग कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी से आरम्भ करना चाहिए। यथा-

अमुं मन्त्रं जपेद् रात्रौ रोषचित्तौ रिपुं स्मरन्।
अर्धरात्रौ तु हस्ताभ्यां मार्जयेत लिङ्ग मस्तके॥
भ्रष्टः स कथयेन मन्त्रं तत्क्षणात् म्रियते रिपुः।
दृष्ट प्रत्यय एवायं सिद्धियोग उदाहतः॥

बलिदान

सात बार में जपें-

ॐ नमो ह्रीं अष्टभैरवाधिपतये सर्व कार्य प्रवृत्यर्थं सर्व शत्रु निवृत्यर्थं बलिं गृहाण गृहाण मे कार्यं कुरु-कुरु बटुकाय ह्रीं फट् स्वाहा।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बगला दीप-दान विधि

परात्म्बा पीताम्बरा की आराधना विजय प्राप्ति व असाध्य कार्यों को साधने के लिए अमोघ अस्त्र है। अभीष्ट फल की प्राप्ति हेतु दीप-दान विधि सर्वोत्तम है। प्रस्तुत है, अत्यन्त प्राचीन पुस्तक 'मेरुतन्त्र' से ली गई बगला दीप-दान विधि।

अथातः सम्प्रवक्ष्यामि बगलादीपमुत्तमम्।
कृतेन येन विघ्नौघो विलयं याति मन्त्रिणः॥
शुद्धानि खलु बीजानि पक्षतुर्मुद्गरेण वा।
एकीकृत्यं विधातव्यो दीपः सुस्निग्धशोभनः॥
षटत्रिंशत्तन्तुभिः कार्या दृढावर्ति सुरञ्जिता।
गव्यामज्यं च कौसुम्भं तैलं वा दीप कर्मणिः॥
एतान्यानीय पूर्वं तु ततो दीपं प्रदापयेत्।

भावार्थ-समस्त विघ्नों का नाश करने वाली बगलामुखी की उत्तम दीप दान विधि कहता हूँ। उत्तम मुहूर्त्त में शुद्ध मुद्गर के बीजों को एकत्र कर सुंदर दीप बनाएँ। फिर छत्तीस तंतु की बत्तियाँ बनाकर पहले से इकट्ठा किए गए गाय के घी, कुसुम पुष्प या केसर के तेल से दीप जलाकर भगवती को प्रदान करें।

हरिद्रया रक्त वस्त्रं परिधाय शुचीः क्षमीं।
पीतासनोपविष्टश्च पीतमाल्यानुलेपनः॥
उत्तरासम्मुखो भूत्वा हरिद्रालिप्तभूतले।
त्रिकोणं कारियत्वा तु दीपं संस्थप्य यत्नतः॥
घृतमापूर्य वर्ति च दीपं प्रज्वालयेतु सुधीः।
मूल मन्त्रं सम्मुच्चार्य चेति दीपं ततो वेदत्॥
सङ्कल्प-न्यास पूर्वं तु जपेदष्टोत्तरं शतम्।
एवं रात्रोपकुर्वाणो मासेनैकेन साधकः॥
असाध्यान् साधयेत् कामान् वशयेदात्मनो रिपून्।
क्षोभयेत् स्तम्भयेच्चापि द्वेषयेत् प्रक्षिपेदपि॥

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

भावार्थ-पीले वस्त्र पहनकर, पवित्र और क्षमाशील होकर, पीले आसन पर बैठकर, पीली माला लेकर, पीला चन्दन लगाकर, उत्तर की ओर मुँह करके, हल्दी से लिपी हुई भूमि पर त्रिकोण बना कर, उस पर यत्नपूर्वक दीपक स्थापित करके, उसमें घी भरकर ध्यानपूर्वक दीप प्रज्ज्वलित करें। फिर मूल मन्त्र का उच्चारण करते हुए, न्यासपूर्वक दीप का संकल्प करके एक माला मन्त्र जाप एक माह तक रात्रि में करने से असाध्य-साध्य शत्रुओं का वशीकरण, स्तम्भन, विद्वेषण आदि कार्य तुरंत सिद्ध हो जाते हैं।

मेरु-तन्त्रोक्त-विधान

यह उपासनाविधि अत्यंत प्राचीन एवं दुर्लभ गन्थ 'मेरुतन्त्र' से उद्धृत है। इस उपासना विधि से स्पष्ट किया गया है कि माँ पीताम्बरा के मन्त्र का मूल रूप क्या है और किस प्रकार इस विद्या का जप करते हुए भोग और मोक्ष अथवा चतुर्विध पुरुषार्थ की प्राप्ति की जाए? साथ ही यह भी स्पष्ट किया गया है कि किसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए उपासना किस प्रकार की जाए-

अथातः सम्प्रवक्ष्यामि स्तम्भिनी बगलामुखीम्।
तारं माया समुच्चार्य वदेच्च बगलामुखि॥1॥

तदग्रे सर्वदुष्टानां ततो वाचं मुख पदम्।
स्तंमयेति पदं जिह्वा कीलयेति ततः परम्॥2॥

बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा वेदाग्निव[illegible]।(षटत्रिंशवर्णकः)

(1) तारं - ॐ
(2) माया - ह्लीं
(3) बगलामुखि - बगलामुखी
(4) सर्वदुष्टानां - स[illegible]र्वदुष्टानां
(5) वाचं - वाचं
(6) मुखं - मुखं
(7) पदं - पदं
(8) स्तम्भयेति- स्तम्भ[illegible]
(0) जिह्वां - जिह्वां
(10) कीलयेति - की[illegible]य
(11) बुद्धि - बुद्धिं
(12) विनाशय - विनाशय
(13) ह्लीं - ह्लीं
(14) ॐ - ॐ
(15) स्वाहा - स्वाहा

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मंत्र-

ॐ ह्लीं बगलामुखि सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय जिह्वा कीलय बुद्धि विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा।

ह्रीं - शक्ति अथवा माया बीज कहलाता है।

ह - शिव

र - प्रकृति

ई - महामाया

नाद - विश्वमाता

बिंदु - दुःखहर्ता

अर्थात् इसका अर्थ हुआ- शिवसहित विश्वमाता मेरे दुखों को हरें।

नारायणो मुनिस्त्रिटुप छन्दश्च बगलामुखी।
देवी बीजं तु हृल्लेखा स्वाहा शक्तिः समीरिता।
विनियोगो अस्य विख्यातः पुरुषार्थचतुष्टये।

विनियोग

भावार्थ-इस मन्त्र के ऋषि 'नारायण' छन्द 'त्रिष्टुप' 'बीज' देवी और 'शक्ति' स्वाहा कहे गए हैं। चारों पुरुषार्थ अर्थात् धर्म, मोक्ष, अर्थ एवं काम की प्राप्ति के लिए इस मंत्र का विनियोग करें।

हृल्लेखा हृदयं प्रोक्तं शिरश्च बगलामुखि।
शिखा तु सर्वदुष्टानां ततो वाचं मुखं पदं॥
स्तम्भयेति च वर्मोक्तं जिह्वां कीलय नेत्रकम्।
बुद्धिं विनाशयाऽस्त्रं स्यात् षडङ्गन्यास ईरितः॥

हृदयादिन्यास

ॐ ह्लीं हृदयाय नमः। ॐ बगलामुखी शिरसे स्वाहा। ॐ सर्व दुष्टानां शिखायै वषट्। ॐ वाचं मुखं पदं स्तम्भय कवचाय हुम्। ॐ जिह्वां कीलय नेत्र त्रयाय् वौषट्। ॐ बुद्धिं विनाशय अस्त्राय फट्।

मूर्ध्नि भाले भ्रुवोर्मध्ये नेत्रयोः श्रोत्रयोर्नसोः।
गण्डद्वये तथा चोष्ठेऽधरास्य-चिबकेषु च॥

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गले च दक्षदोर्मूले तथा चोष्ठेऽधरास्य-चिबकेषु च॥
गले च दक्षदोर्मूले तन्मध्ये मणिबन्धके।
अंगुलीनां तथा मूले हस्ताग्रे चैवमेव हि॥
न्यसेद वाम भुजादौ च दक्षोरुमूलके ततः।
दक्षजानुनि गुल्फे चाङ्गुलिमूले पदाग्रतः॥

न्यास

भावार्थ-अब मन्त्र से मस्तक, भाल, दोनों भौंहों के मध्य, दोनों नेत्र, दोनों कान, नाक, होंठ, अधर, चिबुक, गला, दाहिनी कोहनी, मणिबन्ध, अंगुलियाँ व उनके मूल, हाथ का अगला भाग, वाम भुजा, दाहिनी जंघा, घुटना तथा पैर की अंगुलियों के मूल व अग्र भाग में न्यास करें।

यथा-

ॐ नमः शिरसि। ह्रीं नमः ललाटे। वं नमः भृकुटयाम। गं नमः दक्षनेत्रे। लां नमः वामनेत्रे। मुं नमः दक्षकर्णे। खीं नमः वामकरौ। सं नमः दक्षनसि। वं नमः वामनसि। दुं नमः दक्षकपोले। षटां नमः वाम कपोले। नां नमः ऊर्ध्वोष्ठे। वां नमः अधरोष्ठे। चं नमः मुखे। मुं नमः चिबुके। खं नमः कण्ठे। पं नमः दक्षभुजामूले। दं नमः दक्षकूर्परे। स्तं नमः दक्षिणमणिबन्धे। भं नमः दक्षांगुल्यग्रे। जिं नमः वामभुज मूले। ह्वां नमः वामकूर्परे। कीं नमः वाममणिबन्धे। लं नमः वामांगुलिमूले। यं नमः वामांगुल्यग्रे। बुं नमः दक्ष जङ्घे। द्धिं नमः दक्षजानुनि। विं नमः दक्षगुल्फे। नां नमः दक्षाङ्गुलिमूले। शं नमः दक्षाङ्गुल्यग्रे। यं नमः वाम जङ्घे। ह्रीं नमः वामजानुनि। ॐ नमः वामगुल्फे। स्वां नमः वामपादाऽङ्गुलीमूले। हां नमः वाम पादाऽङ्गुल्यग्रे।

गम्भीरां च मदोन्मत्तां तप्तकाञ्चनसन्निभाम्।
चतुर्भुजा त्रिनयनां कमलासन-संस्थिताम्।
मुद्गरं दक्षिणे पाशं वामे जिह्वां च वज्रकम्।
पीताम्बरधरां सान्द्र-वृत्तपीन-पयोधराम्।
हेमकुण्डल भूषां च पीतचन्द्रार्धशेखराम्।
पीतभूषण भूषां च स्वर्णसिंहासन स्थिताम्।
एवं ध्यात्वा च देवेशीं शत्रुस्तम्भनकारिणीम्।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ध्यान

माँ पीताम्बरा के स्वरूप का ध्यान करें जो इस प्रकार है-

गम्भीर, मद में उन्मत्त, तपे हए कञ्चन के समान, चारं भुजाओं वाली, तीन नेत्रों वाली और कमल के आसन पर विराजित, दाएँ हाथ में मुद्गर व बाएँ हाथ में पाश लिए हुए और शत्रु की जिह्वा खींचे, पीले वस्त्र पहने हुए, चौड़े और गोल स्थूल स्तनों वाली, स्वर्ण कुण्डल धारण किए हुए और स्वर्ण सिंहासन पर विराजित, ऐसे शत्रु का स्तम्भन करने वाली भगवती का ध्यान करें।

भूप्रदेशे मनोरम्ये पुष्पामोदसुधूपिते।
गोमयेनाथ संलिप्ते मण्डले त्वासनं चरेत्॥
सौवर्णो वाऽथ रौप्ये वा पैत्तले वाऽपि भूर्जके।
कर्पूरा-ऽगरु-कस्तूरी-श्रीखण्ड-कुङ्कुमैरपि॥
लिखेद् यन्त्रं प्रयत्नेन लेखन्या हेमतारयोः।
मध्ये योनिं समालिख्य तद् बाह्ये तु षडस्त्रकम्॥
तद् बाह्ये अष्ट दलं पद्म तद् बाह्ये षोडशच्छदम्।
चतुरस्त्रत्रयं बाह्ये चतुर्द्वारोपशोभितम्॥

यंत्र विधान

मनोरम भूप्रदेश (भूमि), जो पुष्पों की सुगंध से पूर्ण हो, को गोबर से लीपकर उसमें मण्डल बनाएँ। तदोपरांत सोने, चाँदी, पीतल के पत्र में अथवा भोजपत्र में कपूर, अगर, कस्तूरी, चन्दन व रोली की स्याही से अनार की कलम से प्रयत्न करके यंत्र बनाएँ। यंत्र के मंध्य में त्रिकोण लिखें। उसके बाहर षडदल कमल का निर्माण करके उसके बाहर अष्टदल कमल, उसके बाहर षोडश अर्थात् सोलह दलों वाला कमल बनाएँ। फिर तीन चतुरस्त्र और उसके बाहर चार द्वारों का निर्माण करें।

यत्र नोक्तं देवतायाः पीठ वा पीठ शक्तयः।
तत्र मायोदितं पीठं ज्ञेयास्ता एव शक्तयः॥
तद् बीजेन यजेत् पीठं यद्वा मायाऽणुनाऽथवा।
तत्राऽऽबाह्य यजेद् देवीं सुपीतैरुपचारिके॥

भावार्थ-जहाँ देवता की पीठ और पीठों की शक्ति का वर्णन नहीं किया गया है, वहाँ माया पीठ और माया शक्तियों को जानना चाहिए और बीज या अणु माया से उस पीठ का पूजन पीतोपचार रीति से करना चाहिए।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

यजेदङ्गानि षटकोणे पूर्वद्वारादिषु क्रमात्।
गणेशं बटुकं चाऽपि योगिनीः क्षेत्रपालकम्॥

भावार्थ-षटकोण में अंगों का पूजन करने के उपरांत पूर्वद्वार से लेकर चारों द्वारों में क्रमशः गणेश, बटुक, योगिनी और क्षेत्रपाल का पूजन करें।

ईशानादि-निर्ऋत्यन्तं गुरुपंक्ति समर्चयेत्।
बगलां पूर्व पत्रे तु स्तम्भिनीं च ततः परम्॥

भावार्थ-ईशान से आरम्भ करके नैर्ऋत्य के अंत तक गुरु-पंक्ति का पूजन करें। फिर षोडश दल में क्रमशः बगला व स्तम्भिनी का पूजन करें।

जृम्भिनीं मोहिनीं चैव प्रगल्भामचलां जयाम्।
दुर्धषा-कल्मषा-धीरा-कल्याणी अकालकर्षिणी॥
भ्रामिका-मन्दगमनां भोग्याख्यां चैव योगिकाम्।
एताः षोडशपत्रेषु गन्ध-पुष्पा-ऽक्षतैर्जयेत्॥
षोडशस्वरसंयुक्ताः सम्प्रदायात् कुलागमे।

भावार्थ-फिर जृम्भिनी, मोहिनी, प्रगल्भा, अचला, जया, दुर्धषा, कल्मषा, धीरा, कल्याणी, अकालकर्षिणी, भ्रामिका, मन्दगमना, भोग्या और योगिका को स्थापित करके गन्ध, पुष्प, अक्षत आदि से पूजन करें। फिर सम्प्रदाय व कुलाचार की आगम के अनुरूप उन षोडश पत्रों में सोलह स्वरों को भी युक्त करें।

यजेन्तु पत्र मध्येषु कल्पिते चाऽष्टपत्रके।
पूर्वाद् ब्राह्मयादिका अष्टौ वाहनायुधसंयुताः॥
लोकेशांश्च तदस्त्राणि पूजयेद् बाह्यतस्तथा।
योनिमध्ये मूलदेवीं त्रिरञ्ज़लिभिरर्चयेत्॥
धूप- दीप- सुनैवेद्यैर्गन्ध- ताम्बूल- दीपकैः।
नीराज्यं विधिवत् पश्चाद् यथासख्यं निवेदयेत्॥

भावार्थ-उसके मध्य में अष्टदल पत्रों में वाहन व आयुध साहित पूर्व दिशा से लेकर ब्राह्मी आदि शक्तियों का, उसके आगे अष्टदल पत्रों में अस्त्रयुक्त आठों लोकपालों का पूजन करें। योनिमध्य अर्थात् त्रिकोण में माँ भगवती पीताम्बरा का तीन अञ्जलि पुष्पों से पूजन करें और धूप, दीप, नैवेद्य, गंध, पान से पूजन करते हुए आरती करें। फिर यथासंख्या निवेदन अर्थात् जप करें।

पवित्रारोपणं कार्यं दमनेन तु पूजयेत्।
देय चापि सितान्नेन प्रत्यहं बलि पञ्चकम्॥

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

भावार्थ-भगवती को पवित्रा समर्पित करते हुए प्रतिदिन श्वेत अन्न चावल, खीर आदि से उन्हें पाँच बलि निवेदन करें।

हरिद्रा ग्रन्थिजा माला पीताम्बरः स्वयं।
पीतासन् स्मरेत् पीतं चायुतं जपमाचरेत्॥
दशांशेन कृते होमे पीतद्रव्यैः प्रतर्पयेत्।
सर्वपीतोपचारेण मन्त्र सिद्धयति मन्त्रिणः॥
साध्यसंज्ञां समुच्चार्य स्तम्भयेति ततः परम्।
गति स्तम्भकरी विद्या अरिस्तम्भन कारिणी॥

भावार्थ-साधक स्वयं पीले वस्त्र धारण कर, पीले आसन पर बैठकर, हल्दी की गाँठों की माला से, पीतवर्णा भगवती का स्मरण कर इस विद्या का दस हज़ार जप करें। कृत जप का दशांश होम, उसका दशांश तर्पण व मार्जन पीतद्रव्यों से करना चाहिए। इससे मंत्र निश्चय ही सिद्ध होता है। मंत्र के एक भाग से शत्रु का नाम लेकर स्तम्भय-स्तम्भय कहकर जप करने से शत्रु व उसकी गति का स्तम्भन होता है। यथा- **ॐ ह्लीं बगलामुखी सर्व दुष्टानां वाचं मुखं पदं मम 'अमुक नामकं' शत्रु स्तम्भय स्तम्भय जिह्वां कीलय बुद्धिं विनाशय ह्लींॐ स्वाहा।**

मेधां प्रज्ञां च शास्त्रादीन् देव-दानव-पन्नगान्।
स्तम्भ्येच्च महाविद्या सत्यं सत्यं न संशयः॥
एकान्ते परमे रम्ये शुचौ देशऽथ वा गृहे।
कुण्डं स-लक्षणं कृत्वा मेखलात्रय शोभितम्॥
योनिर्वितस्तिमात्रा तु षटकर्माण्यत्र साधयेत्।
तथाऽऽकर्षण कामस्तु लोणं त्रिमधुरान्वितम्॥

भावार्थ-इस मंत्र से मेधा, बुद्धि, शास्त्र, देव, दानव, सर्प आदि का स्तम्भन होता ही है, इसमें संशय नहीं करना चाहिए। मंत्र जाप एकांत, परम रम्य, पवित्र भूमि अथवा घर में किया जा सकता है। तीन मेखलाओं से शोभित कुण्ड का निर्माण करके, बित्ते भर की योनि वाला कुण्ड बनाकर नमक के साथ त्रिमधु (शक्कर,- घी व शहद) मिलाकर जप करने से आकर्षण होता है।

निम्बपत्रं तैलयुक्तं विद्वेषणकरं परम्।
हरितालं हरिद्रां च लवणेन च संयुताम्॥

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

स्तम्भने होमयेद् देवीं प्रज्ञायाश्च गतेर्मतेः।
आसुर्याश्चापि तैलेन महिषी रुधिरेण च॥
रिपुणां मारणार्थं तु श्मशानऽग्नौ हनेन्निशि।

भावार्थ-तेल मिली नीम की पत्ती से होम करने पर विद्वेषण होता है। हरताल, हल्दी और नमक मिलाकर होम करने से बुद्धि और गति का स्तम्भन होता है। रात्रि में श्मशान की अग्नि (चिता) में सरसों के तेल व भैंस के रक्त से हवन करने पर शत्रु मृत्यु को प्राप्त करता है।

गृधाणामपि काकानां गृहधूमयतेन वै।
पक्षेण जुहुयाद देवि! शत्रोरुच्चाटनाय वै॥
पूर्वा कुलालमृत्तावत्त्येरण्डश्चतुरङ्गुलः।
लाजास्त्रिमधुयुक्ताश्च सर्वरोगोपशान्तये॥
लक्षमेकं जपेद देवि ब्रह्मचारी दृढव्रतः।
पर्वताग्रे महारण्ये सिंद्धे शैवालये गृहे॥
सङ्गमे च महानद्यो-र्निशायामपि साधयेत्।

भावार्थ-शत्रु के उच्चाटनार्थ गिद्ध व कौए के पंखों से होम करें। सर्वरोग शांति के लिए कुम्हार के चाक की मिट्टी, चार-चार अंगुल एरन्ड की लकड़ी और त्रिमधु के साथ लाजा (खील) से हवन करें। साधक को पूर्ण ब्रह्मचर्य का पालन करते हुए, पूर्ण निश्चय करके, पर्वत की चोटी, घना जंगल, सिद्ध स्थान, शिवालय, घर अथवा महा-नदियों के संगम पर रात्रि में एक लाख जप करने चाहिए, तभी कार्य सिद्ध होता है।

श्वेतब्रह्मतरोर्मूले पादुकाश्चैव कारयेत्।
अलक्तस्य च रागेण रञ्जिता च हरिद्रया।
अनया विधया चापि लक्षैकेन च मन्त्रिताम्।
शतयोजनमात्रं तु स गच्छेच्चिन्तिते पथि।

भावार्थ-सफेद ब्रह्मतरु (पलाश) की जड़ से खड़ाऊँ बनाकर उसे आलता व हल्दी से रञ्जित करके एक लाख मंत्रों का जाप करने से, इच्छा करते ही साधक सौ योजन तक चला जाता है।

रसं मनः शिला तालं माक्षिकेण समन्वितम्।
पिष्टवाऽभिमन्त्रय लक्षैकं सर्वाङ्गे लेपने कृते॥

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अदृश्यकारकं तत् स्याल्लोके च महदद्भुतम्।
सुरभेरेकवर्णाया क्षारोत्थं क्षीरमाहरेत्॥
शर्करा-मधु-संयुक्तं त्रिशतैर्मन्त्रितं प्रिये!।
पाययित्वा तु हरते विषं स्थावर-जङ्गमम्॥
दारिद्र्यमोचनं चैव लक्षमेकं जपेत्ततः।
दशांशेन कृते हो एभिर्द्रव्यै पृथक् -पृथक्॥

भावार्थ-धतूरे का रस, मैनसिल व ताड़पत्र को पीसकर उसमें मिलाकर एक लाख जप करके, उस पिष्टि को उभिमन्त्रित कर शरीर पर लेप करने से साधक अदृश्य हो जाता है। एक रंग की गाय के ताजा दूध में शक्कर व शहद मिलाकर केवल तीन सौ मंत्रों का जप कर अभिमन्त्रित कर मनुष्य को पिलाने से स्थावर व जंगम विष का प्रभाव समाप्त हो जाता है। दरिद्रता नाश के लिए एक लाख जप करके एभिर्द्रव्य से दशांश आहुति अलग-अलग देनी चाहिए।

हवन प्रक्रिया

माँ पीताम्बरा के पूजनोपरांत अंत में हवन करना चाहिए। इसे साधक प्रतिदिन का नियम भी बना सकते हैं। यदि चाहें तो मांह में एक बार अष्टमी के दिन भी होम करना निश्चित कर सकते हैं।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सर्वप्रथम आप संकल्पपूर्वक कुण्ड का निर्माण करें। उसे तीन मेखलाओं से आभूषित करें और उसमें '**ॐ ह्लीं श्रीं**' लिखकर अग्नि का पूजन करें। लकड़ी आदि स्थापित कर, अग्नि प्रज्ज्वलित करें।

अग्निं प्रज्वलितं वन्दे जातवेद् हुताशनम्।
सुवर्णवर्णममलं समिद्धं विश्वतोमुखम्॥

हाथों में पुष्पांजलि लेकर अग्नि का आवाहन करते हुए गन्ध पुष्प आदि से पूजन करें-

ॐ ह्लीं श्री मूलेन अग्नौ देवी चैतन्यमावाह्य।

फिर मूल मंत्र से वांछित आहुति प्रदान करें। भगवती बगला का गंध, पुष्प आदि से पूजन करें और अग्रलिखित मंत्र पढ़ें-

सर्वरूपमयी देवी सर्व देवीमयं जगत्।
अतोऽहं विश्वरूपा तां नमामि सुरेश्वरीम्॥

फिर भगवती का विसर्जन करते हुए प्रार्थना करें—

ॐ गच्छ गच्छ परं स्थानं स्वस्थानं परमेश्वरि।
यत्र ब्रह्मादयो देवाः न विदुः परमं पदम्॥

फिर पुनः अग्नि पूजन करें। होम की भस्म लेकर ललाट आदि स्थानों पर लगाएँ और प्रार्थना करें—

गच्छ गच्छ सुरश्रेष्ठ स्वस्थानं परमेश्वर।
यत्र ब्रह्मादयो देवाः तत्र गच्छ हुताशन॥
गच्छ त्वं भगवन्नग्ने स्वस्थानं कुण्डमध्यतः।
हव्यमादाय, देवेभ्यः शीघ्रं देहि प्रसीद मे॥

ॐ सप्त ते अग्ने समिधः सप्त जिह्वा सप्त ऋषय, सप्त धाम प्रियाणि। सप्त होत्राः सप्तधात्वा यजन्ति सप्त योनीश पुणस्व धृतेन स्वाहा॥

अन्त में निम्नांकित वाक्य कहकर किया गया हवनकर्म भगवती को अर्पित करें।

अनेन होमकर्मणा श्री बगलामुखीः प्रीयताम् न मम। श्री पीताम्बरार्पणामस्तु।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बलिदान

(६) (बगलामुखि)
पूर्व

(बटुकनाथ)
(१) ईशान

(४) अग्नि
(गणेश)

(भूत) (५)
उत्तर

दक्षिण

(२) वायु
(योगिनी)

नैर्ऋति (३)
(क्षेत्रपाल)

पश्चिम

बलि हेतु मुद्राएँ

(1) बटुक	:	अंगुठे को अनामिका से मिलाएँ।
(2) योगिनी	:	तर्जनी, मध्यमा और अंगूठे को मिलाएँ।
(3) क्षेत्रपाल	:	अंगूठे को तर्जनी से मिलाएँ।
(4) गणेश	:	अंगूठे को मध्यमा से मिलाएँ।
(5) भूत	:	सभी अंगुलियों को मिलाएँ।

बलि विधान

(1) त्रिकोण, वृत्त, चतुरस्त्रमण्डल बनाकर '**ॐ आधार शक्तये नमः**' पूजन करें। फिर बलि पात्र की स्थापना कर '**ॐ बलि द्रव्याय नमः**' कहकर गंध, पुष्प आदि से पूजन करें तथा मुद्रा बनाकर बलि स्वीकार करने हेतु बटुक भैरव से प्रार्थना करें—

एहि एहि देवि पुत्र बटुकनथ कपिल जटाभारभासुर त्रिनेत्र ज्वाला मुख सर्वविघ्नान् नाशय नाशय सर्वोपचार सहितं बलिं गृहण गृहण स्वहा। बटुकाय एष बलिर्न मम।

(2) '**यां योगिनीभ्यो नमः**' से योगिनओं की पूजा कर उन्हें, तर्जनी, मध्यमा और अंगूठे से मुद्रा बनाकर, बलि स्वीकार करने हेतु विनती करें—

'**ॐ ॐ ॐ सर्वडाकिनीभ्यः सर्वशाकिनीभ्यः त्रैलेक्यवासिनीभ्यो**

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

नमः। इमं पूजाबलिं गृहणीत हुं फट् स्वाहा।' सर्वयोगिनीभ्ये हुं फट् स्वाहा।' योगिनीभ्यः एष बलिर्न मम।' जल अर्पित कर प्रणाम करें।

(3) **'क्षं क्षेत्रपालाय नमः, क्षेत्रपाल बलि मण्लाय नमः, क्षेत्रपाल बलि द्रव्याय नमः।'** ऐसा बोलकर गंध-पुष्प आदि से क्षेत्रपाल की पूजा करें। अंगूठे और तर्जनी को मिलाकर मुद्रा बनाएँ और क्षेत्रपाल से बलि स्वीकार करने हेतु प्रार्थना करें-

'ॐ क्षां क्षीं क्षूं क्षैं क्षौं क्षः क्षेत्रपाल इमं बलिं गृहण गृहण स्वाहाः, क्षेत्रपालाय एष बलिर्न मम।' जल देकर प्रणाम करें।

(4) **'ॐ गं गणपतये नमः, गणपति बलिमण्डलाय नमः'** ऐसा बोलकर गंध, पुष्पादि से गणपति की पूजा करें। फिर अंगूठे और मध्यमा को मिलाकर मुद्रा बनाएँ और गणपति से बलि स्वीकार करने हेतु प्रार्थना करें-

'ॐ गां गीं गूं गैं गौं गः गणपतये वरवरद सर्वजनं मे वशमानय इमं बलिं गृहण गृहण स्वाहा।' गणपतये एष बलिर्न मम। जल देकर प्रणाम करें।

(5) पूर्व की भांति मण्डल बनाकर पूजन करें। साधार स्वीकार करने हेतु प्रार्थना करें-सभी अंगुलियों को मिलाकर मुद्रा बनाते हुए-**ह्लीं सर्वविघ्नकृदभ्यः सर्वभूतेभ्यो हुं फट् स्वाहा। सर्वभूतेभ्यो एष बलिर्न मम।**

(6) तदोपरान्त हाथ-पैर धोकर भगवती को योनि मुद्रा का प्रदर्शन करते हुए प्रणाम करके आरती कर उन्हें पुष्पांजलि अर्पित करें—

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्।

ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः॥

नानासुगन्धि पुष्पाणि यथाकालोद् भवानि च।

पुष्पाञ्जलिर्मया दत्तो गृहाण परमेश्वरि॥

पुनः प्रदक्षिणा करके नमस्कार करें। फिर यंत्र बनाकर पूजन करें और बलि स्थापना कर भगवती से बलि स्वीकार करने हेतु प्रार्थना करें-

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं हूं ह्लीं बगलामुखि सर्वशत्रु स्तम्भिनी सर्वराज वशङ्करी एष ते बलिं गृहण गृहण ममाभीष्ट कुरु कुरु हुं फट् स्वाहा। बगलाय एष बलिर्न मम। ऐसा कहकर भगवती को विशेष अर्घ्य प्रदान

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

करें। (शहद, मिश्री, गाय का दूध, केसर व अदरक से मिलकर विशेष अर्घ्य बनता है।)

(7) अब उच्छिटभैरव को बलि प्रदान करें—

'**ॐ उच्छिष्ट भैरव एहि एहि बलिं गृहण गृहण हुं फट् स्वाहा।**' और प्रणाम करें।

(8) अब पूजा गृह से बाहर जाकर बटुकवाहन को बलि प्रदान करें- एक चतुरस्त्रमण्डल बनाकर उसमें बलि रखकर बटुक वाहन को प्रदान करें-

'**बटुक वाहन इमां पूजां बलिं च गृहण गृहण स्वाहा।**' तथा जल छिड़कें।

तदोपरांत हाथ, पैर धोकर पूजागृह में प्रवेश कर आसन पर बैठकर आचमन कर शान्ति पाठ करें। फिर निर्माल्य सहित नैवेद्य की बलि प्रदान करने हेतु उच्छिष्ट चाण्डालिनी का ध्यान करें तथा बलि स्वीकार करने हेतु प्रार्थना करें—

'**ऐं नमः उच्छिष्टचाण्डालिनी मातङ्गिसर्वजनवशङ्करी इमां पूजां बलिं च गृहण गृहण स्वाहा।**'

फिर हाथ धोकर भगवती से प्रार्थना करें—

मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वरि।
यत्पूजितं मया देवि परिपूर्णं तदस्तु मे॥

यथाशक्ति, यथाज्ञानेन, यथासम्भावितोपचारद्रव्यै समस्त कर्मणा श्री पीताम्बरार्पणमस्तु। ॐ तत् सत्।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

परिशिष्ट

लक्ष्मी मंत्र

परिचय

लक्ष्मी आदिशक्ति का वह रूप है, जो संसार को (मानव मात्र को) भौतिक सुख प्रदान करती है। अर्थात् वैभव, विलास, सम्पन्नता, अर्थ, द्रव्य, रत्न तथा धातुओं की अधिष्ठात्री देवी को 'लक्ष्मी' कहते हैं। इस देवी के व्यापक प्रभाव-क्षेत्र को देखकर ही कहा गया है 'लक्ष्मी के साथ लाख गुण रहते हैं।'

पौराणकि दृष्टि से ब्रह्माण्ड का नियन्त्रण करने वाले पुरुष-तत्व के तीन प्रतिरूपों अर्थात् त्रिदेवों में विष्णु को पालनकर्ता कहा जाता है। उन्हीं जगत्-पालक विष्णु की शक्ति को लक्ष्मी की संज्ञा दी गई है। विष्णु-पत्नी के रूप में लक्ष्मी उनके साथ सर्वत्र पूजित होती है। कहीं भी चित्रों में अथवा मूर्तियों में देखें, तो हमें लक्ष्मी-विष्णु अथवा लक्ष्मी-नारायण की युगल छवि दृष्टिगोचर होगी। सही भी है कि जो देवता पालन-कार्य करता है, उसकी शक्ति (पत्नी) अवश्य ही भौतिक वस्तुओं की समृद्धि से सम्पन्न होगी। मानव-जाति के पालन-पोषण में जो कुछ भी अन्न, वस्त्र, धन आदि प्रयुक्त होते हैं, वह सब लक्ष्मी की ही देन है।

लक्ष्मी के अभाव में भौतिक-जगत् का पालन अकल्पित विषय हो जाता। अस्तु, लक्ष्मी विष्णु की शक्ति और पत्नी है तथा वह संसार को विविध प्रकार के सुख-साधन प्रदान करती है। इस प्रसङ्ग में यह भी स्मरण रखना चाहिए कि तीनों देवता (ब्रह्मा, विष्णु, महेश) उस साधक पर विशेष कृपालु होते हैं, जो उन्हें उनकी शक्तियों (सरस्वती, लक्ष्मी, दुर्गा) के साथ स्मरण करता है। वैसे, किसी भी देवी की साधना करके उसके देवता की, और किसी भी देवता की साधना करके उसकी देवी की कृपा भी प्राप्त की जा सकती है, तथापि सरलतम और सङ्गत विधान यही माना गया है कि अभीष्ट देवी-देवताओं की युगलरूप में आराधना करनी चाहिए। इसका प्रभाव विशेषरूप से अधिक और अनुकूल पाया जाता है। अतः लक्ष्मी उपासकों के लिए लक्ष्मी के साथ विष्णु का स्तवन-पूजन विशेष लाभकर माना जाता है।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

लक्ष्मी का प्रादुर्भाव

समुद्र-मंथन में चौदह रत्न सागर से निकले थे। उन चौदह रत्नों में से एक रत्न लक्ष्मी भी थी। यहाँ 'रत्न' शब्द का अर्थ मूल्यवान पत्थर न मानकर दुर्लभ, विशिष्ट और सुन्दरतम, मूल्यवान, गुणयुक्त वस्तु समझना चाहिए। रत्नों के बटवारे में देवताओं की ओर जो कर्म-रत्न आये थे। उन्हीं में विष्णु को लक्ष्मी प्राप्त हुई थी। यह भी प्रसिद्ध है कि सागर ने अपनी कन्या लक्ष्मी, स्वयं ही विष्णु को अर्पित की थी। जो भी हो, लक्ष्मी का जन्म समुद्र से ही माना गया है और वह विष्णु-पत्नी के रूप में सर्वत्र समादृत है। वैभव, सम्पदा, श्री-समृद्धि और भौतिक सुखों की स्वामिनी होने के नाते वह समस्त मानव जाति की पूज्य है और सभी उसकी आराधना करके द्रव्य की कामना करते हैं। यहाँ एक प्रश्न यह भी उठता है कि क्या सागर से जन्म लेने और विष्णु-पत्नी बनने के पूर्व सागर में धन-वैभव का अस्तित्व नहीं था? इसके उत्तर में कहा जा सकता है कि लक्ष्मी तो एक प्रासङ्गिक रूप है, वस्तुत: आदिशक्ति ही समस्त संसार की स्वामिनी है। इस प्रकार वह अनेक रूपों में सांसारिक वस्तुओं की व्यवस्था करती रहती है।

यह आवश्यक नहीं है कि लक्ष्मी की आराधना से ही धन की प्राप्ति हो। कहीं भैरवी, काली, चामुण्डा और यक्षिणी जैसी देवियाँ भी सन्तुष्ट होने पर भक्त को विपुल वैभव-सम्पदा प्रदान करती हैं। वास्तविकता यह है कि समस्त देवी रूप उसी एक महाशक्ति के विभिन्न वर्ण भेद हैं, जो अखिल सृष्टि में व्याप्त है और जो कण-कण का नियंत्रण करती है। यों, आस्था और लौकिक-दृष्टि से जन-सामान्य लक्ष्मी को ही विशेष रूप से सम्पत्ति-दात्री के रूप में पूजते हैं।

समुद्र-मंथन

समुद्र-मंथन एक प्रतीकात्मक कथा है। समुद्र-मंथन से चौदह रत्नों का निकलना वस्तुत: श्रम की ओर संकेत करता है। भाव यह है कि यदि मानव-समुदाय जाति, धर्म, वर्ण और वर्ग-भेद को त्याग कर एक हो जाय तो उसमें इतनी प्रचण्ड शक्ति है कि समुद्र को भी मथ सकता है और इस प्रकार उसके अनन्त गर्भ में छिपी हुई सम्पदा को प्राप्त कर सकता है। देवता-दैत्य अपने सम्मिलित प्रयास से ही सागर की तलहटी में सुरक्षित 14 रत्नों को प्राप्त कर सके थे।

इस कथानक की पृष्ठभूमि मानव को श्रम की प्रेरणा देती है। भाव यह है कि जो व्यक्ति श्रम करेगा, वही रत्न (मूल्यवान-सुखदायक पदार्थ) प्राप्त कर सकता

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

है। और व्यावहारिक- जगत् में हम आज भी देखते हैं कि श्रम करने वाले व्यक्ति ही अपना निर्वाह कर पाते हैं। बेकार, निष्क्रिय और आलर्साजन दाने-दाने को तरसते रहते हैं। इस प्रकार स्पष्ट है कि लक्ष्मी जहाँ सुख-वैभव की दात्री है, वहीं वह श्रमाराधन भी चाहती है। उसकी कृपा प्राप्त करने के लिए साधक को श्रमशील होना आवश्यक है।

लक्ष्मी का प्रभाव क्षेत्र

लक्ष्मी का प्रभाव अतिव्यापक है। कहना चाहिए कि उसका विश्वव्यापी प्रभाव है। जीवन के किसी भी क्षेत्र की ओर देखें, लक्ष्मी से विरत नहीं हो सकते। भोजन, वस्त्र, आवास, लोकाचार, सामाजिक नियम-निर्वाह, दान-पुण्य, अतिथि-सेवा, देवाराधन, साधु-सत्कार, यज्ञ, तीर्थ यात्रा, परोपकार, सेवा-सहायता— सबका आधार धन है, धन का ही दूसरा रूप लक्ष्मी अर्थात् उसकी कृपा-दृष्टि है नीतिकारों ने कहा है—

वरं वनं व्याघ्र गजेन्द्र सेवितम्, द्रुमालयं पत्र फलाम्बु सेवनं।
तृणेषु शैय्या शत जीर्ण वल्कलं, न बन्धु मध्ये धनहीन जीवनम्॥

यह है कि निर्धन व्यक्ति बहुविध अभावों से पीड़ित रहने के साथ-साथ समाज और परिवार से भी उपेक्षित, तिरस्कृत और बहिष्कृत हो जाता है। वह सर्वत्र अपमानित होता है। लोग उससे घृणा करते हैं। उसे भाग्यहीन, अभागा, अशुभ, दरिद्र और पापी कहकर दुरदुराते हैं। उसके प्रति दया और सम्वेदना का भाव तो कदाचित् ही हज़ारों में कोई एक व्यक्ति प्रदर्शित कर सके, अन्यथा धनहीन मनुष्य जहाँ भी जाता है घोर लाञ्छन, अनादर और विडम्बना का पात्र बनता है। जैसे प्रतिभा, चेतना, वाणी, स्मरण-शक्ति, वाग्मिता, स्वर-सम्मोहन आदि के लिए देवी सरस्वती की कृपा अनिवार्य है, उसी प्रकार भौतिक-समृद्धि के लिए लक्ष्मी की दया व्यक्ति के लिए परम आवश्यक है। जब तक लक्ष्मी की कृपा नहीं होती, मनुष्य नाना प्रकार के अभावों से ग्रस्त रहता है। और लक्ष्मी की कृपा होते ही, धन-सम्पन्न होते ही वह सर्वत्र समादृत, पूज्य, वरणीय और प्रशंसित हो जाता है। संसार में अर्थ का महत्व (भौतिक दृष्टिकोण से) सर्वाधिक है। इसी आधार पर लक्ष्मी अर्थात् धन को सर्वगुण सम्पन्न कहा गया है। नीति-वाक्य है—

यस्यास्ति वित्त स नरः कुलीनः, स पण्डितः स श्रुतिवान गुणज्ञः।
स एव वक्ता स च दर्शनीय, सर्वे गुणा काञ्चनमाश्रयन्ति॥

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अर्थात् सुवर्ण-धन जिसके पास हो वह सर्वगुण-सम्पन्न माना जाता है। लोक उसकी सभी प्रकार से पूजा-प्रशंसा करता है।

दान की महिमा इतनी अधिक है कि उसकी प्रशंसा में सैकड़ों पृष्ठों का प्राचीन साहित्य प्राप्त होता है। तीर्थाटन, यज्ञ, परोपकार, लोक-सेवा, मन्दिर-निर्माण और अन्य प्रकार के परहित-कार्य मानव के लिए इसीलिए आवश्यक बताये गये हैं कि ये सब पुण्य-कार्य हैं। इनके द्वारा मनुष्य लोकहित का धर्माचरण करता है। किन्तु विचार करने पर ज्ञात होता है कि इन सबका आधार एकमात्र धन ही है। जिसके पास कुछ है ही नहीं, वह क्या दान-पुण्य और परोपकार करेगा? अतः जहाँ परोपकार के लिए धन आवश्यक है, वहीं धन के लिए लक्ष्मी की अनुकम्पा भी अपरिहार्य है।

जब तक लक्ष्मी की कृपा नहीं होती, व्यक्ति धन-सम्पन्न नहीं हो पाता। और यदि लक्ष्मी रुष्ट हो जाय तो बड़े-बड़े भूपालों को क्षण भर में राह का भिखारी बना देती है। लक्ष्मी का एक नाम 'चञ्चला' भी है। अस्थिर होने के कारण ही उसे यह संज्ञा दी गई है? वह कहीं स्थिर होकर नहीं रहती। आज यहाँ कल वहाँ। राव से रङ्क और रङ्क से राव होने की अगणित घटनाएं इस तथ्य का प्रमाण हैं कि लक्ष्मी सदा एक स्थान पर, एक व्यक्ति के समीप न रहकर, चलायमान रहती है। इसका एक सहज प्रमाण है — मुद्रा। मुद्रा अर्थात् रुपये-पैसे का सिक्का लक्ष्मी का साक्षात् स्वरूप माना जाता है। पर अपने व्यावहारिक-जीवन में हम देखते हैं कि अन्य वस्तुएं अपेक्षाकृत अधिक समय तक हमारे पास ठहरती हैं, ज़बकि मुद्रा हाथ में आते ही चली ज़ाती है।

चाहे जितनी अधिक आमदनी हो, पर हाथ में आई हुई मुद्रा यथावत सुरक्षित न रहकर, तुरन्त कहीं-न- कहीं चली जाती है। बैंक, बीमा, क्रय-विक्रय, भोजन, वस्त्र, चिकित्सा, प्रसाधन, मनोरञ्जन तथा ऐसे ही अन्य मार्गों से वह तुरन्त हमारे हाथ से चल देती है। भले ही हम अपने को धन-सम्पन्न मानते रहें, पर वास्तविकता यह है कि लक्ष्मी का चाञ्चल्य प्रतिक्षण हमें दिग्भ्रमित किये रहता है। यही कारण है कि आदि ग्रन्थों में जहाँ लक्ष्मी-पूजा का विधान मिलता है, वहाँ उसकी कृपा-अनुकूलता और स्थायित्व की याचना के भी संकेत दिये गये हैं। लक्ष्मी आती तो सभी के पास है, पर अधिकांश जनों को अपनी माया से चौंधिया कर तुरन्त चली जाती है। स्थिर होकर वह उन्हीं जनों के पास रहती है, जिन पर उसका कृपा-भाव

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हो जाता है। लक्ष्मी का महत्व हमारे भौतिक-संसार तक ही नहीं, स्वर्ग-लोक के देवताओं को भी अभिभूत किये रहता है।

देवराज इन्द्र अपनी वैभव-लिप्सा के लिए कुख्यात हैं। विपुल सम्पदा होने पर भी वे राज्य-लोभ, और अधिकार-मोह से निरन्तर ग्रस्त रहते हैं। लंकेश रावण का वैभव किसने नहीं सुना? अर्वाचीन इतिहास में भी अनेक सम्राटों की सम्पदा का सगर्व उल्लेख किया गया है। यह सब क्या है—लक्ष्मी का लीला विलास ही तो है! जिस पर प्रसन्न हुई उसे विश्व-विश्रुत कर दिया और जिससे रूठ गई—वह स्वजनों में भी उपेक्षित हो गया।

लक्ष्मी-प्राप्ति के उपाय

त्यागी-तपस्वियों और सन्त-महात्माओं की बात अलग है, कारण कि वे भौतिक-जगत् के माया-मोह से स्वयं को मुक्त कर चुके होते हैं। उन्हें भोजन की भी कामना नहीं रह जाती, वे मात्र वायु-सेवन करके ही अपना पोषण कर लेते हैं। उन्हें लक्ष्मी का लोभ नहीं रहता। यों विष्णु-पत्नी के रूप में वे महाशक्ति के इस अवतार के प्रति श्रद्धा अवश्य रखते हैं, पर स्वयं उसकी कृपा-कामना कहीं करते। हाँ, दूसरों पर कृपा करने के लिए वे उससे निवेदन कर देते हैं।

यही कारण है कि नितान्त दीन-दरिद्र और विपन्न-कुरूप दीखने वाले साधु-सन्तों के आशीर्वाद से कितने ही संसारीजन लक्ष्मी के कृपा-पात्र बन जाते हैं। परन्तु उस तरह के सिद्धान्त सर्वत्र सुलभ नहीं हैं। बहुधा वे समाज से परे एकान्त-साधना में रत रहते हैं। इसके विपरीत हम संसारी-जन, जो आजीवन अर्थ-लालसा से आक्रान्त रहते हैं, येन-केन-प्रकारेण सम्पत्ति-प्राप्ति करते रहते हैं। लक्ष्मी अर्थात् धन प्राप्त करने के कई उपाय हैं। कुछ को समाज की मान्यता प्राप्त है। वे नैतिक-उपाय कहे जाते हैं। कुछ को समाज ने स्वीकृति नही दी, वे अनैतिक-उपाय माने जाते हैं।

कला-शिल्प, मजदूरी, सेवा-वृत्ति और व्यवसाय को सामाजिक मान्यता प्राप्त है। इन साधनों से धनार्जन करना श्रेष्ठ माना जाता है। इसके विपरीत चोरी, डकैती, ठगी, षड्यन्त्र, लूट और अन्य प्रकार के दुराचारों द्वारा धन प्राप्त करना निन्दनीय कहा गया है। ऐसे कार्यों को समाज मान्यता नहीं देता। इस प्रकार के प्रयास त्याज्य, घृणित और दण्डनीय घोषित किये गये हैं। अनुभवों से भी स्पष्ट हुआ है कि सद्प्रयास द्वारा प्राप्त धन का उपयोग चाहे जिस कार्य में किया जाय,

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

वह अनुकूल परिणाम देता है, जबकि आपराधिक-कृत्यों द्वारा अर्जित धन का प्रभाव एक प्रकार की अज्ञात, अदृश्य, अपवित्रता और दूषण से युक्त होता है। ऐसा धन जहाँ भी जाता है, घातक प्रभाव उत्पन्न करता है।

लक्ष्मी की प्राप्ति सदैव शुभ नहीं होती। चुराई हुई, लूटी हुई, पीड़ितजन की अथवा अभिशप्त-सम्पदा सदैव विनाशक होती है। कुछ दशाब्दियों पूर्व मिस्र के सम्राट तूतनखामन का सुरक्षित कोष कुछ लोगों द्वारा निकाला गया था। उस अभियान के सारे सदस्य एक-एक करके अकल्पित-मृत्यु के ग्रास बने थे। इस प्रकार की एक-दो नहीं, हजारों घटनाएं हैं, जो प्रमाणित करती हैं कि सद्प्रयास से प्राप्त सम्पदा ही सुखद होती है, हेय विधियों से अर्जित धन तो महाकष्टदायी और विनाशक प्रभाव दिखाता है। परिश्रम तो सभी करते हैं, किन्तु लाभ सबको नहीं मिलता। ऐसी स्थिति में सम्पत्ति की स्वामिनी, धन-वैभव की अधिष्ठात्री देवी लक्ष्मी की आराधना करने से उसकी कृपा प्राप्त हो जाती है और लक्ष्मी की कृपा ही साकार होकर वैभव सामग्री के रूप में साधक को प्राप्त होती है।

लक्ष्मी की कृपा पाने के लिए साधकजन प्राय: तीन प्रकार की आध्यात्मिक साधनाएं करते हैं—1. मान्त्रिक, 2. यान्त्रिक, 3. तान्त्रिक।

इसके विपरीत, जिन लोगों की अध्यात्म में आस्था नहीं है, जो लक्ष्मी को देवी मानकर, केवल भौतिक वस्तु (सोना, चाँदी, रत्न, द्रव्य) समझते हैं, वे पूजा-पाठ और ध्यान-साधना न करके अपने पुरुषार्थ, चातुर्य और श्रम-सामर्थ्य को ही वरीयता देते हैं। इसमें भी दो वर्ग होते हैं—1. कुछ लोग आस्तिक-भाव से श्रम करते हैं, उन्हें देवी की कृपा की अपेक्षा कुछ-न-कुछ अवश्य रहती है। 2. कुछ लोग नास्तिक विचारों के होते हैं, वे केवल अपने तन-मन की शक्ति को ही लक्ष्मी प्राप्ति का आधार मानते हैं।

अस्तु, ये सभी जन मेहनत-मजदूरी, नौकरी, कला-शिल्प, व्यापार-धन्धे से लेकर चोरी-डकैती जैसे आपराधिक कार्यों तक, विभिन्न माध्यमों से अर्थोपार्जन हेतु प्रयास करते रहते हैं। सद्प्रयास वालों को असफलता में भी सामाजिक-सम्मान प्राप्त रहता है, जबकि आपराधिक प्रयासों के उपासक सफल होकर भी समाज में उपेक्षित, निन्दित और न्यायिक सीमाओं में आने पर दण्डित माने जाते हैं। आध्यात्मिक-दृष्टि से लक्ष्मी की साधना के तीन आयाम निर्दिष्ट किये गये हैं—मन्त्र-जप, यन्त्र-पूजन और तन्त्र-प्रयोग। इसका पृथक्-पृथक् विवेचन, विभिन्न ग्रंथों में प्राप्त होता है।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मन्त्र का जप

मन्त्र-जप एक विज्ञानसम्मत साधना-प्रक्रिया है। इसके प्रभाव से अभीष्ट देवता, प्राणी, व्यक्ति अथवा वस्तु का सामीप्य प्राप्त होता है। भले ही यह वर्णन अविश्वसनीय, संदिग्ध और अतिरंजित प्रतीत हो, पर है अक्षरशः सत्य। आज दूरदर्शन, दूरभाष, प्रक्षेपास्त्र, चालक-रहित विमान, उपग्रह जैसे भौतिक-यन्त्र जिस सिद्धान्त पर सफलतापूर्वक कार्य कर रहे हैं, उससे कहीं अधिक प्रामाणिक, तर्क-सम्मत, अनुभूत और विज्ञान-पोषित सिद्धान्त मन्त्र-जप के भी हैं। मन्त्र-सम्बन्धी कई विश्व-विश्रुत ग्रन्थ भारतीय-साहित्य में उपलब्ध हैं, जिनमें विभिन्न देवी-देवताओं का सान्निध्य प्राप्त कराने वाले मन्त्रों का वर्णन किया गया है। साधकजन लक्ष्मी के मन्त्रों का जप करके वाञ्छित लाभ उठा सकते हैं।

यन्त्र का पूजन

देवी-देवताओं के स्थूल रूप को सूक्ष्म आकार (ध्वनि रूप में) देकर यन्त्रों की रचना की गई है। प्रत्येक यन्त्र अपने आप में किसी-न-किसी देवता का प्रतिरूप है। प्रबल धारणा-शक्ति सम्पन्न साधक मन्त्र-जप के माध्यम से अभीष्ट देवता का सान्निध्य प्राप्त कर लेते हैं।

कालान्तर में मन्त्र-शास्त्र के विकसित रूप ने 'यन्त्र' को जन्म दिया। यन्त्र भी वस्तुतः मन्त्र ही है, किन्तु रचना-प्रक्रिया की दृष्टि से वह नितान्त भिन्न दीखता है। मन्त्र में जहाँ केवल ध्वनि का अस्तित्व है, वहीं यन्त्र में कुछ स्थूलता भी होती है। मन्त्र अदृश्य है, किन्तु यन्त्र दृश्य होता है।

मन्त्र का केवल उच्चारण किया जा सकता है अथवा किसी के द्वारा उच्चारित मन्त्र सुना जा सकता है, इसके विपरीत यन्त्र देखा जा सकता है। उसकी रचना मानव के हाथों होती है, अतः उसका स्पर्श भी सहज- सुलभ है। मन्त्र-साधना में केवल जप किया जाता है, जबकि यन्त्र-साधना में किसी यन्त्र विशेष को एक आकृति विशेष में चित्रित किया जाता है। यह आकृति प्रतीकात्मक होती है। विभिन्न रेखाएं, कोण, त्रिभुज, चतुर्भुज, बिन्दु अथवा पत्र-दल द्वारा अंकित करके कोई ज्यामितीय चित्र जैसा बनाया जाता है। उसमें अनेक स्थानों पर कुछ विशिष्ट वर्ण अथवा शब्द भी लिखे जाते हैं।

बाह्य-दृष्टि से अतिसामान्य रेखाचित्र प्रतीत होने वाला इस प्रकार का कोई भी यन्त्र वस्तुतः असामान्य प्रभाव से युक्त, वास्तव में किसी विशेष देवी-देवता का

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सांकेतिक रूप होता है। और उसमें कोई-न-कोई तत्सम्बन्धी मन्त्र भी अन्तर्निहित रहता है। लक्ष्मी-साधना के लिए अनेक प्रकार के यन्त्रों की रचना की गई है। यद्यपि वह रचना-प्रणाली अत्यधिक ज़टिल, दुरूह और श्रमसाध्य है-- फिर भी जो साधक धैर्यपूर्वक नियमानुकूल यन्त्र-रचना करके उसकी पूजा-आराधना करते हैं, वे निश्चय ही सफल मनोरथ होते हैं। लक्ष्मी की कृपा पाने के लिए 'श्रीयन्त्र' एक विश्व-विश्रुत यन्त्र है, इसके अतिरिक्त भी कई यन्त्र ऐसे हैं, जो विधिवत् निर्मित करके पूजे जायें, तो चमत्कारी प्रभाव प्रत्यक्ष कर देते हैं।

तंत्र-साधना

मन्त्र-शास्त्र का तीसरा आयाम तंत्र है। इसका विकास यन्त्र-विद्या के बाद माना जाता है। सर्वप्रथम मन्त्रों की रचना हुई थी, उनका सरलीकरण यन्त्र के रूप में किया गया, और बाद में यन्त्रों को व्यावहारिक रूप देने, सर्वसुलभ और सहज-साध्य बनाने के लिए 'तन्त्र' की रचना की गई। मन्त्र में केवल ध्वनि ही उपासना का एकमात्र आधार होती है, जबकि यन्त्र में मूर्तरूप के पूजन और मन्त्र-जप का विधान है। कुछ ऐसे यन्त्र भी होते हैं, जो मन्त्र-जप की अनिवार्यता से मुक्त हैं। वे मात्र दर्शन-वन्दन से ही प्रभावी हो जाते हैं। उनकी चित्रात्मकता और उनका रेखाङ्कन कुछ ऐसा प्रतीकात्मक तथा सांकेतिक रूप में सारगर्भित होता है कि उनसे निःसृत किरणें वातावरण को, स्थान विशेष को और साधक के लक्ष्य को अदृश्य रूप में प्रभावित करती रहती हैं। आज भी देश में कुछ स्थानों पर ऐसे यन्त्र, जो शताब्दियों पूर्व निर्मित हुए थे, स्थापित हैं और यह एक आश्चर्यजनक सत्य है कि उन्हें देखकर दर्शक के मन-मस्तिष्क में एक प्रकार की अकल्पित, अलौकिक प्रतिक्रिया (भावनात्मक रूप में) अपने आप उत्पन्न हो जाती है।

भारतीयों को तो अन्धविश्वासी कहा जाता है, पर इन मन्त्रों की प्रभावधर्मिता ने कितने ही विदेशी भौतिक-विज्ञानियों को भी चमत्कृत किया है और वे

इस सत्य को सगर्व स्वीकार करने के लिए विवश हुए हैं कि भारतीय अध्यात्म और मन्त्र-तन्त्र में निश्चय ही अद्भुत प्रभाव निहित है। यहाँ के सामान्य रखाचित्र दीखने वाले अनेक यन्त्र इतने चमत्कारी हैं कि उनके सम्मुख हमारे रेडियो, टी.वी. और राडार लज्जित हो जाते हैं।

तन्त्र में यन्त्र की अपेक्षा भौतिक-वस्तुओं का प्रयोग अधिक होता है। यह पदार्थ-विज्ञान का सहोदर कहा जा सकता है। वैसे कई तन्त्र ऐसे हैं, जो यन्त्र की

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

भांति रूपायित किये जाते हैं और मन्त्र-जप द्वारा उनकी ऊर्जा बढ़ाई जाती है। इस प्रकार वे तन्त्र अपने आप में मन्त्र और यन्त्र का भी संक्षिप्त प्रभाव निहित किये रहते हैं। अनेक तन्त्रों में चित्राङ्कन की प्रतिबद्धता नहीं होती, उनमें केवल भौतिक-वस्तुओं के प्रयोग का विधान होता है। ये प्रयोग सरल, सहज-सुलभ और साध्य होते हैं। अपनी सहृदयता और व्यावहारिकता के कारण ये बहुत प्रचलित हुए।

हालाँकि आगे चलकर तान्त्रिक प्रयोगों में कुछ विकृति भी आ गई थी और उनका दुरुपयोग भी होने लगा था, पर इससे तन्त्र का महत्त्व कम नहीं होता, दुरुपयोग का दोषी उसका प्रयोक्ता है, तन्त्र तो स्वयं में लोक-कल्याण के लिए ही क्रियाशील रहता है। जैसे आग की खोज हवन, शीत-निवारण और भोजनादि बनाने के लिए की गई थी, पर यदि कोई व्यक्ति उसके द्वारा किसी का घर फूंक दे तो यह आग का नहीं, उस प्रयोक्ता का दोष है। इसी प्रकार तन्त्र भी स्वयं में सद्प्रभाव की सृष्टि करते हैं। हाँ, प्रयोक्ता उसका दुरुपयोग कर डाले, यह अलग बात है।

लक्ष्मी-साधना के सन्दर्भ में जहाँ अनेक प्रकार के मन्त्रों की रचना की गई है, विविध प्रकार के यन्त्र निर्मित किये गये हैं, वहीं अनेक तंत्र-प्रयोगों की परिकल्पना भी प्राप्त होती है। खोजने पर तन्त्र-साहित्य का इतना विशाल भण्डार प्राप्त होता है कि बुद्धि चकरा जाती है। शक्ति-देवी को आधार मानकर ही सैकड़ों तन्त्र-ग्रन्थ रचे गये हैं, अन्य देवताओं के सम्बन्ध में प्राप्त साहित्य उसके अतिरिक्त है। लक्ष्मी कृपालु हो जाय, वह साधक के अथवा उसके इच्छित व्यक्ति के पास रहे, उसकी द्रव्य-सम्पदा अक्षुण्ण रहे, उसे वैभव-विलास की सामग्री उपलब्ध रहे, इस प्रकार की कामनाएं करने वाले जन (प्रायः समस्त मानव-समुदाय ऐसा ही है) लक्ष्मी की पूजा करते हैं।

कुछ लोग मन्त्र-जप का अवलम्ब लेते हैं, कुछ की यन्त्र-पूजा पर आस्था रहती है, वे यन्त्र-साधना करते हैं और कुछ लोग मान्त्रिक-प्रयोगों के विश्वासी होते हैं, वे विविध प्रकार के तन्त्रों का अवलम्ब लेकर लक्ष्मी को प्रसन्न करने का प्रयास करते हैं।

ये तीनों पद्धतियाँ प्रभावी हैं, आवश्यकता है केवल आस्था और नियम-पालन की।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तंत्र प्रयोग

मन्त्र-विद्या का तीसरा आयाम तन्त्र है। यह मन्त्र और यन्त्र से समन्वित होकर भी दोनों से पर्याप्त भिन्नता रखता है। यह एक असंदिग्ध सत्य है कि इसमें मन्त्र-यन्त्र का चरम विकसित और सहज-साध्य स्वरूप दृष्टिगोचर होता है। इसकी प्रभावात्मकता आश्चर्यजनक होती है। तन्त्र-ग्रन्थों की विपुल संख्या इस बात का प्रमाण है कि मानव-जीवन की किसी भी समस्या का समाधान तन्त्र द्वारा सहज सम्भव है। एक-एक विषय को लेकर न जाने कितने प्रयोगों की परिकल्पना की गई है। शारीरिक, मानसिक, आर्थिक, आध्यात्मिक अर्थात् लौकिक-पारलौकिक विषयों से सम्बद्ध तान्त्रिक प्रयोगों का वर्णन उन ग्रन्थों में प्राप्त होता है।

देखकर व सोचकर मानव दिङ्मूढ़ हो जाता है कि कितनी कठोर साधना और दीर्घकालीन अनुभवों के पश्चात् मनीषियों ने इन सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया होगा और कितने समय का अन्तराल पार करने के पश्चात् इन प्रयोगों एवं सिद्धान्तों को विश्वसनीयता प्राप्त हुई होगी।

अस्तु, बौद्ध-काल में अपने चरमोत्कर्ष पर पहुँची हुई तन्त्र-साधना यद्यपि कुछ विकृतियों, वामाचार के कारण बाद में पतनशील हो गयी, तथापि वह लुप्त नहीं हुई। आज भी उसका अस्तित्व विद्यमान है और ग्रामीण टोने-टोटके से लेकर जटिलतम साधना के ज्ञाता, प्रोक्ता और भुक्तभोगी इसकी प्रामाणिकता का साक्षात्कार दे रहे हैं। मन्त्र और यन्त्र की भाँति तन्त्र भी शान्ति, पुष्टि, वशीकरण, उच्चाटन, विद्वेषण और मारणादि कर्मों में पूर्णतया सक्षम होता है। बल्कि सत्य तो यह है कि तन्त्र की क्षमता अधिक होती है।

सामान्य कहे जाने वाले, अशिक्षित-ग्रामीणों द्वारा किये गये तंत्र-प्रयोग कभी-कभी इतना भीषण प्रभाव दिखाते हैं कि बड़े-बड़े वैज्ञानिक नामधारी बुद्धिवादी भी उसको समझने, उसका प्रतिकार करने में असमर्थ हो जाते हैं। प्रासङ्गिकता की दृष्टि से यहां केवल लक्ष्मी-साधना से सम्बन्धित कुछ तान्त्रिक-प्रयोग दिये जा रहे हैं, जिनकी विधिवत् साधना करने से निश्चय ही दरिद्रता, अर्थाभाव, विपन्नता और ऋण जैसी आर्थिक-समस्याओं से मुक्ति पाकर साधक लक्ष्मी का कृपा-पात्र हो सकता है।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जिस पर लक्ष्मीजी की कृपा हो, उसे संसार में किसी प्रकार के भौतिक-सुख की कमी नहीं रह जाती। धन-सम्पदा के द्वारा कुछ भी अर्जित किया जा सकता है। दान-पुण्य, जप-तप, व्रत-तीर्थ आदि में भी धन ही प्रमुख आधार होता है। धन के लिए ही लोग अनेक प्रकार के दुष्कर्म और पापाचरण तक करते रहते हैं।

किन्तु यह भी एक कठोर सत्य है कि सद्मार्ग, सत्साधन और सात्त्विक प्रयास द्वारा अर्जित धन ही कल्याणकारी होता है। पापाचार के द्वारा प्राप्त किये धन से पुण्य कमाने की कल्पना एक बहुत बड़ी आत्म-प्रवञ्चना है। अस्तु, निष्ठावान साधकजन यदि नीचे लिखे प्रयोगों को अपनायें तो अवश्य ही लाभान्वित होंगे। लक्ष्मी-तन्त्र के क्षेत्र में कुछ अति सरल, प्रभावशाली, अनुभूत और आशु-फलदायक प्रयोग निम्नानुसार है—

नागेश्वर-तन्त्र

यह एक वनस्पति है। प्रचलित भाषा में इसे नागकेसर कहते हैं। जैसा कि प्रारम्भ में लिखा जा चुका है, तन्त्र-साधना वस्तुतः पदार्थ-प्रधान होती है। विभिन्न वस्तुओं का अवसर विशेष पर एक निश्चित विधि के द्वारा प्रयोग करना ही तन्त्र है। विधि के अन्तर्गत उन वस्तुओं को सम्बन्धित मन्त्र द्वारा शुद्ध करना, संयुक्त करना अथवा प्रयोग करना आदि क्रियाएं आती हैं। विधि अर्थात् नियम-पालन तन्त्र की अनिवार्यता है। इसके अभाव में तन्त्र निष्फल हो जाता है। नागेश्वर-तन्त्र की प्रयोग-विधि इस प्रकार है कि उसे कहीं से ले आयें। प्रायः पंसारियों की दुकान में यह प्राप्त हो जाती है। शीतलचीनी (कवावचीनी) के आकार से मिलता-जुलता इसका फूल होता है। वही प्रयोजनीय माना गया है। कहीं से भी लाकर, उसे घर में रख लें।

ध्यान रहे कि जिस दिन उसे लायें, शुभ-मुहूर्त होना आवश्यक है। उसे किसी पवित्र स्थान पर रख दें। सोमवार के दिन शिवजी की पूजा करें और प्रतिमा (घर-बाहर जहां भी उपलब्ध हो) पर चन्दन-पुष्प के साथ नागकेसर भी अर्पित करें। पूजनोपरान्त किसी मिठाई का नैवेद्य शिवजी को प्रस्तुत करने के उपरान्त यथासम्भव मन्त्र भी जपें। उस दिन व्रत (उपवास) रखें और केवल शाकाहार (फलाहार) करें।

क्रोध और अहम् से सर्वथा मुक्त रहकर उस दिन सामर्थ्यानुसार पशु-पक्षी तथा मानव (भिखारी) को भोजन दें, और कुछ न हो सके तो 25-50 पैसे ही

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दान कर दें। याचक को दुत्कारें नहीं अर्थात् खाली हाथ न लौटायें। शाम को आरती-पूजन के पश्चात् शिवजी का स्मरण करते हुए सोयें। इस प्रकार 21 सोमवारों तक नियमित साधना करें। वैसे, शिव-प्रतिमा पर नागकेसर तो नित्य ही अर्पित करें, किन्तु सोमवार को उपवास रखते हुए, विशेष रूप से साधना करें। अन्तिम अर्थात् इक्कीसवें सोमवार को पूजा के पश्चात् किसी सुहागिनी सुपुत्रा-ब्राह्मणी को निमन्त्रण देकर बुलायें और उसे भोजन-वस्त्र, दान-दक्षिणा देकर आदरपूर्वक विदा करें। इक्कीस सोमवारों तक नागकेसर-तन्त्र द्वारा की गयी यह शिवजी की पूजा साधक को दरिद्रता के पाश से मुक्त करके धन-सम्पन्न बना देती है। यों, सामान्य दैनिक-पूजा में भी शिवजी पर चन्दन-पुष्प के साथ प्रतिदिन नागकेसर-चढ़ाने से बहुत लाभ होता है।

नागेश्वर स्वस्तिक-तन्त्र

भोजपत्र का वर्गाकार टुकड़ा लेकर उस पर लाल चन्दन से स्वस्तिक का चिन्ह 卐 बनायें। सूख जाने पर गोंद के सहारे उस स्वस्तिक-चिन्ह को नागकेसर से विभूषित करें। पूरे चिन्ह पर गोंद में डुबोई हुई नागकेसर एक-एक करके ऐसे क्रम और सुरुचि से चिपकायें कि वह चिन्ह नागकेसर द्वारा निर्मित प्रतीत हो। इसके पश्चात् उसे लकड़ी के पीढ़े पर लाल वस्त्र बिछाकर स्थापित कर दें और धूप-दीप से पूजा करें। इस पूरी साधना के मध्य **'ॐ गं गणपतये नमः'** मन्त्र जपते रहें।

पूजनोपरान्त स्वस्तिक-यन्त्र को नमस्कार करके उस पर दृष्टि केन्द्रित कर दें और 1, 2, 3 मिनट तक अपलक देखते रहें। उसे देखते समय भी मन में गणेशजी का ध्यान करना चाहिए। दो मिनट बाद आंखें मूंद लें और उसी स्वस्तिक के आकार की कल्पना करें। इस प्रकार लगातार 21 बार करें—एकटक उस चिन्ह को देखने के बाद आंखें बन्द करके अन्तर्चक्षुओं में उसकी छवि उभारें। इस प्रकार वह नागकेसर का स्वस्तिक-चिन्ह बाह्य और आन्तरिक दृष्टि में स्थायी रूप से अंकित हो जायेगा।

किसी भी शुभ-मुहूर्त से प्रारम्भ करके इस यन्त्र-साधना को लगातार कुछ दिनों तक करते रहें। इसका प्रभाव लक्ष्मी को साधक के प्रति अवश्य ही द्रवीभूत कर देता है। गणेशजी स्वयं भी वैभवदाता हैं। स्वस्तिक-चिन्ह उनका प्रतिरूप है। इस प्रकार साधक को अकल्पित रूप से धन-लाभ होने लगता है। उसकी दरिद्रता

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दूर हो जाती है और घर में श्री-सम्पत्ति का विलास प्रत्यक्ष हो जाता है। नागकेसर में विज्ञानसम्मत विकिरण प्रभाव है। साधक द्वारा की यह त्राटक-साधना अद्भुत रूप से द्रव्य लाभ करा देती है। स्मरण रहे कि कोई भी साधना की जाय— मन्त्र, यन्त्र, तन्त्र कुछ भी हो— आस्था, शुचिता, संयम, नियम-पालन और मुहूर्त के प्रति सदैव ही सजग रहना चाहिए। ये प्रतिबन्ध अनिवार्य हैं। इनकी उपेक्षा होने से साधना निष्फल हो जाती है।

दूर्वा-तन्त्र

दूर्वा अर्थात् दूब एक विशेष प्रकार की घास है। आयुर्वेद, तन्त्र और अध्यात्म में इसकी बड़ी महिमा बतायी गई है। देव-पूजा में भी इसका प्रयोग होता है। गणेशजी को यह बहुत प्रिय है। साधक किसी शुभ-मुहूर्त से गणेशजी की पूजा प्रारम्भ करे और प्रतिदिन चन्दन, पुष्प आदि के साथ प्रतिमा पर 108 दूर्वा-दल (दूब के टुकड़े) अर्पित करे। धूप-दीप के बाद गुड़ और गरी का नैवेद्य चढ़ाना चाहिए। इस प्रकार प्रतिदिन दूर्वार्पण करने से गणेशजी की कृपा प्राप्त हो जाती है। ऐसा साधक जब कभी द्रव्योपार्जन के कार्य से कहीं जा रहा हो, तो उसे चाहिए कि गणेश प्रतिमा पर अर्पित दूर्वा-दलों में से 5-7 दल प्रसाद-स्वरूप लेकर जेब में रखले। यह दूर्वा-तन्त्र कार्यसिद्धि की अद्भुत कुञ्जी है।

गणेश पुष्प-तन्त्र

धन-सम्पत्ति की लालसा-पूर्ति के लिए घर में लक्ष्मी और गणेशजी की मूर्ति अथवा चित्र अवश्य रखना चाहिए। उनकी प्रतिदिन चन्दन, पुष्प, धूप, दीप आदि से पूजा करने का बहुत अनकूल प्रभाव होता है। इस ना एक सर्वाधिक प्रभावशाली रूप यह है कि यदि साधक द्रव्य-सम्बन्धी कार्य के लिए (नौकरी, मजदूरी, दुकानदारी आदि) घर से निकले, तो उसे चाहिए कि गणेश-प्रतिमा पर चढ़ाया गया एक पुष्प, प्रतिमा को प्रणाम करके उठा ले और उसे मस्तक से लगाकर जेब में रख ले। यह गणेश पुष्प-तन्त्र बहुत ही शुभ परिणाम देता है।

साधक जिस कार्य की कामना से घर से प्रस्थान करता है, उसमें उसे अवश्य ही सफलता प्राप्त होती है। साथ ही, वह शारीरिक रूप से सुरक्षित रहता है। आकस्मिक-दुर्घटना, चोट-चपेट आदि से वह बचा रहता है। अभीष्ट कार्य में सफलता देने के लिए गणेशजी का यह पुष्प-तन्त्र बहुत लाभदायक सिद्ध होता है। हाँ, उसके प्रति आस्था होना अनिवार्य है। आस्था का अभाव सत्य को भी मिथ्या कर देता है।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

शनि-तन्त्र

शनिवार के दिन सन्ध्या-समय एक सादे सफेद कागज को एक ओर काजल लगाकर काला करलें। दूसरी ओर काजल से ही यह स्तुति अङ्कित करें—

नीलाञ्जन समाभासं, रविपुत्रं यमाग्रजं।
छायामार्त्तण्ड सम्भूतं, तं नमामि शनैश्चरम्॥

पीपल के वृक्ष के नीचे यह साधना करनी चाहिए। साधक का मुँह पश्चिम दिशा की ओर हो। यन्त्र तैयार हो चुकने पर उसे पट्टे पर स्थापित करके धूप-दीप से पूजा करें। दीपक में घी का प्रयोग किया जाता है, किन्तु उसमें सात बूँद सरसों का तेल भी मिला देना चाहिए। धूप-दीप देने के पश्चात् यन्त्र को नमस्कार करते हुए 'धनम् देहि' का सात बार निवेदन करें, फिर काले उड़द के सात दाने (1-1 करके) यन्त्र पर अर्पित करें और ऊपर लिखा श्लोक पढ़कर फिर से यन्त्र को नमस्कार करें। यह साधना द्रव्य-दायक होती है।

उन लोगों के लिए इसका विशेष अनुकूल प्रभाव होता है, जो किसी भी प्रकार का संख्यात्मक व्यापार (लॉटरी, सट्टा, घुड़दौड़, शेयर) करते हैं। उनके लिए यन्त्र का लाभ इस प्रकार सुलभ हो सकता है कि वे पूजनोपरान्त शनिदेव को नमस्कार करके 'धनं देहि' जपते हुए उस यन्त्र (कागज) के टुकड़े-टुकड़े कर दें। 10-12 टुकड़े करके प्रत्येक पर भिन्न-भिन्न संख्याएं (अपनी रुचि की) लिखें और उन्हें गोली के रूप में मोड़कर सामने रख लें। फिर क्रमश: कोई भी तीन गोलियाँ उठालें। पहली गोली की अपेक्षा दूसरी गोली की संख्या अधिक प्रभावशाली होती है।

वैसे, तीनों गोलियों की संख्याएं अलग-अलग उस व्यक्ति को सफलता का संकेत देती हैं। उन संख्याओं अथवा उनसे युक्त संख्याओं को व्यापार में प्रयोग करने से सफलता प्राप्त होती है। और कुछ न हो, तो भी काजल-निर्मित शनि-यन्त्र और उस पर अर्पित किये गये उड़द के दानों का प्रभाव साधक को आर्थिक-लाभ के अवसर प्रदान करता है।

वस्तु-तन्त्र

घर आते समय मार्ग की कोई एक वस्तु हाथ में लेते आना चाहिए। वह खरीदी गई वस्तु न होकर वह सहज-सुलभ हो—तभी प्रभावी होती है। कोई फूल, कोई पत्ता, कोई लकड़ी, फल, कागज का टुकड़ा, पौधे की टहनी अथवा

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ऐसी ही कोई अन्य वस्तु अवश्य लाना चाहिए। वास्तव में यह सब लक्ष्मी के प्रतीक हैं। खाली हाथ आना अशुभ होता है। हाथ में कुछ रहने से रिक्तता का दोष मिट जाता है। पता नहीं, किस वस्तु में लक्ष्मीजी ने उस समय निवास कर रखा हो। अत: यदि वे किसी भी रूप में घर आ गयीं, तो समृद्धि अपने-आप आ जाती है। गाँवों में हम देखते हैं कि लोग खेत-खलिहान से आते समय आम की टहनी, कोई फूल, एक लोटा जल, दातुनें अथवा ऐसी कोई अन्य वस्तु हाथ में अवश्य लिये रहते हैं।

इसके पीछे जाने-अनजाने उनकी यही वस्तु-तन्त्र की साधना प्रेरक रहती है। भले ही वे इसकी व्याख्या न कर सकें, पर ऐसा करना वे आवश्यक मानते हैं, कारण कि इसे उनके यहाँ परम्परागत मान्यता प्राप्त है। ऐसी वस्तुओं का प्रभाव यद्यपि बहुत सूक्ष्म होता है, किन्तु उसके अस्तित्व को झुठलाया नहीं जा सकता। वस्तु-तन्त्र का प्रभाव अकाट्य होता है।

चन्द्र-तन्त्र

किसी भी महीने की अष्टमी (शुक्ल पक्ष) के दिन सात्त्विक चर्या करके, सायंकाल चन्द्रमा उदय होने पर दही-भात अथवा खीर का नैवेद्य चन्द्रमा को अर्पित करें। सायंकाल स्नानोपरान्त धूप-दीप से चन्द्रदेव का पूजन करके नैवेद्य अर्पित करना चाहिए। लेकिन यह ध्यान रखें कि नैवेद्य या तो केले के पत्ते पर रखा जाय अथवा चांदी की कटोरी में। नैवेद्य प्रस्तुत करने के पश्चात् चन्द्रदेव की स्तुति में 21 बार चन्द्र-मन्त्र का जप करें (मन्त्र इसी पुस्तक में अन्यत्र देखें)। यह क्रम अष्टमी से प्रारम्भ करके पूर्णमासी तक प्रतिदिन पूरा करना चाहिए। पूर्णमासी के दिन व्रत रखें और किसी निर्धन को श्वेत-वस्त्र दान करें।

वस्त्र नया हो, और उपयोगिता की दृष्टि से छोटा न हो। रात में उस दिन का नैवेद्य, चन्द्रमा को अर्पित करने के बाद प्रसाद रूप में स्वयं ग्रहण करना चाहिए। किन्तु उस प्रसाद के अतिरिक्त उस दिन और कुछ भी खाना निषिद्ध है। प्रति मास अष्टमी से पूर्णिमा तक इस चन्द्र-यन्त्र की साधना करने से साधक को द्रव्य-लाभ होता है। ध्यान रहे कि ऐसा लाभ उन्हीं को होता है, जो किसी प्रकार का उद्यम-व्यवसाय करते हैं। रात्रि-कालीन व्यवसायों में इसका विशेष प्रभाव पड़ता है। निष्क्रिय, प्रमादी, उद्योग-रहित अथवा दुराचारी व्यक्ति को यह साधना अनुकूल नहीं होती।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

नैवेद्य-तन्त्र

यह एक अति सरल तन्त्र-प्रयोग है। इसके लिए शुक्ल पक्ष में प्रतिदिन सायंकाल चन्द्रमा को धूप-दीप देकर श्वेत पदार्थ का नैवेद्य अर्पित करें। नैवेद्य के पास ही दीपक जलाकर रख दें। यह क्रिया ऐसे स्थान पर की जानी चाहिए, जहाँ चन्द्रमा की किरणें आ रही हों। झरोखा, जीना अथवा छत पर जहाँ चाँदनी हो, वहीं नैवेद्य तथा दीपक रखें। अन्धेरे में अथवा चन्द्रमा के परोक्ष स्थान पर रखने से साधना निष्फल हो जाती है। नियमानुसार की गई यह साधना भी व्यवसायी, उद्यमी, रात्रि-कर्मचारी वर्ग को बहुत लाभप्रद सिद्ध होती है।

मार्जारी-तन्त्र

मार्जारी अर्थात् बिल्ली सिंह परिवार का जीव है। केवल आकार का अन्तर इसे सिंह से अलग करता है अन्यथा यह सर्वाङ्ग में सिंह का लघु-संस्करण है। प्रवृत्ति से हिंसक होकर भी यह जन्तु पालतू बन जाता है, जबकि सिंह की स्वच्छन्दता और प्रचण्ड हिंसा-भावना का दमन नहीं किया जा सकता। मार्जारी अर्थात् बिल्ली की दो श्रेणियाँ होती हैं—पालतू और जङ्गली। जङ्गली को वन-बिलार कहते हैं। यह आकार में बड़ा होता है, जबकि घरों में घूमने वाली बिल्लियाँ छोटी होती हैं। वन-बिलार को पालतू नहीं बनाया जा सकता, किन्तु घरों में घूमने वाली बिल्लियाँ पालतू हो जाती हैं।

अधिकतर यह जीव काले रङ्ग का होता है, किन्तु सफेद चित-कबरी और लाल (नारङ्गी) रङ्ग की बिल्लियाँ भी देखी जाती हैं। अस्तु, घरों में घूमने वाली बिल्ली (मादा) भी लक्ष्मी की कृपा प्राप्त कराने में सहायक होती है, किन्तु यह तन्त्र-प्रयोग दुर्लभ और अजात होने के कारण सर्व-साधारण के लिए लाभकर नहीं हो पाता। वैसे, यदि कोई व्यक्ति इस मार्जारी-तन्त्र का प्रयोग करे, तो निश्चित रूप से वह लाभान्वित हो सकता है। गाय, भैंस, बकरी की तरह लगभग सभी चौपाये मादा पशुओं के पेट से प्रसव के पश्चात् एक झिल्ली जैसी वस्तु निकलती है। वस्तुतः इसी झिल्ली में गर्भस्थ बच्चा आवरित रहता है।

बच्चे के जन्म के समय वह भी बच्चे के साथ बाहर आ जाती है। यह पॉलीथिन की थैली की तरह पारदर्शी, लिजलिजी, रक्त और पानी के मिश्रण से तर और देखने में घृणित होती है। सामान्यतः इसे आँवर अथवा नाल कहते हैं। इस नाल को तान्त्रिक-साधना में बहुत महत्त्व प्राप्त है। सभी की नाल का उपयोग

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बन्ध्यत्व-ग्रस्त अथवा मृतवत्सा-स्त्रियों के लिए परम हितकर माना गया है। वैसे, अन्य पशुओं की नाल के भी विविध उपयोग होते हैं।

अत: विषय-विस्तार न हो, इसीलिए यहाँ केवल मार्जारी (बिल्ली) की नाल का ही तान्त्रिक प्रयोग लिखा जा रहा है। जिसे सुलभ हो, इसका प्रयोग करके लक्ष्मी की कृपा प्राप्त कर सकता है। पालतू बिल्ली पर निगाह रखें। जब उसका प्रसव-काल निकट हो, उसके लिए रहने और खाने की ऐसी व्यवस्था करें कि वह आपके कमरे में ही बनी रहे। यह कुछ कठिन कार्य नहीं है, प्रेमपूर्वक पाली गई बिल्लियाँ तो कुर्सी, बिस्तरे और गोद तक में, बराबर मालिक के पास बैठी रहती हैं। उस पर बराबर निगाह रखें। जिस समय वह बच्चों को जन्म दे रही हो, सावधानी से उसकी रखवाली करें। बच्चों के जन्म के तुरन्त बाद ही उसके पेट से नाल (झिल्ली) निकलती है। स्वभावत: बिल्ली उसे खा जाती है। बहुत कम लोग ही उसे प्राप्त कर पाते हैं। उपाय यह है कि जैसे ही बिल्ली के पेट की नाल बाहर आये, उस पर कोई बड़ा कपड़ा, कम्बल, टाट या चादर फेंक दें। आशय यह है कि उसे ढँक दें। ढँक जाने पर बिल्ली उसे तुरन्त खा नहीं सकेगी। चूंकि प्रसव-पीड़ा के कारण वह कुछ शिथिल भी रहती है, इसलिए तेजी से झपट भी नहीं सकती। जैसे भी हो, प्रसव के बाद नाल को उठा लेना चाहिए।

फिर उसे धूप में सुखाकर प्रयोजनीय रूप दिया जाता है। धूप में सुखाते समय भी उसकी रखवाली में सतर्कता आवश्यक है अन्यथा कौवा, चील, कुत्ता आदि कोई भी उसे उठाकर ले जा सकता है। तेज धूप में दो-तीन दिनों तक रखने से वह चमड़े की तरह सूख जायेगी। सूख जाने पर उसके चौकोर टुकड़े (दो या तीन वर्ग इंच के या जैसी भी सुविधा हो) कर लें और उन पर हल्दी लगाकर रख दें। हल्दी का चूर्ण अथवा लेप कुछ भी लगाया जा सकता है। यदि लेप लगाया है, तो उसे फिर से सुखा लेना चाहिए। इस प्रकार हल्दी लगा हुआ बिल्ली की नाल का टुकड़ा लक्ष्मी-तन्त्र का अचूक घटक होता है। तन्त्र-साधना के लिए किसी शुभ-मुहूर्त में स्नान-पूजा करके शुद्ध स्थान पर बैठ जायें और हल्दी लगा हुआ नाल का एक सूखा टुकड़ा बायें हाथ में लेकर मुट्ठी बन्द कर लें और लक्ष्मी, रुपया, सोना, चाँदी अथवा किसी आभूषण का ध्यान करते हुए 54 बार यह मन्त्र पढ़ें—'**मर्जबान उल किस्ता।**'

इसके पश्चात् उसे माथे से लगाकर अपने सन्दूक, पिटारी, बैग या जहाँ भी रुपये-पैसे या जेवर रखते हों, रखदें। कुछ ही समय बाद आश्चर्यजनक रूप से

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

श्री-सम्पत्ति की वृद्धि होने लगती है। इस नाल-तन्त्र का प्रभाव विशेष रूप से धातु-लाभ (सोना-चाँदी की प्राप्ति) कराता है।

यदि किसी के पास ऐसी नाल हो, तो उसका एक टुकड़ा किसी अन्य व्यक्ति को देकर उसे भी समृद्धि का मार्ग बता सकता है।

इस सन्दर्भ में मैं अपने अनुभव का उल्लेख करना चाहूंगा—मेरे निकटतम दो परिवारों में (ननिहाल और ससुराल) बिल्ली की नालें प्राप्त की गयीं और यह एक आश्चर्यजनक सत्य है कि वे दोनों परिवार थोड़े ही समय पश्चात् आर्थिक दृष्टि से बहुत सम्पन्न हो गये। उन्हें सोने-चाँदी का पर्याप्त लाभ हुआ। उपलब्धि के माध्यम ऐसे अकल्पित और आकस्मिक थे कि सहसा विश्वास ही नहीं हो रहा था। किन्तु सत्य सदैव सत्य रहता है। मार्जारी-तन्त्र का प्रभाव उन परिवारों को धन-सम्पन्न बनाने में पूर्ण सक्रिय रहा।

अश्वी जिह्वा तन्त्र

घोड़ी की शारीरिक-संरचना में कुछ ऐसा वैचित्र्य है कि प्रसव के समय उसकी जीभ का अग्र-भाग अपने-आप गिर जाता है। यह भी दुर्लभ वस्तु है, कारण कि एक तो घोड़े-घोड़ी पालने का रिवाज ही समाप्त हो गया है, दूसरे जहाँ कहीं घोड़ी हो भी, तो उसके प्रसव के समय वहाँ उपस्थित रहने का संयोग ही नहीं बन पाता। फिर भी प्रयास से सब कुछ सम्भव है। मार्जारी की भाँति घोड़ी की भी लगातार देखभाल की जाय, तो प्रसव के समय उसके मुँह से गिरी हुई जीभ प्राप्त हो जाती है। विचित्र बात यह है कि गिरी हुई जीभ के स्थान पर उसके नयी जीभ आ जाती है। अस्तु, ठीक बिल्ली की नाल की तरह उसे भी सुखाकर और हल्दी लगाकर रख देना चाहिए। यह जीभ बहुत समृद्धिदायक मानी गई है।

किसी शुभ-मुहूर्त में उस जीभ को धूप-दीप देकर लक्ष्मीजी का ध्यान करते हुए बटुए में, भण्डार में, कोष में अथवा जेवरों की पिटारी में रख देना चाहिए। उसके प्रभाव से घर में धन-धान्य की वृद्धि होने लगती है। मेरे गाँव में एक लाला नामक नाई थे। वे सदा घोड़ी पालते थे। उन्हें इस तन्त्र का ज्ञान था, इसलिए वे प्रयास करके जीभ प्राप्त कर लेते थे। उनके पास कई जीभें संग्रहीत थीं। और, यह भी सत्य है कि वे धन-सम्पत्ति की दृष्टि से एक सम्पन्न व्यक्ति हो गये थे।

अश्व-नाल-तन्त्र

नाखून और तलवे की रक्षा के लिए प्रायः घोड़े के पैर में लोहे की नाल जड़वा देते हैं। विशेष रूप में इक्के ताँगे में जुतने वाले घोड़ों के अवश्य ही नाल

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जड़ी जाती है, क्योंकि उन्हें प्रतिदिन पक्की सड़कों पर दौड़ना पड़ता है। यह नाल भी बहुत प्रभाव-सम्पन्न होती है। दारिद्र्य-निवारण के लिए इसका प्रयोग अनेक प्राचीन ग्रन्थों में वर्णित है। घोड़े की नाल तभी प्रयोजनीय होती है, जब वह अपने आप घोड़े के पैर से उखड़कर गिरी हो और शनिवार के दिन किसी को प्राप्त हो। अन्य दिनों में मिली हुई नाल प्रभावहीन मानी जाती है। शनिवार को अपने-आप राह चलते कहीं ऐसी नाल दीख जाये, भले ही वह घोड़े के पैर से कभी भी गिरी हो, तो उसे प्रणाम करके 'ॐ श्री शनिदेवाय नमः' का उच्चारण करते हुए उठा लेना चाहिए।

शनिवार को इस प्रकार प्राप्त नाल लाकर घर में न रखे, उसे बाहर ही कहीं सुरक्षित छिपा दें। दूसरे दिन रविवार को इसे लेकर सुनार के पास जाये और उसमें से एक टुकड़ा कटवाकर उसमें थोड़ा ताँबा मिलवा दें। ऐसी मिश्रित धातु (लौह-ताम्र) की अँगूठी बनवायें और उस पर नगीने के स्थान पर 'शिवमस्तु' अङ्कित करा दें। इसके पश्चात् उसे घर लाकर, देव-प्रतिमा की भाँति पूजें और पूजा की अलमारी में, आसन पर प्रतिष्ठित कर दें। आसन का वस्त्र नीला होना चाहिए। एक सप्ताह बाद अगले शनिवार को शनिदेव का व्रत रखें। सन्ध्या-समय पीपल के वृक्ष के नीचे शनिदेव की पूजा करें और तेल का दीपक जलाकर, शनि-मन्त्र 'ॐ शं शनैश्चराय नमः' का जप करें।

एक माला जप के पश्चात् पुनः अँगूठी को उठायें और 7 बार यही मन्त्र पढ़ते हुए पीपल की जड़ से स्पर्श कराकर उसे पहनलें। यह अँगूठी बीच की या उसके बगल की (मध्यमा अथवा अनामिका) उँगली में पहननी चाहिए। उस दिन केवल एक बार, सन्ध्या को पूजनोपरान्त भोजन करें। और, सम्भव हो तो प्रति शनिवार को व्रत रखकर पीपल के वृक्ष के नीचे शनि देव की पूजा करते रहें। कम-से-कम सात शनिवारों तक ऐसा कर लिया जाय तो विशेष लाभ होता है।

ऐसे व्यक्ति को यथासम्भव नीले रङ्ग के वस्त्र पहनने चाहिए। और कुछ न हो सके तो नीला रूमाल या अँगोछा ही पास रखा जा सकता है। इस अश्व-नाल से बनी मुद्रिका को साक्षात् शनिदेव की कृपा के रूप में समझना चाहिए। इसके धारक को बहुत थोड़े समय में ही धन-धान्य की सम्पन्नता प्राप्त हो जाती है। दरिद्रता का निवारण करके घर में वैभव सम्पत्ति का संग्रह करने में यह अँगूठी चमत्कारिक प्रभाव दिखाती है।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

नकुल (नेवला) तन्त्र

नकुल नेवला नामक जन्तु वैसे तो जङ्गली है, किन्तु गाँवों और शहरों में आबादी के बीच भी पाया जाता है। यह प्रायः खण्डहरों में रहता है और भोजन की खोज में घरों में भी आ जाता है।

नेवला मार्ग में मिल जाय, रास्ता काट जाय, रास्ते के बीच या दायें-बायें खड़ा हो जाय और व्यक्ति की ओर देखकर मुँह खोले अथवा बोल दे— सभी लक्षण बहुत शुभ माने गये हैं।

कहा जाता है कि नकुल साक्षात् नारायण का सन्देशवाहक है। वह जिसे दीख जाये, मानो भगवान् विष्णु की कृपा का सन्देश दे रहा है। अज्ञानतावश लोग ऐसे दृश्य का लाभ उठा नहीं पाते, किन्तु यदि तान्त्रिक-विधि से ऐसे नकुल-दर्शन की साधना की जाय तो निश्चित रूप से भगवान विष्णु और उनकी शक्ति श्री लक्ष्मीजी की कृपा साधक को प्राप्त हो जाती है। कहीं जाते समय यदि नेवले का दर्शन हो जाय, तो आगे न जाकर, तुरन्त वहीं लौट आयें और हाथ-पैर धोकर या स्नान करके इष्टदेवता की मूर्ति (चित्र) के सम्मुख बैठकर नौ अगरबत्ती या धूपबत्ती जलायें और परम तन्मय-भाव से भगवान विष्णु का स्मरण करें। यदि माला हो, तो उस पर अथवा ऐसे ही, बिना माला की गणना किये, भगवान विष्णु का यह मन्त्र जपना शुरु कर दें।

'ॐ नमो नारायणाय'

इसकी जप संख्या यही है कि जब अगरबत्तियाँ बुझ जायँ, तब जप की पूर्णता मानी जाती है। जप के उपरान्त, यदि उपलब्ध हों तो पुष्प भी, अन्यथा केवल दीपक द्वारा मूर्ति की पूजा करें। यह उपासना, यह तांत्रिक-प्रयोग विष्णु और लक्ष्मी की कृपा प्राप्त करने में बहुत सहायक होता है। यों यदि आप किसी यात्रा पर हैं और आगे जाना आवश्यक है, तो नकुल-दर्शन के पश्चात् तुरन्त उसे प्रणाम करें और उक्त मन्त्र का जाप करते हुए, गन्तव्य-स्थान की ओर बढ़ जायें। निश्चित रूप से यात्रा सफल और लाभदायक रहेगी।

ताम्र-सप्तक-तन्त्र

इसके द्वारा सामान्य व्यक्ति भी अपने घर को लक्ष्मी का निवास-स्थान बना सकता है। इस साधना के प्रभाव से धन-धान्य की वृद्धि होती है, दुःख-दारिद्र्य दूर हो जाता है। और भौतिक-दृष्टि से सामान्य निर्वाह की सुविधाएं स्वतः

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

उपलब्ध हो जाती हैं। यह साधना वर्ष में केवल एक दिन अपना पूर्ण प्रभाव रखती है—चैत्र शुक्ला प्रतिपदा के दिन। यदि ऐसा सम्भव नहीं है, बीच में ही करना आवश्यक है तो किसी शुभ-मुहूर्त वाले बुधवार के दिन भी की जा सकती है। इस तन्त्र की विधि इस प्रकार है—

ताँबे का पैसा (ताम्रपत्र का गोल टुकड़ा), ताँबे की पादुकाएं (खड़ाऊँ अथवा पैर के तलवे के आकार के कटे हुए ताम्रपत्र के छोटे टुकड़े), एक मुट्ठी नया गेहूँ, एक गाँठ समूची नयी हल्दी, एक बड़ी हर्र, एक बड़ा टुकड़ा नमक, एक मुट्ठी नागकेसर ये सातों वस्तुएं हल्दी द्वारा रँगे गये, नये पीले कपड़े में बाँधकर उस पोटली की चन्दन, पुष्प, अक्षत, धूप, दीप से पूजा करके, इष्टदेवता का स्मरण करते हुए, रसोई-घर में, भण्डार में अथवा अन्य किसी श्रेष्ठ स्थान में लटका दें।

यह पोटली धन-धान्य और वैभव की प्राप्ति कराने में परम सहायक होती है। पूरे वर्ष तक इसका प्रभाव बना रहता है। अगले वर्ष फिर यही क्रिया करें और पुरानी पोटली को किसी स्थान (नदी-तालाब) में विसर्जित कर दें। इस साधना के द्वारा सामान्य व्यक्ति भी अपने भौतिक-अभाव को दूर कर सकते हैं।

अडार-तन्त्र

अडार का अर्थ है-कूड़ा-करकट, फटी-पुरानी रद्दी वस्तुएं, टूटे-फूटे बर्तन और जीर्ण-क्षीर्ण कपड़े आदि। ये सब दरिद्रता के निवास-स्थल हैं। दरिद्रता और लक्ष्मी में परम्परागत वैमनस्य है। दोनों का एक साथ रहना सम्भव नहीं। अतः लक्ष्मी के उपासकों को चाहिए कि वे अडार से घर को मुक्त रखें। अडार न रहने पर दरिद्रता स्वयं ही चली जायेगी, क्योंकि उसे अडार में ही सुख मिलता है। दरिद्रता का पलायन लक्ष्मी के आगमन का मार्ग प्रशस्त करता है। अतः दारिद्रय-निवारण और लक्ष्मी-प्राप्ति के लिए अडार-तन्त्र की साधना करनी चाहिए। स्मरण रहे कि यह साधना मुख्यतः स्त्रियों (गृहणियों) के द्वारा की जाती है। जिस घर में स्त्री न हो, वहाँ पुरुष भी कर सकते हैं। अडार-तन्त्र का परिणाम थोड़े दिनों में ही अपना प्रभाव दिखाने लगता है।

प्रत्येक शनिवार और अमावस्या के दिन पूरे घर की सफाई करें। वैसे तो रोज ही झाड़ा-बुहारी होती है, पर शनि और अमावस को विशेषरूप से पूरे मकान की, कौने-कौने की सफाई करें। मकड़ी का जाला, धूल, फूटे बर्तन, फटे कपड़े, रद्दी, अप्रयोजनीय कागज, टूटे-फूटे खिलौने, पीपे, बक्स, फर्नीचर तथा इस प्रकार की

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अन्य गृहस्थी की वे वस्तुएं जो घर में हों, किन्तु प्रयोजनीय न रह गई हों, जिनका रूप विकृत हो गया हो, उन्हें निकाल कर घर के बाहर, दूर कहीं फेंक दें। पूरे घर में झाड़ू लगायें, यथासम्भव लिपाई-पुताई या फर्श की धुलाई करें। अलमारी, खिलौने, फर्नीचर, किताबें, फोटो आदि कपड़े से रगड़कर साफ करें। बर्तनों को मांज-धोकर चमका लें, बिखरी हुई वस्तुओं को सहेज कर यथास्थान रख दें और गूगल, लोबान, अगरबत्ती, धूपबत्ती अथवा घी-गुड़ के धुएं से पूरे मकान को शुद्ध करें।

सायंकाल घर में जितने भी प्रकाश-यन्त्र (लालटेन, चिमनी, कुप्पी, दीपक, बल्ब, ट्यूब-लाइट, कन्दील आदि) हों, उन्हें थोड़ी देर के लिए जला दें। कम से कम दो-तीन दीपक सभी घरों में रहते हैं, उन्हें जलाकर घर में इस तरह रखें कि सर्वत्र प्रकाश फैल जाय, अन्धेरा न रहने पाये। यथा-स्थान ऐसी प्रकाश-समस्या 10-5 मिनट अथवा 2-3 घण्टे तक के लिए की जा सकती है। बाद में अन्य प्रकाश-यन्त्रों को बुझाकर, एक मुख्य प्रकाश-यन्त्र को रातभर जला रहने दें।

यहां यह भी स्मरण रखना चाहिए कि दीपक को कभी फूंक से न बुझायें। मुंह से फूंक मारकर दीपक बुझाना निषेध है। किसी वस्त्र या हाथ के माध्यम से हवा का झोंका मारकर ही उसे बुझाना चाहिए। इस क्रम में यह अनिवार्य नियम है कि दीपक से कुछ जलायें नहीं। बहुधा स्त्रियां माचिस की बचत के कारण दीपक से ही लौ लेकर चूल्हा, तपता आदि जलाती हैं। यह बहुत ही अमंगलकारी होता है। इस क्रिया से दरिद्रता, ऋण, अभाव और श्री-हानि की वृद्धि होती है। अतः दीपक से भूलकर भी कोई अग्नि-प्रयोग न करें। उसके लिए अलग से माचिस या अंगारों का प्रयोग करना चाहिए।

इस प्रकार प्रत्येक शनि और अमावस्या के दिन घर का कूड़ा-कचरा, रद्दी सामान बाहर फेकंना, फर्श की धुलाई (लिपाई-पुताई) करना, सायं पूरे घर को प्रकाशित करना तथा समस्त वस्तुओं को झाड़-पोंछ कर यथा-क्रम व्यवस्थित रूप से रखना— यही अडार तन्त्र है।

इसका नियमित पालन करने से कुछ ही दिनों बाद घर में दिरद्रता-नाश और श्री-समृद्धि का आभास होने लगता है। अडार-तन्त्र की साधना जिस दिन प्रारम्भ करें, उस दिन एक झाड़ू (नया छोटा-सा) लाकर सफाई-लिपाई के बाद घर के मुख्य द्वार पर पीछे की ओर (अन्दर की ओर किवाड़ों के बगल में) कील के

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सहारे लटका दें। यह प्रयोग दरिद्रता को घर में पुनः प्रविष्ट होने से रोक देता है। वह झाड़ू सदैव वहां टंगा रहने दें।

अशोक-तन्त्र

किसी भी शिवरात्रि अथवा सोमवार के दिन स्नानोपरान्त शुद्ध होकर अशोक-वृक्ष के पास जायें। उसके नीचे की (जड़ के पास की) थोड़ी-सी मिट्टी किसी पात्र में ले आयें। ध्यान रहे कि इस साधना में आदि से अन्त तक 'ॐ नमः शिवाय' मन्त्र का मौन-जप करते रहना आवश्यक है। अशोक-वृक्ष के पास जाने के लिए घर से प्रस्थान करते समय ही मन्त्र जप प्रारम्भ कर दें और फिर साधना पूरी होने तक निरन्तर जप करते रहें, बीच में किसी से बातचीत न करें। मिट्टी प्राप्त करने के बाद घर आयें और पहले से स्वच्छ शुद्ध की हुई एकान्त पवित्र जगह पर उसे रख दें। यदि मिट्टी ढेलेदार है तो उसे कूटकर छलनी से छानकर चूर्ण जैसी महीन बना लें। इस चूर्ण को शुद्ध थाली में रखें। उसमें केसर के 1-2 रेशे, केवड़े के इत्र की एक बूंद, नागकेसर, सफ़ेद चन्दन का चूर्ण मिलादें फिर उसे गाय के दूध में सानकर आटे की लोई जैसा गोला बनायें। दूध यदि काली गाय का हो तो विशेष उत्तम है, अन्यथा किसी भी गाय का दूध ले सकते हैं।

केसर, चन्दन, इत्र, दूध, नागकेसर—यह सब पहले से लेकर रख लेना चाहिए। बेलपत्र भी आवश्यक हैं। बेलपत्रों की संख्या 108 होनी चाहिए और प्रत्येक बेलपत्र के तीन पत्ते होने आवश्यक हैं। कोई पत्ता कटा-फटा, टूटा, जीर्ण अथवा विकृत न हो। उसे एक-एक परख कर ही रखें। मिल सकें तो धतूरा या मदार के पुष्प भी ले आयें—ये सब पूजा के लिए आवश्यक और प्रभावी उपादान हैं।

उपरोक्त विधि से निर्मित मिट्टी की लोई से शिवजी की प्रतिमा (शिव-लिङ्ग) की रचना करें। उसे लकड़ी के पट्टे पर श्वेत-वस्त्र बिछाकर, उस पर प्रतिष्ठित करें और ठीक शिव-प्रतिमा की भाँति उसे शुद्ध जल (गङ्गाजल हो तो अति उत्तम) से स्नान कराकर चन्दन, पुष्प, अक्षत, धूप, दीप से पूजा करें। इस समस्त पूजन-प्रक्रिया के मध्य 'ॐ नमः शिवाय' का मन्त्र अविच्छिन्न गति से जपते रहें।

पूजा के समय बेलपत्र विशेष सावधानी से अर्पित करें। प्रतिमा पर 1-1 करके बेलपत्र चढ़ायें और हर बार 'ॐ नमः शिवाय' का उच्चारण करें। प्रतिमा और उसका आसन ऐसे ढंग से स्थापित करें कि बेलपत्र या पुष्प सरक कर नीचे न

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गिरें। प्रतिमा का जैसा शृङ्गार आप करें, वह उसी रूप में सज्जित रहे। पूजा के पश्चात् रुद्राक्ष की माला पर उपरोक्त मन्त्र का जप करें। जप-संख्या अपनी सामर्थ्यानुसार ही निश्चित कर लें, परन्त 1, 5, 7, 11 अथवा 21 माला जपें। तदुपरान्त प्रतिमा को प्रणाम करके दैनिक कार्यों में लग जायें।

इन दिन उपवास रखें, काम-क्रोध, ईर्ष्या, द्वेष से मुक्त रहकर परम शान्ति के साथ अपनी दैनिक-चर्या करें। भोजन के लिए दूध-फल आदि का प्रयोग करें। अन्न, नमक, तेल आदि का सेवन वर्जित है। सायंकाल शुद्ध होकर उस प्रतिमा की आरती करें और पुष्प-बेलपत्र आदि उतार कर कहीं सुरक्षित रख दें। अगले दिन से नित्य उस शिव-लिङ्ग की सामान्य पूजा करते रहें, और सोमवार आने पर पुनः प्रथम दिवस की भाँति विधिवत् 108 बेलपत्र द्वारा उसका पूजन करें। सम्भव हो तो प्रतिदिन भी इसी विधि से कर सकते हैं। इस प्रकार सात सोमवारों तक यह पूजा करनी चाहिए। प्रत्येक सोमवार को प्रथम दिन वाले विधि-विधान का पालन करना आवश्यक है। प्रतिमा केवल एक बार (प्रथम सोमवार को) ही बनाई जाती है, शेष पूजन-प्रक्रिया सबमें समान रहती है।

प्रत्येक सोमवार की संध्या को आरती के पश्चात् उतारे गये बेलपत्र और पुष्प एक कपड़े की थैली में संग्रहीत करते रहें। सातवें सोमवार को पूजा के पश्चात् नैवद्य अर्पित करें। नैवेद्य के लिए सिंघाड़े अथवा मेवाओं की खीर बनायी जाती है। सामर्थ्य के अनुसार कोई भी फलाहारी-व्यवस्था कर सकते हैं। सायंकाल पुनः आरती करें और बेलपत्र उतार कर थैली में रख लें। ध्यान रहे कि प्रति सोमवार के बेलपत्रों की पोटली अलग-अलग होनी चाहिए।

अन्तिम सोमवार को सायंकाल आरती के पश्चात् प्रत्येक पोटली से 1-1 बेलपत्र ले लें और उन्हें (सात दिन के सात बेलपत्र) एक पीतल या ताँबे की डिबिया में रख लें। शेष बेलपत्र (सातों पोटलियाँ) बाद में किसी नदी-तालाब या पवित्र स्थान में विसर्जित कर दें। वह प्रतिमा कहीं सुरक्षित रख लें और उसकी दैनिक-पूजा करें। ऐसा सम्भव न हो तो उसे किसी शिवालय में स्थापित कर दें अथवा किसी जलाशय में विसर्जित कर दें।

इस पूरी साधना में सात सप्ताह लगते हैं। सात सोमवारों तक परम आस्था, पवित्रता और नियमपूर्वक यह पूजा कर लेने पर साधक को चमत्कारी ढङ्ग से लाभ की अनुभूति होती है। शेष बचाकर रखे गये सात बेलपत्र इस साधना का

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सार-तत्व होते हैं। उस डिब्बी की प्रतिदिन धूप-दीप से पूजा करनी चाहिए। उसका दर्शन, स्पर्श, पूजन परम लाभदायक होता है। अशोक-तन्त्र की यह साधना घर में भौतिक-समृद्धि ले आती है। दरिद्रता को दूर करके साधक को धन, वैभव, सम्मान, शान्ति और सौख्य प्रदान करने में यह परम समर्थ है। सहज और सरल भी है।

थोड़े में ही सारी वस्तुओं की व्यवस्था की जा सकती है। इसमें न तो कोई मूल्यवान् वस्तु प्रयुक्त होती है और न साधना पद्धति में ही कोई जटिलता है। आस्था और लगन के द्वारा कोई भी साधक इस तन्त्र का लाभ उठा सकता है। शारीरिक रोग, अर्थ-सङ्कट, भय, उपेक्षा और दरिद्रता जैसी दु:खदायी स्थितियों से मुक्त करके साधक को सुखी, सन्तुष्ट और सन्तुलित बनाने में यह अशोक-तन्त्र आश्चर्यजनक प्रभाव दिखाता है। ऋण-मुक्ति और भाग्योदय के लिए यह बहुत ही श्रेष्ठ साधना है।

हरिद्रा-तन्त्र

हरिद्रा का प्रचलित नाम 'हल्दी' है। यह पौधे की जड़ है और मसाले के रूप में लगभग सभी परिवारों में इस्तेमाल होती है। जहाँ इसका प्रयोग खाद्य-पदार्थों को शोभनीय पीला रङ्ग प्रदान करता है, वहीं इसके औषधीय-गुण भी अनेक प्रकार से शरीर का पोषण करते हैं। किन्तु यह बहुत कम लोगों को ज्ञात है कि हल्दी में आध्यात्मिक प्रभाव भी निहित रहता है। यह इसकी दिव्यता का प्रमाण है कि विभिन्न पूजन-प्रयोगों में अक्षत-चन्दन की भाँति इसे भी विशेष महत्त्व दिया जाता है। विष निवारक, श्री-सौख्यवर्द्धक, सौभाग्य और शान्तिदायक हल्दी, वस्तुत: भगवान विष्णु की परम-प्रिय वस्तु है, और इस नाते यह जहाँ भी रहती है— लक्ष्मी का आह्वान करती है।

हल्दी कई तरह की होती है। एक हल्दी खाने के काम में नहीं आती, पर चोट-चपेट और दूसरे औषधीय-गुणों में उसे महत्त्व दिया जाता है। रङ्ग में सभी पीली होती हैं और पवित्रता का तत्त्व सभी में होता है। हमारे दैनिक-प्रयोग में आने वाली हल्दी पीली (बसन्ती) और लाल (नारङ्गी) दो प्रकार की होती हैं। हालाँकि यह वर्ण-भेद सूक्ष्म होता है, सामान्य-दृष्टि में वह पीली ही दीख पड़ती है। इसी में कोई-कोई गाँठ काले रङ्ग की निकल आती है। हालाँकि ऐसा कदाचित् ही कभी होता है, किन्तु यदि किसी से वह काली हल्दी की गाँठ प्राप्त

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हो जाय, तो समझना चाहिए कि उसे लक्ष्मी-प्राप्ति का एक श्रेष्ठ दैवी-साधन मिल गया है।

यह काली हल्दी (गहरे कत्थई रङ्ग की) देखने में जितनी कुरूप, अनाकर्षक और अनुपयोगी प्रतीत होती है, वस्तुत: वह उतनी ही अधिक मूल्यवान्, दुर्लभ और दिव्य-गुण-युक्त होती है। यदि किसी को ऐसी हल्दी प्राप्त हो जाय, तो उसे घर लाकर दैनिक पूजा के स्थान पर रखदें। यह जहाँ भी रहती है, सहज ही वहाँ श्री-समृद्धि का आगमन होने लगता है। इसे नये पवित्र कपड़े में अक्षत और चाँदी के टुकड़े अथवा किसी सिक्के के साथ रखकर गाँठ बाँध दें और धूप-दीप से पूजा करके गल्ले या बक्से में रख दें, तो आश्चर्यजनक अर्थ-लाभ होने लगता है। व्यापारी-वर्ग इसे गल्ले (पैसों की थैली या तिजोरी) में रखते हैं।

लक्ष्मी-साधना के अन्तर्गत इस हरिद्रा-तन्त्र की विधि यह है कि किसी अष्टमी के दिन से इसकी पूजा आरम्भ करें। सर्वप्रथम प्रात: उठकर नित्यकर्म से निवृत्त हो, ठीक सूर्योदय के समय, पूर्व की ओर मुँह करके आसन पर बैठें, तत्पश्चात् इस हल्दी की गाँठ को धूप-दीप देकर नमस्कार करें। यह क्रिया ठीक सूर्योदय के समय की जाती है, परन्तु स्थान ऐसा हो कि साधक सूर्यनारायण का दर्शन कर सके। उदय होते हुए सूर्यनारायण को नमस्कार करके, सामने आसन पर प्रतिष्ठित हरिद्रा-खण्ड (हल्दी की गाँठ) को नमस्कार करते हुए—माला के सहारे 108 बार इस मन्त्र का जप करना चाहिए— 'ॐ ह्रीं सूर्याय नम:'

उपरोक्त विधि से प्रतिदिन इसकी पूजा की जाय तो बहुत लाभ होता है। अष्टमी के दिन उपवास रखकर, विशेष रूप से पूजा करनी चाहिए। उस दिन व्रत रखने, फलाहार करने, यथाशक्ति कुछ दान-पुण्य करने से इसका विशेष प्रभाव दृष्टिगोचर होता है। हरिद्रा-तन्त्र की साधना में यह तथ्य स्मरण रखना चाहिए कि इसके साधक के लिए—मूली, गाजर और जमींकन्द (सूरन) का प्रयोग वर्जित है। अत: खाद्य रूप में इनका सेवन नहीं करना चाहिए।

स्मरण रहे कि काली हल्दी का प्रयोग केवल इसी रूप में होता है—तान्त्रिक-साधना के रूप में। अन्यत्र जहां कहीं हल्दी के सन्दर्भ में कोई प्रयोग लिखा हो, वहाँ सामान्य पीली-हल्दी ही उपयुक्त होती है। यदि कहीं दारु-हल्दी, आंवा-हल्दी या काली-हल्दी का स्पष्ट निर्देश प्राप्त होता है, तो वहां तदनुसार, अन्यथा सामान्य स्थिति में प्रचलित पीली-हल्दी का ही प्रयोग करना चाहिए। पुखराज रत्न के पूरक के रूप में, विष्णु-प्रतिमा के अलङ्करण में तथा अन्य

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

माङ्गलिक कार्यों में पीली हल्दी का प्रयोग किया जाता है। कहीं-कहीं कच्ची हल्दी (हरी गांठ) भी प्रयुक्त होती है।

वट-लता-तन्त्र

बागों अथवा जंगलों में उगे हुए बरगद-वृक्षों पर प्राय: कुछ अन्य लताएं भी चढ़ी हुई दिखाई पड़ती हैं। ये लताएं बरगद के वृक्ष के आस-पास ही भूमि पर उगती हैं और उसके तने से लिपटकर ऊपर शाखाओं तक पहुंच जाती हैं। ऐसी लता बहुत प्रभावशाली होती है। हालांकि यह जल्दी प्राप्त नहीं होती, तो भी खोज करने से मिल जाती है। बरसात के दिनों में (सावन से क्वार तक) ऐसी लताएं सरलता से प्राप्त हो सकती हैं। किसी पूर्णमासी की रात में बरगद-वृक्ष से लिपटी लता की जड़ खोदकर निकालें। उसका 4-5 अंगुल लम्बा टुकड़ा काटकर ले आयें। उसे धोकर पवित्र स्थान में रखें और उस पर नागकेसर चढ़ाकर धूप-दीप दें। इसके पश्चात् प्रतिदिन देव-प्रतिमा की भाँति उसकी पूजा करते हुए धूप-दीप देते रहें।

यह साधना धन-सम्पदा की वृद्धि करती है। एक वर्ष के भीतर इसका प्रभाव स्पष्ट रूप से सामने आ जाता है। किन्तु प्रतिबन्ध यह है कि कोई अपवित्र व्यक्ति उस लता-बड़ को छुए नहीं। आध्यात्मिक-साधना के आस्था और शुचिता अनिवार्य अंग हैं। इनके बिना कोई भी क्रिया सफल नहीं हो पाती। अत: साधक को इस ओर विशेष रूप से सजग रहना चाहिए।

कचनार-तन्त्र

कचनार वृक्ष के पुष्प अपनी सुन्दरता के लिए प्रसिद्ध हैं। ये पुष्प प्राय: दो रंगों में प्राप्त होते हैं—श्वेत और बैगनी। कचनार का पंचांग (पौधे के पांचों अंग) औषधीय प्रयोग के लिए प्रसिद्ध हैं। विभिन्न रोगों के शमन हेतु कचनार की उपयोगिता आयुर्वेद-ग्रन्थों में बड़े विस्तार से वर्णित है। तन्त्र-साधना में भी इसे महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। लक्ष्मी-तन्त्र के अन्तर्गत कचनार की पत्तियों को परम उपयोगी बताया गया है। इस तन्त्र की साधना-विधि इस प्रकार है—

विजया दशमी (दशहरे) के दिन किसी सौभाग्यशाली, सदाचार, कुलीन, श्रेष्ठ धनाढ्य-व्यक्ति से विनयपूर्वक कचनार की 5, 7, 11 पत्तियां तुड़वायें और उसी के हाथों वे पत्तियाँ प्रसाद रूप में ग्रहण करें। स्मरण रहे कि पत्तियाँ तोड़ते समय उस व्यक्ति का मुंह भी पूर्व की ओर हो। इसी प्रकार पत्तियाँ ग्रहण करते समय साधक का मुंह पूर्व की ओर होना चाहिए। कचनार की उन पत्तियों को घर

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ले आएं और चाँदी या पीतल की डिब्बी में रखकर उनकी प्रतिदिन देव-प्रतिमा की तरह पूजा करें। उस डिब्बी को देव-स्थान में ही रखें।

यदि घर में देव-स्थान नहीं है, तो किसी एकान्त आले-अलमारी में शुद्धतापूर्वक उसे प्रतिष्ठित कर दें और वहीं नित्य उसकी धूप-दीप से पूजा करें। यह कांचनार-तन्त्र द्रव्य-दायक होता है। इसकी साधना के फलस्वरूप घर में धन-धान्य की वृद्धि होने लगती है। लक्ष्मी-प्राप्ति, दरिद्र-निवारण और वैभव-सम्पदा के लिए यह एक अति सरल और सहज-साध्य तन्त्र है।

मुद्रा-तन्त्र

जिस दिन अमावस्या की तिथि शनिवार को पड़ रही हो, उस दिन (शनिवार को) प्रातः सूर्योदय से पूर्व ही स्नान करके घर से उत्तर की ओर स्थित पीपल अथवा बरगद के पेड़ के पास जाकर उसकी प्रार्थना करते हुए, एक बड़ा-सा पत्ता तोड़ लायें। पत्ता भूमि पर नहीं गिरना चाहिए। उसे घर लाकर देव-स्थान में स्नान कराकर आसन पर स्थापित कर दें। फिर नागकेसर को पानी में चन्दन की भांति पीसकर उसके लेप से उस पत्ते पर मन्त्र लिखें। मन्त्र लिखने के लिए लेखनी (कलम) के रूप में दूर्वा-दण्ड (दूब-घास का टुकड़ा) का प्रयोग करना चाहिए। यह समस्त साधना पूर्वाभिमुख होकर ही करें। पत्ते पर लिखा जाने वाला मन्त्र इस प्रकार है—'शान्तिरस्तु, पुष्टिरस्तु, तुष्टिरस्तु' मन्त्र-लेखन के पश्चात् उस पत्ते की चन्दन, कुमकुम, पुष्प, दूप, दीप आदि से पूजा करें।

पूजा के बाद उस पत्ते को अपने इष्टदेवता का स्मरण करते हुए, किसी धर्म-ग्रन्थ—रामायण, गीता, दुर्गा-सप्तशती, भागवत अथवा अन्य किसी पुराण आदि में रख दें। उसके बाद प्रत्येक शनिवार को प्रातः यही साधना, इसी प्रकार करें। लगातार सात सप्ताह तक प्रत्येक शनिवार (कुल सात शनिवारों में) यह पूजा इसी प्रकार करनी चाहिए। अन्तर केवल यही है कि हर अगले शनिवार को पूजा के बाद वह पत्ता ग्रन्थ में उसी जगह रख दिया जाता है, जहां पहले वाला (पिछले शनिवार वाला) पत्ता रखा था। उसे रखने के पूर्व पिछला पत्ता निकाल लेना चाहिए।

पूजा समाप्त होने पर वह पिछली बार वाला पत्ता किसी नदी-तालाब जैसे एकान्त पवित्र स्थान में विसर्जित कर दें। कुल सात शनिवारों तक यह साधना की जाती है। सातवें शनिवार को अन्तिम अर्थात् सातवें पत्ते को ग्रन्थ में न रखकर आसन पर ही रहने दें और उस पर कोई मुद्रा (रुपया, पैसा, अठन्नी, चवन्नी)

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

धोकर रखें तथा उस मुद्रा की भी चन्दन, पुष्प, धूप, दीप से पूजा करें। यह पूजा का अन्तिम चरण होता है। इसी दिन उड़द की दाल के तीन पकौड़े बनवाकर उन्हें नैवेद्य के रूप में उस पत्ते पर आसीन सिक्के को अर्पित करें।

पूजा हो चुकने पर वह सिक्का लेकर किसी कील के सहारे घर के मुख्य द्वार की देहरी पर (देहरी न हो तो किवाड़ पर) जड़ दें। जड़ते समय भी अपने इष्टदेवता का स्मरण करते रहें तथा ये समस्त क्रियाएं पूर्वाभिमुख स्थिति में ही सम्पन्न की जायें। मुद्रा को यथास्थान जड़ देने के पश्चात् पुनः पूजा-स्थल पर आयें और भोग लगाये गये तीनों पकौड़े प्रसाद-स्वरूप ग्रहण करें। इस प्रसाद का कोई अंश किसी को भी न दें, वे तीनों पकौड़े स्वयं साधक के लिए होते हैं।

इसके बाद वह सातवां पत्ता भी पहले की भाँति विसर्जित कर दें। इसके बाद केवल एक ही प्रतिबन्ध रह जाता है—प्रत्येक शनिवार को हनुमानजी के दर्शन करना। मन्दिरों में प्रायः उनकी मूर्ति रहती है। यदि वह सुलभ न हो तो उस बरगद अथवा पीपल के वृक्ष का दर्शन कर लेना चाहिए, जहां से पूजा के लिए पत्ते लाये जाते थे। वहां जाते समय यह धारणा मन में होनी चाहिए कि इस वृक्ष में साक्षात् शनिदेव का वास है और वह अवश्य ही मेरे ऊपर कृपा करेंगे। वह मुद्रा-तन्त्र साधकों को ऋण-मुक्त करके विभिन्न स्रोतों से अर्थ-लाभ कराता है। इसके प्रभाव से दैनिक-आय में वृद्धि हो जाती है और घर में धन-धान्य की समृद्धि स्पष्ट परिलक्षित होने लगती है।

सियार-तन्त्र

सियार एक अति निन्दित वन्य-जन्तु होने पर भी तन्त्र-शास्त्र में उपयोगी माना जाता है। कारण कि उसके सिर पर एक गाँठ होती है, जो अद्‌भुत प्रभाव रखती है। यद्यपि, यह गाँठ सभी सियारों के सिर पर न होकर, किसी-किसी में ही पायी जाती है। प्रचलित भाषा में इसे गीदड़-सिंगी अथवा सियार-सिंगी कहते हैं।

यह बादामी रंग के मुलायम बालों से आवरित होती है और सिर पर एक छोटा-सा जौ या गेहूं के दाने के बराबर काले रंग का सींग उगा होता है। शिकारी और वन्य-जातियों के लोग इसे खोजते रहते हैं। जाति-विशेष को (सियार को) पहचान कर वे उसे मार डालते हैं और सियार-सिंगी प्राप्त कर लेते हैं। यह प्रायः आंवले के बराबर होती है। अधिकांश गोलाकार ही प्राप्त होती है, किन्तु अपवाद-स्वरूप चपटी भी देखी जाती है। आकार में सब एक समान न होकर, छोटी-बड़ी भी होती हैं। यह परम शक्तिशाली और प्रभावकारी वस्तु होती है। तान्त्रिक-विधि

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

से इसका प्रयोग व्यक्ति के लिए बहुत लाभकारी सिद्ध होता है। यह शत्रु-पराभव, सामाजिक-सम्मान, शरीर-रक्षा और श्री-समृद्धि के लिए प्रयुक्त होती है।

यह जब भी कहीं उपलब्ध हो, ले आयें और किसी पवित्र स्थान में रख दें। पुष्यामृत, नवरात्रि, अष्टमी, दीपावली और ग्रहण जैसे किसी शुभ-मुहूर्त में इसकी पूजा करें और धूप-दीप देकर मन्त्र द्वारा इसे सिद्ध कर लें, तो यह अपना चमत्कारी प्रभाव तुरन्त दिखाने लगती है। इसमें चामुण्डा देवी का वास माना जाता है, अत: इसकी पूजा में चामुण्डा देवी (अथवा दुर्गाजी) को इष्ट मानना चाहिए। लाल कपड़े के आसन पर इसे प्रतिष्ठित करके लाल चन्दन, सिन्दूर, धूप-दीप आदि से इसकी पूजा करनी चाहिए। तदुपरान्त घी का दीपक जलाकर इनमें से किसी एक मन्त्र का जप करें—

- ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चै।
- ॐ नमो भगवते रुद्राय ॐ चामुण्डे.......... में वश मानय स्वाहा।

जप संख्या 1, 3, 5, 7 या 11 माला तक, कुछ भी निर्धारित कर लें। जप के उपरान्त उसी मन्त्र को जपते हुए 108 आहुतियाँ देकर हवन करें और एक कुमारी-कन्या को भोजन तथा दक्षिणा दें। इसके पश्चात् चाँदी की डिब्बी में सिंदूर, लौंग, कपूर, अक्षत और तुलसीदल के साथ सियार-सिंगी स्थापित करके सुरक्षित रख लें।

यह डिब्बी जहां रहेगी, वहीं श्री-समृद्धि प्रदान करेगी। इसे धारण करने वाला व्यक्ति दुर्घटना, विवाद, युद्ध अथवा अन्य किसी संकट में पड़ने पर तुरन्त ही आपदा मुक्त हो जाता है। धन-सम्पत्ति चाहने वाले साधक यदि उस डिब्बी में चांदी की अथवा कोई भी एक मुद्रा (सिक्का) रख दें तो विशेष प्रभाव होता है। यहां यह तथ्य भी स्मरणीय है कि उपरोक्त मन्त्रों में प्रथम मन्त्र का उपयोग धन प्राप्ति के लिए किया जाता है और द्वितीय मन्त्र का जप उस स्थिति में करणीय है, जब साधक की कामना किसी को वशीभूत करने की हो। ऐसी स्थिति में मन्त्र पढ़ते समय रिक्त स्थान पर उस व्यक्ति का नाम लेना चाहिए, जिसको प्रभावित करना हो।

कुछ तन्त्र-ग्रन्थों में ऐसा निर्देश प्राप्त होता है कि यह डिब्बी स्त्रियों को नहीं छूनी चाहिए। आकस्मिक आवश्यकता पड़ने पर इसे तुरन्त भी सिद्ध किया जा सकता है। उसकी विधि यह है कि लोबान अथवा गूगल की धूनी देकर उसके

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

धुएं में इसे शुद्ध कर लें, फिर 'ॐ नमो भगवते रुद्राय ॐ चामुण्डे सर्वजन, राज्याधिकारिगणा मे वश मानय स्वाहा।'

मन्त्र जपकर (108 बार) इसे पुन: धूप-दीप से पूजें और सिंदूर की डिब्बी में रखकर धारण कर लें। यह विधि भी बहुत प्रभावशाली होती है। ऐसी मन्त्र-सिद्ध सियार-सिंगी जिसके पास हो, वह जहां भी जाता है, वहां की स्थिति और वातारण उसके अनुकूल हो जाता है। चांदी की डिब्बी सम्भव न होने पर पीतल या तांबे की डिब्बी भी प्रयुक्त हो सकती है, किन्तु अन्य सामग्री—सिंदूर, कपूर आदि यथावत् रहना चाहिए और उसमें चांदी का एक टुकड़ा भी आवश्यक होता है।

इस सन्दर्भ में पाठकों से मेरा व्यक्तिगत निवेदन है कि यदि सम्भव हो तो वे ऐसे तान्त्रिक-प्रयोगों की साधना अवश्य करें। आस्था और शुचितापूर्वक की गई साधना निश्चित रूप से सफल होती है। मैंने इस तन्त्र (जम्बुकी) तथा अन्य 2-3 प्रयोगों का लाभ स्वयं प्राप्त किया है। इनके चमत्कारी प्रभाव को देखकर मन आह्लाद से भर उठता है।

हाथ जोड़ी-तन्त्र

इसमें धन प्राप्त कराने की अद्भुत क्षमता होती है। किसी भी शुभ मुहूर्त में—विशेषतया रवि, मङ्गल या शुक्रवार के दिन इसे तिल्ली के तेल में डुबो दें। 15 दिनों बाद निकाल कर बाहर करलें, फिर किसी अन्य शुभ योग में इसकी लाल चन्दन, सिंदूर, धूप-दीप से पूजा करके लाल कपड़े में सिंदूर, लौंग, कपूर के साथ लपेट कर भुजा या कण्ठ में धारण करलें। चाँदी या पीतल की डिब्बी में भी रख सकते हैं।

इसके प्रभाव से धन-सम्पदा, सुरक्षा और सम्मान की प्राप्ति होती है। इसमें लगभग वही समस्त गुण होते हैं, जो सियार-सिंगी के प्रसङ्ग में वर्णित हो चुके हैं। यह भी श्री चामुण्डा देवी का प्रतिनिधित्व करती है, अत: इसकी पूजा-साधना में उन्हीं का मन्त्र जपना चाहिए।

हाथ जोड़ी की साधना में इन दो मन्त्रों में से किसी एक का जप किया जा सकता है। यदि कोई साधक 12000 मन्त्र जपकर 1008 आहुतियों से हवन करे, तो इसका प्रभाव चिरस्थायी और अदम्य हो जाता है। ऐसी मन्त्र-सिद्ध हाथाजोड़ी धारण करके कहीं जाने पर कार्य की सफलता में कोई संशय नहीं रह जाता। कहीं

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

से भी इसे प्राप्त करके मन्त्रानुष्ठान द्वारा इसके लाभ का अनुभव किया जा सकता है। मन्त्र इस प्रकार हैं—

- ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं चामुण्डायै नमः स्वाहा।
- ॐ किलि किली स्वाहा।

यदि हाथाजोड़ी और सियार-सिंगी को एक ही डिब्बी में रखें, और प्रतिदिन धूप-दीप से उस डिब्बी की पूजा करके 1 माला इस मन्त्र— 'ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे'—का जप करते रहें, तो भी आश्चर्यजनक लाभ होता है। जम्बुकी-तन्त्र की भाँति इस भुजयुग्म-तन्त्र में भी स्त्रियों का इसका (सियार सिंगी का) स्पर्श वर्जित किया गया है।

शंख-तन्त्र

यों, शंख एक समुद्री-जीव का अस्थिपञ्जर है—साक्षात् हड्डी। किन्तु अपने तान्त्रिक प्रभाव के कारण यह इतना पवित्र और प्रसिद्ध है कि देव-प्रतिमा की भाँति पूजित होता है। पौराणिक-सन्दर्भों में इसे लक्ष्मी का सहोदर माना गया है, अतः स्वयं सिद्ध है कि यह जहाँ रहेगा, लक्ष्मी भी वहाँ पहुँचेगी।शंख कई प्रकार के, विभिन्न आकृतियों के होते हैं। वे सभी प्रायः बायीं ओर को खुलते हैं। एक विशेष जाति के शङ्ख दायीं ओर को खुलने के कारण दक्षिणावर्ती कहे जाते हैं। यह शङ्ख श्री-समृद्धि के लिए चिर-प्रसिद्ध है। यदि कहीं से प्राप्त हो सके तो इसे अवश्य ले आयें और घर में देव-प्रतिमा की भाँति स्थापित करके नित्य उसकी पूजा करें। लक्ष्मी और विष्णु के प्रिय-पात्र इस शङ्ख की पूजा से धन-धान्य की निश्चित रूप से वृद्धि होती है।

दक्षिणावर्ती शङ्ख सहज सुलभ नहीं होता, यह बहुत खोजने पर ही कभी-कहीं दीख पड़ता है। आज के भौतिक-युग में तो ऐसी दुर्लभ आध्यात्मिक-साधना की वस्तुएं भी नकली बनायी जाने लगी हैं। रुद्राक्ष, मोती, शङ्ख, रत्नादि सब नकली बिकने लगे हैं। यही कारण है कि विधिवत् साधना करने पर भी उनका कोई प्रभाव साधक को दिखाई नहीं पड़ता। अस्तु, वास्तविक दक्षिणावर्ती शङ्ख लाकर उसे किसी शुभ-मुहूर्त में(बृहस्पतिवार हो तो अति उत्तम)।

पञ्चामृत अथवा गङ्गाजल (शुद्ध कूप-जल से भी) स्नान कराकर चाँदी के पत्तर पर आसीन करें। रजत-पत्र के अभाव में श्वेत या पीले वस्त्र पर लाल आसन बिछाकर उस पर आसीन कर दें। तत्पश्चात् श्वेत चन्दन (केसर-गोरोचन युक्त),

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पीले पुष्प, धूप-दीप आदि से उसकी पूजा करें और निम्नलिखित मन्त्र का नियमित रूप से 1 माला जप करें—

'ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं श्रीधरकस्थाय पयोनिधि जाताय श्री दक्षिणावर्त्त शङ्खाय ह्रीं श्रीं क्लीं श्रीकाराय पूज्याय नमः।'

लक्ष्मी और विष्णु के प्रिय-पात्र इस शङ्ख की नियमित पूजा करने से धन-सम्पदा में अवश्य ही वृद्धि होती है। मैंने इसे धनाढ्य-जनों, व्यापारियों द्वारा बड़ी आस्था के साथ पूजित होते देखा है। इसे सदैव देव-प्रतिमाओं के पास लाल, पीले अथवा श्वेत आसन पर रखना चाहिए। यथासम्भव चाँदी के आसन पर ही रखें। यह अन्य शङ्खों की भांति औंधा कर (पेट के बल) नहीं, बल्कि पीठ के बल रखा जाता है। अर्थात् इसका पेट ऊपर की ओर खुला हुआ रहना चाहिए। इसमें दूध या जल भरकर लक्ष्मीजी को अर्घ्य देने से वह बहुत प्रसन्न होती हैं। वैसे भी, जब यह शंख रखा हो तो इसमें थोड़ा जल भर देना चाहिए।

एक प्रयोग यह भी है कि उपरोक्त मन्त्र पढ़ते हुए यदि साधक इस शंख में भरा हुआ जल अपने या किसी अन्य के ऊपर छिड़के तो उसका दुःख, दारिद्रय, दुर्भाग्य और भीषणतम-पातक नष्ट हो जाता है।

एकाक्षी नारिकेल-तन्त्र

नारियल अर्थात् गरी का गोला सामान्यतः दो बिन्दुओं से युक्त होता है। इन्हें नारियल की आंखें कहते हैं। किन्तु कभी कभी एक बिन्दु वाला गोला भी मिल जाता है। ऐसा गोला दुर्लभ होता है। इसे एक आँख वाला नारियल (एकाक्षी नारिकेल) कहते हैं। यह भी पवित्र, मंगलमय और धन-सम्पत्ति प्रदायक होता है।

यह जिस घर में रहेगा, लक्ष्मी वहां अवश्य ही निवास करेगी। यदि कभी प्राप्त जाय, तो इसे लाकर देव-प्रतिमा की भाँति घर के किसी पवित्र स्थान में, लाल आसन पर प्रतिष्ठित कर देना चाहिए। इसे साक्षात् लक्ष्मी और विष्णु मानकर दैनिक-पूजा करने से बहुत लाभ होता है। व्यवसायी-वर्ग के लिए तो यह वरदान-स्वरूप होता है। गोले के आकार का महत्व नहीं है, वह चाहे छोटा हो या बड़ा, उसका एकाक्षी होना आवश्यक है।

श्रीफल-तन्त्र

श्रीफल भी वस्तुतः नारियल की जाति का ही एक लघुतम फल है। रूपरेखा में समान होकर भी आकार में यह नारियल की अपेक्षा बहुत छोटा, छोटी-सुपाड़ी

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अथवा छोटे बादाम के बराबर होता है। इसे भी बहुत पवित्र, शुभ और समृद्धिकारी माना गया है। यह सरलता से प्राप्त हो जाता है। इसे लाकर नारिकेल-तन्त्र की तरह पूजा करके कोष, भण्डार, संग्रह अथवा देव-प्रतिमाओं के मध्य रखने से घर में भौतिक-सम्पदा की वृद्धि होने लगती है।

वैसे, इन सभी तान्त्रिक-वस्तुओं के प्रयोग, इनकी साधना पद्धति का विवेचन तन्त्र-ग्रन्थों में बड़े विस्तार से (जटिल और दुष्कर रूप में) प्राप्त होता है। किन्तु आज के युग में वह सहज-साध्य नहीं रह गया। मेरा अपना अनुभव है कि मात्र शुभ-मुहूर्त, आस्था, शुचिता और सहज-श्रद्धा के द्वारा नियमित दर्शन-पूजन करने से भी इन वस्तुओं का कुछ-न-कुछ प्रभाव अवश्य दृष्टिगोचर होता है। श्रीफल की पूजा में यह मन्त्र जपना चाहिए—

'ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महालक्ष्म्यै नमः।'

स्मरण रहे कि नारिकेल और श्रीफल की पूजा में इन पर लाल चन्दन ही प्रयोग करना चाहिए। शंख के लिए श्वेत अथवा पीला चन्दन श्रेष्ठ होता है। शेष धूप-दीप और हवन की क्रिया सबमें समान रहती है। मन्त्र-जप के समय (प्रत्येक साधना में) घी का दीपक जलता रहना चाहिए। सरलता की दृष्टि से यहां सभी प्रयोग बहुत संक्षिप्त और सहज-साध्य रूप में दिये गये हैं। वैसे, यदि साधक समर्थ हो तो वह जप-संख्या, आहुति-संख्या और साधना-काल में इच्छित-वृद्धि कर सकता है। इसी प्रकार दान-पुण्य के लिए भी वह पाँच के स्थान पर पचास या सौ ब्राह्मणों को भोजन और दक्षिणा दे सकता है।

शिवलिंगी-तन्त्र

वैसे तो कोई भी शिव-लिङ्ग हो, वह सदा शुभ और पूजनीय होता है, किन्तु नर्मदेश्वर शिव-लिंग विशेष रूप से प्रभावशाली कहे जाते हैं। नर्मदा-नदी की जलधारा में बहते हुए शिला-खण्ड प्राकृतिक रूप में शिव-लिङ्ग का आकार ग्रहण कर लेते हैं। मुख्यतः ओंकारेश्वर-क्षेत्र और धाबड़ी-कुण्ड में ऐसे शिव-लिङ्ग सरलता से उपलब्ध हो जाते हैं। अपने रूपाकार और वर्ण-सौन्दर्य के आधार पर ये बड़े मोहक, प्रभावशाली और तदनुसार मूल्यवान भी होते हैं। आकृति (चिन्ह-प्रतीक) भेद से इनकी अनेक श्रेणियां होती हैं।

जैसे तिलक-लिङ्ग, मुख-लिङ्ग, धारा-लिङ्ग, ज्योति-लिङ्ग, ओंकार-लिङ्ग, अर्द्धनारीश्वर-लिङ्ग और चन्द्रभाल-लिङ्ग आदि। सामान्य रूप से तो कोई भी

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

लिङ्ग हो उत्तम माना जाता है, किन्तु उपरोक्त श्रेणी के शिव-लिङ्ग जो वस्तुतः दुर्लभ हैं, विशेष रूप से पूज्य, प्रभावी और मूल्यवान् होते हैं। इनमें से जो भी मिले, लाकर घर में प्रतिष्ठित करके नियमित पूजा करने से लक्ष्मी की कृपा और धन-धान्य की प्राप्ति होती है।

शिवजी की पूजा के लिए कोई विशेष व्यवस्था नहीं करनी पड़ती। वे मात्र थोड़े-से जल का अर्घ्य पाकर भी प्रसन्न हो जाते हैं। वैसे, चन्दन, पुष्प, बेलपत्र, धूप-दीप आदि से शिव-लिङ्ग की पूजा करके यदि नित्य 5-7 माला 'ॐ नमः शिवाय' मन्त्र का जप किया जाय, तो भोलानाथ की कृपा से साधक का दुःख-दारिद्र्य थोड़े ही दिनों में दूर हो जाता है।

श्वेतार्क-तन्त्र

सफेद फूल वाले मदार का पौधा कदाचित् ही कहीं दीख पड़ता है, अन्यथा सभी मदार बैगनी फूल देते हैं। श्वेत मदार का पेड़ बहुत दुर्लभ वनस्पति है। यदि किसी स्थान पर यह मिल जाय, तो शुभ-मुहूर्त में उसकी जड़ खोद लायें। यह जड़ प्रायः गणेश-प्रतिमा के आकार की होती है। जैसी भी हो उसे ले आयें और धोकर लाल वस्त्र के आसन पर रख दें। तत्पश्चात् ठीक गणेश-प्रतिमा की भाँति उसे स्नान कराकर— लाल चन्दन, पुष्प, हल्दी, सिंदूर, अक्षत, धूप-दीप से उसकी पूजा करें और 1 माला गणेशजी का मन्त्र—'ॐ गं गणपतये नमः' जपें। इस प्रकार उस जड़ी (श्वेतार्क-मूल) की नित्य पूजा करने से गणेशजी की कृपा प्राप्त होती है और साधक को विभिन्न स्रोतों से धन लाभ होने लगता है। जिस घर में श्वेतार्क मूल हो और उसकी पूजा होती रहे, वहाँ लक्ष्मी अवश्य ही निवास करती है। विघ्नों का निवारण होकर वहाँ सुख-सौभाग्य का वातावरण अपने-आप आ जाता है।

बाँदाल-तन्त्र

आम, जामुन, महुआ, नीम आदि के पेड़ों पर कभी-कभी दूसरी जाति का पेड़ अपने-आप उग आता है। इसे बाँदा अथवा बाँदाल कहते है। तन्त्र-शास्त्र की दृष्टि से बाँदा में भी बहुत आश्चर्यजनक गुण निहित हैं। प्रत्येक वृक्ष पर उगे हुए बाँदा का प्रभाव भिन्न-भिन्न होता हैं। परोप-जीपी वनस्पति के सर्वश्रेष्ठ, लक्ष्मी-वर्द्धक प्रयोग ये हैं—

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

● भरणी नक्षत्र के दिन कुश (घास विशेष) का बाँदा लाकर उसे देव प्रतिमा की भाँति चन्दन, पुष्प, धूप, दीप आदि से पूजें। तत्पश्चात् 11 माला अग्रलिखित मन्त्र का जप करके 108 बार इसी मन्त्र से आहुति देते हुए हवन करें।

तत्पश्चात् पीले अथवा लाल शुद्ध कपड़े में वह बाँदा, कोई सिक्का और एक गाँठ हल्दी तथा अक्षत रखकर पोटली बनालें। यह पोटली जहाँ भी रहेगी-धन-धान्य की वृद्धि करेगी।

● उपरोक्त विधि से पुष्य नक्षत्र के दिन, इमली के पेड़ पर उगा हुआ बाँदा ले लायें और उसकी विधिवत् पूजा करके, किसी लाल कपड़े में लपेट कर बाहु पर धारण करें अथवा भण्डार में रखें तो श्री-सम्पदा में वृद्धि होती है।

● रोहिणी-नक्षत्र के दिन गूलर के वृक्ष का बाँदा लायें उसकी पूजा करके घर में किसी पवित्र स्थान पर रख दें। यह भी धन-धान्य की वृद्धि करता है।

● स्वाती नक्षत्र में बेर के वृक्ष का बाँदा लाकर पूजनोपरान्त घर में स्थापित करने से भौतिक-कामनाओं की पूर्ति होती है।

● यदि कहीं दूब के पौधे पर उगा हुआ बांदा मिल जाय, तो उसे पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र के दिन लाकर विधिवत् पूजनोपरान्त दुकान में स्थापित करने से व्यापार में सफलता प्राप्त होती है।

● अश्लेषा नक्षत्र में सोमवार के दिन बहेड़ा वृक्ष का बाँदा, विधिवत् पूजकर भण्डार में रखने से धन-धान्य की वृद्धि होती है।

● पलाश-वृक्ष का बाँदा यदि होली के दिन पूजकर भण्डार में रखा जाय तो वह भण्डार कभी रिक्त नहीं होता।

● पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र के दिन सेमल-वृक्ष का बाँदा विधिपूर्वक पूजा करके घर में स्थापित करने से धन-सम्पदा की वृद्धि होती है।

● एक दिन पहले से पौधे को निमन्त्रण देकर, ठीक सूर्य-ग्रहण अथवा चन्द्र-ग्रहण के दिन, सूर्योदय से पूर्व ही गूलर बाँदा लाकर उसकी पूजा करें और ठीक ग्रहण-काल में (ग्रहण पड़ते समय) कमलगट्टे की माला से मन्त्र-जप करें। स्मरण रहे कि इस प्रयोग में लक्ष्मी-गायत्री मन्त्र का जप करना चाहिए। जप की संख्या यही है कि पूरे ग्रहण-काल तक जप किया जाय। ग्रहण समाप्त होकर जब पूर्ण

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मोक्ष हो जाय, तब अन्तिम माला पूरी करके 108 बार हवन करना चाहिए। इस साधना से वह बाँदा अद्भुत शक्ति-सम्पन्न हो जाता है। उसे सोने के यन्त्र (ताबीज) में धारण करने से साधक को अदृश्य और गुप्त (गढ़े हुए) धन की प्राप्ति होती है।

सामान्य प्रयोगों में बाँदा को सिद्ध करने का मन्त्र यह है—

'ॐ नमो धनदाय स्वाहा'

ग्रहण-काल में बाँदा को सिद्ध करने के लिए जिस लक्ष्मी-गायत्री मन्त्र का ऊपर संकेत दिया गया है, वह इस प्रकार है—

'ॐ महालक्ष्म्यै च विद्महे विष्णुपत्न्यै च धीमहि तन्नो लक्ष्मी प्रचोदयात्'

बाँदा एक बहुत ही शुभ-वनस्पति है। तान्त्रिक-विधि से इसकी साधना का लाभ बहुत थोड़े समय में प्राप्त हो जाता है।

सहदेई तन्त्र

सहदेई एक सुलभ पौधा है। यह भी तान्त्रिक-गुणों से युक्त होता है। किसी रवि-पुष्य योग के दिन इसे लाकर, देव-प्रतिमा की भाँति पूजें और साक्षात् लक्ष्मी का प्रसाद मानकर लाल वस्त्र की पोटली में रखलें। यह पोटली अन्न-भण्डार अथवा तिजोरी, जहाँ भी रखी जायेगी—समृद्धि-कर प्रभाव डालेगी।

यद्यपि इन सभी वानस्पतिक-तन्त्रों में पदार्थ-शोधन के भिन्न मन्त्र हैं, किन्तु यदि साधक उस वनस्पति को प्राप्त करने के समय से लेकर पूजा तथा अभीष्ट प्रयोग तक निरन्तर अपने इष्ट-देवता का अथवा लक्ष्मीजी का मन्त्र पूर्ण आस्था के साथ अविराम गति से जपता रहे, तो भी यह वनस्पति पूर्णतया शक्ति-सम्पन्न हो जाती है।

निर्गुण्डी-तन्त्र

पुष्य-नक्षत्र के दिन निर्गुण्डी-पौधे की जड़ लाकर, पूजनोपरान्त उसे भण्डार में रखने से धन-धान्य की वृद्धि होती है।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

लक्ष्मणा-तन्त्र

रवि-पुष्य, दीपावली, ग्रहण अथवा अन्य किसी शुभ-मुहूर्त में लक्ष्मणा-पौधे की जड़ ले आयें। उसे विधिवत् स्नान कराकर धूप-दीप से पूजें। तदुपरान्त मन्त्र-जप के द्वारा इसे प्रभावित करके देव-प्रतिमाओं के पास स्थापित करदें। आवश्यकतानुसार इसको विभिन्न कार्यों में प्रयुक्त किया जा सकता है। यह वशीकरण, सन्तान-प्राप्ति, विजय, सम्मान, भौतिक-बाधा निवारण आदि के लिए बहुत उपयोगी जड़ी मानी गई है। आर्थिक-समृद्धि के लिए यदि किसी राज-कर्मचारी की कृपा वाञ्छित हो तो इसे सिंदूर के साथ घिसकर, माथे पर तिलक की भाँति धारण करना चाहिए। ऐसा तिलकधारी व्यक्ति जिस राज-कर्मचारी के पास जायेगा, उसकी कृपा अवश्य प्राप्त करेगा।

बहेड़ा-तन्त्र

आयुर्वेद में वर्णित 'त्रिफला' का एक अङ्ग 'बहेड़ा' सुलभ फल है। इसका पेड़ बहुत बड़ा— महुआ के पेड़ जैसा होता है। रवि-पुष्य के दिन इसकी जड़ और पत्ते लाकर अन्य उपरोक्त वनस्पतियों की भाँति उसकी पूजा करें, तत्पश्चात् उसे लाल वस्त्र में बाँधकर भण्डार, तिजोरी या बक्से में रख दें। यह प्रयोग भी बहुत समृद्धिकारी माना गया है।

शंख पुष्पी-तन्त्र

पुष्य-नक्षत्र के दिन शंख पुष्पी की जड़ घर लाकर, इसे देव-प्रतिमा की भाँति पूजें और तदनन्तर चाँदी की डिब्बी में प्रतिष्ठित करके, उस डिब्बी को धन अथवा अन्न-भण्डार के स्थान पर अथवा बक्से-तिजोरी में रख दें। यह प्रयोग लक्ष्मीजी की कृपा प्राप्त कराने में अत्यन्त समर्थ प्रमाणित होता है।

स्मरण रहे कि चाहे जैसी साधना हो, साधक को उसके प्रति अटूट निष्ठा, अभङ्ग विश्वास, पूर्ण संयम, शुचिता, धैर्य और विनम्र भाव रखना चाहिए। ऐसे किसी भी प्रयोग में सम्बन्धित-देवता का स्मरण-चिन्तन बहुत लाभदायक रहता है। आवश्यकतानुसार किसी योग्य पण्डित, पुरोहित, विद्वान, साधक अथवा साधु-सन्त से परामर्श ले लेना चाहिए।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तान्त्रिक-प्रयोगों में वस्तु की शुद्धता बहुत आवश्यक रहती है। उसमें तनिक भी दोष होने पर साधना खण्डित हो जाती है। लगभग यही स्थिति यन्त्र-साधना की भी है। यन्त्र का रेखाङ्कन और पदार्थ-प्रयोग, शास्त्रीय विधि-विधान के अनुसार न होने से साधना का सुफल प्राप्त नहीं होता। मन्त्र-साधना में भी मन्त्रोच्चार की शुद्धता परम आवश्यक है। जिन साधकों को ऐसे अवसरों पर कठिनाई हो, उन्हें चाहिए कि और सब छोड़कर सम्बन्धित-देवता का स्मरण, चिन्तन और नाम-जप पूर्ण निष्ठा के साथ करें। नियम-प्रतिबन्ध से मुक्त यह आस्थाधारित-साधना आश्चर्यजनक प्रभाव दिखाती है।

जो लोग अशिक्षित हैं, असमर्थ हैं, किसी प्रकार की तन्त्र-मन्त्र जैसी साधना नहीं कर सकते, उनके लिए सर्वसुलभ और निश्चित-रूपेण प्रभावी-साधना यही है कि वे परम निष्ठा के साथ अपने इष्ट-देवता अथवा किसी भी देवी-देवता की शरण ले लें। थोड़े ही समय पश्चात् वे अनुभव करेंगे कि कोई अदृश्य-शक्ति, चमत्कारी रूप में उन्हें प्रेरणा, बल, धैर्य, धन आदि की प्राप्ति करा रही है।

लगभग सभी सम्प्रदायों में, सभी धर्मों में— थोड़े हेर-फेर से यह तथ्य सर्व-स्वीकृत हैं—

न काष्ठे विद्यते देवो, न पाषाणे न मृण्मये।
भावे हि विद्यते देव, तस्माद् भावो हि कारणम्॥

सारांश रूप में यही कहना पर्याप्त होगा कि मानव-जीवन में सुख, शान्ति, समृद्धि के लिए जहाँ व्यक्ति का परिश्रम अनिवार्य है, वहीं उसका प्रारब्ध भी प्रमुख कारक है और आध्यात्मिक-साधना के द्वारा वह अपने परिश्रम तथा प्रारब्ध दोनों को अनुकूलता में परिवर्तित कर सकता है।

आजीविका का मन्त्र (1)

'शाबर-मन्त्र' केवल हिन्दू-संस्कृति में ही नहीं, अन्य धर्म-संस्कृतियों में भी उपलब्ध हैं। वहां उन्हें 'शाबर-मन्त्र' न कहकर, अपने धर्म-ग्रन्थों के अनुसार नाम दिये गये हैं। यहाँ कुछ मुस्लिम-सम्प्रदायों के मन्त्र दिये जा रहे हैं। ये भी अपने ढङ्ग के शाबर-मन्त्र हैं। और, इस सचाई को स्वीकार कर लेने में कोई हिचक नहीं होनी चाहिए कि मुस्लिम-मन्त्रों में उच्चारण भले ही जटिल हों, मन्त्र लम्बे हों, परन्तु कर्मकाण्ड का विधान बहुत जटिल नहीं है। कई एक मन्त्र तो राह चलते ज़पे जायें, तो भी अपना प्रभाव दिखाकर चमत्कृत कर देते हैं।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आज रोजी-रोटी की समस्या बहुत जटिल होती जा रही है। गरीबी, महंगाई, अभाव और रोजी-रोजगार का न होना, यह सब सामान्य व्यक्ति को बहुत पीड़ित कर रहे हैं। बेकारी, नौकरी, व्यापार आदि के लिए यहां एक मन्त्र लिखा जा रहा है। यह मुस्लिम-सम्प्रदाय का 'शाबर-मन्त्र' है। इसे सिद्ध कर लेने पर व्यक्ति को कहीं-न-कहीं रोजी-रोटी का जुगाड़ अवश्य हो जाता है।

मन्त्र—'या गफूरो'

प्रयोग विधि—दिनभर पवित्रता से रहें। रात के पहले पहर में नहाकर, साफ कपड़े पहिन कर, एकान्त शुद्ध स्थान में बैठें और धूपबत्ती में लोबान मिलाकर सुलगा लें। फिर आसन पर बैठकर ईश्वर का ध्यान करते हुए उपर्युक्त मन्त्र एक बार पढ़ें। उसके बाद 21 बार नीचे लिखा मन्त्र पढ़े—

मन्त्र—"अल्लहुमसल्ल अलामुहम्मदिन अला अल मुहम्मदिन वबारिक वसल्लिम।"

इस मन्त्र का 21 बार जप पूरा हो जाने पर प्रथम मन्त्र 'या गफूरो' का जप 1000 बार करें, फिर 21 बार दूसरा मन्त्र पढ़ें। यही क्रिया नित्य रात में 21 दिनों तक करते रहें—1 बार प्रथम मन्त्र, फिर 21 बार दूसरा मन्त्र, फिर 1000 बार प्रथम मन्त्र, फिर 21 बार दूसरा मन्त्र। यह एक दिन की साधना है। ऐसा 21 दिनों तक करें। रोजी के प्रयास में सफलता मिलेगी।

आजीविका का मन्त्र (2)

इसी विषय का एक मन्त्र और लिखा जा रहा है—

मन्त्र—"या इशरा फील बहक्क या अल्लाहो।"

प्रयोग विधि—उड़द का साफ आटा 25 तोले (5 छटांक) लायें, उसे भिगो दें, फिर गूंदकर एक रोटी बनायें। उसे बीच से मोड़कर (दो तह में करके) सफेद कपड़े में बांध लें। फिर उसमें से नोंच-नोंच कर थोड़ा-थोड़ा आटा निकालें और झारबेरी के बराबर गोलियां बना लें। गोलियों की संख्या 101 होनी चाहिए। गोलियों को किसी नदी के पानी में (बहते पानी में) प्रवाहित कर दें। ध्यान रहे कि आटा गूंदने से लेकर, गोली प्रवाहित करने तक-सारी क्रिया में मन्त्र-जप होता रहना चाहिए।

साथ ही, यह भी उल्लेखनीय है कि प्रत्येक गोली को 101 बार मन्त्र पढ़कर ही जल में प्रवाहित करें। इस क्रिया में कुछ अधिक समय लगता है, परन्तु प्रभाव

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

भी अवश्य होता है। 40 दिनों तक यह साधना की जाये तो साधक के लिए कहीं-न-कहीं आजीविका (रोजी-रोटी) की व्यवस्था हो जाती है।

आजीविका मन्त्र (3)

यह मन्त्र साधना की दृष्टि से अपेक्षाकृत सरल है और यदि कोई व्यक्ति पूर्ण संयम, पूर्ण आस्था के साथ इसका जप करे, तो अवश्य ही लाभ उठा सकता है:—

मन्त्र— **"काली कङ्काली महाकाली**
मरे सुन्दर जिये काली
चार वीर भैरूं चौरासी
तब तो पूजूं पान मिठाई
सब बोलो काली की दुहाई।"

प्रयोग विधि—रोज सवेरे नित्य-कर्म से निवृत्त हो स्नान करें, फिर साफ-शुद्ध वस्त्र पहिनकर आसन पर बैठें। मुंह पूर्व दिशा की ओर रहे और इस मन्त्र को अपने इष्टदेव का स्मरण करते हुए 49 बार पढ़ें। यह क्रिया प्रतिदिन करते रहें। इसका जप हमेशा 7 गुणक में करना चाहिए—7×7=49 बार। इसी प्रकार जप के दिनों की संख्या भी—7, 14, 21, 28, 35 या 49 दिन की होनी चाहिए। यह मन्त्र भी अद्भुत प्रभावशाली माना गया है।

दूसरे के द्वारा किये गये अभिचार-प्रयोग के निवारण का मन्त्र

यदि किसी ने किसी प्रकार का अभिचार-प्रयोग कर दिया हो—किसी तन्त्र-मन्त्र के प्रयोग द्वारा कष्ट दे रहा हो, तो उससे मुक्ति पाने के लिए नीचे लिखा मन्त्र सहायक होता है:—

मन्त्र— **"उलट वेद पलटन्त काया**
उतर आव बच्चा गुरु ने बुलाया
वेग सत्त नाम, आदेस गुरु का।"

प्रयोग विधि—अगर यह पता लग जाय कि किस चौराहे या रास्ते पर किये गये प्रयोग के प्रभाव से कोई व्यक्ति पीड़ित है, तो उसी पर, अथवा आस-पास के किसी प्रमुख चौराहे पर, रात्रि के समय शराब की बोतल साथ लेकर जायें। उपर्युक्त मन्त्र पढ़ते हुए, वहां शराब की धारा छोड़ें, शराब छिड़कें, फिर लौट आयें।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बाद में, जब कभी किसी व्यक्ति पर से अभिचार का दुष्प्रभाव उतारना हो, तो पुनः उसी चौराहे पर जायें और वहां से मिट्टी के सात छोटे टुकड़े (कङ्कड़ी) उठा लें। 21 बार मन्त्र पढ़ते हुए, उन कंकड़ियों पर फूंक मारें, फिर एक-एक कंकड़ी मन्त्र पढ़ते हुए, एक-एक दिशा में फेंक दें। बाकी तीन कंकड़ी अपने साथ लेते आयें। इसके बाद रोगी को सामने बुलायें और सात बार मन्त्र पढ़कर एक कंकड़ी उसके शरीर पर मारें। इस प्रकार तीनों कंकड़ियों को 7-7 बार मन्त्र-सिद्ध करके, उस पर चलावें।

इस क्रिया से रोगी हर तरह के अभिचार-प्रभाव से मुक्त हो जाएगा। जादू-टोना, तन्त्र-मंन्त्र, वीर सब इस प्रयोग से शान्त हो जाते हैं। जमीन पर यही मन्त्र सात बार पढ़कर हाथ से एक रेखा (गोल घेरा) खींच लें। वह स्थान समस्त प्रकार के भयजनित दुष्प्रभावों से मुक्त रहेगा। प्रवास, यात्रा, अपरिचित-स्थान में अथवा कहीं भी, यदि रात में सोना पड़े तो उक्त मन्त्र को 7 बार पढ़कर, वहां भूमि पर रेखा करं लें। सुरक्षा के लिए वह रेखा 'लक्ष्मण-रेखा' जैसी शक्तिशाली हो जायेगी।

देह सुरक्षा का मन्त्र

यदि प्रवास की स्थिति में, घर से बाहर सोना पड़े या अन्य किसी कारण से अपरिचित-स्थान में रात्रि बिताने की कोई विवशता हो, तो नीचे लिखा मन्त्र पहले सिद्ध कर लें, फिर रात्रि में सोते समय (कहीं भी रहें) जमीन पर एक घेरा अपने चारों ओर खींच लें। इसके प्रयोग से वह स्थान निर्दोष हो जायेगा और वहां सोने पर, रात में किसी आपदा (जीव-जन्तु, सांप-बिच्छु, आग-पानी) की आशंका नहीं रहेगी।

मन्त्र— **''छोटी मोटी पमन्त, बार को बार बाँधे**
पार को पार बाँधे, मरा घमा हाँण बाँधे
जादू वीर बाँधे टोना टम्बर बाँधे
दीठ मूँठ बाँधे चौकी द्वार बाँधे,
भेड़िया और बाघ बाँधे
बीछू और साँप बाँधे
लाइल्लाह का कोट इल्लिलाह की खाई

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मुहम्मद रसूलिल्लाह की चौकी
हजरत अली की दुहाई।''

प्रयोग विधि—पहिले इस मन्त्र को किसी शुक्रवार के दिन नहा-धोकर, लोबान की धूनी देकर, एकान्त शुद्ध स्थान में बैठकर, 108 बार पढ़ लें। यह समय रात्रि का होना चाहिए। बाद में, जब भी कहीं रात में सोना पड़े, वहां बैठकर मन्त्र पढ़ते हुए, अपने दोनों घुटनों को ठोकें, फिर जमीन पर एक गोल घेरा बना दें। उसमें सोने से पूरी सुरक्षा रहेगी।

स्थान रक्षा का मन्त्र

कोई-कोई साधना ऐसी होती है, जिसमें घोर निर्जन वन, एकान्त नदी-तट, श्मशान, पर्वतीय-गुफा, किसी बाग, खेत, खलिहान अथवा तालाब आदि में रात के समय जप करने का निर्देश होता है। रात्रि के समय अन्धेरे में ऐसे निर्जन-स्थान स्वत: भयानक प्रतीत होते हैं। फिर यदि वहाँ कोई वायव्य-आत्मा, भूत-प्रेत, पिशाच, डाकिनी, शाकिनी आदि पहुँच जाएं, तो साधक के लिए वहाँ बैठना असम्भव हो जाता है। रोमाञ्चकारी दृश्य, अस्वाभाविक कोलाहल, वायु वेग, कम्पन, बिजली की कौंध, मेघ-गर्जना, आंधी, चक्रवात आदि प्राकृतिक-उपद्रव वहां के वातावरण को और भी भयद बना देते हैं। ऐसी स्थिति में वहाँ साधक शान्त, स्थिर-चित्त होकर बैठ नहीं पाता, फलस्वरूप उसे अपने प्रयास में (साधना में) सफलता नहीं मिलती।

❑❑

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

यंत्र प्रयोग

सर्वकार्य सिद्धि का यंत्र

आक के पत्ते पर पन्द्रह दिन तक पन्द्रह यन्त्र लिख पत्ते के नीचे शत्रु का नाम लिख दो और अग्नि में जला दो तो बैरी का नाश होय। जो कार्य की सिद्धि के लिए लिखे तो उत्तर दिशा में बैठकर अनार की कलम से लिखे। बैरी के ऊपर लिखे तो दक्षिण दिशा में मुख करके लोहे की कलम से लिखे और लिख-लिखकर एक सौ एक बार मिटावै तो शत्रु मरे और संकल्प बैरी के नाम का करे।

इस यन्त्र को यदि शुभ कार्य के लिये लिखे तो संकल्प पहिले कर लेवे। इस यन्त्र को शुभ कार्य के लिए शुक्लपक्ष और उत्तम दिन से लिखना आरम्भ करे और जो अशुभ कार्य के लिए करे तो कृष्णपक्ष में किसी निकृष्ट वार से प्रारम्भ करें इस यंत्र को ब्रह्मचर्य से लिखे। केवल मूंग, चावल का प्रयोग करें तथा यन्त्र को लिखकर नदी में बहावे। जो यन्त्र निकलकर बाहर आ पड़े उसको अपने पास रखे तो सम्पूर्ण कार्य की सिद्धि होवे।

कार्य संकल्प

लक्ष्मी प्रसन्नता को २०००, लिखे, रोगी अच्छे करने को ६०००, वशीकरण ३०००, परमेश्वर को प्रसन्न करने को ४०००, देवता प्रसन्न करने को ५०००, रोजगार लगने को ४०००, विदेशी को घर बुलाने के लिए २०००, बांझ स्त्री को बेटा करने के लिए ५०००, मन इच्छित कार्य करने को १५०००, खेती अच्छी उपजाने को २०००, मित्र मिलाप को २०००, मन्त्र की सिद्धि को २०००, प्रेत दूर करने को २०००, गई वस्तु प्राप्त करने को ५०००, शत्रु वश करने को २०००, बन्दमोक्षियों को ६०००, विष नाश करने को २५०००, सरस्वती प्रसन्न करने को १०००, मनुष्य से शत्रुता दूर करने को २०००, औषधि की सिद्धि को १०००, तिजारी दूर करने को ६०००, दुःख दूर करके सुख उपजाने को २०००, राजसभा को मोहने के लिए २०००, राजा के प्रसन्न करने को ४०००, अनहोनी बात करने को एक लाख यन्त्र लिखे। इन यन्त्रों को गेहूं के चून (आटे) में गोली बांधकर मच्छियों के लिए नदी में डाल सम्पूर्ण कार्यों की सिद्धि होय।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अब हम वह विधि लिखते हैं कि, जो पार्वती ने शिवजी से पूछी थी और उत्तर में शिवजी ने कहा कि हे शिवे! सम्पूर्ण यन्त्र कीले हुये हैं परन्तु यह पंचदशी यन्त्र कलियुग में प्रसिद्ध फलदायक है। इस यन्त्र का उद्धार यह है **"ॐ हरिः श्री हरिस्तथा।"**

पन्द्रह के यन्त्र की दूसरी विधि

बड़ की कलम से कृष्ण पक्ष की चौदस से इस यंत्र को लिखना प्रारम्भ करे तो धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष मिले। अनार की कलम से एक सहस्र पृथ्वी पर लिखे तो बंधन से छूटे और स्वामी से मित्रता होय।

पीपल की कलम से लिखे तो दरिद्रता का नाश होय गोमूत्र, मनसिल, कपूर, तगर, गोरोचन इनकी स्याही बनाकर पीपल की जड़ की कलम से भोजपत्र पर इस यंत्र को एक सहस्र लिखे तो मनोवांछित कार्य सिद्ध होय। बेलपत्र का रस, हरिताल, मनसिल इनको घोलकर बेल की कलम से दो सहस्र मंत्र एकांत और शुभ स्थान में बैठकर पृथ्वी में लिखे तो मनोवांछित कार्य सिद्ध होय। आक के पत्तों के रस से आक के पत्ते पर १०८ यंत्र लिखे।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सिद्ध यन्त्र 15 का

उत्तम ब्राह्मण

८	१	६
३	५	७
४	९	२

मध्यम ब्राह्मण

६	१	८
७	५	३
२	९	४

उत्तम क्षत्री

४	३	८
९	५	१
२	७	६

मध्यम क्षत्री

२	७	६
९	५	१
४	३	८

उत्तम वैश्य

२	९	४
७	५	३
६	१	८

मध्यम वैश्य

४	९	२
३	५	७
८	१	६

मध्यम शूद्र

८	३	४
१	५	९
६	७	२

उत्तम शूद्र

६	७	२
१	५	९
८	३	४

ये लक्ष्मीवर्धक पन्द्रह का यन्त्र है। इसको सिद्ध कर लेने से ऋण एवं दरिद्रता का अवश्य ही नाश होकर लक्ष्मी वृद्धि हो, धन-धान्य एवं ऐश्वर्य की प्राप्ति होती हो।

यह यन्त्र खाकी, वादी आबी, आतिशी चार प्रकार का होता है, यह राशि के अनुरूप प्रयोग किया जाता है।

खाकी

८	१	६
३	५	७
४	९	२
वृष	कर्क	तुला

वादी

६	७	२
१	५	९
८	३	४
मिथुन	मीन	कुंभ

आबी

२	७	६
९	५	१
४	३	८
कन्या	मकर	वृ.

आतिशी

४	९	२
३	५	७
८	१	६
मेष	सिंह	धन

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

इन्हें भोजपत्र पर लिखकर कीकर के वृक्ष में बांध देवे तो इन्द्र के समान भी जो प्रबल शत्रु होवे तो भी उसको ज्वर और देहशूल उत्पन्न होगा। हल्दी को जल में घिसकर १०८ यन्त्र पत्थर पर लिखकर दुश्मन की चोखट में गाड़ देवे तो भाई बेटे आदि नातेदारों से कलह होवे। ओंगे के रस से भोजपत्र पर लिखकर गले में बांधे तो तिजारी चौथिया सब प्रकार के ज्वर जाते रहते हैं। भांगरे के रस से इस यंत्र को भोजपत्र पर लिखकर बाहु और हृदय में धारण करे तो शास्त्रार्थ में जीते।

पन्द्रह के यन्त्र का मंत्र

ॐ ह्रीं क्लीं पारस्वपक्ष्या नवनागकुलसेवनाय स्वाह॥

प्रयोग विधि—पन्द्रह के यन्त्र की गोली आटे में बनाकर सवा लाख मछलियों को डाले और इस मन्त्र को पढ़ता रहे। सन्तान के अर्थ इस यंत्र को शताबर के पत्तों पर लिखे, भाग्यवृद्धि के लिये बड़ के पत्तों पर, देश अर्थ के लिये कमल पत्र पर, काम अर्थ के लिये कांसी के पत्र पर भोजन के लिये केले के पत्ते पर इस यंत्र को लिखे।

यन्त्र लिखने की लेखनी

सर्व कार्य की सिद्धि के लिए चमेली की कलम, आकर्षण के लिये जामुन की कलम, स्तम्भन के लिये बड़ की कलम, वशीकरण के लिये कुश की कलम से लिखे तथा शुभ काम के लिये सोने रूपे की कलम से केशर, चन्दन, अगर, कपूर और कस्तूरी से लिखे।

रविवार की प्रयोग विधि

रवौ वारेऽर्कदुग्धेन श्मशाने भस्मना लिखेत्।
यस्य वर्णस्य नामानि चितामध्ये विनिक्षिपेत्॥
विक्षिप्तो जायतो मर्त्यो ह्यष्टोत्तरशतं जपेत्।

अर्थात् रविवार के दिन आक के दूध में मरघट की भस्म मिलाकर इस यन्त्र को लिखे और नीचे वैरी का नाम लिखकर चिता की अग्नि में डाल देवे और उस पूर्वोक्त मंत्र को १०८ बार जपे तो वह मनुष्य विक्षिप्त हो जायेगा।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सोमवार की प्रयोग विधि

चन्द्रवारे गृहीत्वा तु श्वेतदूर्वी च केशरम्।
श्वेतगुंजासमायुक्तं कपिलापयमध्यतः॥
पंचदशीं विलोमं तु संध्याकाले विशेषतः।
यंत्रेण लिस्यते सम्यग्बाह्वोः कंठे च धारयेत्॥
राजानं वशमाप्नौति अन्यलोकेषु का कथा॥

अर्थात् सोमवार के दिन सफेद दूब, केशर, सफेद चिरमिट और कपिला गाय का दूध इन सबको लेकर संध्या समय इस पन्द्रह के यन्त्र को विलोम रीति से लिखे और लिखकर भुजा और कंठ में बांध देवे तो राजा भी वशीभूत हो जाता है और मनुष्यों का तो कहना ही क्या है।

मंगलवार की प्रयोग विधि

भौमवारे गृहीत्वा तु काकरक्तं च पक्षकम्।
यंत्रेण यस्य नामानि मृतवस्त्रे समालिखेत्॥
तस्य द्वारे खनेद्भूमौ भवेदुक्चाटनं ध्रुवम्॥

अर्थात् मंगलवार के दिन कौवे के पंख की कलम से उसी के रुधिर से मुर्दे के वस्त्र पर नाम लिखकर दरवाजे की भूमि में गाड़ देवे तो निश्चय उस मनुष्य का उच्चाटन होगा।

बुधवार की प्रयोग विधि

बुधवारे गृहीत्वा तु नागकेशर रोचनम्।
यंत्रं लिखित्वा तेनैव तस्य वर्ति समाचरेत्॥
सर्पपतैलेन प्रज्वाल्य मंत्रमष्टोत्तरं जपेत्।
नृकपाले कज्जलं कृत्वाञ्जयेन्मोहयेज्जगत्॥

अर्थात् बुधवार के दिन नागकेशर और गोरोचन से यन्त्र लिखकर बत्ती बना लेवे और सरसों के तेल में उसे जलाकर मनुष्य की खोपड़ी पर काजल पारे और पूर्वोक्त मंत्र को एक सौ आठ बार जपकर काजल लगावे तो वशीकरण हो जायेगा।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गुरुवार की प्रयोग विधि

गुरुवार हरिद्रादि रोचनं घृतमिश्रितम्।
यंत्रराजं समालिख्य यस्य नाम समध्यकम्॥
आसने निखनेच्चैव सर्वस्याकर्षणं भवेत्।

अर्थात् गुरुवार के दिन हल्दी, गोरोचन, घी ये मिलाकर मंत्र लिखे, बीच में नाम लिख देवे और आसन के नीचे दबा ले तो सबका आकर्षण होगा।

शुक्रवार की प्रयोग विधि

भृगुवारे सकर्पूरं वचाकुष्ठमधूनि च।
यंत्रराजं तु संलिख्य भूर्जपत्रे सुशोभनम्॥
दृष्ट्वा तं स्त्रिय आयांति प्राणैरपि धनैरपि॥

अर्थात् शुक्रवार के दिन कपूर, वच, कूठ और मधु मिलाकर इस यंत्र राज को लिखे तो इसे देखकर धन और प्राण दोनों लेकर स्त्री चली आती है।

शनिवार की प्रयोग विधि

शनिवारे चिताकाष्ठं पञ्चदशी विलोमकम्।
लिखेद्येषां च नामानि श्मशान निखनेदपि॥
कुक्कुटस्यातिरक्तेन म्रियते नात्र संशयः।

अर्थात् शनिवार को चिता के काठ की कलम से मुर्गे के रुधिर से उलटा यंत्र लिखकर मरघट में गाड़ें, उस पर जिसका नाम लिखा हो वह अवश्य मर जायेगा।

यंत्र लिखने की विधि

चन्द्रो नेत्रे तथा वह्निर्वेदबाणरसास्तथा।
मुनिनागग्रहाश्चैव पञ्चदशी प्रकीर्तिता॥

अर्थात् एक, दो, तीन, चार, पांच, छः, सात, आठ और नौ ये अंक पन्द्रह के यंत्र बनाने में काम आते हैं।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

शान्तिक पौष्टिक यन्त्र

उ उ उ उ उ उ उ उ

उ	क्रौं	क्रौं	क्रौं	क्रौं	क्रौं	क्रौं	क्रौं	उ
ह्रीं	अ	आं	इं	ईं	उं	ऋ	ऋ	ह्रीं
ह्रीं	जं	झं	ञं	टं	ठं	ऊं	ॠं	ह्रीं
ह्रीं	छं	भं	मं	यं	रं	डं	लृं	ह्रीं
ह्रीं	चं	बं	सं	हं	लं	ढं	लॄं	ह्रीं
ह्रीं	ङ	फं	षं	शं	वं	णं	ए	ह्रीं
ह्रीं	घं	पं	नं	धं	दं	तं	ऐं	ह्रीं
ह्रीं	गं	खं	कं	अः	अं	थं	ओं	ह्रीं
उ	क्रौं	क्रौं	क्रौं	क्रौं	क्रौं	क्रौं	क्रौं	उ

उ उ उ उ उ उ उ उ

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

उचित सुन्दर तिथि और शुभ दिन में इस यन्त्र को गोरोचन, केशर, कपूर और कस्तूरी से चमेली की लकड़ी की कील से कांसी की थाली पर लिखे, फिर अत्यन्त भक्ति पूर्वक कमल के फूल, मालती, केतकी, मलिका, बकुल इनके पुष्पों से पूजन करे, ऋतु के फल चढ़ावे, कपूर, तांबूल, धूप, दीप और सफेद वस्त्र से पूजन करे परन्तु सुगन्ध रहित और लाल रंग की कोई वस्तु न चढ़ावे। इसी तरह नैवेद्यादिक से तीन दिन तक पूजन करता रहे, दुर्गापाठ करता रहे, घी और खीर का ब्राह्मणों को यथेष्ट भोजन तीन दिन तक करावे और स्वयं तीन दिन तक पृथ्वी पर सोवे फिर चौथे दिन इस, यन्त्र को निकालकर पत्र में मढ़वाकर भुजा में धारण करे। इस यन्त्र के धारण करने से ऊपरी बाधा दूर हो जाती है तथा विशेष करके अलक्ष्मी, कलह और मन्दभाग्यता ये सब जाते रहते हैं तथा अन्य जो बाधा पहुंचाना चाहते हैं उनका सब कर्त्तव्य व्यर्थ हो जाता है। इस यन्त्र का नाम शांति पौष्टिक है। यह देवताओं को भी दुर्लभ है।

शत्रुनाशक यन्त्र

इस यन्त्र को कौवे के पंख से भोजपत्र पर विष और हरताल से लिखे फिर इस यन्त्र को श्मशान में गाड़ दे। अकस्मात् शत्रु की मृत्यु हो जायेगी।

ॐ
ह्लीं देवदत्त
ॐ

सास-ससुर वशीकरण यन्त्र

ॐ ह्लीं १ ११
ह्लीं
१९
क्री स्वा

इस यन्त्र को गेहूं की रोटी पर लिख काली कुतिया को खिलावे तो सास वश में होय और कुत्ते को खिलावे तो स्वसुर वश में हो जायेगा।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

उच्चाटन यन्त्र

इस यन्त्र को काले कुत्ते के रुधिर से भोजपत्र पर लिखे और विधिवत् पूजन करके कुत्ते के गले में बांध देवे। ज्यों-ज्यों वह कुत्ता दौड़ेगा, त्यों-त्यों वह मनुष्य भी भाग जायेगा।

हक्षीं हक्षीं हक्षीं हक्षीं

साध्य नाम

व्याधि से रक्षा का यन्त्र

यदि वन के बीच से कोई सिंह, व्याघ्र, रीछ, भेड़िया आदि मांसाहारी पशु आ जाय। तब इस मन्त्र को बायें हाथ की हथेली पर थूक से लिख लेवें और अनामिका आँगुली में से थोड़ा-सा रुधिर निकालकर उसके चारों ओर लगा देवे तो वह दुष्ट जन्तु तत्काल भाग जायेगा।

ह्रीं

दूरदेश का मारक यन्त्र

इस यन्त्र को मनुष्य के कपाल पर श्मशान में कौए के पंख से लिखे। फिर इसकी भस्म करके रुधिर और विष से लिखे यन्त्र को शराब सम्पुट में रखकर राख भर देवे और अग्नि के ऊपर रख दें तो दुश्मन चाहे जिस देश को क्यों न गया हो उसको कालज्वर चढ़ेगा।

हुं हुं हुं हुं हुं हुं हुं हुं

फट्

साध्य नाम

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

स्त्री आकर्षण का यन्त्र

ॐ ह्क्षीं क्लाति हां स्वाहा देवदत्त

इस यन्त्र को दाहिने हाथ की अनामिका अंगुली के रुधिर से बायें हाथ की हथेली पर लिख लें और फूल, पान, धूप, दीप से पूजन करे तो वह स्त्री प्रहर भर में आ जायेगी।.

विघ्ननाशक यन्त्र

उं	मं		व
दं	त	को	मं
तं	र	लं	प
	गु	र	गो

इस यन्त्र को मालकांगनी के रस से कागज पर लिखकर गले में बांधे तो कोई भय नहीं होगा।

नर-नारी में विद्वेषण का यन्त्र

ॐ अजिते स्वाहा

दे	व	द	त्त	दे	व	द	त्त
द	र्भ	गा	भ	व	दु	र्भ	गा
						भ	व

ॐ अपराजिते स्वाहा

उक्त यन्त्र को भोजपत्र पर गोरोचन और कुंकुम से दोनों किनारों पर जाप और मौन धारण से लिखकर, नदी के किनारे की मिट्टी ले आवे उस मिट्टी से गणपति की मूर्ति बनाकर इस यंत्र को उस पर डाल देवे और फिर उस गणपति की मूर्ति को गौ के दूध से स्नान करावे, अनेक तरह के फल-फूल, धूप-दीप और मोदकों से पूजन करके स्तुति करे। इस तरह पूजन करके शराब संपुट में रखकर संपुट के ऊपर अघोर-अघोर दो बार लिख देवे और पृथ्वी में गाड़ देवे तो स्त्री पुरुषों में परम विद्वेषण होगा।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

शत्रु वशीकरण हेतु यन्त्र

गलग्लि साध्यनाम गलग्लि

इस यन्त्र को चौदस की रात्रि के समय श्मशान में जाकर मनुष्य के कपाल पर लिखे और धतूरे के रस से मरघट के कोयंला को घिसकर स्याही बनाय और नग्न होकर लिखे। फिर शराब संपुट में इस यन्त्र को रखकर बलि मांसादि उपहार रखे और अपने रुधिर से पूजन करे और उसी जगह गाड़कर प्रतिदिन रात के समय उस पर अग्नि जलावे ऐसा करने से तीसरे दिन ज्वर आकर बढ़ता चला जाता है।

उच्चाटन का यन्त्र

इस यन्त्र को चतुर्दशी की रात के समय लाल वस्त्र और लाल फूलों की

ॐ गं गणपतिं प्रहित ँ गँ देवदत्तः ँ गँ धँ स्वांगहा

माला धारण करके चंदन लगाकर अनामिका अंगुली के रुधिर से लिखे और लाल रंग के ही पुष्पों से पूजन करके ब्राह्मक्ष्णों को भोजन करावे दणिा देवे। फिर इस यन्त्र के टुकड़े करके उच्छिष्ट भात में मिलाकर श्मशान में जाकर कौवों को खिला देवे तो उसका उच्चाटन होगा।

कांसे राज वशीकरण यन्त्र

कांसी के पात्र को राख से मांजकर चमेली की लकड़ी की कलम बनाकर गोरोचन और चन्दन से जिसको वश करना चाहे उसका नाम लिखे और उसके चारों ओर एक गोलाकार कुंडली खींच दे, उसके ऊपर अष्टदल कमल बनाकर वकार लिख दे और एक गोल रेखा खींच देवे उसमें अकारादि सोलह स्वर लिखे और मल्लिका, चमेली तथा श्वेत कमल के पुष्पों से पूजन करे, सुगंधित द्रव्य सामने रखे और एक श्वेत वस्त्र उढ़ा दें। इस यन्त्र का नाम महामोहन है, इसका विधिपूर्वक पूजन करके सुवर्ण अथवा चांदी के ताबीज में मढ़कर शिर, भुजा अथवा गले में बांधे, चाहे स्त्री हो चाहे पुरुष वह सम्पूर्ण दास की तरह वश में हो जाते हैं।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

राजा कोप शांत करने का यन्त्र

ह्क्ष्रीं	ह्क्ष्रीं	ह्क्ष्रीं	ह्क्ष्रीं
ह्क्ष्रीं	देवदत्त		ह्क्ष्रीं
ह्क्ष्रीं	ह्क्ष्रीं	ह्क्ष्रीं	ह्क्ष्रीं

इस यंत्र को भोजपत्र पर गोरोचन, केशर चन्दन में अनामिका का रुधिर मिलाकर लिखे और अनेक प्रकार के पुष्प मिष्ठान्न और मांस से विधिवत् पूजन करे, यथाशक्ति कन्या और ब्राह्मक्षण भोजन करावे, योगिनियों को नमस्कार करके राजदरबार में जाय और मुट्ठक्षी में इस यन्त्रराज को ले जाय तो तत्काल राजा का क्रोध शांत हो जायेगा और राजा उसके वश हो जायेगा।

भवबन्ध विनाशक यन्त्र

इस यन्त्र को भोजपत्र पर गोरोचन और चन्दन से लिखे और लोहे के ताबीज में रखकर शिर पर रखे, धीरे-धीरे संसार से वैराग्य उपजेगा। पुत्र, मित्र धन, स्त्री से मोह बन्धन छूट जायेगा और योगी होकर इच्छापूर्वक विचरने लगेगा।

नि:सारं
नि:सारं
नि:सारं
नि:सारं
देवदत्त
नि:सारं
नि:सारं
नि:सारं
नि:सारं

सेना भगाने का यंत्र

ह्क्ष्रीं ह्क्ष्रीं ह्क्ष्रीं ह्क्ष्रीं ह्क्ष्रीं ह्क्ष्रीं
ॐ ह्क्ष्रीं ॐ ह्क्ष्रीं
ॐ ह्क्ष्रीं ॐ ह्क्ष्रीं
देवदत्त
लांगण
स्वाहा
ह्क्ष्रीं
ॐ ह्क्ष्रीं ॐ ह्क्ष्रीं
ॐ ह्क्ष्रीं ॐ ह्क्ष्रीं
ह्क्ष्रीं ह्क्ष्रीं ह्क्ष्रीं ह्क्ष्रीं ह्क्ष्रीं ह्क्ष्रीं

इस यंत्र को शंखाहुली, सूरजमुखी, गुलदौन के रस में नगाड़े के ऊपर लिखे और डंके की चोट देवे तो सेना भाग जायेगी।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

व्यापार वशीकरण यंत्र

इस यन्त्र को अपने रुधिर में गोरोचन मिलाकर भोजपत्र पर लिखे और सुगन्धित द्रव्यों से पूजन करके एकान्त में रख देवे "ॐ आकर्षय स्वाहा" इस मंत्र को जपे तत्काल वश में हो जायेगा।

ॐ ॐ ॐ
ॐ ॐ
ॐ आकर्षय
स्वाहा:
ॐ आकर्षय स्वाहा: ह्ल अमुक स्वाहा: ॐ आकर्षय
स्वाहा:
ॐ आकर्षय
ॐ ॐ ॐ
ॐ ॐ ॐ

जगत वशीकरण यंत्र

इस यंत्र को कपूर, कस्तूरी, चंदन, गोरोचन चमेली की कलम बनाकर भोजपत्र पर लिखे, इसकी तीन दिन तक विधिवत् पूजा करके ताबीज में मढ़वाकर बांह में बांध लेवे जिसके पास जाय वही वश में जो जायेगा।

ॐ वं जें ह्क्षीं डं
डं ह्क्षीं ॐ ड
वं डं जगत् वं डं ह्क्षीं

वशीकरण यंत्र

इस यंत्र को अष्टगंध से भोजपत्र पर लिखकर विधिवत् पूजन करे और ताबीज में मढवाकर भुजा में बाधें; जो देखे सोई वश हो जायेगा।

ॐ	
नं टं	नं पं
तं तं तं तं तं	दं दं दं दं दं
श्रं श्रं श्रं श्रं श्रं	डं डं डं डं डं
पं पं पं पं पं	यं यं यं यं यं
टं टं	नं नं
ह्रीं	

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दिव्य स्तम्भन यंत्र

इस यंत्र को गोरोचन कुंकुम से भोजपत्र पर लिखे और शराब संपुट में रखकर भक्तिपूर्वक पूजन करे दूसरे दिन निकालकर शिखा में बांध लेवे और मौन होकर फल की चिन्ता करे। उसको इस यंत्र राज की कृपा से कुछ भय नहीं होगा।

ह्रीं
ह्रीं ह्रीं ह्रीं
ह्रीं देवदत्त
ह्रीं
ह्रीं ह्रीं ह्रीं
ह्रीं

पलीता यंत्र

इस यंत्र को कागज पर लिखकर सुंघावे तो प्रेत बकरने लगेगा और बात करेगा, जो पूछे उसका जवाब देगा।

अ	मू	सि	ज	ज	त्र	०	०	०
द	च	जा	पै	नि	खै	०	०	०

मुख स्तम्भन यंत्र

इस यंत्र को अपने घर की दीवार पर खड़िया से लिखे और बीच में शत्रु का नाम लिख देवे। सफेद फूल फल से पूजन करके सफेद वस्त्र उढ़ावे, ब्राह्मण भोजन करावे तो बाद में शत्रुओं के मुख का स्तम्भन होगा।

ॐ ॐ
त द
ॐ ॐ
द
प
ॐ ॐ
ॐ

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ज्वर से रक्षा का यंत्र

उक्त यंत्र को प्रेतभूमि में बैठकर खोपड़े पर धतूरे के रस से लिखे और कृष्णपक्ष की अष्टमी तथा चतुर्दशी को पूजन करके वहीं गाड़ देवे और पूजन करे तो तत्काल ज्वर जाता रहता है, यह यंत्र बालकों के लिये अवश्य करें।

यात्रा स्तम्भन का यंत्र

इस यंत्र को शिलासंपुट पर गोरोचन, हरिताल, हल्दी, कुंकुम से लिखे और पीछे फूलों से तथा धूप, दीप, नैवेद्य से पूजन करे और इस यंत्र को समतल भूमि में रख कर मिट्टी से दबादे तो यात्रा बन्द हो जायेगी।

कुम्भे मोह
देवदत्त मोहे

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

डाकिनी बकुराने का यंत्र

इस यंत्र को कागल में लिखकर लोहबान की धूप दे और ओखली में रखकर कूटे तो डाकिनी का माथा फूटे और बकुरै लगे।

ॐ

ॐ ———— ॐ

ॐ ———— ॐ

ॐ ———— ॐ

ॐ ———— ॐ

ॐ

श्री सीताराम हनुमन्तवीर सहाय।

सर्वकार्य सिद्धि यंत्र

राम	राम	राम
राम	**सीताराम**	राम
राम	राम	राम

इस यंत्र को तांबे के पत्र में चंदन के साथ अनार की कलम से नित्य प्रति भरकर विधिवत् पूजा करे तो सर्व कार्य हों।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

प्रेत भगाने का यंत्र

इस यंत्र को गले में बाधे तो प्रेत दूर हो जायेगा।

ॐ	ह्रीं	२	७
६	३	क्रों	क्लीं
स्य	य	८	१
तं	दं	सं	जं
कं	जि	स	त
४	५	टं	टं

जुए में जीतने का यंत्र

मे	खै	र	क्तं	द	ये	रु	पा
कं	जि	न	नं	द	नी	च	नः
छ	दा	वी	य	मं	त्रं	ते	ष
हे	ष्टि	वा	मो	क्षि	ण	पा	त्रं
त्रं	पा	ण	क्षि	मो	वा	ष्टि	हे
ष	ते	त्र	म	य	वीं	दा	छ
नः	व	नी	द	नं	न	जि	क
पा	रु	य	द	क्त	र	खै	मे

इस यंत्र को अड़ीं के पत्ते पर कौवे के पंख से काजल की स्याही बनाकर रात के समय पवित्र होकर लिखे, यह चौसठ कोष्ठ का यंत्र है इसमें इस बत्तीस अक्षर के मंत्र को अनुलोम और प्रतिलोम रीत से लिखे॥

''मेखैरक्तं दयेरुपाकजिननंदनीचनः ।
छदावीं ये मंत्र ते षहेष्टि बामोक्षिण पात्रम्''॥

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आकर्षण यंत्र

सौं
सौं सौं
ह्लीं अमुक ह्लीं
सौं सौं
सौं

इस यंत्र को गोरोचन से भोजपत्र पर लिखकर धूप-दीप से पूजन करके घी में रख देवे और नित्यप्रति पूजन करके त्रिपुरा की प्रार्थना इस मंत्र से करें।

"आकर्षय महादेवी देवदत्ते मम प्रियम्।
ऐं त्रिपुरे देवदेवेशि तुभ्यं दास्यामि याचितम्॥"

पति वशीकरण यंत्र

गँ गँ गँ गँ गँ गँ गँ गँ गँ गँ

ह्लीं ह्लीं ह्लीं ह्लीं ह्लीं ह्लीं ह्लीं
क्रों ह्लीं क्लीं गं अमुकः गं
क्लीं ह्लीं कों ह्लीं क्लीं क्रों ह्लीं
ह्लीं ह्लीं ह्लीं ह्लीं

गँ गँ गँ गँ गँ गँ गँ गँ गँ गँ

गँ गँ गँ गँ गँ गँ गँ गँ गँ गँ

एक लम्बा-चौड़ा ऐसा भोजपत्र लावे जिसमें छेद न हो फिर अनामिका अंगुली का रुधिर, हाथी का मद, जावक और गोरोचन। ये चारों चीजें मिलाकर चमेली की लकड़ी की कलम से इस यंत्र को लिखे। फिर एक सुन्दर शुद्ध खेत से काली मिट्टी लाकर उसकी गणपति की मूर्ति बनावे और उस मूर्ति के उदर में इस यंत्र को रख देवे। धूप, दीप, फूल माला आदि से पूजन करस्त्रह्य इस मंत्र का उच्चारण करे—

"देव देव गणाध्यक्ष सुरासुरनमस्कृत।
देवदत्तं महावश्यं यावज्जीवं कुरु प्रभो॥"

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

इस मंत्र स्त्र्य उच्चारण करके हाथभर गहरा एक गड्ढा खोद कर उसमें उस मूर्ति को रख देवे। ऊपर से मिट्टी दाब देवे तो वह मनुष्य गणेशजी की कृपा से जब तक जीवेगा, वशीभूत रहेगा।

अग्नि भयनाशक यंत्र

हे भवनि! यह यंत्र वह है कि ह्लहां स्थिर होता है अग्नि का भय नहीं रहता है। जिसके हाथ में यह यंत्र होता है उसको स्वप्न में भी अग्नि का भय नहीं होता है।

विधि— एक लंबे चौडे भोजपत्र पर चंदन, गोरोचन, कपूर इनसे इस यंत्र को लिखे फिर इसको त्रिलोह के ताबीज में मढवाकर भुजा या गले में बांधे अथवा घट के बीच में दूध में डाल देवे और नित्य प्रति इसका पूजन करता रहे और एक ब्राह्मण को भोजन करा देवे। इससे अग्नि का भय कभी नहीं रहता हैं।

साध्य नाम

कालानल स्वामी वशीकरण यंत्र

यह यंत्र इस तरह लिखा जाता है कि एक तीन रेखाओं से आवृत चतुष्कोण में उतनी ही लिखे जितने उस साध्य के नाम के **ह्मींह्हींह्नींह्लींह्लीं** अक्षर होते हैं। और नाम के हर एक अक्षर को ह्राँ के गर्भ में रख देवे। अन्त में एक इकार लिख देवे यह यंत्र गोरोचन से भोजपत्र पर लिखा जाता है इस यंत्र को लिखकर एक चांदी की प्रतिमा के हृदय में रख कर उस मूर्ति का पूजन करे। और चौदस की रात को चूल्हे के राये में पृथ्वी खोदकर इसको गाड़ देवे तथा बकरे का रुधिर, भात और पूजा करके इनका बलिदान करे। इस मंत्र को पढ+ता जाय्र

मंत्र— ॐ महाकालाय स्वाहा।

इस मंत्र से १०८ आहुति देवह्य तो कैसा ही हठी, क्रूर और दुराग्रही स्वामी क्यों न हो वशीभूत हो जायगा। इस यंत्र का नाम कालानल है।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आकर्षण यंत्र

इस यंत्र को गोरोश्चन, केशर, चन्दन से भोजपत्र पर लिखे और फिर धूप, दीप, फूल माला, नैवेद्य आदि से विधिवत् पूजा करके ऊपर से पीला सूत लपेट देवे, मनुष्य के शरीर के उबटने की मूर्ति बनाकर उसके हृदय में इस यंत्र को रख देवै और उबटन ही से ढक कर तीन दिन तक सायंकाल के समय खैर की अग्नि से गरम करे। गरम करते समय इस मंत्र का उच्चारण करता रहे।

सः सः सः सः सः इ०
सः सः क्रों ह्रीं क्रों
साध्य नाम
ह्रीं क्रों ह्रीं क्रों
ह्रीं क्रों ह्रीं दर

तापन मंत्र

ॐ देवदत्तं वेगेन आकर्षय मणिभद्र स्वाहा।

इस रीति से करने पर देशांतर में गया हुआ मनुष्य वह चाहे जितनी दूरी पर क्यों न हो तत्काल खिंचा हुआ चला आता है।

यात्रा स्तम्भन यंत्र

यदि कोई प्यारा हितस्षी परदेश को जाता हो और उसे रोकना चाहे तो इस यंत्र को करे।

विधि—इस यंत्र को काठ के तख्ते पर खड़िया से लिखे जिसके नाम का यंत्र सिद्ध करना चाहें उसका ना ज़कार के बीच में लिख देवे। इस तरह विधिपूर्वक इस यंत्र को लिखकर घर के बीच में इस तख्ते को औंधा टांग देवह्य और फूल, माला, नैवेद्य आदि से पूजन करता रहह्य तो निश्चय अपना प्यारा यात्रा में जाने से रुक जायेगा।

लं		लं
	ज साध्यनाम	
लं		लं

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

शत्रु स्तम्भन यंत्र

		उं	उं	उं	उं	उं	उं	उं	
		ठं	ठं	ठं	ठं	ठं	ठं		
	ठं								
उं	ठं								उं
	ठं	ह्लीं	ह्लीं	ह्लीं	ह्लीं	ह्लीं	ह्लीं	ठं	
	ठं	में	में	में	में	में	में	ठं	
	ठं								
	ठं	लें	लें	लें	लें	लें	लें	ठं	
		वें	वें	वें	वें	वें	वें	ठं	
		रें	रें	रें	रें	रें	रें	ठं	
		यूं	यूं	यूं	यूं	यूं	यूं	ठं	
उं									उं
		ठं	ठं	ठं	ठं	ठं	ठं		
		उं	उं	उं	उं	उं	उं	उं	

इस यंत्र को स्वच्छ, लम्बे-चौड़े छिद्ररहित एक भोजपत्र में लिखकर विधिवत् पूजन करे और नीचे लिखे हुए मंत्र का जप करे।

मंत्र

अँन्हल्यर्ध्दड्ढ ल ल ल लं अमुकस्य मुखं
स्तंभय स्तंभय ठः ठः ठः ठः ठः स्वाहा॥

इस मंत्र को सायंकाल के समय तीन दिन तक १०८ बार प्रति दिन जपे और विधिवत् पूजन करता रहे। इस यंत्र के प्रभाव से शत्रु की गति, मति, बुद्धि बिल्कुल नष्ट हो जाती है और वह शत्रु ऐसा हो जाता है जैसा मूढ़ और गूंगा और ऐसा मालूम होता है कि उस पर कोई ग्रह लग गया है जहाँ पर अमुक शब्द का प्रयोग है वहाँ पर साध्य का नाम को बोलना चाहिये।

मित्रदर्शन यंत्र

लाल चंदन और अपने रुधिर से भोजपत्र पर इस यंत्र को लिखकर गंध, पुष्प से पूजन करे, धूप, दीप नैवेद्य, अक्षत, माला चढ़ावे। फिर इस यंत्र को घृत में डाल

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ह्लूँ

ह्लूँ साध्यनाम ह्लूँ

ह्लूँ

देवे तो मित्र तीन दिन के भीतर आकर मिले, यह यंत्र अत्यन्त गोपनीय है, इसे किसी को न देवे, न किसी से इसका भेद कहे।

मंत्र सर्व सुखदाता

श्री गुरु गणपति को सुमिरी धर सरस्वती ध्यान।
जो शिव गिरिजा सर कत्यो लिखूं मंत्र को व्यान।।

1. अक्षर हरि को रूप है हरि की शक्ति अपार।
जोग जुगति सों जानिये ताको कछु विस्तार।।
2. गुरु बिन ज्ञान मिलै नहीं हरि बिन मिले न ध्यान।
मुक्ति संग हरि भक्ति के हरि सेवा सुंजान।।
3. यंत्र, मंत्र अरु तंत्र जो विधि सों साध।
मनवांछित फल पाइ है गुरु सेवन सों बांध।।

सर्वोपरि मंत्र-तंत्र सिद्धि की विधि

ॐ परब्रह्म परमात्मने नमः जग दुत्पत्ति स्थिति मलय कराय ब्रह्म हरि हराय त्रिगुणात्मने सर्व कौतुकानि दर्शय दत्तात्रेयाय नमः तंत्रान सिद्धिं कुरु कुरु स्वाहा।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विधि

दीपक घृत कार का बार के धूप खेवे। चन्दन, पुष्प, नैवेद्य, चढ़ाकर 108 बार मंत्र को जपे, सिद्धि मुहूर्त से 21 दिनों में सिद्धि होवे, फिर जो तन्त्र करे, इसी मंत्र से करे।

मंत्र–ॐ नमो नारायणाय विश्वंभराय इन्द्रजाल कौतुक निदर्शय निदर्शय सिद्धि कुरु कुरु स्वाहाः।

प्रथम देह रक्षा को मंत्र

ॐ परमात्मने परब्रह्म मम शरीरे पाहि पाहि कुरु कुरु स्वाहाः 108 बार जपेत सिद्धि।

रसायन मंत्र–कोई चाटक चेटक करे तो इस मंत्र का जाप 21 दिन प्रतिदिन 108 बार करे तो मंत्र सिद्ध हो। प्रथम अपने शरीर की रक्षा करे।

ॐ नमो हरि हराय रासायन सिद्धि कुरु कुरु स्वाहाः

अनाज की राशि उड़ाने का मंत्र

ॐ नमो हूंकालूं 64 जोगिनी हुंकालूं 52 वीर कार्तिक अर्जुन बीर बुलाऊं आगें 64 वीर जल-बन्ध बलबन्ध आकाशबन्ध पौन बन्ध दीन देश की दिशा बन्ध, उतरे तो अर्जुन राजा दक्षिणे तो कार्तिक बीर्य राजा असमान भो 52 वीर गाजें नीचें तो 64 जोगिनी विराजें परितो पासि चल्यावें छपन्या भैंरु राशि उड़ावें एक बंध आसमान में दूजा बंध राशि घर में ल्याया शब्द सांवा पिंड कांचा फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा सत्तय नाम उप देश गुरु का।

प्रयोग विधि–दिवाली की रात्रि को बन में जाय, सुस्सा की मेंगनी लावे तिनको 21 बार मंत्र के राशि पर घर का आप घर जावे तो रास सब की सब चली आवे।

मंत्र ऋद्धि सिद्धि का–ॐ नमो आदेश गुरु की गणपति वीर वसे मसान जो मांग सो 2 आणा पांच लाडू सिर सिन्दूर हाटि की माटी

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मसाण की खेप ऋद्धि सिद्धि मेरे पास लावे शब्द सांचा, पिंड कांचा फुरो मंत्र ईश्वरो बांचा।

प्रयोग विधि–ब्राह्मणों को भोजन करावे तो प्रथम पांच लड्डू लेकर उन पर सिन्दूर लगावें, कूप पर जाकर छोटे कलस में एक लड्डू धरके कूप में नाखे, जब कलस भरले तब लड्डू कूप में डालकर आवे, माल के कोठा में कलस को स्थापित कर पूजन करे, चढ़ा के ब्राह्मणों को अमवा बिरादरी को भोजन करावे तो माल टूटे नहीं।

गड़ा धन दीखने का मंत्र

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं सर्वोषधि प्रणते नमो च्चिे स्वाहाः।

प्रयोग विधि–करे कांग की जिह्वा को कारी, गाय के दूध में ओटा कर जमावे और घृत काढ़ 108 बार अभिमन्त्रित कर नैत्र में आंजे अथवा काजर बना के जो मनुष्य पायन की तरफ से जन्मा होय उसके नैत्र में लगावे तो पृथ्वी का गढ़ा धरा धन दीखे, दूसरे पाद के 65 वै सफे की 12 वीं सतर देखो।

स्थान खोदने की विधि–बिनोले मूंग तिल गउ मूत्र में पूर्व मंत्र से लेकर पीसे, अंग में लगावे फिर जहां खोदे, चौका देकर बलिदान दे, यह मन्त्र पढ़ दें।

ॐ नमो भगवति सुमेरु रुपायौ महाकांतायै कंकाल रुपायै फट स्वाहाः।

प्रयोग विधि–इस मंत्र से गेहूं-तिल का होम करे चूर करे तो सर्पार्दिक का भय न होवे। दिन 7-7 नक्षत्र देखकर खोदे।

मारग चलै हारे नहीं मंत्र–ॐ नमो विचंडाय हनुमंत वीराय पवच पुत्राय हुं फट।

प्रयोग विधि–वंशलचोन, श्वेत भांगरा, बकरी का दूध को पुष्य नक्षत्र में सिद्धि करले नक्षत्र तक जाप करे जब कहीं जाय पावके तलवे में लावे जब सूख जाय तब चले तो हारे नहीं।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

देह रक्षा का मंत्र—छोटी मोटी थमंत वार को बांधे पार को पार बाधं मराध मसाण बांधे जादू बीर बांधे टोना टम्बर बांधे दोउ मूंठ बांधे गोरी छार बांधे भिड़िया और बांघ बांधे लखूरी स्यार बांध से बीछू और सांप बांधे लाइलाह का कोट इल्लल्लाह की खाई मुहम्मद रसूलिल्लाह की चौकी हजरत अली की दुहाई।

विधि—जंगल या घर में सोवे जब 3 बार पढ़के मोड़ा पर हाथ मारे, जितनी पृथ्वी का पृथ्वी का प्रबन्ध करे उतनी में घेरा खींच दे तो किसी प्रकार का भय न होवे।

मार्ग में साँप-चोर नाहर का भय न हो

मंत्र—फरीद चले परदेश कों कुत्तक जी के भाव सापां चोरां नाहरां तीनों दांत बंधाव।

(जहां सोवे बैठे तीन बार मंत्र की ताल दे।)

मार्ग में बाघ का प्रबन्ध—मंत्र बाघ बाधूं वधाई निबांधू बाघ के सातों बच्चा बांधूं राह बाट मैदान बांधू दुहाई वासुदेव की, दुहाई लोना चमारी की।

विधि—सात मंगल इस मंत्र को 7 बार जपले मार्ग में बाघ किले तो इस मंत्र को पढ़कर 9 बार फूंक दे।

मंत्र आपत्ति तालने का

शेख फरीद की कामरी और अंधियारी निशि तीनों चीज बराइये आग ओला पानी विष।

विधि—मार्ग में पानी बरसे ओला पड़े आग दिखे तो मंत्र तीन बार पढ़कर ताल दे।

मंत्र दिशा बंधन का—या हिसार 3 जिन्न देव परी जवर कुफार एक खाई दूसरी गिर्द पसार विर्द वार्गिद मलायक असवार दाहें दस्त रखे जिब्राईल वायां दस्त रखे मीकाईल पीठ रखे, इसाफील पेट रखे इज्राईल दस्त चपहसन दस्त रास्त हुसैन पेश्वा मोहम्मदगिर्द वगिर्द अली लाइलाह का कोट इल्लिंल्लाह की खाई हजरत अली की चौकी बैठी मुम्मद रसूलिल्लाह की दुहाई।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

प्रयोग विधि—सात बार पढ़ के चारों हाथ अपने फिराकर चुटकी बजावे अथवा अपने चारों लकीर काढ़कर बैठे सफर में जहां पढ़े मसाणादि में तो वहां भी ऐसा ही करें।

मेघ स्तम्भन मंत्र

ॐ नमो भगवते रुद्राय जलस्तंभय स्तंभय ठः स्वाहाः

विधि—मसाण के कोयला को सुलगा के इस मंत्र के इसके ऊपर और एक तले पर मार्ग में अथवा रोटी करते में मेघ वर्षे तो बन्द हो।

दरिद्रता नाश मंत्र

या कबीयो या मनीयो या मलीयो या वकीयो।

प्रयोग विधि—प्रात:काल बात करने से पहले हाथ मुंह धोके एक बार बिस्मिल्लाह पढ़ के एक हजार दो सौ बार मंत्र को पढ़े मंत्र के आदि अंत में 21 बार दरुद को पढ़े तो थोड़े ही दिन में दरिद्र का नाश हो।

रोजी का मंत्र

या इश्राफील बहक्क या अल्ला हो।

प्रयोग विधि—सवा पाव उड़द के चून की खमीर करके अपने हाथ से रोटी बनाये। एक ओर दो तह करके सफेद रूमाल में रख के चौथाई रोटी की गोली जंगल में बेर के समान बनाये 101 गोली बनाके 11 बार मंत्र के एक गोली को इसी प्रकार सब गोलियों को

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

शेष रोटी समेत जिस दरिया में मछली हों डाले तो 40 दिन में मनोर्थ पूरा हो।

रोजी प्राप्ति का मन्त्र—काली कंकाली महा काली मुख सुन्दर जिये ज्वाला बीर बीर भैंरू चौरासी बता तो पूजूं पान मिठाई अब लोलो काली की दुहाई।

प्रयोग विधि--नित्य प्रति स्नान कर इस मंत्र को 7 बार लगातार गह पूर्व मुख बैठकर पढ़े तो रोजी मिले।

किसी ने मूठ चलाई हो तो इस मन्त्र सों मूंठ को अपने पास बुलाय के उलटी भेज दे और यही मन्त्र वसीकरन का भी है। काला कलवा चैांसठ बीर मेरा कलवा मंगा तीर जहां को भेजूं वहां को जाइ मांस मच्छी को छुवन न जाय अपना मारा आपहि खाय चलत बाण मांरू उलट मूंठ मांरू मार मार कलवा तेरी आख चार चौमुखा दीया न बाती जा मांरू वाही की लात इतना काम मेरा न करे तो तुझे अपनी मां का दूध पीया हराम

सिद्धिकरण विधि—सत चाल प्रति दिन 21 बार पढ़े घीका दीपक रखे अग्नि पर गूगर खेवे लोंग जोड़ा फूल मिठाई रखे। सिद्ध हो फिर मूंठ आवे इस मंत्र से उलटी भेजे और आक्रमण बसी करन कू सुपारी की छाल पर 21 बार पढ़े पान में रखकर खिलावे।

रोगी की परीक्षा—काचा सूत रोगी के पांव से सिर तक पूर कर 21 मंत्र फूंकर डोरा कूं नापे बट जाय तो आसेव का खलल है पटे तो देह रोग है।

किया-कराया के उतारने और देह से रोग निकालने का मन्त्र—ॐ नमो आदेश गुरु को में ऊपर केश विकट भेष खंभ प्रति प्रहलाद राखे पाताल राखे पांव देवी जंघा राखे कालिका मस्तक रखे महादेवजी कोई या पिंड प्रान को छोड़े छेड़े तो देव दाना भूत प्रेत डाकिनी शाकिनी गांड ताप तिजारी जूड़ी एक पहरू दो पहरू सांझ को संवारा को कीया को कराया को उलटा वाही के पिंड पर पड़े इस पिंड की रक्षा श्री नृसिंह जी करें शब्द सांचा पिंड कांचा फुरो मंत्र ईश्वर वाचा।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

प्रयोग विधि—सात बार मंत्र के रोगी को झाड़ा दे या भंडा कर दे। श्री गुरु।

रक्षा मंत्र—ॐ नमो आदेस गुरु को बजरी बजरी वज्र किवा बज्री पै बांधो दशों द्वार को घाले यात उलट वेद वाही कों खात पहली चौकी भैंरू की चौथी चौकी रोम रोम की रक्षा करवे कों श्री नृसिंह देव आया शब्द सांचा पिंड कांचा फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा सत्य नाम अदेस।

गुरु की विधि—इस मंत्र को शनि से 21 दिन तक प्रति दिन 21 जाप करे घृत का दीपक आये फूल मिठाई गूगर धूनी रखे सिद्ध होवे फिर अष्टमी को भोग दे रोगी सात बार मंत्र के पानी पिलावे तो कीया कराया का दोष जाय।

सर्व पीड़ा हरण का मंत्र—लश्कर फर ऊन दर रोदनी लगर्क शुद।

प्रयोग विधि—जहां कहीं दर्द हो पीली मांटी से मंत्र को तीन बार लिखे फिर मांटी के बराबर गुड़ तुलाके लड़कों को बांट दे।

सिर की पीड़ा का मंत्र—दो ताबीज लिखे एक को खारीं जमीन में गाढ़े एक को रोगी के सिर में बांधे ताबीज यह है।

6768

दांतों की पीड़ा का मंत्र—हे दंता तुम क्यों कुलता हमें तुमें संजाइना हमरा कसर तुम हो वत्तीस हमरी तुमरी कौनसी रीति हम कमायं तुम बैठे खाऊ मृत्यु की बिरियां संग ही जाऊं।

प्रयोग विधि—मुंह धोवे तब हाथ में जल लेकर 7 बार मंत्र के कुल्ला करे पीड़ा जाती रहे हिलते दांत जमें।

डाढ़ पीड़ा का मंत्र—ॐ नमो आदेस गुरु को नौ लाख कांबरू एक बार जायं बैंठे बघल बाल गंगा जमुना सरस्वती जहां बैठे गोरख मौसम सिखर परवत से आइ काम धेनु छत्तीस सेग टलें आधा दीया पृथ्वी आधा वायु भौंरा पाहीं रणया सिसपासु बटियाम दौड़ रक्षा करें श्री रामचन्द्र हनुमंत दाल भाव रोग दोष जायं पराई सीव गुरु की शक्ति मेरी भक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

प्रयोग विधि–अक्षत पाणी 21 बार मंत्र के साथ निवास पर बैठे डाढ़ा काढ़ता जाय पानी के छींटे देता जाय इति।

डाढ़ के कीड़े का मंत्र–सवारी में सीसी सीसी में मीची मीची में कीड़ा कीड़ा में पीड़ा कीड़ा मरे पीड़ा टरे शब्द सांचा। पिण्ड कांचा फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

प्रयोग विधि–लोहे की दो कील सों चांकजे एक को कूवा में डाले दूसरी को नींव से गाढ़े।

अथवा–कामरू देश कमष्या देवी जहां बसे इस्माइल जोगा इस्माइल जोगो ने पाली गाय नित उढ चरवा वन में जाय वन में चरे भूखा गंभूर जो गाय गोबर चरे जामें निपजे कीड़ा सातसूत सुतला पूंछ सुंता तामंड़ पिंजर सहमुला भाल में मुड़ी करे लेदुख बेशख नाथ की दुहाई फिरे शब्द सांचापिंड कांचा फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

प्रयोग विधि–इस मंत्र से लोहे की कील तीन बार सात सात मंत्र के काट में ठोके।

दस रोग का एक मंत्र

परबत ऊपर परबत पर वन ऊपर फटिक सिला पर अंजनी जिन जाया हनुमंत ने हला टेहला कांख की कख लाई पीछी की अदीठ कान की कनफेर रान की बद कंठ की कंठ माला घुटरने का डडरू हाड़ की हड़ सूल पेट की ताप तिल्ली फीया इन को दूर करे भस्वंत नातर तुझे अंजनी माता का दूध पीया हराम मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो बाचा सतनाम आदेस गुरु का।

प्रयोग विधि–शनिवार सौं 21 दिन हनूमान जी को पूजन विधि पूर्वक करे नित्य 108 मंत्र जपे सिद्ध होय होनी बिजली में मंत्र जप लिया करे छहरू को आक से तापतिल्ली को छुरी से कखलाई, अदीठ कनफेर वद कंठ माला राख से डठशूल नीम की डार सात बार झाड़े।

अदीठ का मंत्र–ॐ नमो नस कटा बिष कटा भेद मज्जा बद फोड़ा फुनसी अदीठ दुर्बल दुख न्यौंर त्यांवरीं घनवाद चौंसठ जोगिनी बावन बीर छप्पन भैरूं रक्षा करें जो आई।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विधि—विभूत की चुटकी 7 दिन 7 कर मंत्र के दीजे रोग जाता रहै।

अथवाय कान पीड़ा का मंत्र

ॐ नमो अदेस गुरु को बाल में बाल कपाल में भेजी-भेजी में कीड़ा कीड़ा में करन पीड़ सोना का सिला का रूप का हथौड़ा ईश्वर घडे मर्ज़ा तोड़ें शब्द स्पंचा पिंड कांचा चलो मंत्र इश्वरों बाचा।

प्रयोग विधि—विभूतसों 5 बार चाकले अच्छा हो।

मंत्र कंठवेल का—ॐ कंठवेल लूडन दुमाजी सिरपर जड़ी लव्र की तालीमोर खराय जागता आया बढ़ती बेल कुंतुरत घटाया। घट गयी बेल बढ़े नारोग पाचै फूंठा पीड़ा करे तो गुरु गोरख नाथ की दुहाई फिरे।

प्रयोग विधि—विभूतसो चाकजे।

मंत्र काखलाई का—ॐ नमो काखलाई भरी तलाई जहं बैठे हनुमंता आई पचै नफूटै चलै न नाल दशा करे गुरु गोरख नाथ।

प्रयोग विधि—नीवकी डाली में झाड़ देवे।

आंख की फूली कटै—मंत्र। उतर कूल काछ सुन जोगी की बाछ इस्माईल जोगी की दो बेटी एक पाथे चूल्हा एक काटे फूली का काछ फुली का काछ फुली का माछा। छुरी से 21 बार जमीन में लकीर काढे 7 दिन में फुली कटै।

आंखों की रोशनी घटै नहीं

मंत्र—श्रजातश्च सुकन्याश्च चवनम् शक्र भष्यक भोजनांते स्मरेतस्य तस्यनेत्रं न नश्यति।

भोजन के अन्त में याणी की चुल्लू पर ज्वार पढ़के नेत्रों में धोये।

नेत्र दूखने का मंत्र—ॐ नमो झलमल जहर भरी तलाई, जहां

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बैठा हनुमंता आई फूटैन पालै न करै न पीड़ा, जती हनुमंत राखे हीड़ा विभूत से चाकले।

नेत्र रोग का मंत्र—ॐ नमो श्रीमान की धनी लछमन का बाण-आंख दर्द करे तो लछमन रुवर की आण, मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा सत्त नाम आदेस गुरु का।

प्रयोग विधि—दिवाली को 544 बार जपै सिद्ध हो तो राख झाड़े रोग जाता रहे।

पेट की पीड़ा का मन्त्र

ॐ नमो आदेश गुरू का श्याम गुरु पर्वत श्याम गुरु पर्वत में बड़ बड़ में कूआ कूआ में तीन सूरवा कौन 2 सूवा वाय सूवा जहर सूवा पीड़ सूवा भाज भाजबे जहर आइगा जती हनुमंत मार करेगा भस्मंत फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा सात बार पानी मंत्र के सात दिन पिलावे।

दाड़ की पीड़ा का मंत्र

ॐ नमो आदेश गुरु कों वन में व्याई अंजनी जिन जाया हनुमंत कीड़ा मकुड़ा मा कुड़ा ये तीनों यस्मंत गुरु की शक्ति मेरी भक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

प्रयोग विधि—दिवाली को अथवा ग्रहण में सिद्ध करे नीव से आके रोग जाय।

अन्य प्रकार—ॐ नमो आदेश गुरु कों वन में व्याई अंजनी जिन जाया हनुमन्त फूनी फुंसी गूमड़ी ये तीनों भस्मंत। पूर्व युक्ति सिद्ध को गूमडे पैहाव फेला जाय, वार मंत्र पढ़ें।

जानु वा पसली डमरु वाई तीनों का एक ही मन्त्र—ॐखंखारी खंखारा कहा जया सवा लाख परवतों गया सवा लाख परवतों जाय कहा करेगा सवा भार कोइला करेगा सवा भार कोइला कर कहा करेगा हनुमंत वीर का नवचन्द्र हांस खडग धड़ेगा नव चन्द्र हास खड़ग पड़ कहा करेगा जानुदा डमरू पसली वायु कूं

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

काढ़ि काढ़ि खारी समुन्द्र में नाखेगा जगत गुरु की शक्ति मेरी भक्ति फुरोमंत्र ईश्वरो वाचा।

प्रयोग विधि—तिली का तेल सिंदूर मिला के तिल में मंत्र के आंके।

ऊबा का मन्त्र

ॐ नमो खंखारी खंखारा कहां गया सवा लाख पर्वतों गया सवा लाख पर्वतों जाय कहा किया काई लाक राया कोईला कराय कहा किया छुरा घड़ाया छुरा घड़ाइ कहा किया ऊबा का हांड़ गोड़ कूटि काटि लिया कामल में लपेट समुद्र पार बगाया शब्द सांचा पिंड काण फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

प्रयोग विधि—तीर का सांचा अंगुल 8 लीजे तासी मंत्र घोरुश में।

पीलिया का मन्त्र

ॐ नमो आदेश गुरु कों रामचन्द्र सिर साधा लछमन साधा बाण काला पीला राला लीला थोथा पीला पीला पीला चारों झड़ जो रामचन्द्र जी थाके नाम मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो बांचा।

प्रयोग विधि—सुई से पीतल की कठोरी में पाणी भर 7 दिन झाड़जे।

ॐ नमो बीर बेताल असराल नारसिंह देवपाता तुपाती तुपीलिया भेदतु नास्तु पीलिया नास्तु।

प्रयोग विधि—कड़ुवा तेल कटोरा में लीजे रोगी के माथे धरजे दूसरे मन्त्र जे तेल पीला हो तब उतार लीजे 3 दिन मन्त्र जपे।

सीया का मन्त्र

ॐ नमो कामरु देश कमख्या देवी जहां बसै इस्माइल जोगी इस्माइल जोगी इस्माइल जोगी के तीन पुत्री एक तोड़े एक पिछो हे एक तोते जरी तोड़े।

प्रयोग विधि—रोगी को खड़ा करे जहां ठंड लगे तहां हाथ से पकड़े 21 बार मन्त्र के फूके से सीया जाता रहे इति।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पसली डबिका का मन्त्र

समन्दर के किनारे सुरहमाय सुरहगाय के पेट में बच्चा के पेट में कलेजा कलेज के पेट में डब डब कटेस खड़े दुहाई लौना चमारी की।

प्रयोग विधि—होली दिवाली ग्रहण में 144 बार मंत्र लोबान खेवे सिद्धि हो फिर रामेसर की लकड़ी और सींक कोरी सात-सात अंगुल की काट कर उनसे 7 बार मंत्र के झाड़ा दे दोनों वस्तुसों झाड़े तो दोनों वस्तु बढ़ती जायेगी जब रोग मिट जाय तब ज्यों की त्यों ही जायेगी।

रींधन वाय का मन्त्र

कामरु देश की माया देवी जहां बसै इस्माईल जोगी इस्माईल जोगी के तीन पुत्री एक तोड़े एक बिछोड़े एक रेधन वाय को तोड़े शब्द सांचा पिण्ड कांचा फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

प्रयोग विधि—मणिहार के मोगरा से झाड़ दें।

गंडा देने का मन्त्र

बंध तो बंध मौला मुर्त्तजा अली का बंध कीड़े और मकोड़े का बंध ताप और तिजारी का बंध जूड़ी और बुखार का बंध नजर और गुजर और गुजर का बंध दीठ और मूठ का बंध कीये और कराये का बंध भेजे और भिजाये का बंध नावत पर हाथन का बन्धन बंध तो बंध मौला मुर्त्तंजा अली का बंध राह और बाटका बंध जमीन और आससान का बंध घर और बाहर का बंध पवन और पाणी का बंधकू वांपनि हारी का बंध लौह कलम का बंध बंध तो बंध मौला मुर्त्तंजा अली का बंध।

प्रयोग विधि—घेगी की एड़ी से चोटी तक डोरा नापकर मंत्र से 7 गांठ देकर सवा पाव मिठाई मंगाकर मुर्त्तंजा अली के नाम से बालकों को बांट दे और गंडा को लोवान की धूनी देकर रोगी के कंठ में बांधे।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अन्न पचने का मन्त्र

अगस्तं कुम्भकरंण चश निंच बड़वा नलः आहार पाच नार्थाय स्मरते भी मंच पंचमम्।

प्रयोग विधि—रसोई जैम कर इस मंत्र से पेट पर हाथ फेरे।

अथवा

वज्र हाथ वज्र हाथ भस्म करे सब पेट का हाथ दुहाई हजरत शाह कुल्ल आलम पांडवा की।

विधि—बाएं हाथ पर 11 बार मंत्र जपकर पेट पर हाथ फेरे जो अन्न खावे गिरानी मिटे।

आधासीसी का मन्त्र

बन में जाई बांदरी जो आधा फल खाय खड़े मुहम्मद हांकदे आधा सीसी जाय।

विधि—शुक्ल पक्ष में पहले बृहस्पति को 108 बार मंत्र पढ़के सिद्ध कर ले फिर रोगी के सिर पर तीन बार मंत्र पढ़कर फूकें।

जहर उतारने का मन्त्र

गंगा गोरी दोऊ रानी टाकन मारि काड़े विष पाणी गंगा बांटे गौरा खाय अठारा मार विष निर्विघ हो जाय गुरु की शक्ति मेरी भक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

प्रयोग विधि—रविवार को 7 मंत्र पढ़े तो सर्व विष जाता रहे।

नगराता का मन्त्र

जा दिन गरते चाली रानी सहस कोटि लपच्यार वोट काली कावली सवै एक उनहार मंदिर माहीं घर करे प्रजा ने बहुत सतावे दुहाई हनुमंत जती की जो हमारी गैल में आवे लंका सो कोट समुन्द्र सी खाई जे कीड़ा नगरो रहें तो जती हनुमंत बीर की दुहाई शब्द सांचा पिंड कांचा फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा सत्य नाम आदेश गुरु का।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

प्रयोग विधि—काले तिल 7 बार मंत्र के कीड़ान पर नांखे दिन सात या 14।

बीच्छू विष का मन्त्र

ॐ नमो सरै गाय पर्वत जाय रै चरै सखो बंबल सल गाय गोबर कियो जिहि सों उपजा बिच्छू सात कालो कंकल वालो सांप सर्पनी वालो हरो लीली केलो उतरे तो उतारुं नहीं तो मारे कंठ को धरि हंकारुं शब्द सांचा पिंड काचा।

विधि—जूती या नींव की डार से 7 बार झाड़े विष उतरे।

तथा—ओं नमो आदेस गुरु को क्योंकि बीछू नैं तो काठा गोंद गिरी मुख चाष्यों मैं काठा ने पानी पकाके काठयो उतर जाय उतरै तो उतारू चढ़ै तो घारूं नातर गरड़ मोर हंकारू लंका से कोट समुद्र कीर गई उतरे पीछू जती हनुमंत की दुहाई शब्द सांचा पिंड काचा पुरो मंत्र ईश्वरो।

प्रयोग विधि—सात बार पानी पढ़ जमीन पर डालें।

पागल कुत्ते का मन्त्र

अकट कूकरा विकट वान विष रूं कातूं वारूं वार कोरा करवा इबत नइया गोरो ढाले ईश्वर न्हाइ कुत्ता का विष उतर जाय दुहाई महादेव पार्वती की फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

प्रयोग विधि—कुम्हार के चाक की माटी लावे उसकी 7 गोलियां बनाय गोलीन सौ 7 बार आंक जे 3 गोली तो रोगी को दे 4 आप राखे गोली के टूक करके वखेर दीजे और गौरा पार्वती की दुहाई पढ़ता जाय दो पैसा और कुचला उसकी पाटी से बांधे।

अथवा—ॐ नमो कामरु देस कामक्ष्या देवी जहां बसै इस्माइल जोगी इस्माइल जोगी ने पाली कुत्ती दस कारी दसकद बरी दस पीली दसलाल इसको विष हनुमान हरे रक्षा करे गुरु गोरख बाल शब्द सांचा पिंड कांचा फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

प्रयोग विधि—विभूति से 3 दिन मंत्र के आंक से चंगा होवे।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गाय-भैंस की पीड़ा का मन्त्र

महंत पटवारी अरज गाती वया जिनके पायों कीड़ा गया।

विधि—चौराहा की सात काकरी तीन बार मंत्र के जिस जानवर के कीड़ा हों उसका नाम ले उसके मालिक को कांकरी दे कहै कि कीड़ा गया फिर मालिक अपने जानवर के कांकरी मार के कहै कि कीड़ा गया ये शनिवार हिंकू करे।

सर्प खाया का मन्त्र

नृसिंह भरी के बचनः वैजी हो निरंतर तार।

प्रयोग विधि—चुल्लू पानी पढ़ पिलावे तीन टौना माथे में देय निर्विष होवे।

सफर में आराम पाने का मन्त्र

गच्छ गौतम शीध्र त्वं ग्रामेषु नगरेषुच। आसनं बसनं शैया ताम्बू लंयज कल्पयेत्।

प्रयोग विधि—सफर में जब किसी ग्राम के समीप पहुंचे तब 7 बार मंत्र पढ़के दूब पर सब साथियों को देवे और कहै कि गौतम ऋषि का न्यौता है फिर उस दूब को पाम में रख के ग्राम में जाकर उतरे तो सब प्रकार का आराम मिले। इति।

पशु का कीड़ा झाड़ने का मन्त्र

ॐ नमो की डारे तू कुंड़ीला लाल पूछ तेरा मुंह काला मैं तोहे पूछूं कहां ते आया तोड़ मांस तैं सब क्यों खाया अवतू जाय भस्म हो जाय गुरु गोरख नाथ के लांगू पाय शब्द सांचा पिंड कांचा फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

प्रयोग विधि—नीव की डाली से 7 बार झाड़ा देवे भला होवे।

पैर थंभवा का मन्त्र

टिमिटिमि अमुकी श्रोणित रखि रखि धूतंहि स्वाहा।

प्रयोग विधि—साल सूत के 14 तार कराय 21 गांठ मंत्र पढ़ 2 देवे गूगर खेवे स्त्री की कटि पर बांधे पैर थंभै आरोग्यता होवे।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मन्त्र चोरी काढ़िबा का मन्त्र

उह मुह जल्ल जलाल पकर चोटी धर पछाड़ भेज कुदाल्या व मुद्दा या कहार या कहार।

प्रयोग विधि–इस मंत्र को नदी किनारे या कूप पर रात्रि समय 121 बार पढ़कर सो रहे दिन सात माहीं सारा भेद मालूम हो जाय जहां माल धरा हो और जो चुराले गया हो सब स्वप्न के द्वारा प्रगट हो जाय।

अथवा–ॐ नारसिंह वीर हरे कपड़ें ॐ नारसिंह बीर चांवल चुपड़े सरसों के फक फक करे शाह को छोड़े चोर को पकड़े आदेश गुरु को।

प्रयोग विधि–चौखुंटा रुपया जिसमें सूराख न हो मंगावे दूध से धोकर लोवान की धूनी दे सवा पा चावल मंगाय 3 बेर जल से धोकर गोमूत्र में भिजो कर सुखावे शनिवार प्रातः काल धरती लेपै मांटी पर सफेद कपड़ा बिछवावे चावल धरे धूप खेवे लोवान और गूगर की धूनी दे सात बार मंत्र चावलों पर पढ़ के दम करे फिर रूपये बराबर चावल तोल सब को चबवावे तो चोर के मूंह मोती बधे।

दो मित्र में बैर होई

ॐ नमो नारायणाय अमुकं अमुकेन सह विद्वेषं कुरु कुरु स्वाहाः

प्रयोग विधि–एक हाथ में काग की पर दूसरे में घग्घू की पर ले दोनों को मंत्र के मिलाय कारे सूत में लपेटे उसे हाथ में ले जल किनारे जाय 108 बार जये तर्पन करे।

दूसरी विधि–सिंह और हाथी का बाल लेके दोनों मित्रन के पगतर की मिट्टी लेवे तीनों की पोटरी बांध पृथ्वी में गाढ़ दे उस पर अग्नि जला के चमेली के पुष्प की 108 आहुति दे।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

उच्चाटन का मंत्र

ॐ नमो: भगवते रुद्राय दंड करालाय अमुकं सपुत्र वांधवै सह हन हन दह शीघ्र उच्चादय 2 हुं फट स्वाहा: ठ: ठ:

विधि 1–गधा लोटन की धूरि वाया पग सौं लावै मंगल वार को दोपहरी में 208 बार मंत्र को बैरी के घर में डाले।

विधि 2–सरसौं और शिवनिर्माल्य 108 बार मंत्र के बैरी के घर में गढ़वावे।

विधि 3–काग की पर रविवार को 108 बार मंत्र के बैरी के घर में गाढ़े।

विधि 4–उल्लू की पर मंगलवार को 108 बार मंत्र के बैरी घर में गाढ़े।

विधि 5–उल्लू की विष्टा सरसों का चून 108 बार मंत्र के जिस पर डाले उसका उच्चाटन हो।

विधि 6–गूलर की कील अंगुल 4 मंत्र केले और 108 बार मंत्र के जिसके घर में गाड़े उसका उच्चाटन होवे।

विधि 7–उल्लू और कांग दोनों जानवरों के पर धृत में सान कर 108 बार मंत्र पढ़ पढ़ होमे।

विधि 8–मनुष्य के हाड़ की कील अगुंल 4 लेके 108 बार मंत्र के वैरी के दरवाजे पर गाढ़ें। इति।

मारण का मन्त्र

ॐ ह्रीं अमुकस्य हन हन स्वाहा:

विधि–कनेर के दस हजार फूल कड़ के तेल में भिजो के बैरी का नाम मंत्र में ले 2 हो में बैरी मरे।

तथा–ॐ नमो: हाथ फावड़ी कांधे कामरी भैंरू बीर मसाणे खड़ा लोह का धनी बज्र का बाण वेग ना मारे तो देवी का लंका का की आण गुरु की शक्ति मेरी भक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा सत्य नाम आदेस गुरु का।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विधि–दिवाली की रात्रि को चौका देकर दीपक जलाए। गूगर खेवे उड़द मंत्र के दीया की लौ पर मार ता जाय 108 तथा 121 फिर काले कुत्ते का लोही उड़दी परल भव सख तमला राखे डड़द मंत्र के बैरी के मारे।

शत्रु को कष्ट देने का मन्त्र

ओं काल भैंरू झं काल का तीर मार तोड़ दुश्मन की छाति घोट चलै तो खरा जोगिनी का तीर छूटै मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा सत्त नाम अदेस गुरु का।

प्रयोग विधि–कनेर के 21 फूल 21 गोली गूगर की लेके प्रत्येक मंत्र के एक फूल 1 गोली कई के तेल में सान के अग्नि में हो में 11 तथा 21 दिन।

पीड़ा हर मंत्र

ॐ हीं श्रीं ल्कीं त्रपुर भैरूं त्रपुर बीर मम शत्रु अमुकस्य पीड़ा कुरु कुरु स्वाहा।

प्रयोग विधि–शत्रु के दाहिने पगतर की मांट लावे 7 करेली में भर के ताकू में पिरो कर अग्नि में तपावे मंत्र जपै प्रत्येक करेली 7 मंत्र।

पैर चलावा को मंत्र

ॐ नमो आदेश गुरु को काला कलुवा सक्या बीर तलवा सिरसों चटै शरीर लट झाड़े मुंह मटका वेरक्ता कलुया पैर चलावे चलाय 2 मसाणी कलुवा अमुकी ऊभें चाटे हमारा तलवा लगा के फूल तंरा की साखी अमुकी चलती को खड़ी कर राखी सत्त साहिब आदेस गुरु को–

प्रयोग विधि–तांबा की सुई नील का तागा नीबू को हाथ में लेले दक्षिण मुख बैठे जल में राखै पांव धूप खेवे मंत्र पढ़े स्त्री को लेले के जब तारा टूटे नीबू में ड़ोरा को पिरो करदीवला में रख कर मोरी में गाढ़े पैर चलै काढ़े जब थमैं।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मारन–ॐ काली कंकाली महा काली के पुत्र कंकाली भैरूं हुकम हाजिर रहै मेरा भेजा काल करे मेरा भेजा रक्षा करे आन बांधू दसो सुर बांधू नौ नारा बहत्तर कोठा बांधू फूल में भेजू फूल में जाय कोठे जी पड़े थरहर कांपे हल हलं हले मेरा भेजा सवाघड़ी सवा पहर के बाद ला न करे तो माता काली की सिज्या पर धरे बाबा चूके तो ऊबा सूके बाचा छोड़ कुवाचा करे तो महादेव की लटा टूटि भूमि में गिरे माता पार्वती का चीर पै चोट करे बिना हुकम नहीं मारना हो काली के पुत्र कंकाल भैरू मंत्र ईश्वरो वाचा।

प्रयोग विधि–लौंग जोड़ा बतासे पान सुपारी कलावाली बान धूप कपूर ठीकरा में सिंदूर के सात वैंदा लगावे त्रिशूल बनाके मंत्रित करके सब वस्तुओं को होम देना 21 बार मंत्र पढ़ कर होम करना।

अन्याई पुरुष को कष्ट देना

ॐ नमोः आदेश गुरु को लाल पलंग नौरंगी छाया काढ़ि कलेजा तूही चाख।

प्रयोग विधि–चौका देकर दीपक जलाए तीन बार कहै आवो महावीर पहलवान हनुमान जी फिर तीन बार कहै अवों कलवा बीर रणधीर फिर गूगर खेवे भोग धरे 11 दिन तक 1 सहस्र इस मंत्र को पढ़ै जाप के पीछे घृत में लोग सुपारी जाय फल गूगल मिश्री का चुरन मिलाय 125 बार अग्नि में मंत्रि के डाले 11 दिन पीछे दो ब्राह्मणों को भोजन करावे सिद्ध हो फिर काम पड़े जब पूर्व युक्ति से भोजन करके 11 दिन ताई नित्य 1 माला जपै मनोर्थ सिद्ध हो।

जिह्वा स्तंभन-मंत्र

अलफ 3 दुश्मन के मुंह में कुलफ मेरे हाथ कुंजी रूपा तेरे कर दुश्मन जेर कर।

प्रयोग विधि–शनिवार से 7 दिन रात्रि को घृत का दीपक नख फूल बतासा चढ़ाय 1000 टूक कर पूर्वोक्त मंत्र पढ़ अनि में डाले तो सिद्ध हो हाकिम के सामने 108 बार पढ़कर बात करे और बैरी

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

की ओर फूंक मारे तो बोलने न पावे अर्जी पर 108 बार पढ़के फूंक मारे लोवान की धूनी देकर हाकिम के हाथ मेंदे मरोनथ सिद्ध हो।

अथवा–ॐ नमो: यावली 2 उसका चश्मा कुलफ उसका बाजू कुलफ दुश्मन को जेर कर हमको शेर।

प्रयोग विधि–हनुमान का पूजन विधि पूर्वक करके 1000 मंत्र जपै गूगल मंत्र के साथ अग्नि पर डाले सिद्ध हो फिर 7 या 21 बार दुश्मन की तरफ दम करे बबर न करने पावे।

अथवा–शाह आलम कुत्व आलम जेर करो दुश्मन दफै करेजा लिम।

प्रयोग विधि–उत्तम मास की शुक्ल पक्ष की पहली जुमेरात से 8 दिन नित्य प्रति 40 बार जपै रात्रि को दीपक धर फूल बतासा चढ़ाके लोबान खेवे रेवड़ी चढ़ाके सिद्ध हो आवश्यकता के समय बैरी पर दम करे।

शत्रु मुख बंधन

ॐ ह्रीं श्रीं खेतल बीर चौंसठ जोगनी प्रतिहार मम शत्रु अमुकस्य मुख बंधन कुरु 2 स्वाहा:

विधि–घृत सहत की आहुती 1 सहस्र दे फिर लोहा की मेख 4 अंगुल की मंत्रि के मसाण में गाढ़े उसमें भी मंत्रि के मसाण में गाढ़े उसमें भी मंत्र पढ़े।

बैरी की बुद्धि स्तंभन का मंत्र

ॐ नमो: भगवते शत्रुणां बुद्धिस्तं भनं कुरु 2 स्वाहा।

विधि–ऊंट की लीद छाया में सुखा के सीसर पान में रखकर108 बार मंत्र के खवावे तो बावला हो जाय।

आकर्षण का मंत्र

ॐ नमो आदि रुपाय अमुक आकर्षण कुरु 2 स्वाहा।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विधि 1–कारे धतूरे का पात रस और गोरे चन इनको मिलाय सफेद कनेर की कलम से भोजपत्र पर लिखे खैर के अंगारों में तपावे 100 योजन चला गया हो तो आजाय।

विधि 2–अनामिका के रस से भोज पत्र पर लिखे उसके नाम से 108 बार मंत्र के ग्रहन में डाले तो गया हुआ आ जाये।

विधि 3–मनुष्य की खोपड़ी पर गोरोचन केशर से लिखे और त्रिकाल खैर के अंगारे से तपावे।

अथवा–ॐ हीं ठः ठः स्वाहा प्रथम मंत्र। ॐ नमोः भगवते रुद्राय रदृष्टि लंपि नाहरः स्वाहा दुहाई कसासुर की जूट 2 फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

विधि–मंगलवार से छः अक्षरी मंत्र को दस हजार वार दूसरे का 21 वार दस मंगल अथवा 10 दिन ग्यारवें मंगल अथवा दिन को दशांश होम तर्पण कर ब्राह्मण भोजन कराये।

सर्व मोहिनी मंत्र

पद्मिनी अंजन मेरा नाम इस नगरी में पैसके मोहूं सगरा गाम राज करता राजा मोहूं फर्श बैठा पंच मोंहुपन घटकी पहिनार मोंहू इस नगरी में पैस के 36 पवना मोहूं जे कोई मार मार मरता आवेताहि नारसिंह बीर बायां पग के अंगूठा तरे घेर 2 लावे मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो बाचा सत्तनाम आदेस गुरु का।

प्रयोग विधि–शनि रविवार को रात्रि के समय पूजन नाहर सिंह का विधि से कर धूप चन्दन पुष्प रोली चामर गूगर पान सुपारी लोगों सो 108 मंत्र जपै हर एक मंत्र के साथ पान सुपारी शक्कर धृत गूगर सान के अग्नि में होमता जाय ब्रह्मचर्य से रहे मंत्र सिद्ध हो फिर नन्दन वन की रुई में ऊंगा की जड़ लपेट क बाती बनाकर काजल पाड़े उसका जल को 7 बार मंत्रि के आंजे तो सम्पूर्ण स्त्री पुरुष बालतरुण

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बृद्ध वश्य हों जिस ग्राम में जाया सब ग्राम वासी सेवा में स्थिति हों पण्डितों के लिये श्रेष्ठ है।

सर्व ग्राम मोहिनी मंत्र

जती हनुमंत कने मेरे घटपिंड का कोन है वौरी छत्तीस पवन मोही मोहि जोहि जोहि दह दह गुरु की शक्ति मेरी भक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरो बाचा सत्तनाम आदेश गुरु का।

विधि—प्रथम 7 शनिवार माहनुमान का पूजन धूप दीप नैवेद्य सों करके प्रति दिन 144 जाप करे सिद्व होई फिर चौराहा सों 7 कंकड़ लाके पनघट कुआं में 144 बार मन्त्र के नाखे सब ग्राम पानी पीयें वश हों।

सभा मोहिनी सुर्मा

कालूं मुख धोयें करुं सलाम मेरी आंखों में सुर्मा बसे जो देखो सो पायन पड़े दुहाई गौसुल आदम दस्त गीर की छः3ः।

प्रयोग विधि—सवा लाख गेहूं पर मन्त्र पढ़े आटा पिसाई कड़ाही में घृत शकर मिलाय हलुवा करे गौसुल आजम दस्तगीर की नियाज दिला के हलुवे को आप ही भोग लगावे और दर्बार में जाय तो सारी सभा वश्य हो।

राजा की क्रोधाग्नि शांत करना

हथेली तो हनुमंत बसै भैंरु बसै कपाल नाहरसिंह की मोहनी मोहा सब संसार माहनरे मोहंता बीर सब बीरन में तेरा सीर सब दरिष्टी बांधि दे मोहि तेल सिंदूर चढ़ाऊं तोहि तेल सिन्दूर कहां से आया कैलाश पर्वत से आया कौन लाया अंजनी का हनुमंत गौरी का गणेश कारा गोरा तोतला तीनों बसैं कपाल बिन्दा तेल सिन्दूर का दुश्मन गया पाताल दुहाई कामियां सिंदूर की हमें देखि शीतल हो जाय मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा सतनाम आदेस गुरु का।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

प्रयोग विधि—रविवार को नृसिंह का पूजन विधि से करे 121 जाप करे इसी प्रकार 7 रविवार दीपक तेल लोवान लाहू रख के 121 मन्त्र का जाप करे सिद्धि हो राजा के सामने सिंदूर मंत्रि के माथे पर लगाया जाय तो राजा का क्रोध मिटै प्रसन्नता प्राप्ति होई।

कामदार का वशीकरण

बिस्मिल्लाह दाना कुल्हू अल्लाह यगाना दिलह सख तुम हो दाना हमारे बीच फलाने को करो दिवाना।

प्रयोग विधि—इकतालीस बिनौले लावे एक 2 को इकत्तालीस-बार मंत्रि के अर्द्ध रात्रि के समय अग्नि में डाले तीन दिन में मनोर्थ सिद्ध हो प्रथम 21 दिन तक 21 बिनोले पर इक्कीस 2 बार पढ़के जलावे तो सिद्धि होई।

राज वशीकरण मन्त्र

ॐ नमो आदेश गुरु का जल बांधूं जलहर बांधूं आणि बांधूं बार बार बांधूं शिव पूत प्रचंड बांधूं रूठारा जा काई करसी आसण छोड़ मंझाव सण देशी आपण टीको चंदन ललाट टीको काढ़ि सिंह वर्ण कहाऊं और करूं सैई यालते में बंघ्यान गौरी पार्वती बंध्याते में बंध्या या गुरु की शक्ति मेरी भक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

प्रयोग विधि—जल बांधूं धूप दीप नैवेद्य धर के पार्वती का धयान करे शनिवार से 21 दिन 121 जाप करे सिद्धि होइ पाछे कुंकुम, चंदन गोरोचन मिलाय गौ के दूध में तिलक करके नाराजा के सन्मुख जाय राजा वश्य हो।

सर्व वशीकरण मन्त्र

मंत्रि दोन के आनस गुरु को राजा मोहू प्रजा मोहूं ब्राह्मण बाणिया हनुमंत रूप में जगत मोहूं।। तो रामचन्द्र पर माणियां गुरु की शक्ति मेरी भक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विधि–प्रथम पूर्वोक्त श्री रामचन्द्र जी का ध्यान कर 21 दिन प्रति दिन 121 बार जाप करे फिर गांव के चौराहे पर जाय धूल की चुटकी लीजे 7 बार मंत्रि के बिन्दी लगाने से सर्वजन वश्य हो।

पति वशीकरण मन्त्र

ॐ नमों महायक्ष्णी पति मेव वश्यं कुरु कुरु सवाहा:

विधि 1–योनिरक्त केला का रस, गोरोचन का तिलक करे तो पति वश्य हो।

विधि 2–मंगलवार को सुपारी निगले निकसे तब जल दूध गंगाजल में धायान रखवावे।

स्त्री वशीकरण मन्त्र

ॐ नमों कमष्या देवी अमुकी नमे वशे कुरु कुरु स्वाहा।

प्रयोग विधि–शनिवार को स्त्री के बाल और बायें मगतर की घूल लेके पुतली बनावे नीले वस्त्र में लपेट उसकी योनी में अपना वीर्य धरे सिन्दूर भग में लगावे उसके दर्वाजे की लम्बाई की ओर गाढ़े जब नाघे वश हो।

तथा–सोमवार मृगशिर नक्षत्र में वीर्य में सुपारी मिलाय पान में रख खिलावे।

तथा

मन्त्र–ॐ नमो काल भौंरु काली नात काला चोला आधी रात काला रेत बेरा वीर पर नारी के राखे सीर बेगी जा छाती धरलाव सूती होय तो जगाय लाव शब्द सांचा पिंड कांचा फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

प्रयोग विधि–होली दिवाली की रात्रि को लाल अरंड का पेड़ एक झटका से तोड़ लावे काजल करे मन्त्र 21 से स्त्री के लगावे वश्य हो।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अमल फूल वशीकरण

कामरु देश कामाख्या देवी जहाँ बसै इस्माइल जोगी इस्माइल जोगी ने लगाई फुलवारी फूल वीणे लौनाचमारी जो इस फुल की सूंघे बासतिस काजी वह हमारे पास घर छोड़े घर आंगन छोड़े लोक कुटुम्ब की लज्जा छोड़े दुहाई लौना चमारी की दुहाई घन्वन्तर।

प्रयोग विधि—शनिवार सौं 21 दिन प्रतिदिन 144 जाप करे दीपक जलाके लोवान खेवे शराब का भोग दे सिद्धि हो फिर फूल पर ७ बार मंत्र के फूंक दें। जिसको सुंघावे वश्य हो।

वशीकरण अमल पान

कामरु देश की कामाख्या देवी जहां बसै इस्माइल जोगी इस्माईल जोगी न दीन्हा बीड़ा पहला बीड़ा आती जाती दूजा बीड़ा दिखावे छाती तीजा बीड़ा अंग लिपटाई फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा दुहाई गुरु गोरखनाथ की।

प्रयोग विधि—दिवाली की रात्रि को दीपक के सामने गूगर खेके मिठाई धरे 144 बार मंत्र पढ़े सिद्धि हो अथवा रविवार को प्रतिदिन 21 जाप 21 दिन करे सिद्धि हो फिर 3 पान बिना तराशों का बीड़ा बनावे मसालेदार 7 बार मंत्रि के जिसे खिलावे वश्य होवे।

तथा—हाथ पसारु मुख मलूं काचा मछली खाऊं आठ पहर चौंसठ घड़ी जग मोह घर आऊं।

प्रयोग विधि—दिवाली रात्रि को 101 बार कागज पर लिखे और एक 2 पीठ पर आशक माशूक और उनकी माता का नाम लिखे इस प्रकार अमुकी 2 की बेटी अमुके अमुके के बेटे के पास आवे सिद्धि हो अथवा 7 शनिचर ऐतवार प्रतिदिन 101 बार पढ़े दीपक धरे गूगर खेवे मिठाई फूल आगे धरे सिद्धि हो फिर पान के बीड़ा को 7 बार मंत्रि के खवावे सो वपूय हो अथवा हाथ की हथेली पर 7 बार मंत्र पढ़ मुख पर फेरे जाय तो सारी सभा वश्य हो।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मोहिनी मन्त्र

ॐ नमों आदेस गुरु को मोहनी जग मोहनी मोहनी मेरो नाम ऊंचे टीबेहूं बसूं मोहूं सगरो गाम ठग मोहूं ठाकुर कोहूं बाटका बटोही मोहूं मोहूं कूवा की पनिहार मोहूं महलों बैठी राणी मोहूं जोई 2 बाबा पगतरे देहु गुरु की शक्ति मेरी भक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

प्रयोग विधि–पूर्व युक्ति सिद्ध कर फिर चौराहे में रात को 7 बार मंत्र पढ़ मस्तक पर बिन्दी लगा जाय गुड़ पर 21 बार मंत्र पढ़ के किसी के नाम सों कूप में डारे तो जल के पीते ही आकर्षण हो।

बुरकी–धूली धूलेश्वरी धूली माता परमेश्वरी धूली चंवती जै जै कार इनरन चोंप भरे अमुकी छाती छार छारते न हटै देता घर बार मरे तो मसान लौटे जीवे तो पाव पलोटे वाचा बांध सूती होई तो जगाय लाव माता धूलेश्वरी तेरी शक्ति मेरी भक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा ठः ठः ठः स्वाहा।

प्रयोग विधि–रविवार को जो कोई मरा हो उसकी 3 मुट्ठी राख लावे प्रथम 7 दिन शनिवार सें नित्य 144 जाप करे धूप दीप नैवेद्य धरे मसाण की राख पर दीपक धरे उसी राख पर 21 बार मंत्र पढ़के जिसके ऊपर राखे वो निःसंदेह साथ चली आवे परिक्षा भैंस पर करले।

शैतान वशीकरण

इन्ना आत्वैना शैताना मेरी शिकल बन अमुकी के पास जाना उसे मेरे पास लाना तो तेरी बहन भानजी पर 303 तलाक।

प्रयोग विधि–खाट की पायती में नंगा होकर 121 बार गुड़ पढ़ के गुड़ को खाट तले रख कर सोवे प्रातःकाल बालकों को बांट दे 7 दिन करे जरूर हाजिर हो।

तथा

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बड़ पीपल का थान जहां बैठा अबाबील शैतान मेरी शवीह मेरी सूरत बी अमुकी को जरा न राने तो अपनी बहन भौजी के सिरजान पग चलता अभी रान जो न राने तो धोबी की नाद चमार की खाल कुलाल की माटी पड़े जो राजा चाहे राजा का मैं चाहूं अपने काज को मेरा काम न हो गाती आन सीमें तेरा दामन गीर हूंगा।

प्रयोग विधि—शनिवार सों 21 दिन अर्द्धरात्रि के समय नंगा होके 11 रपाई ले हर एक पर 11 मंत्र पढ़के आग में डालै।

अमल शैतानी

अलफ गुरु गुफार रहमान जाग आगरे अलहा दो बशै तान सात बार अमुकी को जरान जो न तराने तो तेरी माकी तलाक वहन की तीन तलाक।

प्रयोग विधि—बेसन का चौमुखा दीपक बनावे चारों कोणों पर चींटा का लोही और दाहिने हाथ को अनमिका का लोही लगाके चार बाती तेल में जरावे नंगा होके दक्षिण मुख बैठे दीपक जलावे लोबान खेवे चने और जौ भुने हुए भोज में धरे 160 बार मंत्र जपै दीपक जलता रहे नंगा ही सो जाय जाके नाम पर करे बाये रात्रि भर में 7 बार करे व्याकुल हो पायन पढ़े।

तथा

अलफ अलोफ एक रहमान सन शैतान मेरी शकल बन फलानी को जरान नरानै तो तेरी मा बहन की 303 तलाका।

प्रयोग विधि—पूर्व युक्ति खावा दीपक वेसन का।

मोंहनी मन्त्र-1

अल्लाह बीच हथेली के मुहम्मद बीच कपार रस का नाम मोहनी मोहे जग संसार मुझे करे मार 2 उसे मेरे बायें कदम तरे डार जो न माने मुहम्मद की आण उस पर पड़े बज्र का बाण वहा लाइलाह अल्लाह है मुहम्मद मेरा रसूलिल्लाह।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

प्रयोग विधि–शनिवार से घृत के दीपक के आगे मिठाई धर के लोबान खेवे 101 मंत्र जपे दूसरे शनिचर तक फिर स्त्री के पग सने की माटी 7 बार पढ़कर जिस पर डाले सो वश हो।

फूल मोहनी मन्त्र-2

ॐ नमो आदेस गुरु कों एक फूल फूल भर दौना चौंसठ जोगिनी ने मिल मिया दोना फूंल 2 दह फूल न जानी हनुमंत बैठि घेर 2 दे आनी जो सूंघे इस फूल वास उसका जो प्रथम प्रयोग कर सके पास सूती होइ तो जगा लाइ बैठी होय तो उठा लाइ और देखे जरे बरै मोह देख मेरे पायन परे पेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा वाचा से टरे कुंभी नरक में पड़े।

प्रयोग विधि–शनिवार सो 21 दिन विधि युक्ति दीपक का पूजन कर 144 बार जपै सिद्धि होइ फिर सोमवार को 11 बार फूल पढ़ाकर सुंघावे जी प्राण से वश होवे।

फूल मोहिनी मन्त्र

कामरु देश कामाख्या देवी जहां बसैं इस्माईल जोगी इस्माईल जोगी ने वोई बाडी़ फूल उ़तारे लीना चमारी एक फूल हंसै दूजा विहंसे तीजे फूल में छोटा बड़ा नाहर सिंह बसै जो सूंघें इस वास वो आवे हमारे पास और के पास जाय हीयो फाटि मरि जाय मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

प्रयोग विधि–रविवार को स्नान कर लोंग सुपारी पान फूल मिठाई ले दीपक जराइके सुगंधि के पुष को घृत में सान के 108 मंत्र के अग्नि में होगैं तो 21 दिन में सिद्ध होवे। ब्रह्मचारी सों रहै 22 वें ब्राह्मण भोजन कराय दक्षिणा दे फिर सुगंधित पुष्प को 7 बार मंत्रि के सुंघा दे सो आवे।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कनेर फूल का मन्त्र

अंगूठी माता गूठी राती गूठा लगावे आग अमुका के चटक चनावे बे धड़क कलह मचावे मुखन न बोले सुख न सोवे कहत मंत्र उठाई मारियो उरझिज्यों काचा सूत की आटी उरझे अब देखूं नाहर सिंह वीर तेरे मंत्र की शक्ति शब्द सांचा पिंड़ कांचा फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

प्रयोग विधि—शनिवार को लाल कनेर की डाली के लाल डोरा बांधे और न्यौता आवे रविवार को प्रातःकाल बाड़ी डाली को तोड़ लावे। रात्रि को विधि युक्त दीपक के आगे 121 मंत्र जपै 21 दिन में सिद्धि हो-फिर लाल कनेर का फूल 21 बार मंत्र के जिसको दे निश्चय आवे।

मोहिनी फूल का मन्त्र

कामरु देस कामख्या देवी जहां वसै इस्माइल जोगी इस्माइल जोगी ने लगाई बारी कूल चुनै लौना चमारी फूल राता फूल माता फूल हंसा फूल बिहंसा तहां बसै चंपा का पेड़ चंपा के पेड़ में रहै काला भैरूं भूतप्रेत ये मरें मसान ये आवें किस के काम पे आवें टौना गमन के काम भेजूं काला भैरूं कुंलावे मुश्कें बांध बैठी हो तो वेगी लाव सूती हो तो उठा लाव वह सोवे ताजा के महलों प्रजा के महलों मुझ से होनी रानी फूल दूं उसी के हाथ वह उठा लागे भेरे साथ हम को छा-ड़िपर धर जाय छाती फाटि वहीं मरजाय मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मुत्र ईश्वरो वाचा चूके उमाह सूखे लोना चमारी बहरे जोगी के कुंड में पढ़े वाचा छोड़ कुवाचा जाय तो नार खरवार में पड़े।

प्रयोग विधि—शनिवार को चंपा के पेड़ को तोंते और लाल कलावे के डोरा सो बांध आवे रविवार को वही डारी 7 मंत्र जप के गूगर खेवे धूप दे कर तोड़ लावे रात्रि को दीपक धर डोरी के

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आगे भेरूं का पूजन करे प्रतिदिन 21 बार जपै 21 दिन में सिद्धि हो भोग में शराब और उड़द के बड़े तेल गुड़ दही धरे चंपा के फूल पर 7 बार मंत्र जप कर जिसे सुंघावे उस को भैरु लाय हाजिर करे।

मोहनी पुतली वशीकरण मन्त्र

बांधू इन्द्रक बाधू तारा बांधू बिंद लोही की धारा उठे इन्द्र न घाले घाव खूब साख पूणी हो जाय। बण ऊपर लोकां कदी हीया ऊपर लौ सूत मैं तो बंधन बांधियो रूई पुसर जाया पूत मन बांधूं विद्या दे सूंसाथ चार खूंट जे फिर आवे फलानी फलाना के साथ गुरु गुरे स्वाहा।

प्रयोग विधि—शनिवार से 21 दिन रात्रि के समय स्वच्छ स्थान में पवित्र होके एक पुतली बना के उसका पूजन विधि पूर्वक करे दीपक धर गूगर खेवे 21 मंत्र जपै सिद्धि हो शनीचर के शनीचर के सवा पा लाप सी भोग धरे 5 वतासा भोग धरे।

वशीकरन विधि—शनिवार को एक पुतली बना उसके पेट में स्त्री का नाम लिखे 108 बार मंत्र बनाई हुई पुतली पर दम करके जिस स्त्री की चाह ना हो उसको दिखावे पुतली को छाती से लगा रखे वह स्त्री बेचैन होके हाजिर होवे।

सुपारी मोहनी मंत्र—खरी सुपारी टामन गारी राजा पर जाखरी पियारी मंत्र पढ़ लगाऊं तो रहिया कलेजा दोड़ जीवत चाटै पग तली गूवे सेव मसान या शब्द की भारी न लावे तो जती हनुमन्त की आन शब्द सांचा पिंड़ कांचा फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

प्रयोग विधि—सुपारी 21 दिन में सिद्ध करके अथवा सूर्य ग्रहण में 118 बार मंत्र के मंत्रि के विसे खिलावेवश्यहो।

सुपारी मोहनी मन्त्र—**ॐ दिव नमोः हरये ठः ठः स्वाहा।**

प्रयोग विधि—108 बार मंत्रि के खिलावे तो वश्य हो।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तथा—मंत्र परि में नाथ पीर त् नाथ जिस को खिलाऊं तिसको वश करना फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

प्रयोग विधि—ग्रहण में नाभी समान जल में सोवा सुपारी 7 बार मंत्रि के निगल जाय जब पेट में से निकलै तब सों धोवे गोठे दूध सों धोइ 7 बार मंत्रि के गूगर धूनी दे जिसे खिलावे परल सुपारी सो वश हो नर और क्या नारी।

लांग बसीकरन मंत्र—ॐ जल की जोगिनी पाताल का नाग जिस पै भेजूं तिसके लाग सोते सुखन बैठे सुख फिर फिर देखे मेरा मुख मेरी बांधी छूटे तो बाबा नाहर सिंह की जन टूटे।

प्रयोग विधि—चार लौंग पीस पत्ता में रख गूगर धूनी दे फिर ओएके तले रख पानी में गोता लगावे गोता में 7 बार मंत्र को पढ़े। फिर पानी से निकल कर मुंह से पत्ता निकाल के लोंग थूरगूगर की धूनी दे कर जिसे खिलावे सो आवे।

लौंग मोहनी—सत्त नाम आदेस गुरु को लोंगा मेरा भाई इन्ही लौंग ने शक्ति चलाई पहली लौंग राती माती दूजी लौंग जोवन माता तीजी लसैंग अंग मरोड़े चौथी लौंग दोऊ कर जोड़े चारों लौंग जो मेरी खाय फलाने के पास सो फलानी कने आजाय मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

प्रयोग विधि—रविवार से रात्रि दीपक का पूजन कर प्रतिदिन 21 बार 21 दिन तक पढ़े सिद्धि हो 4 लौंग सात बार मंत्रि के खिलावे हाजिर हो सत्य 3।

वशीकरण इलायची मंत्र—ॐ नमो काला कलवा काली रात जिसकी पुतली मांझि रात काला घाट वाट सूती कों जमाइ लाव बैठी को उठाइ लाय खड़ी की चलालाव वेगी धरया लाव मोहनी जोहनी चल राजा की ठांऊ अमुकी के तन में चटपटी लगाव जी याले तोड़ जो कोई खाय हमारी इलायची कभी न छोड़े हमारा साथ घर कों

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तजे बाहर को तजे घर के माई कों तजे हमें तज और कनें जाइ तो छाती फाट तुरत मर जाय सत्य गुरु आदेस गुरु गुरु की शक्ति मेरी भक्ति फुरे मंत्र ईश्वरो वाचा ईश्वर महादेव की वाचा वाचा से टरे तो कुंभी नर्क में पड़े।

प्रयोग विधि–21 दिन में सिद्ध करके इलायची पर 11 बार सत्य 3 पढ़ के मंत्रि दे तो वश्य हो।

तेल मोहनी–ॐ मोहनाराणी मोहनाराणी चलै सैर को सिर पर धर तेल की दोहनी जल मोहूं थल मोहूं सब संसार मोहनाराणी पलंग चढ़ बैठी मोहर हादर बार मेरी भक्ति गुरु की शक्ति दुहाई लोना चमारी की दुहाई गौरा पार्वती की दुहाई बजरंग बली की।

प्रयोग विधि–अतर फूल मिठाई दीपक लोवान ले दिवाली की रात्रि को 22 माला जपे सिद्धि हो फिर तेल का बिंदा मस्तक पर लगाके दर्बार में जाय और तिलक को सात बार मंत्रि के स्त्री के अंगसे लगावे तो आवे।

पुतली सर्व वशीकरण मंत्र-ॐ ही क्रीं जहिये अमुकी आकर्षय आकर्षय ममवश्यं कुरु कुरु दोहं कुरु स्वाहा।

प्रयोग विधि–प्रथम पुतली को जो अगले सफे में लिखी है केसर कुमकुम गोरोचन से भोजपत्र पर लिख शुभ घड़ी में पूजन करे प्रार्थना करे अपने कार्य की प्राप्ति को फिर अरंड, की नाली में रख के खैर के अंगारों से तपावे 108 मन्त्र जप गूगर की गोली लाल कनेर का फूल घृत में सान अग्नि में डाले 108 दिन में काम सिद्धि हो इस पुतली से नभि राजा प्रजा सब वश्य हों।

❑

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

चालीसे व आरतियाँ

- *श्री बगलामुखी चालीसा (1)*
- *श्री बगलामुखी चालीसा (2)*
- *श्री पीताम्बरा माँ की आरती (1)*
- *श्री पीताम्बरा माँ की आरती (2)*
- *बगलामुखी (पीतांबरा) की आरती (3)*
- *क्षमा-प्रार्थना*
- *पुष्पांजलि एवं प्रदक्षिणादि*
- *माता पीताम्बरा के पवित्र धाम*

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

श्री बगलामुखी चालीसा (1)

॥ दोहा ॥

नमो महाविद्या बरद, बगलामुखी दयाल।
स्तम्भन क्षण में करें, सुमिरत अरिकुल काल॥

॥ चौपाई ॥

नमो नमो पीताम्बरा भवानी। बगलामुखी नमो कल्यानी॥
भक्त वत्सला शत्रु नशानी। नमो महाविद्या वरदानी॥
अमृत सागर बीच तुम्हारा। रत्न जड़ित मणि मंडित प्यारा॥
स्वर्ण सिंहासन पर आसीना। पीताम्बरा अति दिव्य नवीना॥
स्वर्णाभूषण सुन्दर धारे। सिर पर चन्द्र मुकुट श्रृंगारे॥
तीन नेत्र दो भुजा मृणाला। धारे मुद्गर पाश कराला॥
भैरव करें सदा सेवकाई। सिद्ध काम सब विघ्न नसाई॥
तुम हताश का निपट सहारा। करे अकिंचन अरिकल धारा॥
तुम काली तारा भुवनेशी। त्रिपुर सुन्दरी भैरवि वेशी॥
छिन्नभाला धूमा मातंगी। गायत्री तुम बगला रंगी॥
सकल शक्तियाँ तुम में साजें। ह्लीं बीज के बीच बिराजें॥
दुष्ट स्तम्भन अरिकुल कीलन। मारण वशीकरण सम्मोहन॥
दुष्टोच्चाटन कारक माता। अरि जिह्वा कीलक संघाता॥
साधक के विपति की त्राता। नमो महामाया प्रख्याता॥
मुद्गर शिला लिए अति भारी। प्रेतासन पर किए सवारी॥
तीन लोक दस दिशा भवानी। बिचरहु तुम जन हित कल्यानी॥
अरि अरिष्ट सोचे जो जन को। बुद्धि नाश कर कीलक तन को॥
हाथ पांव बांधहुं तुम ताके। हनुहुं जीभ बिच मुद्गर बाके॥
चोरों का जब संकट आवे। रण में रिपुओं से घिर जावे॥
अनल अनिल विप्लव घहरावे। वाद विवाद न निर्णय पावे॥
मूठ आदि अभिचारन संकट। राजभीति आपत्ति सन्निकट॥

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ध्यान करत सब कष्ट नसावे। भूत प्रेत न बाधा आवे॥
सुमिरत राजद्वार बंध जावे। सभा बीच स्तम्भन छावे॥
नाग सर्प वृश्चिकादि भयंकर। खल विहंग भगहिं सब सत्वर॥
सर्व रोग की नाशन हारी। अरिकुल मूलोच्चाटन कारी॥
स्त्री पुरुष राज सम्मोहक। नमो नमो पीताम्बर सोहक॥
तुमको सदा कुबेर मनावें। श्री समृद्धि सुयश नित पावें॥
शक्ति शौर्य की तुम्हीं विधाता। दुःख दारिद्र विनाशक माता॥
यश ऐश्वर्य सिद्धि की दाता। शत्रु नाशिनी विजय प्रदाता॥
पीताम्बरा नमो कल्यानी। नमो मातु बगला महारानी॥
जो तुमको सुमरे चित लाई। योग क्षेम से करो सहाई॥
आपत्ति जन की तुरत निवारो। आधि व्याधि संकट सब टारो॥
पूजा विधि नहिं जानत थोरी। अर्थ न आखर करहूं निहोरी॥
मैं कुपुत्र अति निवल उपाया। हाथ जोड़ शरणागत आया॥
जग में केवल तुम्हीं सहारा। सारे संकट करहूं निवारा॥
नमो महादेवी हे माता। पीताम्बरा नमो सुखदाता॥
सौम्य रूप धर बनती माता। सुख सम्पत्ति सुयश की दाता॥
रौद्र रूप धर शत्रु संहारो। अरि जिह्वा में मुद्गर मारो॥
नमो महाविद्या आगारा। आदि शक्ति सुन्दरी आपारा॥
अरि भंजक विपत्ति की त्राता। दया करो पीताम्बरि माता॥

रिद्धि सिद्धि दाता तुम्हीं। अरि समूल कुल काल।
मेरी सब बाधा हरो। मां बगले तत्काल॥

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

श्री बगलामुखी चालीसा (2)

॥ दोहा ॥

भक्तन पर किरपा करो, दुष्टन को दो त्रास।
माता श्री बगलामुखी, करो हृदय में वास॥

॥ चौपाई ॥

जय जय जय माँ, आद्यभवानी। सारे जग की तुम महारानी॥
पीत वसन, पीताम्बर सोहै। शशी ललाट, मुख मण्डल मोहै॥
कानन कुण्डल, सिर मुकुट बिराजै। यही रूप, शत्रुन को छाजै॥
हाथ, पाश, गल मुतियन माला। तीनों नेत्र अति विकराला॥
कर में तोरे मुद्‌गर साजै। बुरि ठौर शत्रुन् पर बाजै॥
रत्न जड़ित स्वर्ण सिंहासन थारी। ताकी शोभा, है अति प्यारी॥
अरि की जिह्वा खींच तुम लाई। रूप देख सृष्टि थर्राई॥
पीतासन, तुमरो सिंहासन। सारे साधक करते वंदन॥
भोग मोक्ष की तुम हो दाता। एहि विधि कारण नाम विख्याता॥
हाथ जोडूं तोहे शीश नवाऊँ। तोरि कृपा की करदो छांऊ॥
तुमरे मन्त्र को महिमा न्यारी। मोहे सकल जग, रिपु और नारी॥
जो साधक तुमको नित ध्यावै। अष्ट सिद्धि वह वर में पावै॥
हाथ जोड़ जो करै आरती। वह पावै नाना विधि सम्पत्ति॥
राज कोप की तुम हो त्राता। स्तम्भन तोरा जग विख्याता॥
मात! दया तोरी जग जानि। करहु कृपा मो पर महारानी॥
जो मन मे तोरि छवि ध्यावै। वाको देख जगत थर्रावै॥
गहरे पैंठि जिन साधक ध्यावो। कबहु न भेद तिहारो पायो॥
त्रिविध ताप की तुम हो हर्ता। षट्‌कर्मों की साधन कर्ता॥
पीत आभूषण, पीतहि चन्दन। समग्र देव तोरा करते वन्दन॥
गुरु 'रामस्वरूप' की आज्ञा पाऊँ। मात! भवानी! तेरा गुण गाऊँ॥
एक लाख जप करे जो कोई। ताके सिद्धि शरणागत होई॥

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पूजनान्त में होम करावै। ताहि से, सकल जगत बोरावै॥
अशोक फूल से होम जो करई। निश्चय घर सम्पत्ति भर जेई॥
दीप-दान जो करै एक मासा। ताके होत दुखहि सब नाशा॥
आकर्षण की महिमा न्यारी। मधु, घी, शक्कर, नून संग वारी॥
जो साधक अरि-उच्चाटन चहावै। हरिद्रा, नमक संग हरिताल मिलावै॥
सात रात जो जापै नामा। ताहि के पूर्ण होत्त सब कामा॥
शकल से दशांश करै जो कोई। ताके घर सुख सम्पत्ति सब होई॥
गुग्गुल, घी संग होम करावै। नृप ताहि के वश में हो जावै॥
अष्ट सिद्धि नव निधि की दाता। करहु कृपा तुम सब पर माता॥
छोटा सा मैं दास तिहारा। मैया मोहे देऊ सहारा॥
घी, दूध, मधु, शक्कर घर लावै। तेहि पे तीन सौ जाप करावै॥
जिसको विष का संकट व्यापा। ये ही दूध हरै सब तापा॥
जो भीर में तुम्हें धियावैं। निश्चय ही संकट कट जावै॥
तेल संग निम्बपत्र मिलावै। एक लाख जप, होम करावै॥
जप कर, दशांश करै जो भाई। ते शत्रु खुद ही लढ़ जाई॥
तुम्हें ध्यान जो निशि दिन लावै। कोई कष्ट ना उसे नसावै॥
तुमरो भजन जो मानस गावै। ताहि के सकल बन्ध कट जावैं॥
कहाँ तक महिमा कहूँ तुम्हारी। महारानी अति मंगलकारी॥
पाठ करे जो दिन चालीसा। दे दर्शन तेहि को गौरीशा॥

॥ दोहा ॥

मात! कृपा मोहि पै करो, जोड़ कहूं दो हाथ।
भक्त योगश्वरानन्द की, सदा राखियो लाज॥

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

श्री पीताम्बरा माँ की आरती (1)

जय-जय पीताम्बरी माता, जय-जय शत्रु भय त्राता।
हम सब गाएँ तेरी आरती, पीताम्बरी हम सब गाएँ तेरी आरती-2

पीत वस्त्र है, पीत भोग है, पीत है तुझको प्यारा,
पीत रंग की पहने चूड़ियाँ, पीत रंग है न्यारा।

माता तू है सर्व मनभाविनी, पीताम्बरी हम सब गाएँ तेरी आरती-2

तू ही शारदा, तू ही भवानी, तू ही लक्ष्मी माता,
दास तेरे हैं देवी-देवता, हे जग की भाग्य विधाता।

माता तू है जग संवारणी, पीताम्बरी हम सब गाएँ तेरी आरती-2

आदि व्याधि भूत-पिशाचनी सबको तू है भगाती,
मनोकामना पूरण करती शत्रुभय मिटाती।

माता तू है सर्व भयनाशिनी, पीताम्बरी हम सब गाएँ तेरी आरती-2

दतिया तेरा भवन निराला माता औघड़दानी,
बनखण्डी तेरा भवन निराला माता औघड़दानी।

हाथ तेरे है मुद्गर माता षोडशदलपीठ निवासिनी,
माता तू है कृपादायिनी, पीताम्बरी हम सब गाएँ तेरी आरती-2
ऋषि-मुनि सब आरती करते, चरणों में तेरे सर धरते।
चरण 'दीपक' हैं दास तुम्हारे, दे दो भक्ति माँ फलदायिनी,
पीताम्बरी हम सब गाएँ तेरी आरती-2
जय-जय पीताम्बरी माता, जय-जय शत्रु भय त्राता।
हम सब गाएँ तेरी आरती, पीताम्बरी हम सब गाएँ तेरी आरती-2

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

श्री पीताम्बरा माँ की आरती (2)

जय पीताम्बरधारिणि जय सुखदे वरदे, मातर्जय सुखदे वरदे।
भक्तजनानां क्लेशं भक्तजनानां क्लेशं सततं दूर करे॥ जय देवि... ॥ 1 ॥
असुरैः पीडितदेवास्तव शरणं प्राप्ताः, मातस्तवशरणं प्राप्ताः।
धृत्वा कौर्मशरीरं धृत्वा कौर्मशरीरं दूरीकृतदुःखम्॥ जय देवि... ॥ 2 ॥
मुनिजनवन्दितचरणे जय विमले बगले, मातर्जय विमले बगले।
संसारार्णवभीतिं संसारार्णवभीतिं नित्यं शान्तिकरे॥ जय देवि... ॥ 3 ॥
नारदसनकमुनीन्द्रैर्ध्यातं पदकमलं मातर्ध्यातं पदकमलं।
हरिहरद्रुहिणसुरेन्द्रै हरिहरद्रुहिणसुरेन्द्रैः सेवितपदयुगलम्॥ जय देवि ... ॥4 ॥
काञ्चनपीठनिविष्टे मुद्गरपाशयुते, मातर्मुदगरपाशयुते।
जिह्वावज्रसुशोभित जिह्वावज्रसुशोभित पीतांशुकलसिते॥ जय देवि ... ॥5 ॥
बिन्दुत्रिकोणषडस्त्रंरष्टदलोपरिते, मातरष्टदलोपरिते।
षोडशदलगतपीठं षोडशदलगतपीठं भूपुरवृत्तयुतम्। जय देवि ... ॥ 6 ॥
इत्थं साधकवृन्दश्चिन्तयते रूपं मातश्चिन्तयतेरूपं।
शुत्रविनाशकबीजं शुत्रविनाशकबीजं धृत्वा हृत्कमले॥ जय देवि ... ॥7 ॥
अणिमादिकबहुसिद्धिं लभते सौख्ययुतां, मातर्लभते सौख्ययुतां।
भोगान् भुक्त्वा सर्वान्, भोगान् भुक्त्वा सर्वान् गच्छति विष्णुपदम्॥ जय देवि... ॥ 8 ॥
पूजाकाले कोऽपि आर्तिक्यं पठते, मातरार्तिक्यं पठते।
धनधान्यादिसमृद्धः धनधान्यादिसमृद्धः सान्निध्यं लभते॥ जय देवि ... ॥0 ॥

❀❀❀

बगलामुखी (पीताम्बरा) आरती (३)

जय जयति सुखदा, सिद्धिदा, सर्वार्थ-साधक शंकरी।
स्वाहा, स्वधा, सिद्धा, शुभा, दुर्गा नमो सर्वेश्वरी॥
जय सृष्टि-स्थिति-कारिणी-संहारिणी साध्या सुखी।
शरणगतोऽहं त्राहि माम्, माँ! त्राहि माम् बगलामुखी॥

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जय प्रकृति-पुरुषात्मक जगत् कारण करणि आनन्दिनी।
विद्या-अविद्या, सादि-कादि, अनादि ब्रह्म-स्वरूपिणी।।
ऐश्वर्य-आत्मा भाव अष्टक अंग परमात्मा सखी।
जय पञ्च-प्राण प्रदा मुदा, प्रज्ञान-ब्रह्मा प्रकाशिका।
संज्ञान धृति अज्ञान मति-विज्ञान शक्ति विधायिका।।
जय सप्त व्याहृति रूप, ब्रह्म विभूति, सुन्दरि शशि मुखी।
शरणागतोऽहं त्राहि माम्, मा! त्राहि माम् बगलामुखी।।
आपत्ति-अम्बुधि अगम अम्ब! अनाथ आश्रय हीन मैं।
पतवार श्वास प्रश्वास क्षीण, सुषुप्त तन-मन दीन मैं।।
षड् रिपु तरंगित पञ्च विष नद पञ्च भय भीता दुखी।
शरणागतोऽहं त्राहि माम्, मा! त्राहि माम् बगलामुखी।।
जय परम ज्योतिर्मय शुभम्, ज्योति परा अपरा परा।
नैका, एका, अनजा, अजा, मन वाक् बुद्धि अगोचरा।।
पाशांकुशा, पीतासना, पीताम्बरा, पंकज मुखी।
शरणागतोऽहं त्राहि माम्, मा! त्राहि माम् बगलामुखी।।
भव ताप रति गति मति कुमति कर्तव्य कानन अति घना।
अज्ञान दावानल प्रबल संकट निकल मन अनमना।।
दुर्भाग्य घन दरि पीत पट विद्युत झरो करुणा अमी।
शरणागतोऽहं त्राहि माम्, मा! त्राहि माम् बगलामुखी।।
हिय पाप पीत पयोधि में, प्रगटो जननि! पीताम्बरा।
तन मन सकल व्याकुल विकल त्रय ताप वायु भयंकरा।।
अन्तःकरण दस इन्द्रियां, मम देह देवि! चतुर्दशी।
शरणागतोऽहं त्राहि माम्, मा! त्राहि माम् बगलामुखी।।
दारिद्रय दग्ध क्रिया, कुटिल, श्रद्धक, प्रज्वलित वासना।
अभिमान ग्रन्थित भक्ति हार, विकार मय मम साधना।।
अज्ञान ध्यान, विचार चञ्चल, वृत्ति वैभव उन्मुखी।
शरणागतोऽहं त्राहि माम्, मा! त्राहि माम् बगलामुखी।।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

क्षमा-प्रार्थना

यदत्र पाठे जगदम्बिके! मया विसर्ग-विन्द्वक्षर हीनमीरितम्।
तदस्तु सम्पूर्णतमं प्रसादतः सङ्कल्प-सिद्धिश्च सदैव जायताम्॥1॥

मोहादज्ञानतो वा पठितमपठितं वा साम्प्रतं ते स्तवेऽस्मिन्।
तत्सर्वं साङ्गमास्तां भगवति वरदे! त्वत्प्रसादात् प्रसीद॥2॥

आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम्।
पूजां चैव न जानामि क्षम्यतां परमेश्वरी॥3॥

अपराध सहस्राणि क्रियन्तेऽहर्निशं मया।
दासोऽयमिति मां मत्वा क्षमस्व परमेश्वरी॥4॥

यद्दत्तं भक्तिमात्रेण पत्रं पुष्पं फलं जलम्।
निवेदितं च नैवेद्यं तद् गृहाणाऽनुकम्पया॥5॥

मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वरी।
यत्पूजितं मया देवि! परिपूर्णं तदस्तु मे॥6॥

अपराधशतं कृत्वा जगदम्बेति चोच्चरेत्।
यां गतिं समावाप्नोति न तां ब्रह्मादयः सराः॥7॥

अज्ञानाद् विस्मृतेर्भ्रान्त्या यन्न्यूनामधिकं कृतम्।
तत्सर्वं क्षम्यतां देवि! प्रसीद परमेश्वरी॥8॥

सापराधोऽस्मि शरणं प्राप्तस्त्वां जगदम्बिके!।
इदानीमनुम्प्योऽहं यथेच्छसि तथा कुरु॥10॥

कामेश्वरी! जगन्मातः सच्चिदानन्दविग्रहे।
गृहाणाऽर्चामिमां प्रीत्या प्रसीद परमेश्वरी॥10॥

यस्यार्थं पठितं स्तोत्रं तवेदं शङ्करप्रिये!।
तस्य देहस्य गेहस्य शान्तिर्भवतु सर्वदा॥11॥

॥ इति क्षमा-प्रार्थना सम्पूर्णम्॥

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पुष्पांजलि एवं प्रदक्षिणादि

हाथ में पुष्प लेकर निम्न मंत्र को पढ़ें:-

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्म्माणिप्प्रथमान्यासन्। ते हनाकम्महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः। ॐ राजाधिराजाय प्रसह्य साहिने। नमो वयं वैश्रवणाय कुर्महे। स मे कामान् कामकामाय मह्यं। कामेश्वरो वैश्रवणो ददातु। कुबेराय वैश्रवणाय महाराजाय नमः। ॐ स्वस्ति साम्राज्यं भौज्यं स्वाराज्यं वैराज्यं पारमेष्ठ्यं राज्यं महाराज्यमाधिपत्यमयं समन्त-पर्यायी स्यात् सार्वभौमः सर्वायुष आन्तादापरार्धात्। पृथिव्यै समुद्र-पर्यन्ताया एकराडिति तदप्येष श्लोकोऽभिगीतो मरुतः परिवेष्टतारो मरुत्तभ्यावसन् गृहे, आविक्षितस्य कामप्रे विश्वेदेवाः सभासद इति। ॐ विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतो मुखो विश्वतो बाहुरुत विश्वतस्पात् सम्बाहुभ्यांधमति सम्पतत्रैर्द्यावा भूमि जनयन्देव एकः। ॐ कलकुमार्यै विद्महे पीताम्बरायै धीमहि तन्नो बगला प्रचोदयात्। नानाविधानि पुष्पाणि यथाकालोद्भवानि च। पुष्पांजलिं मया दत्तां गृहाण बगलामुखि!

पुष्पांजलि अर्पित कर योनिमुद्रा से नमस्कार कर प्रदक्षिणा करें-सप्तास्यासन् इत्यादि-

यानि कानि च पापानि जन्मान्तर कृतानि च।
तानि तानि प्रणश्यन्ति प्रदक्षिणे पदे पदे॥

इसके अनन्तर सभी आवरण-देवताओं की क्रमशः श्री भगवती अंग में लय-भावना करें और निम्न प्रार्थना करे-

ॐ यद्दतं भक्तिमात्रेण पत्रं पुष्पं फलं जलम्।
निवेदितं च नैवेद्यं तद्गृहाणानुकम्पया॥
आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम्।
पूजामर्चां न जानामि त्वं गतिः परमेश्वरि॥
कर्मणा मनसा वाचा ततो नान्यद् गतिर्मम।
अन्तश्चारेण भूतानां द्रष्ट्री त्वं परमेश्वरि॥
मातर्योनिसहस्त्रेषु येषु येषु ब्रजाम्यहम्।
तेषु तेष्वचला भक्तिरस्तु मे सर्वदा शिवे॥

यह कह श्री गुरुदेव को प्रणाम करे। इसके बाद भक्तों को प्रसाद वितरण करें।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

माता पीताम्बरा के पवित्र धाम

1. श्री पीताम्बरा पीठ, वनखण्डेश्वर, दतिया (म.प्र.)

2. कामाख्या धाम, नीलांचल, गोहाटी (आसाम)

3. श्री रघुनाथ मन्दिर, जम्मू-तवी

4. श्री वैद्यनाथ धाम, (बिहार)

5. श्री बगलामुखी मन्दिर, निकट श्री रंगनाथ जी मन्दिर, वृंदावन (उ.प्र.)

6. श्री बगलामुखी मन्दिर, भूतेश्वर, मथुरा (उ.प्र.)

7. श्री बगलामुखी मन्दिर, चावड़ी बाजार, दिल्ली-110006

8. श्री पीताम्बर शक्तिपीठ (इन्द्रप्रस्थ), महर्षि वाशिष्ठ आश्रम 6621 अहाता किदारा, पहाड़ी धीरज, दिल्ली-110006

9. श्री आदिभवानी महाशक्ति माँ पीताम्बरा बगलामुखीदेवी धाम, मुरादाबाद (उ.प्र.)

10. श्री पीतांबरा शक्तिपीठ बगलामुखी देवी मंदिर, कालीघाट, यमुनातीर, वजीराबाद, (दिल्ली)

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आने वाले नये प्रकाशन

- दादी माँ के घरेलू नुस्खे
- सुन्दर व आकर्षक बच्चों के नाम (हिन्दी-इंगलिश में अर्थ सहित)
- चाणक्य नीति
- विदुर नीति
- सम्पूर्ण नवनाथ-पुराण एवं चरित
- रावण संहिता
- कष्ट निवारक गुरुजी के प्रभावशाली अचूक टोने-टोटके और उपाय

पूज्य पाद "श्री रामचन्द्र केशव जी डोंगरे जी" महाराज की अमृत वर्षा करने वाली पुस्तकें

1.	श्रीमद्भागवत रहस्य (नये संस्करण में)	300.00
2.	भागवत रहस्य-मराठी भाषा (मैपलिथो पेपर में)	Under Printing
3.	श्री तत्वार्थ रामायण (मोटे अक्षरों में)	240.00
4.	संतवाणी	75.00
5.	भागवत प्रसादी	40.00
6.	हरि का मार्ग	50.00
7.	रामायण रहस्य	100.00
7.	ज्ञान निर्झर	20.00
8.	रामायण प्रसादी	6.00
9.	पाप प्रभु और प्रायश्चित	6.00
10.	गोपी गीत (नया संस्करण)	40.00

"श्री बापू मोरारी, हरियाणवी" कृत

1.	सचित्र रामायण रसामृत (रंगीन चित्रों सहित)	240.00
2.	रामायण प्रवचन	220.00
3.	भरत चरित्र	10.00
4.	शिव विवाह (शिव कथा)	10.00
5.	संक्षिप्त रामायण	10.00
6.	भक्ति का मार्ग	10.00

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

श्री साईं बाबा सम्बन्धी साहित्य

क्र.सं.	पुस्तकों के नाम	छपा मू.
1.	श्री साईं बावनी (छोटी)	5.00
2.	साईं की अमर कहानी	7.00
3.	श्री साईं मंत्र माला (108 मंत्रों का संग्रह)	7.00
4.	श्री साईं चालीसा (मिनी हरा 2 रंग में छपा)	7.00
5.	श्री साईं रक्षा मन्त्र (दो रंग में छपा डीलक्स)	7.00
6.	श्री साईं कष्ट निवारण मन्त्र	7.00
7.	श्री साईं शिक्षा मन्त्र (राजेन्द्र सेमवाल जी कृत)	7.00
8.	श्री साईं मनका माला (राजेन्द्र सेमवाल जी कृत)	7.00
9.	श्री साईं गणेश रिद्धि-सिद्धि मन्त्र (राजेन्द्र सेमवाल जी कृत)	7.00
10.	श्री साईं बजरंग बाण (राजेन्द्र सेमवाल जी कृत)	7.00
11.	श्री साईं कवच (राजेन्द्र सेमवाल जी कृत)	7.00
12.	श्री साईं पितृदोष निवारण मंत्र (राजेन्द्र सेमवाल जी कृत)	7.00
13.	श्री साईं दुःख निवारण मंत्र (राजेन्द्र सेमवाल जी कृत)	7.00
14.	श्री सांई रोग-दरिद्र निवारण (राजेन्द्र सेमवाल जी कृत)	7.00
15.	श्री सांई श्रद्धा-सबूरी पाठ (राजेन्द्र सेमवाल जी कृत)	7.00
16.	श्री सांई गुरु वाणी (राजेन्द्र सेमवाल जी कृत)	7.00
17.	श्री साईं संकटमोचन मन्त्र (श्री राजेन्द्र सेमवाल कृत)	7.00
18.	श्री साईं महामृत्युंजय मंत्र (श्री राजेन्द्र सेमवाल कृत)	7.00
19.	श्री साईं सन्तान प्राप्ति मंत्र (श्री राजेन्द्र सेमवाल कृत)	7.00
20.	श्री साईं गुरु मंत्र (श्री राजेन्द्र सेमवाल कृत)	7.00
21.	श्री साईं शिव शक्ति मंत्र (श्री राजेन्द्र सेमवाल कृत)	7.00
22.	श्री साईं शनि नवग्रह शान्ति मंत्र (श्री राजेन्द्र सेमवाल कृत)	7.00
23.	श्री साईं सुख-शान्ति मंत्र (श्री राजेन्द्र सेमवाल कृत)	7.00
24.	श्री साईं लक्ष्मी प्राप्ति मंत्र (श्री राजेन्द्र सेमवाल कृत)	7.00
25.	श्री साईं मंगलम् (श्री संजीव आनन्द जी)	7.00
26.	साईं समर्थ पाठ	7.00
27.	साईं गीता सार (श्रीमती उमा शर्मा जी कृत)	6.00
28.	श्री साईं चालीसा (लाल रंग में)	8.00

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

क्र.सं.	पुस्तकों के नाम	छपा मू.
29.	★ श्री साई चालीसा (लघु चित्र)	6.00
30.	साई चालीसा चित्र (प्लास्टिक पाऊच में)	6.00
31.	(अद्‌भुत एवं वैभव) श्री साई व्रत कथा (नौ व्रतों वाली)	8.00
32.	श्री साईं स्तवन मंजरी (दासगणु जी कृत)	8.00
33.	ऐसे हुई प्रेरणा	8.00
34.	श्री साईं नाम लेखन पुस्तिका	6.00
35.	**Adbhut Avm Vaibhav Sai Varta Katha** (Eng.)	**10.00**
36.	साईं आरती भजन संग्रह	12.00
37.	साईं आरती संग्रह (शिरडी वाली) (सुगणोपासना)	12.00
38.	साईं बाबा 101 भजन माला	12.00
39.	साईं वन्दना	12.00
40.	साईं का जीवन परिचय	15.00
41.	साईं व्रत कथा (बृहस्पतिवार व्रत कथा)	12.00
42.	★ साई अनमोल भजन रस	12.00
43.	श्री साईं बावनी (दो रंग में छपा डीलक्स)	12.00
44.	साईं सुख की खान (रमेश मैहरोत्रा)	12.00
45.	श्री साईं चिन्तन (मनन पाठ) (रमेश मैहरोत्रा जी)	12.00
46.	श्री साईं दया-कृपा प्राप्ति पाठ	12.00
47.	श्री साईं सहस्त्रनामावली (1000 नाम हिन्दी व इंग्लिश में)	12.00
48.	श्री साईं कृति (सर्व दुःख निवारण मंत्र) (सक्सेना बंधु कृत)	12.00
49.	साईं बाबा के नाम भजन संग्रह (रमेश मैहरौत्रा कृत)	15.00
50.	★ साईं बाबा के चरणों में भजन संग्रह (रमेश मैहरोत्रा कृत)	15.00
51.	श्री साईं अमृतवाणी (सक्सेना बंधु कृत) **UNDER PRINTING**	
52.	श्री साईं अमृतवाणी (गोस्वामी जी कृत)	15.00
53.	श्री साईं कष्ट निवारणी जप (मनका 108)	12.00
54.	श्री साईं चालीसा (55 रंगीन चित्रों व साई बावनी के साथ)	12.00
55.	★ श्री साई आरती (मराठी-हिन्दी) (सगुणोपासना)	20.00
56.	★ **Shri Sai Aarti Sangrah (Marathi-Eng)**	15.00
57.	साईं स्तुति (वीणा चावला कृत)	18.00

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

धार्मिक ग्रन्थ एवं पुराण

क्र.सं.	पुस्तकों के नाम	छपा मू.	थोक मू.
1.	सचित्र सम्पूर्ण रामायण तुलसीकृत (भा.टी.) आठों काण्ड (रंगीन चित्रों) सहित		351.00
2.	सचित्र सम्पूर्ण रामायण तुलसीकृत भा.टी.(मध्यम)		201.00
3.	रामायण तुलसीकृत मूल गुटका (23x36/32) नया		75.00
4.	योग वशिष्ठ (महारामायण बड़ा)		छप रहा है
5.	सचित्र सम्पूर्ण श्रीमदबाल्मीकिय रामायण (सचित्र एवं बड़ा)		250.00
6.	सचित्र सम्पूर्ण सुखसागर हिन्दी (1040 पेजों में)		301.00
7.	सचित्र सुखसागर भाषा सजिल्द गुटका		150.00
8.	महाभारत ग्लेज भाषा (बड़ा)		225.00
9.	श्री शिव महापुराण (सचित्र एवं बड़ा)		301.00
10.	★ श्री शिव महापुराण (डिमाई साईज गुटका)		150.00
11.	श्री हरिवंश महापुराण बड़ा (सचित्र एवं बड़ा)		250.00
12.	श्री हरिवंश महापुराण गुटका (सचित्र)		150.00
13.	श्री विष्णु महापुराण (बड़ा)		225.00
14.	श्री विष्णु महापुराण भाषा गुटका		100.00
15.	श्रीमद् देवी भागवत महापुराण (सचित्र एवं बड़ा)		225.00
16.	श्रीमद् देवी भागवत महापुराण गुटका (सचित्र)		100.00
17.	★ श्री मार्कण्डेय महापुराण (सचित्र एवं बड़ा)		251.00
18.	★ श्री गणेश महापुराण (सचित्र एवं बड़ा)		225.00
19.	★ श्री गरुड़ पुराण (बड़ा)		151.00
20.	बड़ा सचित्र प्रेम सागर (श्रीकृष्ण लीलाओं सहित)		125.00
21.	सम्पूर्ण सचित्र अष्टावक्र गीता (विवेक श्री कौशिक)		140.00
22.	दृष्टांत महासागर (नया) (अशोक कुमार बंसल)		220.00

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

क्र.सं.	पुस्तकों के नाम	छपा मू.	थोक मू.
23.	श्रीमद्भागवत गीता (हिन्दी-संस्कृत) (बड़ी)		140.00
24.	श्रीमद्भागवत गीता (हिन्दी-संस्कृत) (गुटका)		35.00
25.	श्रीमद्भगवत गीता (बड़ी रंगीन चित्रों सहित दो रंग में छपी)		150.00
26.	सचित्र श्रीमद्भगवत गीता (ग्लेज रेक्सीन)		100.00
27.	★श्रीमद्भगवत गीता ग्लेज सादा जिल्द (कच्चा संस्करण)		50.00
28.	★श्रीमद्भगवत गीता सादा कार्ड (सादा संस्करण)		50.00
29.	श्रीमद्भगवत गीता ग्लेज (गुटका लाल अक्षरों में)		15.00
30.	श्रीमद्भगवत गीता ग्लेज गुटका (मिनी.नई)(20x30/64)		10.00
31.	श्रीमद्भगवत गीता गुटका रैक्सीन डीलक्स (मिनी)		छप रही है
32.	श्रीमद्भगवत गीता (ताबीजी प्लास्टिक डिब्बी में)		छप रही है
33.	श्री दुर्गा सप्तशती (बड़ी रंगीन चित्रों सहित दो रंगों में छपी)		150.00
34.	श्री दुर्गा सप्तशती भाषा ग्लेज रैक्सीन		60.00
35.	श्री दुर्गा सप्तशती भाषा ग्लेज सजिल्द		60.00
36.	श्री दुर्गा सप्तशती भाषा ग्लेज लैमिनेशन टाईटिल		60.00
37.	श्री दुर्गा सप्तशती गुटका रैक्सीन डीलक्स (मिनी)		छप रही है
38.	श्री दुर्गा सप्तशती भा.टी. रैक्सीन (मोटे अक्षरों में) (डिमाई)		100.00
39.	श्री दुर्गा सप्तशती भा.टी. (लैमीनेशन टाईटिल) (डिमाई)		100.00
40.	श्री चण्डी पाठ/ दुर्गा पाठ भाषा बड़ा		75.00
41.	★ चण्डी कवच स्तोत्र		75.00
42.	व्रत और त्यौहार कार्ड ग्लेज (हिन्दी नया)		25.00
43.	व्रत और त्यौहार (मारवाड़ी-चम्पा देवी)		12.00
44.	बड़ा व्रत और त्यौहार (लेडिज संगीत व घरेलू टिप्स सहित) डीलक्स		120.00
45.	★ सम्पूर्ण भारतीय पर्व उत्सव एवं त्यौहार, व्रत कथाएं (लोकगीत सहित)		छप रहा है।
46.	न्यू कुकरी बुक शिक्षा		35.00

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अन्य धार्मिक पुस्तकें

क्र.सं.	पुस्तकों के नाम	छपा मू.	थोक मू.
1.	शिव सहस्त्रनाम भाषा टीका सहित (लाल अक्षरों में)		30.00
2.	शिव सहस्त्रनाम-(नामावली गुटका)		15.00
3.	विष्णु सहस्त्रनाम भाषा टीका सहित (लाल अक्षरों में)		30.00
4.	विष्णु सहस्त्रनाम (नामावली गुटका)		15.00
5.	गोपाल सहस्त्रनाम भाषा टीका सहित (लाल अक्षरों में)		30.00
6.	★ हनुमान सहस्त्रनाम भाषा टीका सहित		35.00
7.	★ हनुमान सहस्त्रनाम (नामावली गुटका)		15.00
8.	★ दुर्गा सहस्त्रनाम भाषा टीका सहित		35.00
9.	★ गणेश सहस्त्रनाम भाषा टीका सहित		45.00
10.	★ गणेश सहस्त्रनाम (नामावली गुटका)		15.00
11.	श्री लक्ष्मी सहस्त्रनाम भाषा टीका सहित		45.00
12.	श्री ललिता सहस्त्रनाम् (नामावली सहित)		60.00
13.	श्री गजेन्द्र मोक्ष भाषा टीका सहित (गुटका डीलक्स)		15.00
14.	सर्वदेव पूजा पद्धति (पं. ज्वाला प्रसाद कृत)		15.00
15.	सर्वदेव प्राण प्रतिष्ठा (पं. ज्वाला प्रसाद कृत)		45.00
16.	काली उपासना (पं. ज्वाला प्रसाद कृत)		25.00
17.	भैरव उपासना (पं. नरेन्द्र शर्मा कृत)		25.00
18.	शनि उपासना (राजेन्द्र प्रसाद ''आशू'' कृत)		25.00
19.	शिव महिम्न स्तोत्र (आचार्य रामनाथ शर्मा कृत)		15.00
20.	★ शिवाष्टक रूद्राष्टक एवं लिगांष्टक		15.00
21.	★ आदित्य हृदय स्तोत्र भाषा टीका (सूर्यपाठ गुटका)		25.00

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

क्र.सं.	पुस्तकों के नाम	छपा मू.	थोक मू.
22.	आदित्य हृदय स्तोत्र बड़ा (नया प्रिन्ट लाल)	45.00	
23.	कर्मकाण्ड भास्कर भाषा टीका (पं. ज्वाला प्रसाद जी)	75.00	
24.	सर्वदेव पूजा भास्कर (पं. प्रेम शंकर शास्त्री)	150.00	
25.	बृहद नित्य कर्म पद्धति (बड़ा)	75.00	
26.	नित्य कर्म पद्धति (छोटा)	6.00	
27.	★ दुर्गा पूजन विधान (हवन विधि सहित) (डिमाई साईज)	30.00	
28.	★ काली पूजन विधान (डिमाई साईज़)	30.00	
29.	★ शिव पूजन विधान (डिमाई साईज़)	30.00	
30.	★ हनुमान पूजन विधान (डिमाई साईज़)	30.00	
31.	★महालक्ष्मी (दीपावली) पूजन विधान (डिमाई साईज़)	60.00	
32.	★ सरस्वती पूजन विधान (डिमाई साईज़)	30.00	
33.	★ गणेश पूजन विधान (अर्थवशीर्ष व होम पद्धति सहित डिमाई साईज़)	30.00	
34.	दुर्गा कवच भाषा टीका सहित (लाल रंग में छपा)	25.00	
35.	दुर्गा कवच (गुटका रंगीन चित्रो सहित)	15.00	
36.	नारायण कवच भा.टी. सहित (गुटका डीलक्स)	10.00	
37.	काली कवच भा.टी. सहित (गुटका दो रंग में डीलक्स)	25.00	
38.	श्री गायत्री मन्त्र (कवच एवं हवन विधि सहित)गुटका	25.00	
39.	नित्य कर्म पूजन, जप, तप, व्रत व गीता सार सहित	25.00	
40.	सिद्ध एवं अमोघ श्री शिव कवच (गुटका-रंगीन)	12.00	
41.	कवच संग्रह (16 कवच भाषा टीका)	35.00	
42.	21 स्तोत्र संग्रह	25.00	
43.	एकमुखी पंचमुखी हनुमान कवच (बड़ा)	30.00	
44.	हनुमान कवच (गुटका रंगीन)	12.00	
45.	हनुमान साठिका एवं बाहुक	15.00	

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

क्र.सं.	पुस्तकों के नाम	छपा मू.	थोक मू.
46.	श्री सिद्ध हनुमान महाउपासना (पूजन एवं जीवनी)	150.00	
47.	एकादशी माहात्म्य (भाषा टीका सहित)	75.00	
48.	एकादशी माहात्म्य (भाषा)	40.00	
49.	★ एकादशी माहात्म्य भाषा (कच्चा रोपड़)	15.00	
50.	एकादशी व्रत कथा (लम्बी साईज में)	12.00	
51.	कार्तिक माहात्म्य (भाषा)	40.00	
52.	कार्तिक कहानी व भजन संग्रह (डिमाई)	40.00	
53.	कार्तिक मास नित्यपाठ भजन	35.00	
54.	तुलसी चालीसा एवं पूजन सहित	8.00	
55.	माघ माहात्म्य भाषा	40.00	
56.	वैशाख मास माहात्म्य भाषा	40.00	
57.	पुरूषोत्तम माहात्म्य भाषा	40.00	
58.	श्रावण माहात्म्य भाषा	40.00	
59.	★ 55 चालीसा पाठ संग्रह एवं आरती सहित	60.00	
60.	★ चालीसा पाठ संग्रह एवं रामायण मनका (रंगीन)	45.00	
61.	सजिल्द चालीसा पाठ संग्रह (नीली स्याही में आरती सहित)	35.00	
62.	चालीसा पाठ संग्रह (लाल स्याही में छपा)	30.00	
63.	चालीसा पाठ संग्रह (छोटा गुटका लाल छपा)	15.00	
64.	चालीसा पाठ संग्रह गुटका (रंगीन चित्रों में)	15.00	
65.	श्री हनुमान ज्योतिष	30.00	
66.	श्री सन्तान गोपाल स्तोत्र (भाषा टीका)	15.00	
67.	श्री राम रक्षा स्तोत्र (भाषा टीका सहित बड़ा)	5.00	
68.	श्री राम रक्षा स्तोत्र भाषा टीका सहित (गुटका डीलक्स)	10.00	
69.	रामायण 108 मनका गुटका पॉकिट	10.00	

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

क्र.सं.	पुस्तकों के नाम	छपा मू.	थोक मू.
70.	रामायण 108 मनक्का गुटका (पॉकिट साईज लाल)	8.00	
71.	रामायण मनका 108 (लैमीनेशन रंगीन बड़ी)	20.00	
72.	रामायण मनका 108 (गुटका रंगीन चित्रों में)	12.00	
73.	बड़ा गरुड़ पुराण (भाषा टीका सहित)	75.00	
74.	गरुड़ पुराण जिल्द (सचित्र हिन्दी में) बड़ा साईज़	125.00	
75.	गरुड़ पुराण (भाषा हिन्दी)	35.00	
76.	बगलामुखी स्तोत्र (भाषा टीका सहित)	15.00	
77.	सिद्ध श्री बगलामुखी महाउपासना	150.00	
78.	सिद्ध श्री बगलामुखी उपासना एवं सम्पूर्ण पूजन विधि	150.00	
79.	वर्षभर की गणेश चतुर्थी व्रत कथा	40.00	
80.	करवा चौथ गणेश चौथ व्रत कथा	10.00	
81.	महामृत्युंजय जप विधि (नया)	15.00	
82.	महामृत्युंजय जप कष्ट निवारण (गुटका रंगीन चित्र)	15.00	
83.	नवग्रह स्तोत्र	12.00	
84.	नवग्रह पूजन	15.00	
85.	★ सिद्ध मन्त्र माला	12.00	
86.	★ पार्वती मंगल	25.00	
87.	★ श्री ऋणमोचन मंगल स्तोत्र	25.00	
88.	श्री राधा कृष्ण कृपा कटाक्ष स्तोत्र	25.00	
89.	नवग्रह चालीसा (डीलक्स दो रंग में छपा)	12.00	
90.	श्री सूक्त (लक्ष्मी सूक्त, पुरुष सूक्त सहित)	15.00	
91.	श्री सूक्तम् (बड़ी, रंगीन श्री यंत्र के साथ) (23x36/16)	60.00	
92.	★ कनकधारा स्तोत्र (लक्ष्मी स्तोत्र सहित)	12.00	
93.	शाचोच्चार (विवाह के मंत्र सहित)	15.00	

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पूजा प्रकाशन द्वारा प्रकाशित अन्य पुस्तकें—

धार्मिक ग्रन्थ एवं पुराण

सचित्र सम्पूर्ण रामायण तुलसीकृत (भा०टी०)
आठों काण्ड (रंगीन चित्रों) सहित
सचित्र सम्पूर्ण रामायण तुलसीकृत भा०टी० (मध्यम)
रामायण तुलसीकृत मूल गुटका (23×36/32) नया
योग वशिष्ठ (महारामायण बड़ा)
सचित्र सम्पूर्ण श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण (सचित्र एवं बड़ा)
सचित्र सम्पूर्ण सुखसागर हिन्दी (1040 पेजों में)
सचित्र सुखसागर भाषा सजिल्द गुटका
महाभारत ग्लेज भाषा (बड़ा)
श्री शिव महापुराण (सचित्र एवं बड़ा)
श्री शिव महापुराण (डिमाई साईज गुटका)
श्री हरिवंश महापुराण बड़ा (सचित्र एवं बड़ा)
श्री विष्णु महापुराण (बड़ा)
श्रीमद् देवी भागवत महापुराण (सचित्र एवं बड़ा)
श्री मार्कण्डेय महापुराण (सचित्र एवं बड़ा)
श्री गणेश महापुराण (सचित्र एवं बड़ा)
श्री गरुड़ पुराण (बड़ा)
बड़ा सचित्र प्रेम सागर (श्रीकृष्ण लीलाओं सहित)
सम्पूर्ण सचित्र अष्टावक्र गीता (विवेक श्री कौशिक)

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

प्रभु सिमरन (नए आकर्षक कवर पर)
भजन आराधना (नए आकर्षक कवर पर)
हरे रामा हरे कृष्णा (नए आकर्षक कवर पर)
भगवान् तुम्हारे चरणों में (नए आकर्षक कवर पर)
अनमोल भजन (नए आकर्षक कवर पर)
अनूप जलोटा के हित भजन (नए आकर्षक कवर घर)
भजन गंगा (नए आकर्षक कवर पर)
अनमोल भजन सरोवर-अमृत वचनों सहित

ज्योतिष एवं तन्त्र-मन्त्र सम्बन्धी पुस्तकें

वृहद् हस्तरेखा
वृहद् ज्योतिष सर्वसंग्रह (रामस्वरूप मेरठ वाले)
विवाह पद्धति (रामस्वरूप मेरठ वालों की)
हवन पद्धति (रामस्वरूप मेरठ वालों की)
शाखोच्चार (मंगलाष्टक)
लग्न पत्रिका चिट्ठी
लग्न पत्रिका चिट्ठी (फैन्सी एवं फोल्डींग)
पीली चिट्ठी (मोटे कराफ्ट पेपर में)
ज्योतिष ज्ञान प्रकाश
दशाफल ज्ञान प्रकाश
4000 साल का कलैण्डर
मशहूर पुरानी ज्योतिष की लाल किताब
असली प्राचीन शास्त्रोक्त चमत्कारिक एवं गोपनीय सिद्ध शाबर तन्त्र, मन्त्र, यन्त्र, टोने-टोटके, गंडे, ताबीज एवं सिद्धियाँ (1040 पृ० में)

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Vrihad-Inder Jall-(Hindi-English)

Why (English)

Shri Vishnu Sahastranamavali (1000 Names)
(Hindi-English with Romanized)

Shri Shiva Sahastranamavali (1000 Names)
(Hindi-English with Romanized)

Shri Ganesh Sahastranamavali (1000 Names)
(Hindi-English with Romanized)

Shri Hanuman Sahastranamavali (1000 Names)
(Hindi-English with Romanized)

Shri Durga Saptshatti (1000 Names)
(Sanskrit, Doha-Roman, Hindi-English with Romanized)

Sunder Kaanda (Big)
(Sanskrit, Doha-Roman, Hindi-English with Romanized)

Sunder Kaanda (Small)
(Sanskrit, Doha-Roman, Hindi-English with Romanized)

पुस्तकों की सूची-पत्र निःशुल्क दी जायेगी,
सूची-पत्र मँगवाने वाले इच्छुकगण कृपया
प्रकाशक से सम्पर्क करें-

पूजा प्रकाशन : 011- 45516164
9811873658
9811716164

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सर्वदेव पूजा पद्धति (पं० ज्वाला प्रसाद कृत)

सर्वदेव प्राण प्रतिष्ठा (पं० ज्वाला प्रसाद कृत)

काली उपासना (पं० ज्वाला प्रसाद कृत)

भैरव उपासना (पं० नरेन्द्र शर्मा कृत)

शनि उपासना (राजेन्द्र प्रसाद 'आशू' कृत)

शिव महिमा स्तोत्र (आचार्य रामनाथ शर्मा कृत)

शिवाष्टक रूद्राष्टक एवं लिंगाष्क

आदित्य हृदय स्तोत्र भाषा टीका (सूर्यपाठ गुटका)

आदित्य हृदय स्तोत्र बड़ा (नया प्रिंट)

कर्मकाण्ड भास्कर भाषा टीका (पं० ज्वाला प्रसाद जी)

सर्वदेव पूजा भास्कर (पं० प्रेम शंकर शास्त्री)

बृहद नित्य कर्म पद्धति (बड़ा)

नित्य कर्म पद्धति (छोटा)

दुर्गा पूजन विधान (डिमाई साईज)

काली पूजन विधान (डिमाई साईज)

शिव पूजन विधान (डिमाई साईज)

हनुमान पूजन विधान (डिमाई साईज)

महालक्ष्मी (दीपावली) पूजन विधान (डिमाई साईज)

सरस्वती पूजन विधान (डिमाई साईज)

गणेश पूजन विधान (अर्थवशीर्ष व होम पद्धति सहित डिमाई साईज)

दुर्गा कवच भाषा टीका सहित (लाल रंग में छपा)

दुर्गा कवच (गुटका रंगीन चित्रों सहित)

नारायण कवच भा.टी. सहित (गुटका डीलक्स)

काली कवच भा.टी. सहित (गुटका दो रंग में डीलक्स)

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

S-029 **Shri Durga Navaratra Vrat Katha with Durga Chalisa**
(Navadurga Fast story, Hindi-English with Aarti)

S-030 **Karva Chauth & Ganesh Chauth Vrat Katha**
(Karva Chauth Fast story, Hindi-English with Aarti)

S-031 **Karva Chauth, Ahoi Ashtami Deepawali, Govardhan, Bhaiyadooja Vrat Katha**-(Hindi-Eng.)

S-032 **Saptavar Vrat Katha** (All Seven days Fast story-Weekly) (Hindi-English with Aarti)

S-033 **Shri Durga Poojan Vidhan**
(Sanskrit, Doha-Roman, Hindi-English)

S-034 **Shri Shiva Poojan Vidhan**
(Sanskrit, Doha-Roman, Hindi-English)

S-035 **Shri Hanuman Poojan Vidhan**
(Sanskrit, Doha-Roman, Hindi-English)

S-036 **Shri Ganesh Poojan Vidhan**
(Sanskrit, Doha-Roman, Hindi-English)

S-037 **Shri Sarva Deva Poojan**
(Sanskrit, Doha-Roman, Hindi-English)

S-038 **Shri Kaali Poojan**
(Sanskrit, Doha-Roman, Hindi-English)

S-039 **Shri Navagrah Poojan Vidhan**
(Sanskrit, Doha-Roman, Hindi-English)

S-040 **Shri Saraswati Poojan**
(Sanskrit, Doha-Roman, Hindi-English)

S-041 **Mahalaxmi Deepawali Poojan**
(Sanskrit, Doha-Roman, Hindi-English)

S-042 **Shrimad Bhagavad Geeta**
(Sanskrit, Doha-Roman, Hindi-English with Mahattamaa)

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अंग्रेजी में अन्य प्रकाशित पुस्तकें

SHIVAM PUBLICATIONS

S-001 **Shri Hanuman Chalisa**
(with Pictures, Sanskrit, Doha-Roman, Hindi-English)

S-002 **Shri Hanuman Chalisa**
(Sanskrit, Doha-Roman, Hindi-English)

S-003 **Shri Durga Chalisa (With-Photo's)**
(with Pictures, Sanskrit, Doha-Roman, Hindi-English)

S-004 **Shri Durga Chalisa**
(Sanskrit, Doha-Roman, Hindi-English)

S-005 **Shri Shiva Chalisa (With-Photo's)**
(with Pictures, Sanskrit, Doha-Roman, Hindi-English)

S-006 **Shri Shiva Chalisa**
(Sanskrit, Doha-Roman, Hindi-English)

S-007 **Shri Ganesh Chalisa**
(Sanskrit, Doha-Roman, Hindi-English)

S-008 **Shri Vishnu Chalisa**
(Sanskrit, Doha-Roman, Hindi-English)

S-009 **Shri Krishna Chalisa**
(Sanskrit, Doha-Roman, Hindi-English)

S-010 **Shri Luxmi Chalisa**
(Sanskrit, Doha-Roman, Hindi-English)

S-011 **Shri Ganga Chalisa**
(Sanskrit, Doha-Roman, Hindi-English)

S-012 **Shri Gayatri Chalisa**
(Sanskrit, Doha-Roman, Hindi-English)

S-013 **Shri Shri Santoshi Chalisa**
(Sanskrit, Doha-Roman, Hindi-English)

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

भृगु संहिता (फलित प्रकाश) (1040 पृष्ठों में)

सरल एवं गोपनीय प्राचीन लाल किताब

लाल किताब के चमत्कारी टोने-टोटके और उपाय

स्वप्न फल विचार (शगुन-अपशगुन)

श्री ललिता सहस्त्रनाम् (1000 नामावली भाषा-टीका सहित)

सुन्दर व आकर्षक बच्चों के नाम (हिन्दी-इंगलिश में अर्थ सहित)

सिद्ध श्री बगलामुखी महाउपासना

सिद्धियाँ, तांत्रिक विद्या एवं स्तुति सहित

सम्पूर्ण गृहस्थ गीता (हरघर रखने एवं बाँटने योग्य)

सम्पूर्ण नवनाथ-पुराण एवं चरित

काली किताब

रावण संहिता

कष्ट निवारक गुरुजी के प्रभावशाली अचूक टोने-टोटके और उपाय

संत कबीरदास जी का साहित्य

कबीर वाणी सचित्र जीवनी सहित

कबीर बीजक मूल

कबीर साखी संग्रह

कबीर भजन माला

कबीर साहेब की शब्दावली

कबीर भजन माला गुटका

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

S-014 **Shri Sarswati Chalisa**
(Sanskrit, Doha-Roman, Hindi-English)

S-015 **Shri Kaali Chalisa**
(Sanskrit, Doha-Roman, Hindi-English)

S-016 **Shri Shani Chalisa**
(Sanskrit, Doha-Roman, Hindi-English)

S-017 **Shri Bhairav & Batik Bhairav Chalisa**
(Sanskrit, Doha-Roman, Hindi-English)

S-018 **Tulsi Chalisa with Poojan**
(Sanskrit, Doha-Roman, Hindi-English)

S-019 **Shri Surya Chalisa**
(Sanskrit, Doha-Roman, Hindi-English)

S-020 **Chalisa Path Sangraha with Aarti**
(Roman, English with Colour Picture)

S-021 **Shri Aarti Sangrah** (Hindi with Roman)

S-022 **Somavar Vrat Katha**
(Monday Fast story, Hindi-English with Aarti)

S-023 **Mangalavar Vrat Katha**
(Tuesday Fast story, Hindi-English with Aarti)

S-024 **Brihaspativar Vrat Katha**
(Thrusday Fast story, Hindi-English with Aarti)

S-025 **Shukravar Vrat Katha**
(Friday Fast story, Hindi-English with Aarti)

S-026 **Shanivar Vrat Katha**
(Saturday Fast story, Hindi-English with Aarti)

S-027 **Satyanarayana Vrat Katha**
(Purnamasi Fast story, Hindi-English with Aarti)

S-028 **Shri Maa Vaibhav Luxmi Vrata Katha**-Eng.

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दृष्टान्त महासागर (नया) (अशोक कुमार बंसल)

श्रीमद्भागवत गीता (हिन्दी-संस्कृत) (बड़ी)

श्रीमद्भगवत गीता (बड़ी रंगीन चित्रों सहित दो रंग में छपी)

श्रीमद्भगवत गीता ग्लेज (गुटका लाल अक्षरों में)

श्री दुर्गा सप्तशती (बड़ी रंगीन चित्रों सहित दो रंगों में छपी)

श्री दुर्गा सप्तशती भाषा ग्लेज रैक्सीन

श्री दुर्गा सप्तशती भाषा ग्लेज लैमिनेशन टाईटिल

श्री दुर्गा सप्तशती भा०टी० रैक्सीन (मोटे अक्षरों में) (डिमाई)

श्री चण्डी पाठ/दुर्गा पाठ भाषा बड़ा

व्रत और त्यौहार कार्ड ग्लेज (हिन्दी नया)

व्रत और त्यौहार (मारवाड़ी-चम्पा देवी)

बड़ा व्रत और त्यौहार (लेडिज संगीत व घरेलू टिप्स सहित) डीलक्स

सम्पूर्ण भारतीय पर्व उत्सव एवं त्यौहार, व्रत कथाएँ (लोकगीत सहित)

अन्य धार्मिक पुस्तकें

शिव सहस्त्रनाम भाषा टीका सहीत

विष्णु सहस्त्रनाम भाषा टीका सहीत

गोपाल सहस्त्रनाम भाषा टीका सहीत

हनुमान सहस्त्रनाम भाषा टीका सहीत

दुर्गा सहस्त्रनाम भाषा टीका सहीत

गणेश सहस्त्रनाम भाषा टीका सहीत

श्री लक्ष्मी सहस्त्रनाम भाषा टीका सहीत

श्री ललिता सहस्त्रनाम (नामावली सहित)

श्री गजेन्द्र मोक्ष भाषा टीका सहित (गुटका डीलक्स)

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

नवग्रह चालीसा (डीलक्स दो रंग में छपा)

श्री सूक्त (लक्ष्मी सूक्त, पुरुष सूक्त सहित)

श्री सूक्तम् (बड़ी, रंगीन श्री यंत्र के साथ) (23×36/16)

कनकधारा स्तोत्र (लक्ष्मी स्तोत्र सहित)

शाखोच्चार (विवाह के मंत्र सहित)

प्रभु लेखन पुस्तिका

आर्यसमाज की नई पुस्तकें

सत्यार्थ प्रकाश

संस्कार विधि

रंगीन कथाएँ (डीलक्स)

अन्दर से दो रंगों में चिकने मोटे कागज पर 9×6" में छपी है।

श्री विश्वकर्मा व्रत कथा (हिन्दी भाषा) (काली छपाई में)

सोमवार व्रत कथा (सोलह सोमवार व सोम्य प्रदोष सहित)

मंगलवार व्रत कथा (रंगीन)

बृहस्पतिवार व्रत कथा (नए मोटे कवर में) (रंगीन)

शुक्रवार व्रत कथा (नए मोटे कवर में) (रंगीन)

शनिवार व्रत कथा (रंगीन)

सत्यनारायण व्रत कथा (नए मोटे कवर में) (रंगीन)

पूर्णमासी व्रत कथा (रंगीन)

अन्नपूर्णा व्रत कथा (अन्नपूर्णा स्तोत्र सहित)

श्री दुर्गा नवरात्र व्रत कथा (पूजन विधि सहित) (रंगीन)

करवा चौथ, अहोई, दीपावली, भैया दूज, गोवर्धन पूजन सहित

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

श्री गायत्री मन्त्र (कवच एवं हवन विधि सहित) गुटका
नित्य कर्म पूजन, जप, तप, व्रत व गीता सार सहित
सिद्ध एवं अमोघ श्री शिव कवच (गुटका-रंगीन)
कवच संग्रह (16 कवच भाषा टीका)
21 स्तोत्र संग्रह
एकमुखी पंचमुखी हनुमान कवच (बड़ा)
हनुमान कवच (गुटका रंगीन)
हनुमान साठिका एवं बाहुक
श्री सिद्ध हनुमान महाउपासना (पूजन एवं जीवनी)
एकादशी माहात्म्य (भाषा टीका सहित)
एकादशी माहात्म्य (भाषा)
एकादशी माहात्म्य भाषा (कच्चा रोपड़)
एकादशी व्रत कथा (लम्बी साईज में)
कार्तिक माहात्म्य (भाषा)
कार्तिक कहानी व भजन संग्रह (डिमाई)
तुलसी चालीसा एवं पूजन सहित
माघ माहात्म्य भाषा
वैशाख मास माहात्म्य भाषा
पुरुषोत्तम माहात्म्य भाषा
श्रावण माहात्म्य भाषा
55 चालीसा पाठ संग्रह एवं आरती सहित
चालीसा पाठ संग्रह एवं रामायण मनका (रंगीन)
सजिल्द चालीसा पाठ संग्रह (नीली स्याही में आरती सहित)
चालीसा पाठ संग्रह (लाल स्याही में छपा)

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जन्माष्टमी व्रत कथा (लाल छपाई में)
धर्मराज की कथा एवं चित्रगुप्त की कथा (लाल छपाई में)
वट सावित्री पूजन व्रत कथा (वट अमावस्या)
सोमवती, मौनी अमावस, मकर संक्रान्ति (लाल छपाई में)
प्रदोष त्रयोदशी (सातों अलग-अलग दिन) व्रत कथा
छठ पूजा-चन्दन, सूरज छठ, जीवित पुत्रिका (लाल छपाई)
संकट चौथ और संकटा माता व्रत कथा (लाल छपाई)
सत्यनारायण व्रत कथा भाषा टीका सहित (रंगीन)
श्री विश्वकर्मा पूजन विधि (भाषा टीका सहित डीलक्स)
श्री राम नवमी व्रत कथा (लाल छपाई में)
दुर्गा नवरात्रों में देवी अष्टमी पूजा
महाशिवरात्रि एवं मंगलागौरी व्रत कथा (लाल छपाई में)
सप्तवार व्रत कथा (लाल छपाई में)
श्री दुर्गा नवरात्र नौ दिन का पाठ (काली छपाई में)
सम्पूर्ण दिपावली पूजन एवं श्री महालक्ष्मी पूजन (विस्तार में)

भजन-कीर्तन सम्बन्धित पुस्तकें

सूरदास भजनमाला (नए आकर्षक कवर पर)
मीरा भजनमाला (नए आकर्षक कवर पर)
तुलसी भजनमाला (नए आकर्षक कवर पर)
कबीर भजनमाला (नए आकर्षक कवर पर)
श्री हरि कीर्तन (नए आकर्षक कवर पर)
बड़ी कीर्तन सागर (नए आकर्षक कवर पर)
भजन माला (नए आकर्षक कवर पर)

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

चालीसा पाठ संग्रह (छोटा गुटका लाल छपा)

श्री हनुमान ज्योतिष

श्री सन्तान गोपाल स्तोत्र (भाषा टीका)

श्री राम रक्षा स्तोत्र (भाषा टीका सहित बड़ा)

श्री राम रक्षा स्तोत्र भाषा टीका सहित (गुटका डीलक्स)

रामायण 108 मनका गुटका पॉकेट

रामायण 108 मनका गुटका (पॉकेट साईज लाल)

रामायण 108 (लैमीनेशन रंगीन बड़ी)

रामायण 108 (गुटका रंगीन चित्रों में)

बड़ा गरुड़ पुराण (भाषा टीका सहित)

गरुड़ पुराण जिल्द (सचित्र हिन्दी में) बड़ा साईज

गरुड़ पुराण (भाषा हिन्दी)

बगलामुखी स्तोत्र (भाषा टीका सहित)

सिद्ध श्री बगलामुखी उपासना एवं सम्पूर्ण पूजन विधि

वर्षभर की गणेश चतुर्थी व्रत कथा

करवा चौथ गणेश चौथ व्रत कथा

महामृत्युंजय जप विधि (नया)

महामृत्युंजय जप कष्ट निवारण (गुटका रंगीन चित्र)

नवग्रह स्तोत्र

नवग्रह पूजन

सिद्ध मन्त्र माला

पार्वती मंगल

श्री ऋणमोचन मंगल स्तोत्र

श्री राधाकृष्ण कृपा कटाक्ष स्तोत्र

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पूजा प्रकाशन द्वारा प्रकाशित टोने-टोटके की पुस्तकें

1. भूत-प्रेत, ऊपरी हवा, बुरी नजर व रोग निवारक शक्तिशाली टोटके
2. देखने में छोटे लगे—बिगड़े काम संवारें
3. धन लक्ष्मी और कुबेर प्राप्ति के शक्तिशाली अचूक टोटके
4. व्यवसाय में सफलता, धन कार्य में रुकावट निवारण टोटके, सफल धन कुबेर प्राप्ति के शक्तिशाली उपाय व टोटके
5. अनिष्ट ग्रहों के प्रभावशाली अचूक टोटके व कृपा प्राप्ति के उपाय
6. नजर उतारने और नजर से रक्षा के अचूक टोटके
7. शीघ्र विवाह तथा सन्तान प्राप्ति कराने वाले महाटोटके व उपाय
8. सुखी जीवन के टोटके—घर में सुख शांति व घरेलू समस्याओं के उपाय
9. चमत्कारिक सरल प्रयोग सौभाग्य प्राप्ति के दुर्लभ उपाय
10. पितरों की शान्ति-मातृऋण-पितृदोष कालसर्पयोग आदि ऋण-दोष निवारण के अचूक उपाय

पूजा प्रकाशन
(सदर बाजार स्टेशन के बराबर में मस्जिद के बाहर)
सदर बाजार, दिल्ली-110006
फोन न. 011-45516164, 9811873658, 9811716164
Email : gargbooks@yahoo.co.in, sales@poojaprakashan.com
Visit us : www.poojaprakashan.com

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

असली लाल किताब

(तीनों भाग) (फोटोस्टेट)

लेखक : गिरधारी लाल शर्मा, जालन्धर, पंजाब, भारत मूल्य 2500/-

- बीमारी का बगैर दवाई भी इलाज है, परन्तु मौत का कोई इलाज नहीं—दुनियावी हिसाब-किताब है कोई दावा-ए-खुदाई नहीं है। ज्योतिष की मदद से हस्तरेखा के जरिये दुरुस्त की हुई जन्मकुण्डली से जिन्दगी के हालात देखने के लिए लाल किताब।
- विश्व में बेहद मशहूर, प्रामाणिक तथा लोकप्रिय ग्रन्थ, जो प्रायः दुर्लभ हो चुका है, परन्तु परमपिता परमेश्वर की असीम अनुकम्पा से यह ग्रन्थ अब सुलभ है। इस ग्रन्थ की विशेषता यह है कि प्राचीन भारतीय ऋषियों के मूलभूत ज्योतिष सिद्धान्तों और अरबी ज्योतिष के नवीन अनुसन्धानों का समीकरण करके इसमें ज्योतिष की ऐसी सहज सरल विधि बतायी गयी है, जिसके आधार पर ज्योतिष का साधारण ज़ानकार भी चमत्कारी फलादेश कर सकता है। साथ ही जन्मकुण्डली की ग्रह स्थिति का हस्तरेखाओं के साथ मिलान करने की विधि इसकी निजी विशेषता है, जो संसार के किसी दूसरे ग्रन्थ में नहीं पायी जाती। जिन मनुष्यों की जन्मकुण्डली नहीं है या सन्देह या गलत है, उनके मकान की कुण्डली बनाकर ग्रह स्थिति और उसके फलित का मिलान करने की विधि इसकी दूसरी अद्‌भुत विशेषता है। ग्रन्थ रत्न में तब कुण्डली बनाने और वर्षफल निकालने की अत्यन्त सरल विधि बतायी गयी है, जिससे कुछ समय में किसी भी तप्त की कुण्डली और फलित निकाला जा सकता है, अर्थात् लम्बे-चौड़े गणित आदि की कोई आवश्यकता नहीं रह जाती।
- यह दुर्लभ ग्रन्थ सन् 1942 व 1952 में उर्दू भाषा में छपी ग्रन्थों की हूबहू हिन्दी लिपि में फोटोकापी सुन्दर तीन भागों में उपलब्ध है। ग्रन्थ प्राप्त करने का सुन्दर अवसर आप छोड़ना नहीं चाहेंगे, अतः आज ही अपना बहुमूल्य आर्डर, बैंक ड्राफ्ट सहित भेजें। बैंक ड्राफ्ट रुपये 2500/- (दो हजार पांच सौ रुपये), डाक व्यय निःशुल्क है।

पूजा प्रकाशन

(सदर बाजार स्टेशन के बराबर में मस्जिद के बाहर)

सदर बाजार, दिल्ली-110006

फोन न. 011-45516164, 9811873658, 9811716164

Email : gargbooks@yahoo.co.in, sales@poojaprakashan.com

Visit us : www.poojaprakashan.com

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पूज्य पाद "श्री रामचन्द्र केशव जी डोंगरे जी" महाराज की अमृत वर्षा करने वाली पुस्तकें

1. श्रीमद्भागवत रहस्य (नये संस्करण में)
2. भागवत रहस्य-मराठी भाषा (मैपलिथो पेपर में)
3. श्री तत्वार्थ रामायण (नये मोटे अक्षरों में)
4. रामायण रहस्य
5. संतवाणी
6. हरि का मार्ग
7. ज्ञान निर्झर
8. भागवत प्रसादी
9. गोपी गीत (नया संस्करण)
10. रामायण प्रसादी
11. पाप प्रभु और प्रायश्चित

"श्री बापू मौरारी, हरियाणवी" कृत

1. सचित्र रामायण रसामृत (रंगीन चित्रों सहित)
2. रामायण प्रवचन
3. भरत चरित्र
4. शिव विवाह (शिव कथा)
5. संक्षिप्त रामायण
6. भक्ति का मार्ग

पूजा प्रकाशन

(सदर बाजार स्टेशन के बराबर में मस्जिद के बाहर)

सदर बाजार, दिल्ली-110006

फोन न. 011-45516164, 9811873658, 9811716164

Email : gargbooks@yahoo.co.in, sales@poojaprakashan.com

Visit us : www.poojaprakashan.com

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh